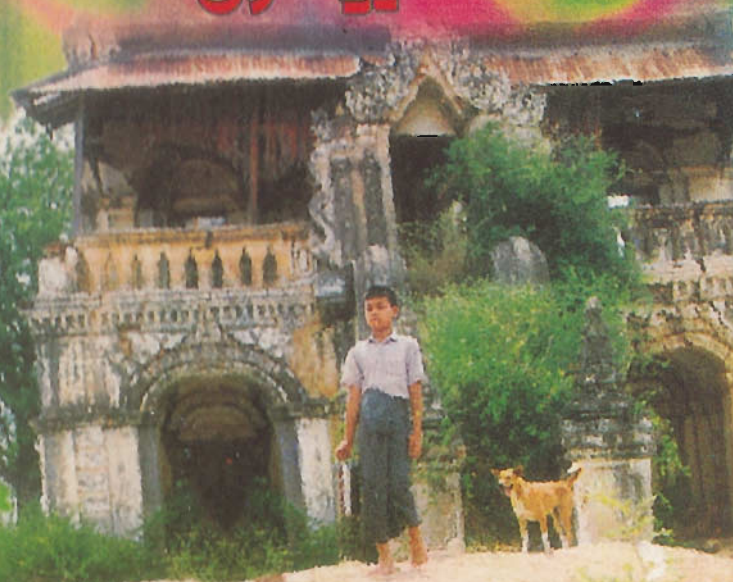


ဘာသာရေး၊ ဖိစွားရေး၊ လူမှုရေး၊ အလိမ်အညာမခံလိုသူများအတွက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း မေတ္တာရှင် [ရွှေပြည်သာ]

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ) ယုံမှတ်လို့ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

၂၀၀၈ ခုနှစ် ဇူလိုင်လ ၁၀ ရက်နေ့



မေတ္တာဂုဏ် [ရွှေပြည်သာ]

ပုဂံပတ်ကုမ္ပဏီလီမိတက်အုပ်ချုပ်ရေးအဖွဲ့ကြီး

သူတစ်ပါး၏ အလိမ်အညာ
မခံလိုသူများအတွက်

ယုံမှတ်လို့
ပုံအင်မိသူများအကြောင်း

မေတ္တာရွှင်

(ရှေ့ပြည်သာ)

စုဆောင်း တင်ပြသည်။

ပြန်ဆိုရေး

မန္တလေးကျောင်း

(၆) ရပ်ကွက်၊ ရွှေပြည်သာ၊ ရန်ကုန်။

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

www.dhammadownload.com

ဒို့တာဝန်အရေးအခင်း

ပြည်ထောင်စု ဖြိုကွဲရေး	ဒို့အရေး
တိုင်းရင်းသားစည်းလုံးညီညွတ်မှု ဖြိုကွဲရေး	ဒို့အရေး
အချစ်အမြင်အာဏာ တည်တံ့ခိုင်မြဲရေး	ဒို့အရေး

နိုင်ငံတော်ပွဲ့ စည်းပုံအခြေခံဥပဒေပေါ်ပေါက်ရေးသည်
ပြည်ထောင်စုသားအားလုံး၏ ဖခားကျသောတာဝန် ဖြစ်သည်။

ပြည်သူ့သဘောထား

ပြည်ပအားကိုး ပုဆိန်နိုး အဆိုပြိုင်ဝါဒီများအား ဆန့်ကျင်ကြ။
နိုင်ငံတော်တည်ငြိမ်အေးချမ်းရေးနှင့် နိုင်ငံတော်တိုးတက်ရေးကို နှောင့်ယှက်ဖျက်ဆီးသူများအား ဆန့်ကျင်ကြ။
နိုင်ငံတော်၏ ပြည်တွင်းရေးကို ဝင်ရောက်စွက်ဖက်နှောင့်ယှက်သော ပြည်ပနိုင်ငံများအား ဆန့်ကျင်ကြ။
ပြည်တွင်းပြည်ပ အဖျက်သမားများအား ဘုရင့်သုအဖြစ် သတ်မှတ်ချေမှုန်းကြ။

နိုင်ငံရေးဦးတည်ချက် (၄) ရပ်

နိုင်ငံတော် တည်ငြိမ်ရေး၊ ရပ်ရွာအေးချမ်းသာယာရေးနှင့် တရားဥပဒေ စိုးမိုးရေး၊
အမျိုးသားပြန်လည်စည်းလုံးညီညွတ်ရေး၊
နိုင်ငံစာသည့် ပွဲ့ စည်းပုံအခြေခံဥပဒေသစ် ဖြစ်ပေါ်လာရေး၊
ဖြစ်ပေါ်လာသည့်ပွဲ့ စည်းပုံအခြေခံဥပဒေသစ်နှင့်အညီ ခေတ်မီပို့ဒြေတိုးတက်သော နိုင်ငံတော်သစ်တစ်ရပ်တည်ဆောက်ရေး။

စီးပွားရေးဦးတည်ချက် (၄) ရပ်

စိုက်ပျိုးရေးကိုအခြေခံ၍ အခြား စီးပွားရေးတက္ကမားကိုလည်း ဘက်စုံ ပွဲ့ ပြုစုတိုးတက်အောင် တည်ဆောက်ရေး၊
စေ့ကွက်စီးပွားရေးစံနှစ် ပီပြင်စွာ ဖြစ်ပေါ်လာရေး၊
ပြည်တွင်းပြည်ပမှ အတတ်ပညာနှင့်အရင်းအနှီးများဖိတ်ခေါ်၍ စီးပွားရေးပွဲ့ ပြုစုတိုးတက်အောင် တည်ဆောက်ရေး၊
နိုင်ငံတော်စီးပွားရေးတစ်ရပ်လုံးကိုဖန်တီးနိုင်မှုစွမ်းအားသည် နိုင်ငံတော်နှင့်တိုင်းရင်းသားပြည်သူတို့၏ လက်ဝယ်တွဲ

လူမှုရေးဦးတည်ချက် (၄) ရပ်

တစ်မျိုးသားလုံး၏ စိတ်ဓာတ်နှင့် အကျင့်စာနိက္က ဖြင့်ပေးရေး၊
အမျိုးဂုဏ် လတ်ဂုဏ် ဖြင့်ပေးရေးနှင့် ယဉ်ကျေးမှုအမွေအနှစ်များ အမျိုးသားရေးလက္ခဏာများ မပျောက်ပျက်အောင် ထိန်းသိမ်းစောင့်ရှောက်ရေး၊
မျိုးချစ်စိတ်ဓာတ် ရှင်သန်ထက်မြက်ရေး၊
တစ်မျိုးသားလုံး ကျန်းမာကြံ့ခိုင်ရေးနှင့် ပညာရည် ဖြင့်ပေးရေး။

စာမူခွင့်ပြုချက်
မျက်နှာဖုံးခွင့်ပြုချက်
ပုံနှိပ်ထုတ်ဝေခြင်း
ထုတ်ဝေသူ

- ၁၆၅/၂၀၀၄ (၃)
- ၃၁၄/၂၀၀၅ (၅)
- ဒုတိယအကြိမ်၊ ၂၀၀၄၊ စက်တင်ဘာလ
- ဒေါ်စိုးကေခိုင်
(ချီးတေးသံစာပေ)
ရွှေနံသာကျေးရွာ၊ ပုလဲမြို့နယ်(၃)
မင်္ဂလာတန်း။

အတွင်းနှင့်အဖုံးပုံနှိပ်တိုက်

- ဦးမြင့်အောင်
ကျံကော် အော့ဖ်ဆက်
အမှတ်(၁၆၃)၊ (၃၈)လမ်း၊ ရန်ကုန်။
ဖုန်း ၂၅၂၅၅၁

မျက်နှာဖုံးပန်းချီ
အတွင်းပန်းချီ
အတွင်းဖလင်
ကွန်ပျူတာစာစီ
ဒုတိယအကြိမ်
အုပ်ရေ
တန်ဖိုး
ဖြန့်ချိရေး

- ပိုးဒီလွန်
- စိုးအောင်
- ကိုသက်ဆွေ
- AOK
- စက်တင်ဘာလ
- ၁၀၀၀
- ၈၀၀ ကျပ်
- ရွှေပြည်သာစာပေ
မန္တလေးကျောင်းဥပသကာများအဖွဲ့
၆/၁၀ ရပ်ကွက်၊ ချင်းတွင်းလမ်း၊
ရွှေပြည်သာမြို့၊ ရန်ကုန်။
ဖုန်း- ၀၉၅၀၁၆၆၆၃
ဖုန်း - ၆၁၁၆၂၂

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပိုမိသူများအကြောင်း

- စာအုပ်သည် အပျော်ဖတ်စာအုပ်၊ အသိပညာပေး စာအုပ်၊ အန္တရာယ်တစ်မျိုးမျိုးကို ကာကွယ်ပေးသော စာအုပ်ဟူ၍ သုံးမျိုးသုံးစား ခွဲထားနိုင်ပါသည်။
- အပျော်ဖတ်စာအုပ်ကို မဖတ်လျှင် မပျော်ရရုံသာ ရှိပါသည်။
- အသိပညာပေးစာအုပ်ကို မဖတ်လျှင် အသိပညာမတိုး ရုံသာ ရှိပါသည်။
- အန္တရာယ်တစ်မျိုးမျိုးကို ကာကွယ်ပေးသောစာအုပ်ကို မဖတ်ခဲ့လျှင်ကား ထိုအန္တရာယ်များ မိမိအပေါ် ကျ ရောက်ခဲ့လျှင် မိမိ၏ အကျိုးစီးပွားများကို ပျက်စီးစေ နိုင်ပါသည်။
- ဤစာအုပ်သည် လူ့လိမ်လူညာတို့၏ အန္တရာယ် အမျိုးမျိုးကို ကာကွယ်ပေးမည့် တကယ့်ဖြစ်ရပ်မှန် များကို ဖော်ပြထားသော စာအုပ်ဖြစ်ခြင်းကြောင့် ရသမျှအချိန်လှ၍ ဖတ်ရှုပါ။
- သူတစ်ပါးအား တစ်ဆင့်ဖောက်သည်ချ၍ လူ့လိမ်တို့ ၏ အန္တရာယ်မှ ကာကွယ်ပေးကြပါ။

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

မာတိကာ

| | | |
|-----|------------------------------------|-----|
| ၁။ | စာရေးသူမှစာဖတ်သူသို့ | ၅ |
| | (က မိုးလေဝသမှန်စေသော ကျင့်စဉ်လေးခု | |
| | (ခ မုသား၏ဆိုးကျိုးများ | |
| | (ဂ အဒိနှာဒါန၏ ဆိုးကျိုးများ | |
| ၂။ | အဘယ်ကြောင့် အလိမ်ခံကြရသနည်း | ၂၄ |
| ၃။ | မျက်မှန်ဈေးသည် ကိုလူလည် | ၂၅ |
| ၄။ | လိမ်မရလို့ ခိုးတာပါ | ၃၃ |
| ၅။ | ရင်နှင့်ရသော လိမ်လည်မှု | ၃၉ |
| ၆။ | သာသနာစော်ကား လူလိမ်များ | ၅၅ |
| ၇။ | ရင်နှင့်စရာ လိပ်အင်းကျေးရွာ | ၆၁ |
| ၈။ | လက်ပွားမြင့်ဦး | ၆၇ |
| ၉။ | ရွှေပွားပေးမည့် နတ်ကတော် | ၇၁ |
| ၁၀။ | စေတနာကယ်သော လိမ်လည်မှု | ၇၅ |
| ၁၁။ | သုံးပွင့်ဆိုင် | ၈၂ |
| ၁၂။ | ပွဲစားကို ဆွဲသွားခြင်း | ၈၇ |
| ၁၃။ | (ခေတ္တ)ဂျပန်များ သတိထား | ၉၂ |
| ၁၄။ | အချို့ဖမ်းခံရခြင်း | ၉၅ |
| ၁၅။ | သူတို့၏ ဉာဏ်ရည်ဉာဏ်သွေး | ၁၀၁ |
| ၁၆။ | စေတနာစော်ကားလူလိမ်များ (၁) | ၁၀၄ |
| ၁၇။ | စေတနာစော်ကားလူလိမ်များ (၂) | ၁၀၇ |
| ၁၈။ | မီးချောင်းပြင်သူများ သတိထား | ၁၁၀ |

| | | |
|-----|-------------------------------------|-----|
| ၁၉။ | ကော်ဖီတစ်ခွက် သုံးသောင်း | ၁၁၃ |
| ၂၀။ | ငွေသုံးသိန်းနှင့် အမေရေယာဉ် | ၁၁၇ |
| ၂၁။ | နှစ်လိမ်ခံထိသောမိသားနှစ်စု | ၁၂၀ |
| ၂၂။ | ကားနှစ်စီးနှင့်အလှူရှင် | ၁၂၇ |
| ၂၃။ | ဒကာတစ်ယောက် တဏှာပေါက်၍ | ၁၃၀ |
| ၂၄။ | နှစ်ဦးသဘောတူ အကောင်းကြိုက်ရာမှ | ၁၃၄ |
| ၂၅။ | ဖော်မြူလာနည်းသစ် | ၁၃၆ |
| ၂၆။ | နှစ်ဦးလုံးကို အထူးနှုန်းဖြင့် | ၁၄၁ |
| ၂၇။ | ပါရမီရှင်တို့အမြင် | ၁၄၄ |
| ၂၈။ | ကျောက်ခဲတစ်လုံးနှင့် သင်္ကန်းတစ်စုံ | ၁၅၀ |
| ၂၉။ | အစစ်နှင့်အတု မြင်အောင်ရှု | ၁၅၉ |
| ၃၀။ | ရေတစ်ပုံး သုံးထောင် | ၁၆၉ |
| ၃၁။ | လည်လွန်းတဲ့ဘီး ဈေးသင့် | ၁၇၃ |
| ၃၂။ | ဈေးသည်သတိ(၁) | ၁၇၆ |
| ၃၃။ | ဗိုလ်အောင်ဒင် ပြန်လာပြီ | ၁၈၁ |
| ၃၄။ | ဈေးသည်သတိ(၂) | ၁၈၅ |
| ၃၅။ | မိန်းမတို့ဉာဏ် | ၁၉၀ |
| ၃၆။ | အပလီတစ်သိန်း မမငြိမ်း | ၁၉၅ |
| ၃၇။ | အပလီန်းအနန္တ ခင်မမ | ၁၉၉ |
| ၃၈။ | သောကအခြေခံ ကလိမ်ဉာဏ် | ၁၉၄ |
| ၃၉။ | ပျားရည်ဝယ်လျှင် | ၂၀၇ |
| ၄၀။ | ဆရာတု၊ ဆရာယောင် သတိနှင့်ရှောင် | ၂၁၁ |
| ၄၁။ | အလိမ်ခံချင်သူများ (ဟောင်ကောင်) | ၂၂၀ |
| ၄၂။ | အလိမ်ခံချင်သူများ (မြန်မာပြည်) | ၂၂၅ |

စာရေးသူမှ စာဖတ်သူသို့

ငါးပါးသီလသည် ဝပြောသာယာရေးကို အထောက်အကူပြု မပြု။
စကြာဝဠာတိုက်ကြီးတစ်ခုလုံးကို အုပ်စိုးသော စကြာဝတေးမင်း
သည် ငါးပါးသီလတည်းဟူသော ဥပဒေတစ်မျိုးတည်းဖြင့် သတ္တလောက
ကြီးတစ်ခုလုံးအား ပစ္စုပ္ပန်၊ သံသရာနှစ်ဖြာလုံး သာယာချမ်းမြေ့အောင်
အုပ်ချုပ်ခဲ့ပုံကို ကြည့်ခြင်းအားဖြင့် ငါးပါးသီလသည် လူ့လောက ဝပြော
သာယာရေးကို အထောက်အကူပြုကြောင်း ထင်ရှားလှပါသည်။

တစ်နည်းအားဖြင့် စရိယာပိဋကလော ဂရုဓမ္မဇာတ်ကို ကြည့်
လိုက်လျှင်လည်း ငါးပါးသီလသည် လူ့လောကကြီးတစ်ခုလုံး သာယာဝ
ပြောရန် အရေးကြီးကြောင်း သိစေပါသည်။ ထိုဇာတ်အကျဉ်းချုပ်မှာ-
ကလိင်္ဂရာဇ်ပြည်တွင် မိုးခေါင်ရေရှား၍ သတ္တဝါများ သေကျေ
ပျက်စီးကြရသည်။ မိုးရွာစေကြောင်း လောကီနည်းလမ်းကောင်းများကို
များစွာ ပြုလုပ်ကြသော်လည်း မိုးက ရွာမလာ။ နောက်ဆုံးမျှော်လင့်ချက်
အနေဖြင့် ဓနုဿမင်း၊ မင်းပြုသော ဣန္ဒပတ္တနဂိုရ်ပြည်မှ ဆင်ဖြူတော်
ကို အလှူခံရန်သာရှိတော့သည်။

ဆင်ဖြူတော်ရှိသော တိုင်းပြည်သည် မိုးလေဝသကောင်းကာ
သာယာဝပြောသည်ဟု မင်းအဆက်ဆက် ယုံကြည်ယူဆလာခဲ့သော
ကြောင့်ပင်။ ယုံကြည်ကြမည်ဆိုလျှင်လည်း ယုံကြည်လောက်စရာပင်၊
ဆင်ဖြူတော်ရှိနေသော ဣန္ဒပတ္တနဂိုရ်ပြည်သည် မိုးလေဝသကောင်းသော
သာယာဝပြောလျက် ရှိနေသောကြောင့်ပင်။

ကရုဏာပြည့်ဝသော ဓနုဿမင်း၏ စေတနာကြောင့် ဆင်ဖြူ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တော်ကိုကား အလှူခံ၍ ရရှိခဲ့ကြပါသည်။ သို့သော် မိုးကားရွာမလာ၊
နောက်ဆုံး ပညာရှိများ၏ အကြံပေးချက်အရ ဣန္ဒပတ္တနုဒိုရ်ပြည်သူများ
ကျင့်သုံးသော ဂရုပြန်တမ်းကို ရအောင်ယူ၍ ကျင့်သုံးကြသောအခါကျမှ
မိုးလေဝသမှန်ကာ ပြန်လည်၍ သာယာဝပြောလာခဲ့ပါသည်။

မိုးလေဝသမှန်ကန်စေသော ဂရုဓမ္မပြန်တမ်း လေးချက်မှာ-

၁။ တိုင်းသူပြည်သားတို့သည် တစ်လ လေးသီတင်း အဋ္ဌင်္ဂဥပုသ်
ကို စောင့်ထိန်းခြင်း။

၂။ ငါးပါးသီလကို ခါးဝတ်ပုဆိုးကဲ့သို့ အမြဲတမ်းစောင့်ထိန်းခြင်း။

၃။ ရတနာသုံးပါးကို နေ့ ညမပြတ် ဝတ်တက် ဝတ်ကပ်ပြု၍
မေတ္တာမြဟ္မစိုရ်တရားကို အထူးပွားများခြင်း။

၄။ ဘိုးဘွားမိဘ၊ ဆရာသမားတို့ကိုလည်းကောင်း၊ အကျင့်သီလ
နှင့်ပြည့်စုံသော သူမြတ်တို့ကိုလည်းကောင်း မေတ္တာတရားတော်
နှင့်အညီ ရိုသေမြတ်နိုး၊ ရှိခိုးပူဇော်ခြင်းတို့ပင်။

ဤအချက်တို့ကို ထောက်၍ ငါးပါးသီလသည် လူ့လောက
သာယာဝပြောရေးကို ကြီးစွာ အထောက်အကူပြုကြောင်း မှတ်ယူရပါ
မည်။ ၎င်းငါးပါးသီလတို့တွင် လိမ်လည်လှည့်ဖြားခြင်း မုသာဝါဒကံသည်
အပြစ်ကြီး၊ မကြီး။

အပြစ်ကြီးသည်ဟုပင် ဆိုရပါမည်။ ထို့ကြောင့်လည်း မုသားပြော
သူများ ခံစားရမည့် အပြစ်များကို ဗုဒ္ဓက ယခုလို ဟောကြားထားပါ
သည်။

မုသားစကား၊ ပြောဆိုငြားမှု၊ စကားမဝီ

သွားမညီတည်း၊ ပုပ်ညှီပါးစပ်၊ ခြောက်ကပ်ကိုယ်ရေ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ဣန္ဒြေနောက်၊ ပုံယွင်းဖောက်၏၊ မရောက်သြစော၊
နှုတ်လျှာကြမ်းသော်၊ လျှပ်ပေါ်လောလီ၊ စိတ်မတည်သည်
ရှောင်ခါအပြန် အကျိုးတည်း။ ။

မုသားစကားပြောသူများသည် စကားမပီခြင်း၊ သွားမညီခြင်း၊
ပါးစပ်မှ ပုပ်ညှီသောအနံ့အမြဲထွက်နေခြင်း၊ ခန္ဓာကိုယ်ခြောက်ကပ်နေခြင်း၊
မျက်စိ၊ နား၊ နှာ၊ လျှာ၊ ကိုယ်၊ စိတ်ဟူသော ဣန္ဒြေခြောက်ပါး ဖောက်ပြန်
ပြောင်းလဲ မတည်ငြိမ်ခြင်း၊ သြဇာအာဏာမရှိခြင်း၊ နှုတ်လျှာ ကြမ်းတမ်း
ခြင်း၊ လျှပ်ပေါ်လောလီ စိတ်မတည်ခြင်းဟူသော ဆိုးကျိုးများကို ခံစား
ကြရပါမည်။

မုသားပြောခြင်းမှရှောင်ကျဉ်ပြန်လျှင် စကားပီခြင်း၊ သွားညီခြင်း
စသော ဆိုးကျိုး၏ဆန့်ကျင်ဘက် ကောင်းကျိုးများကို ခံစားရပါမည်။

ထို့ကြောင့်လည်း မြတ်ဗုဒ္ဓက သားတော်ရာဟုလာအား အောက်
ပါအတိုင်း သြဝါဒ ပေးတော်မူဖူးပါသည်။

ချစ်သား ရာဟုလာ၊ မုသားပြောသော သူသည် လောက၌
သူမလုပ်ရဲသော အကုသိုလ်ဟူ၍ မရှိတော့ချေ။ ထို့ကြောင့် သင်ချစ်သား
သည် မုသားဆိုလျှင် ရယ်ရွှင်စရာအဖြစ်တောင် မပြောမိပါစေနှင့်။

မြတ်ဗုဒ္ဓ ထိုကဲ့သို့ သြဝါဒပေးရလောက်အောင်ပင် မုသား၏အပြစ်
များကား များပြားစွာ။ မုသားပြောခြင်း၏ မူလဆိုးကျိုးများကို ဖော်ပြပြီး
နောက် အခြေအရံဆိုးကျိုးများကိုပါ သိစေခြင်းအကျိုးငှာ အဋ္ဌကနိပါတ်လာ
စေတီယဇာတ်ကို အကျဉ်းဖော်ပြပါဦးမည်။

ဘုရား၊ ပုထိုး၊ စေတီတော်တို့၌ ပန်းချီပုံလေးများကို လူတိုင်း
နီးပါးမြင်ဖူးနေကြသော်လည်း သင်ခန်းစာယူရမည့် ဇာတ်လမ်းအသားကို

ယောကျာ်း (ရွှေပြည်သာ)

သိသူနည်းပါးသောကြောင့် ယခုကဲ့သို့ တင်ပြခြင်း ဖြစ်ပါသည်။
ဇာတ်တော်အကျဉ်းချုပ်မှာ-

စေတီယတိုင်းတွင် ဥပဝရခေါ် စေတီယမင်း စိုးမိုးအုပ်ချုပ်နေ
သော အချိန်ပင်ဖြစ်ပါသည်။ ထိုမင်းတွင် သူတစ်ပါးထက်ထူးသော
တန်ခိုးလေးပါးကို ရရှိထားသည်။ ၎င်းတန်ခိုးများမှာ-

- ၁။ ကောင်းကင် ပျံနိုင်ခြင်း။
- ၂။ နတ်သားလေးယောက် စောင့်ရှောက်ခြင်း။
- ၃။ ကိုယ်မှ စန္ဒကူးနံ့မွှေးခြင်း။
- ၄။ ခံတွင်းမှ ကြာညိုနံ့မွှေးခြင်းတို့ ဖြစ်သည်။

တစ်ခါသော် ထိုစေတီယမင်း၏ ခမည်းတော်လက်ထက်က အမှု
ထမ်းခဲ့သော ပုရောဟိတ် ပုဏ္ဏားကြီးသည် အကျွတ်တရားရကာ တော
ထွက်ပြီး ရသေ့ပြုသွားလေသည်။ ထုံးတမ်းစဉ်လာအရ ဖခင်၏ရာထူးကို
သားကြီးဖြစ်သူသာ ဆက်ခံရမည်ဖြစ်ရာ စေတီယမင်းက ထိုသို့ အဖြစ်
မခံနိုင်။ သူနှင့်အတူ တက္ကသိုလ်တွင် ပညာအတူသင်ခဲ့သော ပုရောဟိတ်
ဟောင်းကြီး၏ ညီကိုသာ ပုရောဟိတ်ရာထူးကို ရစေချင်သည်။

ပုရောဟိတ်ဟောင်းကြီး၏ ညီကလည်း ထိုရာထူးကို မရ၊ အရ
ယူချင်သည်။ လောဘလွန်ကဲသူနှင့် ဆန္ဒာဂတိလိုက်သူတို့ ပူးပေါင်းမိရာ
မှ မုသားဟူသော ဝစီဒုစရိုက်တစ်မျိုးသည် လောက၌ ထင်ရှားပေါ်လာ
ပေတော့သည်။

စေတီယမင်းနှင့် ပုရောဟိတ်ဟောင်းကြီး ညီတို့ မုသားပြော
ပြီး ရာထူးလုရန် ကြံစည်နေချိန်မှာပင် တောထွက်သွားသော ပုရောဟိတ်
ဟောင်းကြီးမှာ တရားကျင့်ကြံ ကြိုးစားအားထုတ်မှုကြောင့် ဈာန်အဘိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ညာဉ်ရကာ ကောင်းကင်မှာပင် ပျံနိုင်လေပြီ။ စေတီယမင်း မုသားပြော
မည့်နေ့တွင်ကား နန်းတော်ကြီးတစ်ခုလုံး တိုင်းသူပြည်သားများနှင့် ပြည့်
ကျပ်နေလေပြီ။

စေတီယမင်း မုသားပြောမည့်အကြောင်းကို ကြိုသိထားသော
ပုရောဟိတ်ဟောင်း ရသေ့ကြီးသည် ကောင်းကင်ခရီးမှ ကြွလာကာ
ဝေဟင်မှာ မြေပြင်သဖွယ် တင်ပျဉ်ခွေထိုင်လျက် စေတီယမင်းကို စတင်
မေးမြန်းကာ ဆုံးမသြဝါဒ ပေးရှာပါသည်။ မုသားဆိုတာ ဘယ်လိုဟာ
လဲဟု သိချင်နေကြသော တိုင်းသူပြည်သားများလည်း မုသားအဓိပ္ပာယ်
ကို စတင် သိရလေပြီ။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး၊ အသင်သည် ငါ၏ညီကို ပုရောဟိတ်
ရာထူးပေးလိုမှုအတွက် မုသားပြောမယ်ဆိုတာ ဟုတ်
သလား။

(မင်း) ဟုတ်ပါတယ် အရှင်ရသေ့။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး၊ မုသားပြောခြင်းဆိုတာ အလွန်ဝန်လေး
လှပါတယ်၊ မုသားမပြောပါနှင့်။

(မင်း) သူငယ်ချင်းဖြစ်သူ ရာထူးရဖို့အတွက် မုသားပြောရပါ
လိမ့်မယ် အသင်ရသေ့၊ အသင်ရသေ့ဟာ ညီဖြစ်တယ်၊
ကျွန်ုပ်ရဲ့သူငယ်ချင်းဟာ အစ်ကို ဖြစ်တယ်။

ထိုကဲ့သို့ ပထမအကြိမ်မုသား ပြောလိုက်သည်နှင့် စေတီယမင်း
ရရှိထားသော တန်ခိုးလေးမျိုး ချက်ချင်း ပျောက်သွားပါတော့သည်။
ကောင်းကင်တွင် မပျံနိုင်တော့ဘဲ မြေပေါ်သို့ ကျသွားရသည်။ စောင့်နေ
သော နတ်သားလေးယောက်လည်း ကွယ်ပျောက်သွားသည်။ ကိုယ်မှမွှေး

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

နေသော စန္ဒကူးနဲ့သည် အိမ်သာနဲ့သို့ လည်းကောင်း၊ ခံတွင်းမှ မွေးနေ
သော ကြာညိုနဲ့သည် ကြက်ဥပုပ်နဲ့တို့လည်းကောင်း ချက်ချင်း ပြောင်
သွားတော့သည်။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး အမှန်ကိုပြင်၍ ပြောပါ။ ပျောက်သွား
သောတန်ခိုးများ ပြန်ပြီး ရလာပါလိမ့်မယ်။

ရသေ့ကြီးက ကရုဏာဖြင့် သတိပေးသော်လည်း စေတီယမင်း
ကား အမှန်ကို မဆင်ခြင်နိုင်တော့။

(မင်း) အသင်ရသေ့ ဘာပဲပြောပြော အကျွန်ုပ်စကားကို မပြင်
နိုင်ပါ။ အသင်ရသေ့ဟာ ညီ၊ ကျွန်ုပ်ရဲ့သူငယ်ချင်းဟာ
အစ်ကို ဒါကြောင့် ပုရောဟိတ်ရာထူးကို သင်သာလျှင်
ရလိုက်တယ်။

ထိုသို့ ဒုတိယအကြိမ် ပြောလိုက်သည်နှင့် မြေကြီးထက်ခြမ်း
အက်ကာ စေတီယမင်း၏ ခြေမျက်စိ မြုပ်သွားပါတော့သည်။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး အမှန်ကိုပြင်ပြောပါ မြေမျိုခြင်းဘေးမှ
လွတ်နိုင်ပါသေးတယ်။ မုသားပြောရင် မိုးလေဝသမမှန်
ဖြစ်တတ်ပါတယ်။

(မင်း) အသင်ရသေ့ ဘာပဲပြောပြော အသင်ရသေ့ဟာ ညီ၊
အကျွန်ုပ်ရဲ့ သူငယ်ချင်းဟာ အစ်ကိုဖြစ်တယ်။

တတိယအကြိမ် မုသားပြောလိုက်သည်နှင့် မြေကြီးက ဒူးဆစ်ထိ
မျိုပစ်လိုက်ပါသည်။

(ရသေ့) မင်းကြီး မုသားပြောသူများဟာ ဖြစ်လေရာဘဝမှာမြွေလို
လျှာနှစ်ခွနဲ့ ဖြစ်တတ်ပါတယ်။ အမှန်အတိုင်း ပြင်ပြောပါ။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

(မင်း) အသင်ရသောဟာ ညီ၊ အကျွန်ုပ်ရဲ့ သူငယ်ချင်းဟာ အစ်ကို ဖြစ်တယ်။

စတုတ္ထအကြိမ် မုသားပြောလိုက်သည်နှင့် မြေကြီးက ခါးထိ မျိုပစ်လိုက်ပါသည်။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး မုသားပြောသူများဟာ ဖြစ်လေရာဘဝ မှာ စကားထစ်သူသာ ဖြစ်တတ်ပါတယ်။ ဒါကြောင့် အမှန်ကို ပြင်ပြောပါ။

စေတီယမင်းကား နောက်မဆုတ်၊ ပဉ္စမအကြိမ်မြောက် မုသားကို ဆက်ပြောရာ မြေကြီးက ချက်ထိ မျိုပစ်လိုက်သည်။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး မုသားပြောသူများဟာ ဖြစ်လေရာဘဝ မှာ သမီးမိန်းကလေးချည်းသာ ရတတ်ပါတယ်။ ဒါကြောင့် အမှန်ကို ပြင်ပြောပါ။

စေတီယမင်းကား ရသေ့စကားကို မနာယူ၊ ဆဋ္ဌမအကြိမ် မြောက် မုသားကို ဆက်ပြောရာ မြေကြီးက သားမြတ်ထိ မျိုပစ်လိုက် ပါတော့သည်။

(ရသေ့) အသင်မင်းကြီး ယခုအကြိမ်ဟာ နောက်ဆုံး ဆုံးမခြင်း ပါ။ မုသားပြောသူများဟာ ရှားရှားပါးပါး သားယောက်ျား ကို ရရင်လည်း ကျေးဇူးကန်းတဲ့သားကိုသာ ရတတ် ပါတယ်။ ဒါကြောင့် မှန်ကန်တဲ့စကားကိုသာပြောပါ။

ရသေ့မြတ်က ဘယ်လိုပင် ဆုံးမသော်လည်း မလိုက်နာဘဲ မုသားကိုသာ ဆက်ပြောသော စေတီယမင်းမှာ အဝီစိငရဲသို့ မြေကိုခွဲကာ ကျရောက်သွားပါတော့သည်။ ဤနေရာ၌ စာဖတ်သူအနေဖြင့် စေတီယ

လတ္တံရှင် (ရွှေပြည်သာ)

မင်းဟာ တစ်စတစ်စ မြေမျိုနေမှန်းသိပါလျက် ဘာကြောင့် မုသားကို ဆက်ပြောနေရတာလဲဟူသော မေးခွန်းကို တွေးနေမိပါလိမ့်မည်။

အဖြေကား ပုရောဟိတ်ဟောင်း၏ညီက 'သင်မင်းကြီး မုသားပြောလျှင် ရသေ့က မြေမျိုသကဲ့သို့ထင်အောင် တန်ခိုးနှင့် လုပ်ပြလိမ့်မည်။ အဲဒီအခါ ကြောက်မသွားပါနှင့်' ဟု ကြိုတင်၍ ပြောထားသောကြောင့် ပင် လောဘသမား လူယုတ်မာ၏ စကားကို ယုံစားမိခြင်း။

ယုတ်မာဆိုးကောင်း၊ ကျင့်မကောင်းကို

မှားကြောင်းတစ်စုံ၊ သိလျှင်သိချင်း

စွန့်ပယ်လျင်းလော့၊ အတင်းယူစွဲ

ဖားမြွေခဲသို့၊ အမြဲမှတ်ထို

မစွန့်လိုက၊ ဤကိုယ်သုခ

နောင်တမရဘူး။ ။ ဟူသောမာယာဒေဝလင်္ကာနှင့်အညီ ရသေ့ပြောပြသဖြင့် မကောင်းမှန်းသိနေသော မုသားကို မစွန့်ဘဲ ဆက်လက် ကျင့်သုံးခြင်း။ ထို့ကြောင့် အဝိစိင်ရဲသို့ ကျခဲ့ရပေသည်။ ဖော်ပြပါအချက်တို့ကို ထောက်၍ သူတစ်ပါးဥစ္စာကို လိမ်လည်၍ ယူသူများသည် မုသာဝါဒကို ကျူးလွန်ရာရောက်ကြောင်း မှတ်ယူရပါမည်။

တစ်ဖန် နှုတ်ဖြင့် လိမ်ညာသည့်အပြင် ကိုယ်ဖြင့်လည်း သူတစ်ပါးဥစ္စာကို အရယူခြင်းကြောင့် အဒိန္နာဒါနကံကိုလည်း ကျူးလွန်ရာရောက်ပါသည်။ သူတစ်ပါးဥစ္စာ ခိုးယူသူတို့အဖြစ်ကို မုဒ္ဒက ယခုလိုဟောပြောထားပါသည်။

အဒိန္နဒါ၊ ခိုးမိပါမူ၊ ဥစ္စာနည်းမဲ့

ဆင်းရဲငတ်ဘိ၊ လိုရှိမရ၊ ဘောဂပျက်စီး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

ရေ၊ မီး၊ သူခိုး၊ မွေခံဆိုးနှင့် မင်းဆိုးအပြား
 ရန်မျိုးငါးကြောင့်၊ ပျက်ပြားဥစ္စာ၊ ပြစ်များစွာသည်
 ရှောင်ခါအပြန် အကျိုးတည်း။ ဟူသော လင်္ကာအရ သူတစ်ပါး
 ဥစ္စာခိုးယူသူသည် ဖြစ်လေရာဘဝတွင် ဥစ္စာနည်းပါးပြီး မွဲခြင်း၊ ဆင်းရဲ
 ပြီးငတ်ခြင်း၊ အလိုရှိတာ မရခြင်း၊ ရေ၊ မီး၊ မင်း၊ ခိုးသူ၊ အမွေဆိုးဟူ
 သော ရန်သူမျိုးငါးပါးကြောင့် ဥစ္စာစည်းစိမ်များ ပျက်စီးခြင်းဟူသော
 ဆိုးကျိုးတို့ကို ခံစားရမည်။ သူတစ်ပါးဥစ္စာကို တကယ်ခိုးယူခြင်းကို
 မဆိုထားနှင့် အပြောင်အပြက် ခိုးယူခြင်းကြောင့်ပင် ခံစားရသော ဆိုးကျိုး
 က မသေးလှပေ။ အောက်ဖော်ပြပါ ပေတဝတ္ထုလာ အမွေသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်း
 ဝတ္ထုကို သေချာစွာဖတ်ပြီး သင်ခန်းစာ ယူသင့်လှသည်။

အမွေသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်း

အမွေသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်းသည် သံသရာကို အယုံအကြည်မရှိသော
 ရုပ်ဝါဒီသမားတစ်ယောက်ပင်။ တစ်နေ့ တိုင်းခန်းလှည့်လည်ရင်း တိုက်
 ခန်းတစ်ခုပေါ်မှ အမျိုးသမီးတစ်ယောက်ကို မြင်မြင်ချင်း တပ်မက်စွဲလမ်း
 မိသဖြင့် မိဖုရားမြှောက်ရန် ကာမပိုင်ရှိ၊ မရှိ အမတ်တို့အား မေးခိုင်းရာ
 ကာမပိုင် သူဌေးရှိကြောင်း သိရသဖြင့် နန်းတော်သို့ လမ်းခုလတ်မှ
 ပြန်ခဲ့လေတော့သည်။

အမျိုးသမီးအပေါ် စွဲလမ်းသော ရာဂစီးက တရိုက်ရိုက်တောက်လောင်
 နေသဖြင့် သူ့မယားလိုချင် သူ့လင် လှံနဲ့ထိုးဟူသော စကားအတိုင်း
 ကာမပိုင်ဖြစ်သော သူဌေးကို အပါးတော်မြဲအဖြစ်ခေါ်၍ ခစားခိုင်းလိုက်
 သည်။ အပြစ်တွေ့လျှင် ချက်ချင်းသတ်ရန် အကြံနှင့်ခစားခိုင်းခြင်းပင်။

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

အတွေးအခေါ်ရှိသော သူဌေးက ဘုရင်၏သဘောထားကို ကြိုတင်ရိပ်မိ သဖြင့် အပြစ်မရှိအောင် သတိနှင့်ခစားရာ ဘုရင်မှာ သတိစရာအကြောင်း ရှာမရ ဖြစ်နေသည်။

နောက်ဆုံး သတိစရာအကြောင်းက ဘယ်လိုမှ ရှာလို့မရသောအခါ ဝေသာလီမြို့နှင့် အလှန် အလှမ်းဝေးသော ရေကန်တစ်ခုမှ ကြာနီ၊ ကြာညိုနှင့် ရေကန်ထဲမှ မြက်တို့ကို နေ့ချင်းအရောက်ယူလာရန် စေခိုင်းလိုက် တော့သည်။ မြို့တံခါးပိတ်မှ ရောက်လျှင် သေဒဏ်ချမှည့် အကြောင်းကို ပါ အမိန့်တော်မှတ်လိုက်သည်။

ထိုရေကန်မှာ ကြမ်းတမ်းသော ရက္ခိုသ် (ဘီလူးသဘောမျိုး) တစ်ကောင်စောင့်သည်။ သူဌေးအား ရက္ခိုသ်စားလို့သေရင်သေ၊ မသေဘဲ ဝေသာလီမြို့သို့ ပြန်လာလျှင်လည်း သေဒဏ်ချလို့ရအောင် မြို့တံခါးကို ယနေ့အဖို့ အစောကြီးပိတ်ထားရန် အမိန့်ထုတ်ပြီးလေပြီ။ အမိန့်တော်ချမှတ်ပြီးသည်နှင့် သူဌေးမှာ ယောက်ျားတို့လုံ့လ သေခါမှလျှော့ဟူသော စကားအတိုင်း ရိက္ခာတစ်နေ့စာ စီရင်၍ ရေကန်သို့ အရောက်သွားပါ တော့သည်။

ပရလောကသားတို့ ချစ်စေသောနည်း

ရေကန်သို့ ရောက်သည်နှင့် ကန်ကိုစောင့်သော ရက္ခိုသ်နှင့်တကွ ၃၁-ဘုံသားတို့အား မေတ္တာပို့ပြီးလျှင် ပါလာသော ရိက္ခာကို စားသောက်သည်။ အကြွင်းအကျန်များကို ရေကန်တွင်းရှိ ငါး၊ လိပ် စသည်တို့အား စွန့်ကြဲကျွေးမွေးပြီးလျှင် ရသမျှ ဒါနအဖို့ဘာဂကိုလည်း ၃၁-ဘုံသားတို့အား အမျှပေးလိုက်ပါသည်။ ပို့သသော မေတ္တာနှင့်ပေးဝေသော အမျှတို့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုမ္ပုဒ်အကြောင်း

ကို ရရှိသာစေရသော ရေကန်စောင့် ရက္ခိသ်မှာ သူဌေးအပေါ် မေတ္တာ သက်ဝင်ပြီးလျှင် လိုအပ်သော ကြာပန်းနှင့် မြေညက်တို့ကို လူယောင် ဖန်ဆင်းပြီး ကိုယ်တိုင်ပေးလိုက်ပါတော့သည်။ လိုအပ်သော ကြာပန်းနှင့် မြေညက်ကို ရသည်နှင့် ဝေသာလီမြို့သို့ ခရီးကြမ်းနှင့်ပါတော့သည်။

ဝေသာလီမြို့သို့ နေ့မဝင်မီ မြို့တံခါးပိတ်ချိန်မတန်မီ ရောက်ပါ၏။ သို့သော် မြို့တံခါးကား ပိတ်ပြီးနေလေပြီ။ ခဲလေသမျှ သဲရေကျဖြစ်သွား ရသော သူဌေးမှာ မြေပေါ်တွင် ရပ်တည်ခြင်းငှာ မစွမ်းသာတော့ဘဲ မြို့တံခါးရှေ့တွင် ပျော့ခွေကာ ပုံလျက် လဲကျသွားတော့သည်။ ခဏကြာ တော့ ဝေဝါးသွားသော အသိများကို ပြန်လည်စုစည်းကာ ပတ်ဝန်းကျင် ကို အကဲခတ်လိုက်သည်။

နေဝင်ဖို့အချိန် လိုသေးသည်မို့ အရပ်လေးမျက်နှာကို ထင်ရှားစွာ မြင်နေရသည်။ တစ်နေရာတွင် ကားစင်တင်ထားသော ရာဇဝတ်သား တစ်ယောက်ကို မြင်လိုက်ရသဖြင့် ရုတ်တရက် အကြံတစ်ခုရသွားကာ ကားစင်တင်ထားရာ ရာဇဝတ်သားဆီသို့ အပြေးတစ်ပိုင်းနှင့် သွားလိုက် မိသည်။ အနားရောက်မှ လာမိတာများ မှားသွားသလားဟု နောင်တရ မိသည်။

ရာဇဝတ်သားမှာ ရက်အတန်ကြာကတည်းက ကားစင်တင်ထား ဟန်ရှိသည်။ ကားစင်ခြေရင်း မြေပြင်၌လည်း အပုံလိုက်ဖြစ်ကာ ခြောက် နေသော သွေးတို့က အညှီနဲ့တဟောင်ဟောင်နှင့် ကြိုဆိုတုန်းပင်ရှိသေး သည်။ ရာဇဝတ်သား၏ လက်၊ ခြေတို့၌ သံနှင့်ရိုက်ထားသော ဒဏ်ရာ တို့မှ ယိုစီးကျလာသော သွေးစများပင် ဖြစ်ပါတော့သည်။ ဤမျှ ဒုက္ခ ဆင်းရဲခံစားနေရသော ပုဂ္ဂိုလ်တစ်ယောက်ထံ မိမိအခက်အခဲကို တင်ပြ

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ပြီး အကူအညီတောင်းဖို့ သင့်လျော်ပါမည်လော။

ကားစင်ခြေရင်းသို့ ရောက်သည်နှင့် သူ အသံပြုကြည့်လိုက်သည်။

‘ဒီမှာ တူမောင် သတိရော ရဲ့လား’

အသံကြားသည်နှင့် ရာဇဝတ်သားက ငိုက်စိုက်ကျနေသော ဦးခေါင်းကို အနည်းငယ် ပြန်မတ်ကာ သူဌေးအား လှမ်းကြည့်လိုက်သည်။ စကားသံက ထွက်မလာ။

‘ဖြစ်နိုင်ရင် တစ်ခု ကူညီပါလား၊ ကျွန်ုပ်ဟာ ဒီမြို့တံခါးဝကို နေမဝင်ခင် ရောက်လာတဲ့အကြောင်းကို အမွသတ္တရလိစ္ဆဝီဘုရင်ထံမှာ သက်သေခံပေးပါ။ ဒါမှ ကျွန်ုပ် အသက်ချမ်းသာရာ ရမှာပါ’

ရာဇဝတ်သားထံမှ တိုးလျှိုးပြီး အားတင်း၍ ပြောလိုက်သော လေသံ အချို့ထွက်လာသည်။

‘မဖြစ်နိုင်ဘူး ထင်ပါတယ်၊ ကျုပ်ကိုလည်း ကားစင်တင်ပြီး အစာ ရေစာ ဖြတ်ထားတာ တော်တော်ကြာပြီ၊ ကျုပ် ဘာကြောင့် မသေသေး တယ် မသိဘူး၊ သေဖို့ကတော့ နီးပါပြီ။ တော်ကြာ ခင်ဗျားကို သက်သေ ခံဖို့ ကတိပေးပြီးမှ ကျုပ်သေသွားခဲ့ရင် မကောင်းဘူးဗျာ’

မျှော်လင့်ချက်အလင်းရောင် ပျောက်သွားသော သူဌေး၏ဦးခေါင်း မှာ ငိုက်စိုက်ကျသွားတော့သည်။ အတန်ငယ်ကြာသည်အထိ နှစ်ယောက် သားတွေဝေနေကြရာ နေမင်းသည်ပင် အနောက်ဂေါယာစွန်းသို့ ဝင်သွား လေပြီ။ သူဌေးမှာ ကားစင်ခြေရင်းသို့ ခြေပစ်လက်ပစ် ထိုင်ချလိုက်ရင်း နောက်တစ်နေ့ ညနေတွင် ဤနေရာနားမှာပင် ကားစင်တစ်ခု တိုးလာမည် ၏အဖြစ်ကို မျက်စိထဲတွင် တရေးရေး မြင်ယောင်လာသည်။

သဗ္ဗဘာယန္တိမစ္စုနော (အရိယာပုဂ္ဂိုလ်များမှတစ်ပါး ကျန်သော)

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုများအကြောင်း

သတ္တဝါမှန်သမျှတို့သည် သေခြင်းမှ ကြောက်လန့်ကြသည့်ဟူသော ဒေသနာအတိုင်း နောက်တစ်နေ့တိုးလာသည့် ကားစင်ထက်မှ ရာဇဝတ် သားမှာ မိမိကိုယ်တိုင် ဖြစ်နေမည့်အဖြစ်ကို တွေးမိသောအခါ၌ကား ကြီးမားအားကောင်းလှသော ကြောက်ရွံ့စိတ်ကြောင့် တစ်ကိုယ်လုံးမှာ တဆတ်ဆတ်ပင် တုန်လှုပ်သွားပါတော့သည်။

‘အဆွေ သင့်ကို သက်သေခံပေးနိုင်မယ့် ပုဂ္ဂိုလ်ကို အကျွန်ုပ်သတိ ရသွားပြီ၊ ဟောဟို ကောင်းကင်က လာနေတဲ့ပုဂ္ဂိုလ်ဟာ အသင့်ကို သက်သေခံပေးမယ့် ပုဂ္ဂိုလ်ပါပဲ’

ရုတ်တရက် ကြားလိုက်ရသော ရာဇဝတ်သား၏ စကားအဆုံးတွင် သူဌေး၏မျက်လုံးတို့က ကောင်းကင်သို့ မော့ကြည့်ပြီးသား ဖြစ်သွား သည်။ လင်းလက်ဖြူဝင်းနေသော အရာဝတ္ထုကြီးတစ်ခု ကောင်းကင်မှ တဖြည်းဖြည်း နိမ့်ဆင်းလာသည်ကို တွေ့လိုက်ရပါတော့သည်။ ဝမ်းသာ အားရ ဟစ်ကြွေးလိုက်သော သူဌေး၏အသံက ပတ်ဝန်းကျင်တစ်ခုလုံး ပဲ့တင်ဟည်းသွားပါတော့သည်။

‘အမွသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်း ငါ့ကို မတရားသတ်လို့ မရတော့ဘူးဟေ့’



နောက်တစ်နေ့နံနက် ညီလာခံကျင်းပရာ နန်းရင်ပြင်မှာ သူဌေးကို တွေ့လိုက်ရတယ်ဆိုရင်ပဲ အမွသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်းက-

‘ပေးအပ်လိုက်တဲ့ တာဝန်ကို ကျေပွန်စွာ မထမ်းဆောင်နိုင်တဲ့ မောင်မင်းကို သေဒဏ်ချမှတ်ရတော့မယ်၊ ဘာများ လျှောက်တင်စရာ ရှိသေးသလဲ’

ဇေယျာရင်း (ဣပြည်သာ)

‘အရှင်မင်းကြီး ပေးအပ်သော တာဝန်ကို ကျေပွန်စွာ ထမ်းဆောင်နိုင်ခဲ့ပါတယ်။ နေမဝင်မိမှာလည်း မြို့ကို အရောက်ပြန်နိုင်ခဲ့ပါတယ်။ ကျွန်တော်မျိုးကြီး နေမဝင်မီ နန်းမြို့ရိုးကို ရောက်ကြောင်း သက်သေသာခက အထောက်အထားများ ပြနိုင်ပါတယ်။ ရရှိလာသော ကြာပန်းနှင့် မြေညက်များကိုလည်း ယခု ဆက်သပါတယ်’

‘ကိုင်း... မောင်မင်းရဲ့ သက်သေများကို ယခုပင် ခေါ်ထုတ်ချေလော့’

‘မှန်ပါ။ ကျွန်တော်မျိုး သက်သေသည် လူမဟုတ်တဲ့အတွက် အရှင်မင်းကြီးထံကို ခေါ်လို့မရနိုင်ပါ။ အရှင်မင်းကြီးကသာလျှင် သွားတွေ့ဖို့ ဖြစ်နိုင်ပါတယ်’

‘လူမဟုတ်ဘူးဆိုတော့ တိရစ္ဆာန်လား’

‘တိရစ္ဆာန်လည်း မဟုတ်ကြောင်းပါ’

‘ဟေ... လူနဲ့ တိရစ္ဆာန်မှတစ်ပါး အခြားသတ္တဝါဆိုတာ ရှိသေးသလား မောင်မင်း’

‘အရှင်မင်းကြီး ကိုယ်တိုင်တွေ့တဲ့အခါ မေးမြန်းစုံစမ်းတော်မူပါ’
အမှောင်ထုက တစ်လောကလုံးကို တဖြည်းဖြည်းချင်း ဝါးမျိုလာသည်။ ရင်မော့ပြီး စိတ်မရှည်စရာ အကောင်းဆုံးသော အလုပ်သည်ကား တစ်စုံတစ်ယောက်ကို စောင့်ရသောအလုပ်ဖြစ်ပါ၏။ အရပ်လေးမျက်နှာကို ကျိုးကန်းတောင်းမှောက် ကြည့်နေသော အမ္မသက္ကရုလိစ္ဆဝိမင်းက ဘယ်လိုလဲဟူသော အဓိပ္ပာယ်မျက်စိဖြင့် သူဌေးအား လှမ်းကြည့်လိုက်သည်။

‘အရှင်မင်းကြီး ကျွန်တော်မျိုး သက်သေသည် အရပ်လေးမျက်နှာ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

မှ လာမည်မဟုတ်ဘဲ အထက်ကောင်းကင်က လာမည်ဖြစ်သောကြောင့် ကောင်းကင်ကိုသာ ရှုစားပြီး စောင့်မျှော်ရန် ဖြစ်ပါသည်ဘုရား

သူဌေး၏စကားအဆုံး၌ အရပ်လေးမျက်နှာသို့ လှည့်ပတ်ရောက်နေကြသော အဗ္ဗသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်း၏ မျက်လုံးအစုံတို့သည် ကောင်းကင်ပြင်သို့ အပြေးအလွှား ရောက်သွားကြပြန်သည်။

ညဉ့်သန်းခေါင်ယံအချိန်သည်ကား သတ္တလောကကြီးတစ်ခုလုံးကို အမှောင်ထု အကြီးစိုးဆုံးသောအခါနှင့် အတိတ်ဆိတ်ဆုံးသောအခါပင် ဖြစ်လေသည်။ သို့သော် ယခုကား ဆန့်ကျင်ဘက် ဖြစ်ခဲ့လေပြီ။ ကောင်းကင်မှ ဖြာဆင်းလာသော အလင်းထူထည်ကြီးက မြို့ပြင်တစ်ခုလုံးကို နေ့ခင်းကဲ့သို့ လင်းချင်းသွားစေခဲ့၏။ မွှေးပျံ့သင်းကြိုင်သော ရနံ့တို့ကလည်း သတ္တလောကကြီးတစ်ခုလုံးကို နံ့သာရေစိုများ ရွာသွန်းဖြိုးလိုက်သကဲ့သို့ လှိုင်းထသွားစေခဲ့သည်။

ဖြူဖွေးဝင်းလက်နေသော ဝိုင်းဝိုင်းစက်စက် အရာကြီးတစ်ခု ကောင်းကင်မှ တဖြည်းဖြည်း နိမ့်ဆင်းလာသည်ကို မြင်လိုက်ရသော အဗ္ဗသက္ကရလိစ္ဆဝီမင်းမှာ အံ့ဩလွန်းမက အံ့ဩလှသဖြင့် ပါးစပ်အဟောင်းသားဖြင့် ကျောက်ရုပ်တမျှ တဒင်္ဂါငြိမ်သက်၍ သွားပါတော့သည်။ လူနှင့် တိရစ္ဆာန်မှတစ်ပါး အခြားသော ပုဂ္ဂိုလ်သတ္တဝါမရှိဟူသော သူ၏အယူဝါဒ ပြိုပျက်ခြင်း၏ နိဒါန်းအစပင်။

ကောင်းကင်မှ တဖြည်းဖြည်း နိမ့်ဆင်းလာသော အရာကြီးကို မြေပြင်ရောက်မှပင် အသေအချာ မြင်ကြရသည်။ ဖြူဖွေးဆွတ်နေသော နတ်မြင်းပျံကြီးနှင့် အဝတ်အစားမပါသော ယောက်ျားပျိုတစ်ယောက်ကို တွေ့ကြရသည်။ ထိုနတ်မြင်းပျံနှင့် ယောက်ျားပျိုသည် လွန်ခဲ့သော ရက်

ဗေဒနာရှင် (ဣန္ဒြေဉာဏ်)

အတန်ကြာက အဲဒါပြတ်သေရန် ကားစင်တင်ထားသော ရာဇဝတ်သား အထံသို့ တရွေ့ရွေ့လျှောက်သွားသဖြင့် အမွသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်းနှင့် သူဌေး တို့ကလည်း နောက်မှ အသာအယာလိုက်သွားကြသည်။

ရာဇဝတ်သားကို ပြောလိုက်သော ပုဂ္ဂိုလ်ထူး၏ စကားသံကို ကြားလိုက်ရသည်နှင့် အမွသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်း၏ အံ့ဩမှုတို့က အထွတ်အထိပ်သို့ ရောက်သွားသည်။ ကြားလိုက်ရသော စကားသံများက-

‘တူတော်မောင်မှာ အဒိန္နဒါနကံနဲ့တကွ မကောင်းတဲ့ အကုသိုလ် ကံတွေသိပ်များတယ်။ ကုသိုလ်ကံကျတော့ မရှိသလောက်ပဲ။ အဲဒါကြောင့် တူတော်မောင်သေရင် ဧကန်မှချ ငရဲကို ကျနိုင်တယ်။ ငရဲဆိုတာလည်း အင်မတန် ဆင်းရဲဒုက္ခများတယ်။ တူတော်မောင် အသက်မသေအောင် အားတင်းထားပါ’

ရာဇဝတ်သားကို အားပေးစကား ပြောကြားနေခြင်းပင်။

ပုဂ္ဂိုလ်ထူးကြီးအနားသို့ ရောက်သည်နှင့် အမွသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်းမှာ သူဌေးနှင့် သူ၏ ကိုယ်ရေးကိုယ်တာ ပြဿနာကို မမေးမိတော့ဘဲ ပုဂ္ဂိုလ် ထူးကြီး၏ ဘဝဖြစ်ရပ်များက တရစပ် မေးမြန်းနေပါတော့သည်။ ရှောင် စရာ၊ ဆောင်စရာ စုံလင်စွာပါသဖြင့် အမွသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်းနှင့် ပုဂ္ဂိုလ် ထူးကြီး၏ အမေး၊ အဖြေများကို စုံလင်စွာ ဖော်ပြအပ်ပါသည်။

‘ပုဂ္ဂိုလ်ထူးကြီး အသင့်ကို အကျွန်ုပ်တို့ ဘယ်လိုသိမှတ်ရပါမလဲ’

‘အပါယ်လေးဘုံထဲမှာပါတဲ့ ဝေမာနိကပြိတ္တာလို့ သိမှတ်ပါ’

‘ကားစင်တင်ထားတဲ့ ရာဇဝတ်သားနဲ့ အသင့်ရဲ့အကြောင်းဆက် စပ်မှုကို သိပါရစေ’

‘ကျွန်ုပ်ရော၊ ရာဇဝတ်သားရော အသင်မင်းကြီးရဲ့ ဝေသာလီမြို့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

မှာနေကြတဲ့ မြို့သားတွေပါ။ ကျွန်ုပ်ရဲ့တူ တော်ပါတယ်။ အပေါင်းအသင်း မှားပြီး သောက်စားမူးယစ်တဲ့ သူခိုးဘဝ ရောက်ရပါတယ်။ တစ်နေ့ ခိုးရာပါ ပစ္စည်းတွေကို ကျွန်ုပ်မသိအောင် အိမ်ပေါ်မှာ လာတက်ထားတဲ့ နေ့မှာပဲ ကျွန်ုပ်က ချက်ချင်းသေဒဏ် အပေးခံရပြီး တူတော်မောင်ကတော့ အခုမြင်တဲ့အတိုင်း သေမယ့်အထိ အစာရေစာဖြတ်ပြီး ကားစင်တင်ထား ခံရပါတယ်’

‘အသင်ဟာ ပြိတ္တာဖြစ်လျက်သားနဲ့ ဘာကြောင့် နတ်မြင်းပျံကြီး ကို အပိုင်စားရပါသလဲ’

‘ဪ... အဲဒါက ကျွန်ုပ်ဟာ လူ့ဘဝတုန်းက အိမ်ရှေ့မှာ မိုးတွင်းရောက်ရင် ချိုင့်တစ်ခုဟာ ရေဝင်ပြီး ရွံ့ဗွက်မပြတ်ရှိပါတယ်။ ချိုင့်က ခြေတစ်လှမ်းစာကျော်ကျော်ရှိနေတော့ ကျော်ဖြတ်လည်း မသွားနိုင် ကြတော့ ရွံ့ဗွက်ထဲကို ဆင်းသွားကြရတော့ ခရီးသွားတွေဟာ အဲဒီမှာ ရောက်ရင် ရွံ့ဗွက်တွေနဲ့ပေရေကုန်ပါတယ်။ ဒါနဲ့ပဲ ကျွန်ုပ်က နွားခေါင်း ရိုးတစ်ခုရှာပြီး ချိုင့်အလယ်မှာ ချပေးလိုက်တော့ နွားခေါင်းရိုးပေါ်နင်း ပြီး သွားရလို့ ခရီးသွားတွေ ရွံ့ဗွက်မပေတော့ဘူးပေါ့။ အဲဒီ မဖြစ်စလောက် ခြေတစ်လှမ်းတံတားခင်းတဲ့ ကုသိုလ်လေးကြောင့် ဟောဒီနတ်မြင်းပျံကြီး ကို ပိုင်ဆိုင်ရတာပါ’

‘အသင် လာခါနီးမှာ မြို့ပြင်တစ်ခုလုံး လင်းထိန်ပြီး မွှေးကြိုင်သွား ပါတယ်။ အဲဒါအတိတ်က ဘယ်လို ကုသိုလ်ကံကြောင့်လည်းဆိုတာ သိပါရစေ’

‘ကိုယ်ရောင်ကိုယ်ဝါ လင်းထိန်တောက်ပခြင်းရဲ့ အကြောင်းက တော့ အမျက်ဒေါသ မထွက်ခြင်း၊ အမြဲ ကြည်လင်သော စိတ်ရှိခြင်း။

ယောဂင် (ရွှေပြည်သာ)

နူးညံ့ပျော့ပျောင်းသောစကားနဲ့ လူတို့ကို ချဉ်းကပ်ပေါင်းသင်းခြင်းတို့ ကြောင့်ပါပဲ။ တရားရှိတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်များကို ချဉ်းကပ်ပြီး လေးစားကြည်ညို တဲ့စိတ် ရှိတာကြောင့် ကိုယ်ခန္ဓာက ရနံ့မွှေးကြိုင်ခြင်းဖြစ်ပါတယ်။

‘နောက်ဆုံး တစ်ခုမေးပါရစေ၊ အသင့်ခန္ဓာကိုယ်မှာ ဘာကြောင့် အဝတ်တန်ဆာ မရှိရပါသလဲ’

‘ကျွန်ုပ် လူ့ဘဝတုန်းက မိတ်ဆွေများနဲ့အတူ မြစ်ထဲမှာ ရေချိုး ရင်း ကျွန်ုပ်က အရင်ပြီးနှင့်တော့ မိတ်ဆွေများရဲ့ အဝတ်တွေကို တစ်နေရာ မှာယူပြီး ဝှက်ထားလိုက်ပါတယ်။ စချင်နောက်ချင်နေတဲ့အနေနဲ့ ဝှက်ထား လိုက်တာပါ။ ရေချိုးပြီးလို့ အဝတ်အစားတွေ မတွေ့တာနဲ့ ဟိုပြေး၊ ဒီ ပြေးဖြစ်နေတဲ့ မိတ်ဆွေတွေကိုကြည့်ပြီး သဘောကျစွာ ရယ်ခဲ့ပါတယ်။ အဲဒီ မဖြစ်စလောက် အကုသိုလ်ကံလေးကြောင့် ယခုလို အဝတ်အစား မရှိတဲ့ ဘဝ ရောက်ရတာပါ’

ဝေမာနိကပြိတ္တာကြီး၏ လက်တွေ့ဖြစ်ရပ်များကို သိလိုက်ရသော အဓမ္မသက္ကရုလိစ္ဆဝီမင်းကြီးမှာ သံဝေဂဉာဏ်များရကာ သူဌေးလင်မယား ကိုလည်း အပြစ်မရှာတော့ဘဲ အေးအေးချမ်းချမ်း ပြန်၍နေစေသည်။ သီလရှိသော ရဟန်းသံဃာများကို အဝတ်သင်္ကန်းလှူကာ အမျှပေးသဖြင့် ပြိတ္တာကြီးမှာလည်း အဝတ်အစားများ ရသွားခဲ့သည်။ ရာဇဝတ်သားကို လည်း လွတ်ငြိမ်းချမ်းသာခွင့်ပေးလိုက်ရာ ပစ္စိမဘဝိကဖြစ်သော ရာဇဝတ် သားကလည်း ရဟန်းပြုကာ တရားအားထုတ်သဖြင့် ရဟန္တာ ဖြစ်သွား ခဲ့သည်။

(မှတ်ချက်။ ။ ပစ္စိမဘဝိကဆိုသည်မှာ ယခုဘဝ ဧကန်မုချ ရဟန္တာဖြစ်ရမည့် ပုဂ္ဂိုလ်ဟု ဆိုလိုသည်)

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

သံသရာကို မယုံကြည်သော အဗ္ဗသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်းကြီးသည် ဝေမာနိကပြိတ္တာကြီးကို သင်ခန်းစာယူကာ တစ်သက်ပတ်လုံး ဒါန၊ သီလ၊ ဘာဝနာဖြင့် မွေ့လျော်မသာ သူတော်ကောင်းကြီး ဖြစ်သွားခဲ့ရပါသည်။ လိမ်ညာနိုးငှက်သူများလည်း အဗ္ဗသတ္တရလိစ္ဆဝီမင်းကြီးကဲ့သို့ သင်ခန်းစာယူကာ သူတော်ကောင်းကြီးများ ဖြစ်ကြပါစေဟု ဆုတောင်းလျက်။

စာဖတ်သူအားလုံး စိတ်ချမ်းသာ ကိုယ်ကျန်းမာကြပါစေ။
သီဒန္တေဝဇေစိတ္တာ
သီလာ မဟာဝခုဒ္ဒကာ
ပတန္နာခုဒ္ဒကေနေဝ
အပါယ်ပါပ ကမ္မုနာ။

ရှေ့ချလိုက်လျှင် ကျောက်ခဲကြီးသာမက ကျောက်ခဲလေးပါ နှစ်မြှုပ်သည်။ ထို့အတူ အကုသိုလ်ကံ အကြီးကြီးမှမဟုတ်၊ အကုသိုလ်ကံအသေးလေးသည်လည်း အပါယ်လေးပါးကို ဆွဲချနိုင်သည်ဟု မှတ်ယူရမည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)
မန္တလေးကျောင်းတိုက်၊ (၆)ရပ်ကွက်
ရွှေပြည်သာမြို့၊ ရန်ကုန်။

ဤအကြောင်းကို သိရှိရန်အတွက် သူတို့သည် အကြောင်းအရာများကို သေချာစွာ စိစစ်ကြည့်ရှုရမည်။ အကြောင်းအရာများကို သေချာစွာ စိစစ်ကြည့်ရှုရမည်။ အကြောင်းအရာများကို သေချာစွာ စိစစ်ကြည့်ရှုရမည်။

အဘယ့်ကြောင့် အလိမ်ခံကြရသနည်း

သနားတတ်လွန်း အားကြီးသောကြောင့်လည်းကောင်း၊ လောဘကြီးလွန်းအားကြီးသောကြောင့်လည်းကောင်း ဤအကြောင်းနှစ်ခုကြောင့် များသောအားဖြင့် သူတစ်ပါး၏ အလိမ်အညာကို ခံကြရပါသည်။ အလိမ်အညာခံကြရပြီဆိုလျှင်လည်း မိမိအကြောင်း သူတစ်ပါးမသိစေချင်သော ဆန္ဒကြောင့် ပြန်လည်ပြီး ပြောမပြတတ်ကြပေ။

ထိုကဲ့သို့ မရှက်သင့်တာ ရှက်နေကြသောကြောင့်ပင် တခြားသော သူများမှာ မိမိကဲ့သို့ပင် ဆက်လက်၍ အလိမ်ခံကြရသည်။ သူတစ်ပါးကို မိမိကဲ့သို့ အလိမ်ခံစေချင်လျှင် မိမိအလိမ်ခံရသော အကြောင်းများကို သူတစ်ပါးအား ရင်ဖွင့်ပြသင့်ပါသည်။ ယခုလည်း စာရေးသူ၏ လက်တွေ့အလိမ်ခံရသော အကြောင်းများကို ဦးစွာ တင်ပြပါမည်။



မျက်မှန်ဈေးသည် ကိုလှလည်

၁၉၅၅-ခုနှစ်၊ ၅-လပိုင်းလောက်ခန့်က ထင်ပါသည်။ အသက် ၂၅-နှစ်ခန့်ပတ်ဝန်းကျင်ရှိသော ကုလားလူငယ်လေးနှစ်ယောက် အိတ်တစ်လုံးကိုယ်စီဖြင့် ကျောင်းထဲသို့ ဝင်လာကြသည်။ နေ့၃-နာရီခန့်ဆိုတော့ ကျောင်းရှိသံဃာများ တရားထိုင်ပြီးစအချိန်။

‘ဒါယကာလေးတွေ ဘာကိစ္စပါလိမ့်’

တပည့်တော်တို့ ရွှေဘုံသာလမ်း မျက်မှန်ဆိုင်ကပါဘုရား၊ ဆရာတော်တို့ မျက်မှန်အလိုရှိရင် နေကာ၊ ပါဝါ မျက်မှန်မျိုးစုံကို အခမဲ့စမ်းသပ်ပြီး ဈေးချိုချိန်၊ ရောင်းပေးပါတယ် ဘုရား’

မျက်မှန်သည်၏ စကားဆုံးသည်နှင့် ကျောင်းမှ ဦးပွင်းကြီး ဦးစာနေယျက ချက်ချင်း ထပြောလိုက်သည်။

‘ဘုန်းကြီး အဲဒီလို လိုက်ရောင်းတဲ့ မျက်မှန်သည်တွေ လိမ်တာများတယ်၊ ဖျာပုံက တပည့်တော်ရဲ့ ဒါယကာမတစ်ဦးလည်း အခုလိုပဲ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ရန်ကုန် မဂိုလမ်းက မျက်မှန်သည်ဆိုပြီး ပါဝါမျက်မှန်ရောင်းသွားတာ အခုတော့ မျက်စိက ပိုပိုပြီး မွဲလာလို့ မျက်မှန်ကို ချွတ်ထားရတယ်။
ဦးစာနေယျ၏စကားကို မျက်မှန်သည်ကုလားက ချက်ချင်း ကာကွယ်လိုက်သည်။

‘တကယ်ကျတော့ ဘယ်သူ့စကားမှ ရမ်းပြီး ယုံစရာမလိုပါဘူး ဘုရား၊ မိမိကိုယ်ပိုင်ဉာဏ်နဲ့ ဆန်းစစ်ပြီးမှ လက်ခံတာ အကောင်းဆုံးပါ ဘုရား၊ တပည့်တော်တို့မှာ မျက်စိကို ပါဝါဘယ်လောက် ထည့်ပေးရမယ် ဆိုတာ တိုင်းတာတဲ့ ကိရိယာတန်ဆာပလားတွေ အကုန်ပါပါတယ်၊ ပါဝါ မျက်မှန်တစ်လက်ကို ကိုယ်ရောင်းရပြီးရောဆိုတဲ့ သဘောနဲ့ ဝယ်သူဒုက္ခ ရောက်အောင် မရောင်းချပါဘူး ဘုရား၊ ခု ဆရာတော်ရဲ့ မျက်စိကို ဘယ်လိုမျက်မှန်မျိုး တပ်သင့်တယ်ဆိုတာ လက်တွေ့စမ်းသပ်ပေးပါမယ် ဘုရား’

ကုလားလေးက ချက်ချင်းပင် စာရေးသူကို ထိုင်ခုံပေါ်တွင် ထိုင် စေကာ အိတ်ထဲမှ ပါလာသော မျက်စိစမ်းသပ်သော ကိရိယာများဖြင့် စမ်းသပ်ပေးပါတော့သည်။ ရည်မှန်သော မျက်နှာ၊ ချိုသာအေးမြ သဘာဝ ကျသော ကုလားလေး၏ စကားများကြောင့် စေတနာဖြင့် သတိပေးသော ဦးစာနေယျ၏ စကားများကိုပင် သူတစ်ပါးကို အသားလွတ်စော်ကားသော စကားများဟု အထင်ရောက်သွားစေသည်။

စမ်းသပ်ပြီးသည်နှင့် -

‘ဆရာတော် ဇက်ကြော မကြာခဏတက်တယ် မဟုတ်လား’

‘အင်း... ဟုတ်တယ်၊ စာကြည့် စာရေးများသွားရင် ဇက်ကြော တက်တာပဲ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

‘အဲဒါဆိုရင် ဆေးမျက်မှန်တပ်တာ အကောင်းဆုံးပဲဘုရား’

သူ့စကားဆုံးသည်နှင့် အတူပါလောသော ကုလားလေးက မျက်မှန် ကိုင်းမျိုးစုံကို ထုတ်ပြပါသည်။ ဂျာမနီက လာသည်ဟုပြောသော ကိုင်းက ငါးရာ၊ မှန်က နှစ်ရာငါးဆယ် စုစုပေါင်း ခုနစ်ရာငါးဆယ်တန်သော မျက်မှန်တစ်လက် အရောင်းဖြစ်သွားကြသည်။ ကိုင်းထဲတွင် မှန်တပ်ရန် မှန်သွေးနေချိန်တွင် စာရေးသူစိတ်ထဲ မတင်မကျဖြစ်နေသော အချက် ကလေးကို နှုတ်က ဖွင့်ပြောလိုက်သည်။

‘ဒါနဲ့ ဒကာလေးတို့ မျက်မှန်က မြို့ထဲက ဆိုင်တွေနဲ့စာရင် ဈေးအများကြီး ကြီးနေပါပြီ၊ ဒကာလေးတို့နေတဲ့ နေရာလည်း ဦးပဉ္စင်း တို့က မသိဘူးဆိုတော့ ဘယ်လိုလုပ်မလဲ’

‘မစိုးရိမ်ပါနဲ့၊ ဘုရားတပည့်တော် ၁၅-ရက်တစ်ကြိမ်လောက် ရွှေပြည်သာကို ရောက်နေတာပါ၊ စတုဘုမ္မိကကျောင်းတို့၊ ထန်းတစ်ပင် ကျောင်းတို့က ဆရာတော်တွေလည်း တပည့်တော်ဆီမှာပဲ မျက်မှန်လုပ် ထားကြတာပါ’

‘ဒကာလေးလည်း အဲသလို ပြန်လာမယ်လို့ပြောတော့ ငယ်ငယ်က ဖတ်ဖူးတဲ့ ပုံပြင်လေးတစ်ပုဒ်ကို သွားအမှတ်ရတယ်၊ စိတ်တော့ မဆိုးနဲ့ နော်၊ မှတ်သားစရာကောင်းတာနဲ့ ပြောပြချင်လို့ပါ’

‘ပြောပြပါဘုရား၊ ဆရာတော်ကိုတွေ့ပြီး စကားစပြောကတည်းက စာပေဗဟုသုတစုံမယ့် ပုဂ္ဂိုလ်ဆိုတာ ကြုံပြီးသိနေပါတယ်ဘုရား’

မြောက်လုံးတစ်လုံးကတော့ စတင် ပစ်သွင်းလိုက်ချေပြီ။

‘ဒီလိုဗျ၊ နိုင်ငံတစ်နိုင်ငံမှာ မြင်းသိပ်ဝါသနာပါတဲ့ ဘုရင်ကြီး တစ်ယောက်ရှိတယ်၊ တစ်နေ့တော့ တခြားနိုင်ငံတစ်ခုက မြင်းကုန်သည်

ယောဂျင် (ရွှေပြည်သာ)

တွေ ဘုရင်ကြီးဆီကို အစစားဝင်လာတယ်။ အရှင်မင်းကြီး ကျွန်တော်မျိုး တို့ နိုင်ငံမှာ ရာနဲ့ချီပြီးရှိတဲ့ မြင်းမျိုးကောင်းတွေကို တွေ့ခဲ့ရပါတယ်။ တောင့်တင်းကြံ့ခိုင်တဲ့ မြင်းတပ်ကြီး ဖွဲ့နိုင်လောက်အောင် များပြားလှပါတယ်။ ခက်နေတာက မြင်းပိုင်ရှင်ဟာ ဒီမြင်းတွေကို အကုန်လုံးဝယ်မှ ရောင်းမယ်လို့ ပြောထားတော့ ကျွန်တော်မျိုးတို့မှာ ခွဲဝယ်ပြီးအရှင်မင်းကြီးကို မဆက်သနိုင်ပါဘူး။

‘တခြားနိုင်ငံတစ်ခုကလည်း အဲဒီမြင်းတွေကို လာဝယ်တော့မယ် ဆိုတဲ့ သတင်းကိုကြားနေရပါတယ်။ အရှင်မင်းကြီးအနေနဲ့ မြင်းမျိုးကောင်း တွေကို အဆုံးရှုံးမခံနိုင်ဘူးဆိုရင် အခုချက်ချင်းပဲ ဝယ်ဖို့သင့်လှပါတယ် ဘုရားလို့ လျှောက်ထားတော့ ဘုရင်ကြီးဟာ လိုချင်စိတ်တွေ အားကြီး ပြီး ကျသင့်တဲ့ဒင်္ဂါးတွေ ထုတ်ပေးပြီး မြင်းကုန်သည်တွေကိုပဲ တစ်ခါ တည်း ဝယ်ခိုင်းလိုက်တော့တယ်။’

‘အဲဒီနိုင်ငံမှာ ထူးခြားတာတစ်ခုရှိတယ်။ အဲဒါက အခုခေတ်ကမ္ဘာ မှာ ထူးခြားဆန်းကြယ်တာတွေ မှတ်တမ်းတင်တဲ့ ဂင်းနစ်စာအုပ်ကြီးမျိုး လိုပေါ့။ အဲဒီနိုင်ငံက အ-အဆုံး-ပုဂ္ဂိုလ်တွေကို မှတ်တမ်းတင်တဲ့ စာအုပ် ကြီးရှိတယ် နောက်တစ်နေ့ရောက်တယ်ဆိုရင်ပဲ အဲဒီ အ-အဆုံး စာအုပ် စာရင်းထဲမှာ ဘုရင်ကြီးနာမည်ပါလာတယ်။’

‘ဒါနဲ့ ဘုရင်ကြီးက မှတ်တမ်းတင်တဲ့ အမတ်တွေကို ခေါ်ပြီးတော့ မေးတယ်။ ဘာကြောင့် ငါ့နာမည်ကို လူအ စာရင်းထဲမှာ သွင်းရသလဲ ပေါ့။ ဒီတော့ အမတ်ကြီးတွေက ဖြေတယ်။ ဘယ်နိုင်ငံကပါလို့ သေချာ တပ်အပ်မသိဘဲနဲ့ မြင်းကုန်သည်တွေကို ပိုက်ဆံထုတ်ပေးလိုက်တဲ့ အတွက်ပါတဲ့။ ပြီးတော့ ဒီကုန်သည်တွေဟာ လူလည်တွေဖြစ်လို့ ပြန်မလာ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်္ဂါများအကြောင်း

မှာ သေချာပါတယ်လို့ ပြောကြတယ်’

ဘုရင်ကြီးကလည်း သူ့ကို လူအ,စာရင်းသွင်းတာ မကျေနပ်တော့ စောဒကတက်လိုက်တယ်။

‘တကယ်လို့ မြင်းကုန်သည်တွေဟာ မြင်းတွေကို တကယ်လာဖို့ လာရင် ဘယ်လိုလုပ်မလဲလို့ မေးလိုက်တော့ အမတ်ကြီးတွေဖြေတဲ့ အဖြေ လေးက သိပ်လှတယ်’

‘မြင်းတွေကို လာမပေးလည်းရနေတဲ့ဟာကို လာပေးတယ်ဆိုရင် အဲဒီ လူအ,စာရင်းထဲက ဘုရင်ကြီးရဲ့ အမည်ကိုဖျက်ပြီး မြင်းကုန်သည် တွေရဲ့ နာမည်ကို ထည့်လိုက်မှာပေါ့တဲ့’

စာရေးသူ၏ စကားအဆုံးတွင် ကုလားလေးနှစ်ယောက်ရော ဘေးက သံဃာများပါ အဓိပ္ပာယ်ပါပါ ပြူးမိကြသည်။ သို့သော် ကုလား လေးကား စကားသွက်လှချည့်။

‘ဆရာတော့်တို့လို အတွေးအခေါ် ပညာရော၊ စာပေဗဟုသုတပါ ပြည့်စုံတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်ကိုတော့ ဘယ်သူမှ လိမ်လို့မရပါဘူး ဘုရား’

ကုလားလေးစကားကိုကြားရတော့ ကံချွန်ရေးသော အပျိုစင်တို့ သိဖို့ ယောက်ျားတို့အကြောင်း စာအုပ်ထဲက ကာတွန်းလေးတစ်ခုကို အမှတ်ရမိပြန်သည်။ ကာတွန်းကွက်လေးက မိန်းကလေးများကို လိမ် ညာမြှောက်ပင့်စားနေသော ကောင်ကလေးတစ်ယောက်ကို ကောင်မလေး တစ်ယောက်က ပြောဆိုအပြစ်တင်ရာ ကောင်လေးပြန်ပြောလိုက်ပုံက-

‘ကျွန်တော် လိမ်ညာလို့ရတယ်ဆိုတာ အသိအလိမ္မာ၊ ဉာဏ်ပညာ မရှိတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်တွေပါ။ အစ်မတို့လို အသိအလိမ္မာ ဉာဏ်ပညာရှိတဲ့ အမျိုး သမီးတွေကိုတော့ ဘယ်တော့မှ လိမ်လို့မရပါဘူး’တဲ့။ ထိုအခါ မိန်းက

မေတ္တာရင်း (ရွှေပြည်သာ)

လေးက အေး... ဒါတော့ဟုတ်တယ်ဟု ပြောဆိုနေပုံပင်ဖြစ်သည်။ ဆိုလိုသည်မှာ မြောက်ပင်ပြောဆို လိမ်ညာမှုများသည် သိမ်မွေ့လွန်းသောကြောင့် တစ်ခါတစ်ရံ မိမိကိုယ်တိုင် အမြောက်အပင်များဖြင့် အလိမ်အညာခံနေရသော်လည်း မိမိကိုယ်မိမိ ထိုကဲ့သို့ အမြောက်အပင်ခံ၊ အညာခံဖြစ်နေသည်ကို သတိမထားမိခြင်းပင်။

မြို့တစ်မြို့၌ နာမည်ကြီး လူလိမ်တစ်ဦးရှိရာ ထိုမြို့သို့ တာဝန်ဖြင့် ရောက်လာသော ဗိုလ်မှူးက ထိုလူလိမ်ကိုခေါ်ပြီး...

‘ကဲ... မင်းအစွမ်းရှိသလောက် ငါ့ကို လိမ်စမ်းကွာ၊ မင်း ဒီမြို့မှာ အလိမ်အညာ နာမည်ကြီးလွန်းလို့’ ထိုအခါ လူလိမ်က...

‘ဗိုလ်မှူး ကျွန်တော်က လိမ်ခါနီးတိုင်း အရက်နဲ့ခေါက်ဆွဲကြော်စားပါတယ်၊ စားပြီးမှ လိမ်ပါတယ်၊ ဗိုလ်မှူးလိမ်တာ ကြည့်ချင်ရင် ကျွန်တော့်ကို အရက်နဲ့ခေါက်ဆွဲကြော် ဝယ်ကျွေးပါ’

အလိမ်အညာကို လက်တွေ့မြင်ချင်နေသော ဗိုလ်မှူးက ချက်ချင်း ဝယ်ခိုင်းကာ ကျွေးလိုက်သည်။ လူလိမ်စားသောက်သည်ကို သည်သည်ခံကာ စောင့်နေရသည်။ လူလိမ်စားသောက်ပြီးသည်နှင့်...

‘ကဲ... မင်း ကတိအတိုင်း ငါ့ကို လိမ်ပေတော့’

‘ဟုတ်ကဲ့ ဗိုလ်မှူး၊ ကျွန်တော် အခုပဲ လိမ်ပြီးသွားပါပြီ’
ထိုအခါကျမှ ဗိုလ်မှူးမှာ နဖူးကို လက်ဖြင့်ရိုက်ရင်း...

‘အင်း... သေလိုက်ပါတော့၊ ကိုယ့်ကိုယ်ကို အလိမ်ခံထိလို့ထိမှန်းတောင် မသိရပါလား’ဟု ညည်းညူလိုက်ရှာသည်။ ယခု စာရေးသူ အဖြစ်ကလည်း ၎င်းဗိုလ်မှူးကဲ့သို့ပင် ဖြစ်နေရသည်။ ဟိုပြောဒီပြော၊ ဟိုတွေးဒီတွေးနှင့်ပင် ခုနစ်ရှာငါးဆယ်တန် မျက်မှန်လေးတစ်လက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

အရောင်းအဝယ်ဖြစ်သွားသည်။

ဈေးနှုန်းအနည်းအများကို လေ့လာကြည့်လိုက်တော့ မြို့တွင်းဈေးထက် နှစ်ရာခန့် များနေသည်။ သွားရတဲ့ လမ်းစရိတ်နဲ့ဆိုတော့ ဒီလောက်တော့ရှိမှာပေါ့ဟု ကြံဖန်ကာ ဖြေသိမ့်လိုက်သည်။ တကယ် တပ်ကြည့်လိုက်တော့ ကိုင်းအလေးချိန်၊ မှန်၏အလေးချိန်တို့ကြောင့် နှာခေါင်းရင်းမှာ အညှီအမည်းစွဲလာသဖြင့် နောက်တစ်လက် အလိုက်နှစ်ရာပေးပြီး လဲလိုက်ပြန်သည်။ ၎င်းမျက်မှန်လည်း မြို့ထဲဈေးထက် နှစ်ရာခန့်များသည်သာ။

နှစ်ရာ၊ နှစ်ရာ နှစ်ခါအလိမ်ခံရတာကို နည်းသေးတယ်ထင်နေသော စာရေးသူက သူခိုးကို ရွှေတိုက်စိုးခန့်လိုသော စကားတို့ကို ပြောလိုက်မိပြန်သည်။

‘တို့ မျက်မှန်တပ်တာက မျက်စိကို နေပူဒဏ်က ကာကွယ်ချင်လို့ပဲ၊ စာရေးစာဖတ် နှစ်ခုလုံးအတွက် တစ်သက်လုံး အသုံးပြုရမှာဆိုတော့ မျက်စိကို သူများထက်ပိုပြီး ဂရုစိုက်ရမယ်၊ နေပူထဲရောက်တာနဲ့ မျက်စိတန်းအေးသွားတဲ့ မျက်မှန်မျိုးရရင် သိပ်ကောင်းမယ်’

‘ဟာ... ဆရာတော်၊ အဲဒါဆိုရင် ရေဘင်မျက်မှန် အကောင်းဆုံးပဲဘုရား၊ နေပူထဲရောက်တာနဲ့ မျက်စိချက်ချင်း အေးသွားရမယ်’

‘လမ်းသရဲမျက်မှန်ကြီးနဲ့ ဘုန်းကြီးနဲ့ ဖြစ်ပါ့မလား’

‘ကိုယ့်မျက်စိ ကျန်းမာရေးပဲဘုရား၊ အပျော်တပ်တာမှ မဟုတ်ဘဲ၊ ဘယ်သူမှ အပြစ်မမြင်ပါဘူး’

ထိုစကားနှင့်ပင် ထောင့်သုံးရာခန့်တန်သော ရေဘင်မျက်မှန်တစ်လက်ကို နှစ်လောင့်ငါးရာနှင့် ရောင်းသွားခဲ့သည်။ ဒါတင်မက ငွေသုံးရာပင် ဈေးသွားလိုက်ပါသေးသည်။ လူလိမ်ကျောင်းသို့ ရောက်သည်က

လိမ်မရလို့ ခိုးတာပါ

၁၃၅၄-ခုနှစ်၊ နယုန်လ၊ ရန်ကုန်မြို့အနေဖြင့် မိုးရွာကောင်းသော လတစ် လဖြစ်နေပါပြီ။ ရွှေပြည်သာမြို့တွင် စာသင်သား သံဃာ ၁၆-ပါးနှင့်အတူ တဲကျောင်းယိုင်ယိုင်လေးတွင် သီတင်းသုံးစအချိန်ပင် ဖြစ်ပါသည်။ ဝါမဆိုမီ ကြွလာရန် မိဘများ၏ပင့်လျှောက်ချက်အရ အမရပူရသို့ စာရေးသူ ကြွသွားခဲ့ပါသည်။ စာရေးသူကြွပြီး နောက်တစ်ရက်မှာပင် အသက် ၄၀-ခန့်ရှိ ရည်ရည်မွန်မွန် အမျိုးသားတစ်ဦး ကျောင်းသို့ ရောက်လာသည်။

အောက်ပါ လိပ်စာကတ်ပြားလေးကိုပြုပြီး စာရေးသူ၏လက်ထောက် စာချဘုန်းကြီးနှင့် စာသင်သားသံဃာများအား သူ့ကိုယ်သူ မိတ်ဆက်ပေးပါသည်။ လိပ်စာကတ်ပြား၌ ရေးထားသည်က...

ဦးကျော်မြင့်ဦး
အမှတ် ၄၄၆

ယောဂျင် (ရွှေပြည်သာ)

လမ်းမတော်၊ နမ္မားမြို့

ကချင်ပြည်နယ်

အမှတ်(၃) သစ်ထုတ်လုပ်ရေးစခန်း။

‘တပည့်တော်က မန္တလေးကျောင်းတိုက် ဆရာတော် ဦးဇေယျာကို သိတာ ကြာပါပြီဘုရား၊ မန္တလေးအနောက်ပြင် မစိုးရိမ်တိုက်သစ်မှာ နေကတည်းက သိတာပါ။ တကယ့်ကို သာသနာပြုစိတ်ရှိတဲ့ ဆရာတော် တစ်ပါးပါ။ စာသင်သားဘဝတည်းက စာချပေးနေတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်ပဲ။ အဲဒီ နောက် လှိုင်မြို့နယ်၊ (၅)ရပ်ကွက်၊ ကြံခင်း ပရိယတ္တိစာသင်တိုက်က စာချဘုန်းကြီးအဖြစ် ပင့်သွားတဲ့အချိန်ကစပြီး တပည့်တော်တို့နဲ့အဆက် အသွယ် ပြတ်သွားတာ’

‘ဒါပေမဲ့ ဆရာတော်ရဲ့ ကောင်းသတင်းတွေကတော့ ဆက်ကြားနေ ရတာပါပဲ။ ကြံခင်းစာတိုက်လည်း ဆရာတော်ရောက်ပြီး နောက်ပိုင်း တအားတိုးတက်လာတာပဲ။ ဆရာတော်က စာချရော၊ တရားဟောပါ နှစ်မျိုးစလုံးရတော့ ကျောင်းက အောင်ချက်ရော၊ ထောက်ပံ့လှူဒါန်း မယ့် ဒကာ၊ ဒကာမပါ ချက်ချင်း တက်လာတာပေါ့’

သူတို့ပင် သေချာမသိသေးသော စာရေးသူ၏ နောက်ကြောင်း ရာဇဝင်များကို ခရေစေ့တွင်းကျ ပြောပြနေသော ကျော်မြင့်ဦးအား လက်ထောက်စာချနှင့်တကွ စာသင်သားသံဃာများ အံ့ဩလေးစားသော မျက်လုံးတို့ဖြင့် ကြည့်ရှုနေကြသည်။ လေးစားယုံကြည်လာသော မျက်နှာ တို့ကို တွေ့ရသည်နှင့် သူလာရခြင်း၏ အကြောင်းကိစ္စကို ကျော်မြင့်ဦး တစ်ယောက် စိကာပတ်ကုံး ပြောပြလိုက်ပါတော့သည်။

‘တပည့်တော် ဒီကိုလာရတဲ့ အကြောင်းကိစ္စကတော့ ဆရာတော်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ဦးဝေနေရဲ့ သာသနာပြုလုပ်ငန်းမှာ အုတ်တစ်ချပ် သဲတစ်ပွင့်အနေနဲ့ ကိုယ် နိုင်တဲ့ဘက်က ကူညီလှူဒါန်းဖို့ပါပဲ ဘုရား၊ အခု အစိုးရဆီကို သစ်သွင်း ပြီးတဲ့နောက် သစ်နှစ်တန်လောက် ပိုနေပါတယ်ဘုရား၊ အဲဒီ ပိုနေတဲ့ သစ်နှစ်တန်ကို တပည့်တော်က ရောင်းစားမနေတော့ဘဲ ဒီကျောင်းမှာပဲ လှူခဲ့ချင်ပါတယ် ဘုရား၊ ဦးဝေနေမရှိပေမယ့် ဒီသစ်ကလေးကိုတော့ အရှင်ဘုရားတို့ အလှူခံထားလို့ဖြစ်တယ် မဟုတ်လားဘုရား’

သစ်နှစ်တန်လှူမည်ဟူသော စကားကိုကြားလိုက်ရသည်နှင့် သံဃာတော် ၁၆-ပါးတို့၏မျက်နှာမှာ ဝမ်းမြောက်ကျေနပ်နေသော အမူ အရာများ ဖုံးမရအောင် ပေါ်လာကြသည်။ အတွေးအခေါ် ဦးနှောက် ကောင်းသူတစ်ယောက်အဖြစ် ခံယူပြောဆိုတတ်သော လက်ထောက်စာချ ကိုယ်တော်က...

‘ဒကာကြီးသစ်တွေက ဘာသစ်တွေလဲ’

‘ပျဉ်းကတိုးတွေပါ ဘုရား’

‘ပျဉ်းကတိုးဆိုရင် တစ်တန် နှစ်သောင်းခြောက်ထောင်ဆိုတော့ ငါးသောင်းနှစ်ထောင်ဖိုးလောက် ရှိတာပဲ၊ ဒကာကြီးရဲ့ စေတနာ သဒ္ဓါ တရားကို လေးစားမိပါတယ်၊ ခုလိုအချိန်မှာ ဒီလို အလှူရှင်တစ်ဦးပေါ် ဖို့ဆိုတာ မလွယ်ပါဘူး၊ ဆရာတော်မရှိပေမယ့် ဦးပဉ္စင်းတို့ အလှူခံထား လို့ ဖြစ်ပါတယ်၊ ဆရာတော်ပြန်လာတော့ လျှောက်ပေးမှာပေါ့၊ ဒါနဲ့ ဒကာကြီး ဘယ်နေ့လာပို့နိုင်မလဲ’

‘အဲဒါလေးတစ်ခုတော့ လျှောက်ပါရစေ ဘုရား၊ ဖြစ်နိုင်ရင်တော့ တပည့်တော် ဒီနေ့ပဲ ပို့လိုက်ချင်တယ် ဘုရား၊ ဒါပေမဲ့ ကားခ၊ တင်ခ၊ ချခနဲ့ မန်နေဂျာကို လက်ဖက်ရည်ဖိုးပေးရမယ့် အတွက်တွေကတော့

ယောဂျင် (ရွှေပြည်သာ)

ကျောင်းကပဲ ခံစေချင်တယ် ဘုရား၊ တပည့်တော်မှာလည်း ငွေပိုက သီးသန့်ပါမလာလို့ပါဘုရား’

‘ဘယ်လောက်များကျမလဲ ဒကာကြီး’

‘ငါးထောင်လောက်တော့ ကျမယ်ဘုရား’

ဒကာထံမှ ငါးထောင်ဟူသော စကားကို ကြားလိုက်သည်နှင့် သံဃာတော်များ မျက်နှာတစ်ချက် ပျက်သွားကြသည်။ လိမ်မှာကို ရိပ်မိ သောကြောင့်ပျက်ခြင်း မဟုတ်။ ဒကာတောင်းသောငွေကို ရှာမပေးနိုင်ပါ က သစ်နှစ်တန်ကို လက်လွှတ်ရမှာ စိုးရိမ်နေကြသောကြောင့်ဖြစ်သည်။ ဝါခပ်ကြီးကြီး ကိုရင်တစ်ပါး ဝင်ပြောလာသည်။

‘တပည့်တော်ဆီမှာ လမ်းခင်းဖို့ အုတ်ခဲဝယ်ရအောင် ဆရာတော် ငွေတစ်ထောင် ပေးထားတာရှိတယ်၊ သေတ္တာထဲတောင် မထည့်ရသေး ဘူး၊ ဟိုစာအုပ်စင်ပေါ်မှာ’

‘တစ်ထောင်နဲ့တော့ ဘာမှမလုပ်မဖြစ်ဘူး ဘုရား၊ အရှင်ဘုရား တို့ဆီမှာ ဆရာတော်က ကျောင်းဆောက်မယ့် အလှူငွေတွေ ဘာတွေ အပ်မထားခဲ့ဘူးလား ဘုရား’

‘အပ်မထားခဲ့ဘူး ဒကာကြီး၊ အပ်ထားရင် ဒကာကြီးကို အခု ချက်ချင်း ပေးလိုက်ပြီပေါ့’

‘ဒါဆိုရင် တပည့်တော်လှူတော့ မအောင်မြင်တော့ဘူး ထင်ပါ တယ်’

‘ညနေလောက်ထိတော့ စောင့်ကြည့်ပါဦး ဒကာကြီး၊ ဆရာတော် ရဲ့ ရဟန်းအစ်မကြီးများ ကျောင်းလာတာနဲ့ကြုံရင် အဆင်ပြေသွားမှာပါ’ လက်လွှတ်လိုက်ရမှာ စိုးရိမ်နေသော ကိုယ်တော်များကိုကြည့်၍

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

ကျော်မြင့်ဦးက တစ်ချက် ဈေးကိုင်လိုက်သည်။

‘တပည့်တော်က ဒီတစ်ရက်ပဲ အချိန်ပေးနိုင်တယ် ဘုရား၊ ဒီရက် မှ သယ်ဖို့ကား အဆင်မပြေရင် နီးစပ်ရာ သစ်ကုန်သည်ဆီရောင်းပြီး နမ္မားကို ပြန်ရတော့မှာပဲ’

‘ဟာ... နေ့လယ်စာလေးတော့ စားပါဦး၊ ဒကာကြီး၊ ဆရာတော် ရဲ့ ဒကာရင်းတွေဆီသွားပြီး ဦးပဉ္စင်းတို့ ကြီးစားကြည့်ပါဦးမယ်’

အချိန်ကလည်း မနက်ကိုးနာရီခွဲရှိပြီဆို သံဃာတော်အားလုံး သပိတ် ပိုက်ကာ ဆွမ်းခံထွက်သွားကြသည်။ လက်ထောက်စာချ၏ မိတ်ဆွေဟု ဆိုသော ကဗျာရူးတစ်ယောက်သာ ကျောင်းမှာ ကျန်ရစ်သည်။ လောက ဌ် ရှိရှိသမျှသော အ၊ခြင်း၊ န၊ခြင်း၊ အလိုက်ကန်းဆိုး မသိခြင်း၊ ပျင်းခြင်း များကို ၎င်းကဗျာရူးသည် ကန်ထရိုက်ဆွဲထားဟန် တူသည်။ အ၊လိုက်၊ န၊လိုက်၊ အလိုက်ကန်းဆိုး မသိသည်မှာလည်း ပြောစရာမရှိ။ ပျင်းလိုက် သည်မှာလည်း ဝီခေါ်နေသည်။ သံဃာတော်များ၏ ဝေယျာဝစ္စကို လုပ်ဖို့ နေနေသာသာ တစ်ခါတစ်ရံ သူ့စားပြီးသား ပန်းကန်ပြားကိုပင် ဒီအတိုင်း ပစ်ထားသဖြင့် အမြင်မတော်သော ကိုယ်တော်အချို့က ကောက်ယူဆေး ကြော ပေးလိုက်ရသေးသည်။ ထိုမျှ အ၊သော၊ ပျင်းသောသူက လည် သော၊ လျင်သော ရွှေဧည့်သည်ကို ဧည့်ခံလျက် တဲအတွင်းကျန်ခဲ့ကြ သည်။ သံဃာတော်များအားလုံးကား ဆွမ်းခံထွက်သွားကြလေပြီ။ ခဏ ကြာတော့ ကဗျာရူးက ရေချိုးရန် တုံကင်ဘက်သို့ ထွက်သွားသည်။

ကဗျာရူးထွက်သွားသည်နှင့် စာအုပ်စင်ပေါ်တွင် အသင့်တင်ထား သော လမ်းခင်းရန် အုတ်ဖိုးငွေတစ်ထောင်ကို ကျော်မြင့်ဦးတစ်ယောက် လေ၏လျှင်မြန်မှုမျိုးဖြင့် ခိုးယူကာ အိတ်ထဲထည့်လိုက်လေသည်။ ကျောင်း

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ပေါက်ဝနားအရောက်တွင် ရေချိုးနေသော ကဗျာရူးအား အအေးပတ်သလို ဖြစ်နေ၍ ဆေးသွားဝယ်ဦးမည့်အကြောင်း နှုတ်ဆက်ကာ တစ်ခါတည်း ထွက်သွားပါတော့သည်။ ကိုယ်တော်တွေထံတွင် ငွေလိမ်မရ၍ ရှိတာလေး နိုးယူသွားခြင်းပင်ဖြစ်သည်။

ကိုယ်တော်တွေ ဆွမ်းခံက ပြန်ရောက်၍ ငွေတစ်ထောင်ရော၊ စည့်သည်ရော မရှိတော့သဖြင့် မိလိုမိငြား ရွှေပြည်သာမြို့တွင်းရော၊ အင်းစိန်မြို့အထိပါ လိုက်၍ရှာကြသေးသည်။ ထိုမျှ ရုန်းရင်းဆန်ခတ် ပြေးကြ၊ လွှားကြနှင့် အလုပ်များနေကြသော ကိုယ်တော်များကိုကြည့်၍ ကဗျာရူးပြောလိုက်သော စကားက...

‘အရှင်ဘုရားတို့လည်း အပင်ပန်းခံပြီး လိုက်ရှာနေကြတယ်၊ ဟို လူက ဆေးသွားဝယ်မယ်ဆိုတာ တပည့်တော်ကို သေချာမှာသွားတာပါ၊ သူ့ဘာသာ ပြန်လာမှာပေါ့’ ဟူသတည်း။

လူလည်ကျခြင်းနှင့် လိမ္မာပါးနပ်ခြင်း

သူတစ်ပါးအပေါ် ကလိမ်ကျခြင်း၊ တစ်ကိုယ်ကောင်းကြံခြင်းကို လူလည်ကျသည်ဟု ခေါ်သည်။

မိမိအပေါ်အလိမ်မခံရအောင် အသိဉာဏ်ဗဟုသုတရှိနေခြင်းကို လိမ္မာပါးနပ်သည်ဟု ခေါ်သည်။



ရင်နှင့်ရသော လိမ်လည်မှု

ကိုယ်တိုင်အလိမ်မခံရသော်လည်း အလိမ်ခံရသော မိန်းကလေး၏ ကိုယ်စားရင်နှင့်အောင် ခံစားခဲ့ရသော ဖြစ်ရပ်တစ်ခုကို တင်ပြပါဦးမည်။
 ၁၉၄၇ခု၊ ဇန်နဝါရီလ ၂၆-ရက် ဗုဒ္ဓဟူးနေ့က စတင်ခဲ့သော ၎င်းဖြစ်ရပ် လေးမှာ နှစ်ပေါင်း ၅၀-နီးပါးခန့်ရှိပြီမို့ ကာယကံရှင် မိန်းကလေးရော၊ လက်တွေ့ရေးသား တင်ပြခဲ့သော စာရေးဆရာကြီး သော်တာဆွေရော လူ့လောကမှာ မရှိကြတော့ပြီ။

စာရေးဆရာကြီး သော်တာဆွေသည် အိမ်ထောင်သုံးဆက်ကျခဲ့ရာ ယခု ရေးလတ္တံ့သော မသူ အမည်ရှိမိန်းကလေးမှာ ဒုတိယမြောက်အိမ် ထောင်ဖြစ်ပေသည်။ တရားဝင်ကား မဟုတ်ပေ။ ဖြစ်ပုံမှာ သော်တာဆွေ တစ်ယောက် ဆန်ကုန်ကူးရင်း ကုန်ရှုံးအကြွေးတင်သဖြင့် ကသာတွင် အကြွေးစောင့်ရင်း သောင်တင်နေရာမှ အပျက်မလေး မသူနှင့် အကြောင်း ပါခဲ့ရခြင်း ဖြစ်သည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တစ်နေ့သော် ပြည့်တန်ဆာခေါင်းဆောင် အောင်သင်းကြီးထံမှ ထွက်ပြေးလာခဲ့သော မသူသည် မြစ်ကြီးနားထွက်မည့် ရထားပေါ်ရောက်လာသည်။ အောင်သင်းကြီး၏ ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက်မှုကြောင့် မျက်နှာတစ်ပိုက်မှာလည်း အညှိအမည်းများ စွဲနေရှာသည်။ သို့သော် ၎င်းအညှိအမည်းတို့က လှပနုနယ်သော မျက်နှာတစ်ပြင်လုံး၏ ကျက်သရေကိုတော့ မယုတ်လျော့စေနိုင်ခဲ့ပါ။ အကျဉ်းချုပ်တော့ လူယုတ်မာ အောင်သင်းကြီးလက်ထဲမှ သူမကို သော်တာဆွေက ယယ်တင်နိုင်ခဲ့ပါသည်။

လွယ်လွယ်ကူကူ ကယ်တင်ခဲ့ရသည်တော့မဟုတ်။ မိမိထက် ဗလကောင်းသော လူမိုက်ကြီး အောင်သင်းကို သတိလစ်မေ့မြောသည်အထိ အပြင်းအထန် ထိုးကြိတ်ပြီးမှ ကယ်တင်နိုင်ခဲ့ခြင်းဖြစ်သည်။ မတရားတာကို လက်ပိုက်ကြည့်မနေဘဲ ဝင်ရှင်းရဲသော သော်တာဆွေ၏ သတ္တိကိုကား လေးစားရပေမည်။ လူယုတ်မာလက်က လွတ်ပြီးရော ဟူသော သဘောရိုးဖြင့် ဝင်ကယ်ခဲ့ခြင်းဖြစ်သော်လည်း ယခုမှ အချစ်စစ်ကို မွေးဖွားဖူးသော သူ၏ အလိုက်တသိပြုစုယုယမှုတို့ကြောင့် ကလေးနှစ်ယောက်အဖေ ပထမအိမ်ထောင်တန်းလန်းနှင့် သော်တာဆွေမှာ တရားမဝင် ဒုတိယအိမ်ထောင်သည်ဘဝသို့ ရောက်ရပြန်ပါသည်။

ခြောက်လတာမျှ ပေါင်းသင်းရသောသူတို့၏ အိမ်ထောင်သည်ဘဝမှာ ချမ်းမြေ့မှု အပြည့်ရှိခဲ့ကြသည်။ အဘယ်ကြောင့်ဆိုသော် တစ်ယောက်အကြောင်း တစ်ယောက်သိအောင် ရိုးရိုးသားသား ဖွင့်ဟပြောဆိုထားကြသောကြောင့် ဖြစ်သည်။ ခြောက်လတာမျှ ပေါင်းသင်းနေကြရသော အချိန်များတွင် လျှပ်ပေါ်လော်လည်မှု အလျဉ်းမရှိသော မသူ၏ အခြေအနေကို တွေ့မြင်ရသည့်အခါတွင် မသူတစ်ယောက် အဘယ်ကဲ့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

သို့သော ဆိုးဝါးသော လောကဓံများကြောင့် ဤဘဝထဲသို့ ရောက်ခဲ့ရကြောင်း သော်တာဆွေတစ်ယောက် တွေးမရအောင်ရှိခဲ့သည်။

သီချင်လွန်းအားကြီး၍ မသူ၏ ဘဝနောက်ကြောင်းကို မေးကြည့်မိသော်လည်း 'အခုချိန်မှ သီရလို့လည်း ဘာထူးတော့မှာလဲ မောင်ရယ်၊ မသူ မပြောပါရစေနဲ့' ဟူသော အဖြေကိုသာ ပြန်ရသည်။

မယားခုနစ်မျိုး

မယားခုနစ်မျိုး၊ ရှိမြဲရိုးတွင်၊ ခိုးသူအရှင်၊ သူသတ်သွင်တို့၊
အကြင်မယား၊ လား၏ငရဲ၊ အမြဲမှတ်ဘိ၊ အမိတမျှ၊
နှမမယွင်း၊ ခင်ပွန်းတစ်သွယ်၊ ကျွန်နယ်အလား၊
ထိုမယားမူ၊ နိဗ္ဗာန်တော်ပြည်၊ လားမြဲမည်၏၊ ယင်းသည့်လေးသွယ်၊
မယားဝယ်လည်း၊ ကျွန်နယ်အလား၊ ထိုမယားမူ၊
ယောက်ျားဆုပန်၊ နိဗ္ဗာန်ဆုတောင်း၊ တောင်းကမလွတ်၊
မချွတ်တူတည့်၊ ပြည့်မြဲမည်၏။

ဟူသော အလင်္ကာအတိုင်း မယားခုနစ်မျိုးရှိရာတွင် ခိုးသူ၊ အရှင်သခင်၊ သူသတ်နှင့်အတူသော မယားများမှာ သေလျှင် ငရဲသို့လားရသည်။ နှမ၊ မိတ်ဆွေ၊ ကျွန်နှင့်တူသော မယားလေးမျိုးတို့မှာ နိဗ္ဗာန်ရတီနတ်ဘုံသို့ရောက်ရသည်။ အထူးအားဖြင့် မိမိခန္ဓာကိုယ်ကို ကျွန်လိုသဘောထားပြီး လင်သားအား ပြုစုသော မယားမျိုးသည် ယောက်ျားဆု၊ နိဗ္ဗာန်ဆုတို့ကိုတောင်းလျှင် အလွယ်တကူပြည့်သည်ဟု ဆိုထားပါသည်။

ယခု မသူသည်ကား မိခင်နှင့်တူသော မယားကဲ့သို့ သော်တာဆွေအပေါ်မှာ ကြင်နာလှသလို၊ ကျွန်နှင့်တူသော မယားကဲ့သို့ ပြုစုလိုက်သည်

ဖေဖာရီ (ရွှေပြည်သာ)

မှာလည်း သော်တာဆွေ၏ဘဝတစ်လျှောက် လင်သားအပေါ် ယခုလောက် ပြုစုယုယသော မယားမျိုး မတွေ့ခဲ့ဘူးပါဟု ဆိုထားပါသည်။ အားကိုး ရာမဲ့ လေလွင့်ပျက်စီးနေရသော အချိန်တွင် ရာသက်ပန်မဟုတ်သော်လည်း တစ်ခဏတာ ဇနီးမယားအဖြစ် ပေါ်ပေါ်ထင်ထင် ပေါင်းသင်းပေးသည် ကိုပင် ကျေးဇူးတင်လှသောကြောင့် ဖြစ်ပေသည်။

တစ်နေ့တွင် တစ်ခဏတာ ပေါင်းသင်းခွင့်ရသည့် သူတို့၏ အိမ် ထောင်သက်ကလေးကို သက်တမ်းတိုစေမည့် စာတစ်စောင်ရောက်လာ ပါတော့သည်။ ၎င်းစာကား...

ပေါင်းတည်
၃. ၆. ၄၇

သို့

ကိုကြင်ဆွေ

မေလ ၂၅-ရက်နေ့ နေ့စွဲနဲ့ ကသာက ပေးလိုက်တဲ့စာ မနေ့က ရပါတယ်။ ကျန်းကျန်းမာမာရှိကြောင်း သိရလို့ နော်မာ ဝမ်းသာပါတယ်။ ဒါထက် ကိုကြင်ဆွေလူဆီက ငွေကလည်း ရမယ်ဆိုပြီး ကြာလှချည် လား။ ရှရ၊ မရရ ဒါလောက် ငွေကလေးကို အဆုံးထားပြီး ပြန်ခဲ့ဖို့သင့် ပြီ ထင်ပါတယ် ကိုကြင်ဆွေရယ်၊ ဒီငွေကလေးသုံးထောင်လောက်နဲ့ ကသာမှာ ခြောက်လတောင်ကျော်နေပြီ။

ဒါနဲ့ တချို့က ပြောကြတယ်။ အဲဒီဘက်မှာ မိန်းမတွေသိပ်ပေါ တယ်တဲ့။ ကြင်ဆွေတော့ ဟိုမှာ မိန်းမရနေလို့ မပြန်နိုင်တာပဲဖြစ်မှာပဲ ဘာညာနဲ့။ ကိုကြင်ဆွေအဖေကတောင် အင်း... ဒီကောင့် ကံဇာတာ က မျက်နှာများတယ်။ ဟုတ်များနေမလား မသိဘူးလို့ ညည်းနေသေး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တယ်။ ဒါပေမဲ့ နော်မာကတော့ သူတို့ဘာပြောပြော မယုံပါဘူး။ ဘာကြောင့်ဆို ကိုကြင်ဆွေဟာ နော်မာကို ဘယ်လောက်ချစ်သလဲဆိုတာ နော်မာ သိတယ်လေ။

နို့ပြီး ကိုကြင်ဆွေသမီး ဒင်ပယ်လ်ဆွေအကြောင်း ပြောရဦးမယ်။ ဟိုနေ့ကပဲ စပါးပွဲစား ကိုစံမြင့်က ဟော... ပယ်ပယ် နှင့်အဖေတော့ အညာမှာ မိန်းမရနေလို့ ပြန်မလာတော့ဘူး ဘာညာနဲ့စတော့၊ အောင်မယ် ပယ်ပယ် ဒါဒါက အန်ကယ်လို့ မှတ်လို့လား၊ အန်ကယ်သာ တောမှာ စပါးသွားဝယ်ရင်းနဲ့ မိန်းမတွေ တိတ်တိတ်ပုန်း ယူနေတာ၊ ပယ်ပယ် ဒါဒါကို ဒီလိုမပြောနဲ့ရှင်လို့ ရန်တွေ့တယ်။

နို့ပြီး ကိုကြင်ဆွေ မမြင်ရသေးတဲ့ သားကလေးကလည်း အခု ဝမ်းလျားထိုး သွားနေပြီ၊ သန်လိုက်တာကြီးကလည်း၊ တစ်လှမ်းတစ်လှမ်း ထိုးရင် အဝေးကြီး၊ သင်ဖြူး ဟိုဘက် ဒီဘက်ကို လေးငါးလှမ်းပဲ။ ငိုလိုက်ရင်လည်း သူ့အသံကြီးက ကျယ်လိုက်တာ။ အာခေါင်ထဲ လော်စပီ ကာထည့်ထားသလား အောက်မေ့ရတယ်။ ကိုကြင်ဆွေ မမြင်ရသေးတဲ့ အဲဒီသားကလေးကို မကြည့်ချင်ဘူးလား။

သမီးကြီး ပယ်ပယ်ကိုကော မလွမ်းဘူးလားဟင်၊ ပယ်ပယ်က တော့ တစ်ခါတစ်ခါ ဖအေကို လွမ်းတယ်ထင်ပါရဲ့။ ဒါဒါရေ ပြန်ခဲ့ပါတော့၊ ပြန်ခဲ့ပါတော့နဲ့ အော်အော်နေတတ်တယ်။ ဟော... အခု စာရေး နေတုန်းပဲ ကိုကြင်ဆွေသားကလေးက အာခေါင်လော်စပီကာနဲ့ အော်ငိုနေပြီ၊ သူနို့ဆာရင် ဒီလိုပဲ၊ သွားနို့တိုက်လိုက်ဦးမယ်၊ ကဲ... တော်သေးပြီ၊ မြန်မြန်သာ ပြန်ခဲ့ပါတော့ အချစ်ရယ်။

အိမ်သားအားလုံး ကျန်းမာကြပါတယ်။

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

ကိုကြင်ဆွေလည်း ကျန်းမာပါစေ။

ချစ်သောနော်မာ

ထိုစာရောက်လာပြီး မကြာခင်မှာပင် အဖေ အသည်းအသန်ဖြစ်ကြောင်း သံကြိုးစာလာပါတော့သည်။

သော်တာဆွေမှာ မသွားမဖြစ် သွားရတော့မည်ဖြစ်သောကြောင့် ချစ်လျက်နဲ့ ခွဲခွာသွားတာထက် မုန်းပြီး ခွဲခွာရတာက ကောင်းတယ်ဟု သဘောထားကာ မူးပြီး ရမ်းကားမိပုံကို သူ့ရေးသားချက်အတိုင်း ကူးယူဖော်ပြလိုက်ပါသည်။

သူကသာ ငါ့ကိုမုန်းသွားရင်း ကောင်းမှာပဲ၊ ငါကလည်း သူ့ကို သနားနေမှာ မဟုတ်တော့ဘူး၊ သူ့ဟာသူ ဘာဖြစ်နေနေ ငါပူစရာ မဟုတ်တော့ဘူး၊ အို... အခုဖြင့် ငါကပဲ သူ့ကိုချစ်အောင် ပြုလုပ်နေပါကလား၊ ငါမှားတယ်၊ ငါနဲ့ သူ့ဟာ ဘာဆိုင်သလဲ၊ ဟိုမှာတော့ ငါ့သမီး၊ ငါ့သား၊ ငါ့မယားနဲ့ ငါ့ဖခင် သောကရောက်နေကြပြီ၊ စိတ်မကောင်း ဖြစ်နေကြပြီ၊ အို... ငါက သူ့ကို ဘာလို့ချစ်ရမှာလဲ၊ ငါက သူ့ကို ဘာလို့မုန်းသွားအောင် မလုပ်နိုင်ရမှာလဲ။

ဇွန်လ ၂-ရက်နေ့ညတွင် ကျွန်တော်သည် အထက်ပါအတိုင်း သောက ပြမ်းသော တွေးလုံးတွေကို တွေး၏။ အရက်ကို အလွန်အကျွံ သောက်၏။ ညနေ ၆-နာရီခန့်တွင် ကျွန်တော် ဘယ်ကနေ ဘယ်လို မသူ့ကို ရန်စမိသည် မမှတ်မိတော့၊ သူ့မျက်နှာနှင့် ဦးခေါင်းကို နာကြည်းစွာ ပုတ်ခတ်မိ၏။ မသူသည် အခြားခန်းများမှ မသိရအောင် အောင့်၍ ခံ၏။ အသံမထွက်ဘဲ ငဲ့ခံနေ၏။ သောကနှင့် အရက်ပေါင်း၍ ရူးနေသော

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ကျွန်တော်သည် လက်နှင့်ရိုက်နေရာက အားမရတော့ဘဲ 'နင်က လက်များ ပြီးနေသလား၊ တယ်ပြီး ခံနိုင်ရည်ရှိတယ်၊ ဓားနဲ့ထိုးမှပဲ' ဟုဆိုပြီး ကျွန်တော့်ခေါင်းအုံးအောက်က ဓားမြှောင်ကို သွားပြီးယူသည်တွင် မသူသည် လန့်၍ အော်ဟစ်ထွက်ပြေးလေ၏။ ကျွန်တော် သူ့ကိုလိုက်ရန် လှေကားက ခုန်ချလိုက်သောအခါ၌ ကျွန်တော့်အခန်းရှေ့တွင် ရောက်နေသော လူတစ်ယောက်က 'ဟေ့လူ... ခင်ဗျား ကောင်မလေးကို နှိပ်စက်လှချည်လားဗျာ၊ မတရားပါဘူး'

သူတို့သည် မီးရထားဝင်းထဲမှ ကျွန်တော်နှင့် တွေ့ဖူး၊ မြင်ဖူးသော အသိအကျွမ်းများဖြစ်၍ သူတို့အသံကို ကျွန်တော် မှတ်မိပါသည်။ သို့သော် ကျွန်တော့်တွင် ဤအချိန်၌ လူကောင်းစိတ်မရှိတော့သည်ဖြစ်၍ သူတို့က ဤသို့ ဆီးပြောသည်ကိုပင် ရန်ဖြစ်ဖော်ပြီဟူသော သဘောဖြင့် ဝမ်းသာသလိုဖြစ်ကာ...

'အို... ကျုပ်မယား ကျုပ်နှိပ်စက်တာ ဘာဖြစ်သလဲဗျ၊ ခင်ဗျား တို့နဲ့ ဘာဆိုင်သလဲ၊ ခင်ဗျားတို့ပါ သေပေရော့' ဟုဆိုပြီး ကျွန်တော် သူတို့ကို ဓားနှင့်ထိုးရန် လိုက်ပါတော့သည်။

သူတို့မှာ ဘာလက်နက်မျှမရှိ၍ ဓားနှင့်ပြေးလာသော ကျွန်တော့်ကို ရင်မဆိုင်ဝံ့ဘဲ ဦးတည်ရာ စွတ်ပြေးကြလေသည်။ ကျွန်တော်သည် သူတို့နောက်က အတင်းလိုက်၏။ ဘယ်က ဘယ်လိုရောက်အောင် လိုက်မိသည်မသိ ခေတ္တမျှအကြာ၌ ကျွန်တော်သည် လူ ၇-ယောက်၊ ၈-ယောက်တို့၏ ဝိုင်းအုံခြင်းကို ခံရပါတော့သည်။

အကြောင်းမှာ ပထမနှစ်ယောက်မှ တစ်ယောက်သည် အခြားသို့ ခွဲပြေးလေ၍ ကျွန်တော်က တစ်ယောက်ကိုမလိုက်နေစဉ် သူတို့၏

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

အပေါင်းအဖော်၊ တပည့်တပန်းများကို ခေါ်လာသောကြောင့်ဖြစ်ပါ၏။ သူတို့မှာ အချို့တွင် လက်နက်များနှင့်ဖြစ်၏။ သို့သော် မိုက်မိပြီဖြစ်သော ကျွန်တော်သည် သူတို့ကိုမကြောက်၊ ကိုယ့်ရှေ့ဦးတည်ရာလူကို ဓားနှင့် လိုက်၍ လိုက်ထိုးနေ၏။

သူတို့လူစုသည် ရှုခနဲကွဲပြားလိုက်၊ ခွေးရူးနှင့်တူသော ကျွန်တော့်ကို ပတ်ပတ်လည်ဝိုင်းလိုက်နှင့် တရုံးရုံးဖြစ်နေရာမှ နောက်ဆုံးတွင် ကျွန်တော့်ခေါင်းကို တုတ်တစ်ချက်ထိလေ၍ ကျွန်တော် မိုက်ခနဲဖြစ်ပြီး ဝမ်းလျားမှောက် လဲစေ၏။ ဤအလဲ၌ကား လူအများစုလက်နက်၊ တစ်ယောက်တစ်ချက်ဖြင့် ကျွန်တော် အသက်ထွက်ပေတော့မည်ဟု မျက်စိမှိတ်လိုက်ပါတော့သည်။

သို့သော် မရောက်သေးလေရကား ကျွန်တော် လဲလျှင်လဲချင်း ကျွန်တော့်ကျောပေါ်၌ ကိုယ်တစ်ခုထပ်ကျလာကာ...

‘အမယ်လေး ရှင်တို့ရယ်၊ သူ့ကို မလုပ်ကြပါနဲ့၊ ကျွန်မကိုသာ သတ်ကြပါ’

ဟူသော မသူ၏ တတွတ်တွတ်တောင်းပန်သံကို ကြားရပါတော့သည်။ အမှန်ကိုပြောရလျှင် ဤအချိန်၌ ကျွန်တော့်မှာ အရက်မူးခြင်း မောပန်းခြင်းတို့ကြောင့် ကျွန်တော့်ဘာသာ ကျွန်တော် မထနိုင်တော့ပါ။ လူမှန်းသူမှန်း သိရုံလောက်သာ ရှိတော့၏။ မည်သူက မည်သို့ပြောကြသည်ကိုလည်း ကျွန်တော် သဲသဲကွဲကွဲ နားမလည်တော့ချေ။

နောက်ဆုံး ကျွန်တော် မှတ်မိသလောက်ကား ကျွန်တော့်အခန်းနီချင်း ဦးခင်မောင်ဆိုသူကပါ ကျွန်တော့်ဘက်က တောင်းပန်ပေး၍ ကျွန်တော် ချမ်းသာရာရကာ ဦးခင်မောင်နှင့် မသူ နှစ်ယောက်တွဲပြီ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ကျွန်တော့်ကို အိပ်ရာထဲသို့ပို့ခြင်း ဖြစ်ပါတော့၏။ နို့မဟုတ်လျှင် ကျွန်တော် သော်တာဆွေဟူသော စာရေးဆရာသည် ဖြစ်ပေါ်လာတော့မည် မဟုတ်။

ထိုညကသာ မီးရထားဝင်းထဲမှာပင် လူများစုလက်နက်တစ် ယောက် တစ်ချက်နှင့် အနိစ္စသဘော ကိစ္စချောခဲ့ပြီတည်း။ အိပ်ရာထဲတွင် မသူသည် ကျွန်တော့်ကိုဖက်၍ မျက်ရည်များတွေတွေ့ တွေ့တွေ့ကျကာ...

‘ဒါလောက်ပဲ ဖြစ်ရသလား အမောင်ရယ်၊ ကျွန်မကို သတ်ချင် အခု သတ်လိုက်ပါတော့၊ ရော့... ဓားမြှောင်၊ ဒါပေမဲ့ အမောင့်ကို ကျွန်မ စိတ်မဆိုးနိုင်၊ မမုန်းနိုင်ပါဘူး၊ အမောင် ဘာကြောင့် ဒီလိုဖြစ် ရတာလဲဆိုတာ ကျွန်မ အကုန်သိပါတယ်။ နေ့ခင်းကရောက်လာတဲ့ သံကြိုးစာကိုလည်း ကျွန်မ ဟိုဘက်ခန်းက စာရေးကြီးကို ဖတ်ပြခိုင်းလို့ သိရပါတယ်။’

ဘာလို့ ကိုယ့်ကိုယ်ကို ဒါလောက် ဒုက္ခရှာရတာလဲ အမောင်ရယ်၊ အမောင့်ဟာ အမောင် အေးအေးဆေးဆေး ပြန်သွားပါ၊ ကျွန်မအတွက် တော့ စိတ်ဒုက္ခ မဖြစ်ပါနဲ့၊ ကျွန်မကနဲ့ ကျွန်မ ရှိပါစေတော့’

ထိုအချိန်၌ ကျွန်တော်သည် အမော့အပန်းပြေသလောက် ရှိပြီဖြစ်၍ ကိုယ်လက်လှုပ်ရှားနိုင်ပြီဖြစ်သောကြောင့် မသူကို ပြန်ဖက်လိုက်ကာ...

‘အမောင်မှားပါတယ် မသူ၊ အမောင်မှားတယ်၊ အခု အမောင့်မှာ မသူကယ်တဲ့အသက်ပဲ ရှိတော့တယ်’

ဟုဆိုပြီး ကျွန်တော် ယောက်ျားကြီးတန်မဲ့နှင့် မျက်ရည်ဖြိုင်ဖြိုင် ကျလာပါတော့၏။

ဇွန်လ ၅-ရက်နေ့၊ စနေနေ့ နေ့လယ် ၃-နာရီဆိုက်သော တိုင်ရီ

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

သင်္ဘောပေါ်တွင် သော်တာဆွေ၏ တစ်ဝမ်းကွဲအစ်ကိုတစ်ယောက် ကိုယ် တိုင်ပါပြီး မရမက ခေါ်လေတော့ရာ သော်တာဆွေမှာ ဘယ်လိုမှမတတ် နိုင်တော့ဘဲ နောက်ရက်သင်္ဘောနှင့် ပြန်လိုက်ရန် ပြင်ဆင်ရပါတော့သည်။ ထိုနေ့ ခွဲခွာရမည့် နောက်ဆုံးညတွင် သော်တာဆွေရော မသူရော နှစ်ယောက်လုံး အိပ်မပျော်နိုင်ကြတော့ပါ။

စစ်မှန်သော မေတ္တာတရား၏ စေ့ဆော်မှုဖြင့် မသူထံမှ ကြေကွဲ ဖွယ်ရာ တောင်းဆိုချက်တစ်ခုကိုလည်း သော်တာဆွေမှာ မဖြစ်နိုင်လွန်း သဖြင့် ရင်နာနာနှင့်ပင် ပယ်ချခဲ့ရသည်။ ၎င်းတောင်းဆိုချက်ကား မသူ တစ်ယောက် သော်တာဆွေတို့အိမ်တွင် အစေခံအလုပ်ဖြင့် နေခွင့်ပေးရန် ပင်ဖြစ်ပါသည်။ သူ့အနေဖြင့် မပေါင်းရသော်လည်း သော်တာဆွေ၏ မျက်နှာကို မြင်ရလျှင် သေပျော်ပါပြီဆိုသည့် သဘောပင်။

မသူ၏ တောင်းဆိုချက်ကို သော်တာဆွေက ရင်နာနာနှင့် ပယ်ချ ခဲ့သလို သော်တာဆွေ၏ တောင်းဆိုချက်ကိုလည်း မသူက ခေါင်းညိတ် ခေါင်းခေါမတတ်ပါ လုပ်နေခဲ့သည်။ သော်တာဆွေ တောင်းဆိုသော အချက်ကိုကား ပေါင်းတည်ပြန်ရောက်လျှင် သော်တာဆွေ ပို့လိုက်သော ငွေကိုယူပြီး မသူ၏အမေရှိရာရွာသို့ ပြန်နေခိုင်းခြင်းပင် ဖြစ်ပါသည်။

နောက်တစ်နေ့ မိုးလင်းသည်အထိ ဘာအဖြေမှမပေးခဲ့သော မသူ သည် သော်တာဆွေတို့ သင်္ဘောပေါ်တက်ကာနီးတွင်မှ တစ်မိမိမိကျနေ သော မျက်ရည်များကြားမှ ဘယ်အချိန်က ရေးထားမှန်းမသိသော စာအိတ် ကလေးတစ်ခုကို ထုတ်ကာ သော်တာဆွေကို ပေးလိုက်ပါသည်။ သင်္ဘော ထွက်မှ ဖတ်ဖို့ကတိကိုလည်း တောင်းလိုက်ပါသေးသည်။

သင်္ဘောကမ်းမှ ခွာပြီး ခဏအကြာမှာပင် သော်တာဆွေတစ်

ယုံပုတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ယောက် မသူ၏စာကို ဖောက်ဖတ်လိုက်ပါတော့သည်။

မိသူအကြောင်း စာစစ်မြစ်ကို သိချင်လှတဲ့ အမောင်ရေ...

ဟုတ်တိုင်းမှန်ရာ မချန်မခြင်း ပြောလိုက်မယ်ပဲ၊ ပါးစပ်နဲ့ဆိုရင် မရဲပါဘူး။ စာနဲ့မှ အကုန်ရေးဝံ့တာ၊ ကျွန်မဟာ အခု ၁၉-နှစ်၊ ပဟိုဂျပန် ခေတ်မှာ ကျွန်မ ၁၆-နှစ်ဖြစ်လို့ အရွယ်ရောက်ခါစ၊ ကျွန်မတို့ရွာမှာဆို ရင် ကျွန်မက ညီအစ်မသားချင်းတွေထဲမှာ ထွန်းပြီးတော့ သူများနဲ့မတူ အောင် ရုပ်ရည်က လှခဲ့တာပဲ။

ဒါနဲ့အတော်ပဲ လှပုဏ်မောက်ပြီး ကိုယ့်ရွာက လူတွေဆိုရင် စိတ် ကူးမထည်၊ မြို့ပေါ်ကရောက်လာတဲ့ လူချောချောတစ်ယောက်နဲ့ ကျွန်မ ကြိုက်ပါရော၊ ကြိုက်တယ်ဆိုရင်ပဲ အရူးအမူး သူခေါ်ရာ ခိုးရာလိုက်ခဲ့ တာပဲ။ ကသာမြို့ရောက်တော့ သူဦးကြီးဆိုတဲ့ မန္တလေးက မကြာခင်ကမှ ပြောင်းလာတဲ့ ရဲအရာရှိကြီးအိမ်မှာ နေရတယ်။

နောက်တော့ အဲဒီလူကြီးဟာ တခြားသူ ဟုတ်ပါရိုးလား၊ ကျွန်မ ဒုတိယယူရတဲ့ လင်ကြီးပေါ့။ ဖြစ်ပုံက ပြောရမှာ ရှက်လိုက်ပါဘိ။ ကျွန်မတို့ သူ့အိမ်ရောက်တော့ ၁၀-ရက်လောက်ပဲ ရှိသေးတယ်။ တစ်နေ့ ခင်းလုံး ကျွန်မတစ်ယောက်တည်း အခန်းထဲမှာ အိပ်ပျော်နေတုန်း အဲဒီ လူကြီး ဝင်လာပြီး မတရားကျင့်တယ်။ အဲဒါကို ကျွန်မယောက်ျားပြန်လာ လို့ပြောပြတော့ သူက ဘယ်နှယ်ပြောတယ် မှတ်သလဲ။

အဲဒါ လူတွင်ပါလို့ နွားကျားကိုက်တာ၊ နင်ဟာ နည်းနည်းမှ သစ္စာရှိတာ မဟုတ်ဘူး၊ နင့်လင်ကြီးနဲ့ပဲ နေခဲ့တော့ဆိုပြီး သူ့အိမ်က ဆင်းသွားတယ်။ အဲဒီတော့ သူဦးကြီးဆိုတဲ့ လူကြီးက ကဲ... မထူးတော့

ဇမ္ဗူယျာဇ် (ရွှေပြည်သာ)

ပါဘူး၊ မင်းကိုငါ တကယ်ချစ်တယ်၊ ငါ့မှာလည်း သားမယားမရှိဘူး၊
မင်းကို ကောင်းကောင်းမွန်မွန် ထားမယ်ဆိုပြီး ခရီးဆက်တော့တာကိုး၊
အဲဒါ ကျွန်မအဖြစ်လား အမောင်။

အမှန်ကတော့ ကျွန်မ နောက်မှသိရတာက သူတို့ချင်းအချိတ်
အဆက် အမောင်ရဲ့၊ အဲဒီ အကောင်က ကျွန်မကို ငွေတစ်ထောင်နဲ့
ရောင်းခဲ့တာလေ၊ ဒါနဲ့ ကျွန်မဟာ ဇွတ်မှိုက်ရတော့တာပေါ့။ အဲဒီ လူကြီး
က ကျွန်မကို မယားအဖြစ်နဲ့ အတော်ပဲ ကြင်ကြင်နာနာ မြှောက်စားထား
ပါတယ်၊ ဒါပေမဲ့ အခုထိ ကျွန်မ ကလေးမမွေးနိုင်အောင် တားဆေးတွေ
ကျွေးပစ်ခဲ့တာက အဲဒီလူကြီးပဲ အမောင်ရေ၊ ကျွေးမှာပလေ ဘာဖြစ်လို့
လဲဆိုတော့ ကျွန်မနဲ့အတူပေါင်းလို့ ခြောက်လပဲကြာရော သူ့မယားတွေ
မန္တလေးက လိုက်လာတာပဲ၊ အဲဒီတော့ ကျွန်မကို သူ့အိမ်ကြီးပေါ် မထား
တော့ဘူး၊ ချောင်ကျကျနေရာမှာ အိမ်ကလေးတစ်လုံး ငှားပေးထားတယ်၊
အဲဒီအခါမှာ လူမှိုက်အောင်သင်းက ကျွန်မ အစောင့်အထိန်းပေါ့။

သည့်ပြင်လူဆိုရင် ယင်ဖိုမနားရဘူး၊ အဲဒီလူကြီးပဲ ကျွန်မဆီကို
လာချင်တိုင်းလာတယ်၊ ခေါ်ချင်တဲ့နေရာ ခေါ်သွားတယ်၊ အမယ် သူက
ပြောလိုက်သေး၊ သူ့မယားကြီးဟာ မကြာခင် ပြန်မှာ၊ အဲဒီ
တော့ အစိုးရအိမ်ကြီးမှာ အတူတူပြန်နေမယ်တဲ့၊ ကျွန်မ မိတော့သူက
ယုံမိတာပေါ့၊ ဒါပေမဲ့ နောက်ခြောက်လလောက်လည်းကြာရော အဲဒီလူ
ကြီးဟာ သူ့အလုပ်နဲ့ ပြောင်းသွားပါရော၊ ကျွန်မကတော့ အိမ်ကလေး
တစ်လုံးနဲ့။

အောင်သင်းက အစကတော့ တော်ပါတယ်၊ သူ့ဆရာကတော်
အဖြစ်နဲ့ လက်ဖျားနဲ့တောင် မတို့ပါဘူး၊ အဲဒီတော့ ကျွန်မမှာ ရွာပြန်ရ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအုပ်မိသူများအကြောင်း

အခက်ဆက်နေရ အခက်နဲ့ အကျပ်တွေ့နေတုန်း အောင်သင်းက ကျွန်မကို အရာရှိတစ်ယောက်က ရချင်တယ်ဆိုပြီး ဆွယ်ပေးတယ်။ အဲဒီလူဟာ ကျွန်မရဲ့ တတိယလင်ပေါ့ သူနဲ့ကျတော့ အဲဒီအိမ်ကလေးမှာပဲ တိတ်တိတ်ပုန်းမယားလေ။

ဒါပေမဲ့ အဝတ်အစားတွေ မပြတ်ဝယ်ပေး၊ ပိုက်ဆံ ဖောဖောသီသီပေး၊ ပွဲတို့၊ ရုပ်ရှင်တို့ သွားကြည့်ချင်ရင် အောင်သင်းက လိုက်ပို့နဲ့ ကျွန်မတို့ တောရွာအနေနဲ့ မတူတော့ (ဝန်ခံပါရဲ့) ကျေနပ်မိတာပေါ့။ ဒါပေမဲ့ လင်များရမယ့် ကျွန်မမှာ အဲဒီဆရာနဲ့ ခုနစ်လလောက်ပဲကြာလိုက်ရတယ်၊ သူ့အလုပ်နဲ့ တစ်ရပ်တစ်ကျေး ပြောင်းပြေးရပါရော။

အဲဒီအခါမှာ ကျွန်မ လင်ဆွယ်ပေးလို့ မြက်မြက်တွေ့နေတဲ့ အောင်သင်းက နောက်တစ်ယောက်နဲ့ နောက်တစ်ယောက်နဲ့ ဆောင်ကြဉ်းပေးပြန်ပါရော၊ အဲဒီလူကျတော့ ဟိုအစဉ်းနှစ်ယောက်လောက် အဆင့်အတန်း မမြင့်ဘူး၊ ရာထူးခပ်ငယ်ငယ်ပဲ၊ ဒါပေမဲ့ သူက အောက်ဆိုက်ကောင်းလို့ အတော်လေးပဲ လှပဝဝနေလိုက်ရပါတယ်၊ သူနဲ့ကျတော့ လေးလလောက်ပဲကြာလိုက်ပါတယ်။

အဲဒီလူနဲ့လည်း ကွဲရော အမောင်ရေ ကျွန်မ သိမ်ငယ်လာလိုက်တာ အောင်သင်းကပါ စော်ကားတော့တာပါပဲ၊ သည်တော့မှ ကျွန်မဘဝ ကျွန်မသိပြီး မြို့မှာ ကိုယ်နဲ့မတန်တဲ့ အဝတ်လှလှတွေ၊ ဘာမျှမလုပ်ရတဲ့ အနေလှလှတွေ မမက်တော့ဘဲ တောမှာပဲ ကောက်စိုက်၊ ကောက်ရိတ်၊ ငါးပက်ရတဲ့ အလုပ်နဲ့ပဲ နေတော့မယ်လို့ဆိုပြီး ရွာပြန်ပြေးပါတယ်။

ဒါပေမဲ့ ဘဝဆုံးဖို့ အကုသိုလ်ကံပါလာတဲ့ ကျွန်မမှာ ရွာမှာ မကောင်းသတင်း ပြေးနေလိုက်တာက မြို့မှာ ကျွန်မဖြစ်ခဲ့တာထက်

မေတ္တာရှင် (ရှေ့ပြည်သူ)

ပိုဆိုးပြီး ပြည့်တန်ဆာမ၊ မကောင်းတဲ့မိန်းမရယ်လို့ ဘယ်သူကမှ အဖက်
မလုပ်ကြဘဲ တံတွေးခွက် ပက်လက်မျောတော့တာပါပဲ။ ကျွန်မကို မိန်းမ
ဖော်တွေ၊ ယောက်ျားလေးတွေကလည်း ဝိုင်းပြီး နှိမ်ကြတာပေါ့။ ကျွန်မ
မှာ နေစရာ ထိုင်စရာ မရှိတော့ဘူး။

သည်တော့ ကျွန်မလည်း စိတ်ခပ်ဆတ်ဆတ်နဲ့ အို... ငါ ဒီမှာ
နေလည်း ဘာထူးသေးလဲ၊ လူတောထဲ တိုးနိုင်တာမှ မဟုတ်တော့ဘဲ၊
အသိတွေ၊ ဆွေမျိုးတွေ မျက်မှောက်မှာ အရှက်တော့ ခံမနေဘူး၊ သူတို့
မမြင်ကွယ်ရာမှာပဲ ငါဖြစ်ချင်သလိုဖြစ်လို့ဆိုပြီး ကသာကို ပြန်လာခဲ့တော့
တာပါပဲ။

ရှေ့ဆက်တော့ အထူးမရေးပါရစေနဲ့တော့ အမောင်ရယ်၊ ဖြစ်လို့
ရာဖြစ်ဆိုပြီး အောင်သင်းကြီးလက်ထဲ ပြန်ရောက်ခဲ့တာမို့ အမောင်ပဲ
စဉ်းစားကြည့်တော့၊ ဒါပေမဲ့ ကသာကပြန်လာပြီး တစ်လလောက်ပဲ
ကြာပါတယ်။ သူက မတရားအနိုင်ကျင့်လွန်းတာနဲ့ သူနဲ့ရန်ဖြစ်ပြီး
အမောင့်ဆီရောက်လာတာပါပဲ။ ကဲ... အမောင် ကျွန်မအကြောင်းတွေ
အမှန်အတိုင်းသိရတော့ အော်ဂလီဆန် မသွားဘူးလား၊ ရွံမသွားဘူးလား။

ဒါကြောင့် အမောင်မေးတိုင်း မပြောပါရစေနဲ့လို့ တောင်းပန်ခဲ့
တာ၊ မပြောတာကလည်း တခြားကြောင့် မဟုတ်ဘူး၊ အမောင့်ကို ချစ်
လွန်းလို့၊ အမောင်က ကျွန်မဘဝရွံ့ပြီး ကျွန်မကို ပစ်သွားမှာစိုးလို့၊ အခု
တော့ ဘာထူးသေးလဲ၊ အမောင် ကျွန်မကို ပစ်သွားပြီ မဟုတ်လား။

အမောင်ရေ... သွားတော့ သွားတော့၊ ကျွန်မရဲ့အသည်းနှလုံးထဲ
က နှစ်နှစ်ကာကာချစ်မိတဲ့ အမောင်ရယ်။

အမောင်ဟာ ကျွန်မကို သူများလို လှည့်စားယူတာလည်း မဟုတ်၊

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

လူမှိုက်ငွေပေးပြီး ယူတာလည်းမဟုတ်၊ တကယ့်စိတ်ကောင်း၊ တကယ့် သတ္တိနဲ့ယောက်ျားပီပီ လူမှိုက်လက်ထဲက ကျွန်မဘဝကို ကယ်တင်တာ ကျွန်မ သိပါတယ်။ ဒါကြောင့်လည်း အမောင့်ကို ကျွန်မချစ်တာ၊ အသက် ပေးပြီးချစ်တာ အမောင်၊ စတွေ့တွေ့ချင်း အစ်ကိုလို့ခေါ်ခဲ့ရာက နောက် တော့ နှလုံးသားထဲမှာ ပေါ်လာတဲ့အတိုင်း 'အမောင်'လို့ ဘယ်သူ့ကိုမှ မခေါ်ဘူးတာခေါ်ခဲ့တာပဲ အမောင်ရယ်။

အမောင်ကလည်း ကျွန်မကို တကယ်ချစ်တာပါပဲ။ ကျွန်မ သိပါ တယ်။ ဒါပေမဲ့ အမောင် အခု ဆက်မချစ်နိုင်တော့ဘူး မဟုတ်လား၊ မယားရှိရာနေရပ်ကို ပြန်ရတော့မယ်၊ ပြန်ပါ ပြန်ပါ အမောင်ရေ၊ ကျွန်မ ကိုမေ့လိုက်ပါတော့၊ လူဆိုတာ သတ္တဝါတစ်ခု ကံတစ်ခုပဲ။ အမောင်မရှိ တဲ့နောက် ကျွန်မလည်း ဒီဘူတာဝင်းက ဝေးတဲ့နေရာ သွားတော့မယ်၊ လူ့ဘဝဆိုတာ ဒီလိုပဲ။ ဆန်ဆုံစား ကံကုန်သွားကြတာပါပဲ။ အမောင်ရေ သွားတော့ သွားတော့။

မသူ

လူယုတ်မာရဲ့ စကားတစ်ခွန်း

မိန်းမပျိုလေးများကို ဖျက်ဆီးနေသော လူယုတ်မာတစ်ဦးအား စာရေးဆရာတစ်ယောက်က သားသမီးချင်းမစာနာ အဘယ်ကြောင့် ဖျက်ဆီးရသနည်းဟု မေးလိုက်ရာ ၎င်းလူယုတ်မာက 'ကျုပ် ဖျက်ဆီး တယ်ဆိုတာကလည်း ဖျက်ဆီးခံရအောင် နေထိုင်ကြတဲ့ ရုပ်တေးမလေး တွေပါပျ၊ ဣန္ဒြေသိက္ခာနဲ့နေတဲ့ မိန်းကလေးတွေကိုတော့ ဖျက်ဆီးဖို့နေနေ သာသာ အနားတောင် သိခွင့်မရပါဘူး၊ ဥပမာအားဖြင့်ပေါ့ဗျာ ခြေဆေးအိန်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ထဲက ရေကိုသာ ကျုပ်ခြေဆေးမှာပေါ့၊ သောက်ရေအိုးထဲက ရေကို ကျုပ် ခြေမဆေးရဲပါဘူးဟုဆို၏။

အမျိုးသမီးတိုင်း သောက်ရေအိုးထဲက ရေလိုဖြစ်အောင် ကြိုးစား၍ မေတ္တာကို ဗန်းပြကာ ခန္ဓာကိုယ်ကိုပင် လိမ်၍ယူကြသော လူယုတ်မာ များလက်မှ ကင်းဝေးကြပါစေသော်။

ကြည်ညိုခြင်း သုံးမျိုး

ဒကာ၊ ဒကာမတို့၏ ကြည်ညိုခြင်း၊ သီတင်းသုံးဖော်တို့၏ ကြည်ညိုခြင်း၊ မိမိကိုယ်ကို ကြည်ညိုခြင်းလို့ ကြည်ညိုခြင်းသုံးမျိုးထဲမှာ မိမိကိုယ်ကိုမိမိ ပြန်ပြီး ကြည်ညိုဖို့ဟာ အရေးအကြီးဆုံးပဲ။ သံသရာမှာ ဘဝကူးကောင်းချင်တဲ့သူတွေ အလေးအနက်ထားရမယ့် အချက်ပဲ။ ဘာကြောင့်လဲဆိုတော့ မကောင်းမှု အကုသိုလ်ပြုထားတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်ဘစ် ယောက်အနေနဲ့ သူတစ်ပါးကို လိမ်ညာဟန်ဆောင်လို့ ရသော်လည်း မိမိကိုယ်ကို လိမ်ညာဟန်ဆောင်၍ မရလို့ပါပဲ။

ရန်ကုန်တိုင်း၊ ရွှေပြည်သာမြို့၊
မန္တလေးကျောင်းတိုက်ဆရာတော်



သာသနာစော်ကား လူလိမ်များ

‘ကြည်ညိုဖွယ်ရာ အများသံဃာ၊ ကိုးကွယ်ရာမှာ ရွေးချယ်ပါ’
ဟူသော မှတ်သားဖွယ်ရာ စကားလေးကို ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်တိုင်း သေချာ
သိအောင် ကြိုးစား၍ ကျင့်သုံးသင့်ကြပါသည်။ ကြည်ညိုရာမှာ အများ
သံဃာဟူသော စကားမှာ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်မှန်သမျှ ရဟန်းသံဃာ တွေသမျှ
ကို ကြည်ညိုလေးစားရပါမည်။ ကြည်ညိုလေးစား၊ အရိုအသေပေးရုံမျှ
ဖြင့် မိမိတွင် ဘာမှ ယုတ်လျော့မသွားပါ။

အရိုအသေပေးလိုက်သည်နှင့် အာယု- အသက်ရှည်ခြင်း၊ ဝဏ္ဏ-
အဆင်းလှခြင်း၊ သုခ- ချမ်းသာကြီးခြင်း၊ ဗလ- အားခွန်ဗလကြီးမား
ခြင်းဟူသော အကျိုးလေးပါးကို ဘဝဆက်တိုင်း ရရှိပါလိမ့်မည်။ အရို
အသေအပေးခံရသောသူက ရိုသေထိုက်သော အရည်အသွေးမရှိလျှင်
လည်း သူ့လမ်းသူ သွားပါလိမ့်မည်။ အရိုအသေပြု ကြည်ညိုသောအနေ
ဖြင့်ကား ကုသိုလ်တရားသာ ရစေရာရှိပါသည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ကိုးကွယ်ရာမှာ ရွေးချယ်ပါဟူသည်ကား ဆရာမှတ်မှတ်၊ သမားမှတ်မှတ် ကိုးကွယ်တော့မည်ဆိုလျှင်ကား ရဟန်းစစ်စစ်၊ ရဟန်းမှန်ဟုတ်မဟုတ်၊ သာသနာတော်၏တာဝန်ကို ထမ်းဆောင်ခြင်း ရှိ မရှိ၊ လောကီ၊ လောကုတ္တရာ ကောင်းကျိုးချမ်းသာကို ညွှန်ပြနိုင်သော ပညာရှိသူတော်ကောင်းမှန် မမှန်ဟူသော အချက်တို့ဖြင့် ရွေးချယ်ရမည်ဟု ဆိုလိုပါသည်။ ထိုသို့ မရွေးချယ်မိသောကြောင့် ()မြို့နယ်မှ လူအတော်များများမှာ သင်္ကန်းအရေခြံ လူတစ်ယောက်၏ အလိမ်အညာကို ခံလိုက်ကြရပါသည်။

ပညာဉာဏ်နည်း၊ သဒ္ဓါကံ၊ အလှဲဖြစ်တတ်သည်။

ပညာဉာဏ်များ၊ သဒ္ဓါပါး၊ အမှားဖြစ်တတ်သည်။

သဒ္ဓါနှင့် ဉာဏ်၊ နှစ်ခုသန်မှ၊ လမ်းမှန်သို့ ကျသည်ဟူသော ဒီပဲရင်းဆရာတော်၏ သြဝါဒအတိုင်း တွေးခေါ်မြော်မြင်သော ပညာကနည်းပြီး ကြည်ညိုသောသဒ္ဓါက သိပ်များနေလျှင် ကြောင်သူတော်မျိုးကို ကိုးကွယ်ဆည်းကပ်မိတတ်သည်။ သဒ္ဓါကနည်းပြီး တွေးခေါ်မြော်မြင်သော ပညာကများနေပြန်လျှင် သူတော်ကောင်းကို စော်ကားပြီး ကောက်ကျစ်စဉ်းလဲတတ်ပြန်သည်။

ထို့ကြောင့် ဘာသာရေးလောကတွင် အမှန်သို့ ရောက်လိုလျှင် သဒ္ဓါနှင့် ပညာချိန်ခွင်လျှာကို ညီမျှစွာ ရှိနေကြရပါသည်။ ၎င်းနေ့က ထိုမြို့တွင် အုံးအုံးကျွက်ကျွက် ဖြစ်နေကြသည်။ အကြောင်းကား တိပိဋက နှစ်ပုံခွဲအောင် ဆရာတော်ကံပါး ချမ်းဆန်အလှူခံကြမည် ဖြစ်သောကြောင့် ပါတည်း။ မြို့နယ်အကြီးအကဲကို အပိုင်စည်းရုံးပြီး ဖြစ်သောကြောင့် ကားလမ်းမတစ်လျှောက်တွင် ဆန်လှူမည့် ဗုဒ္ဓဘာသာသဒ္ဓါရှင်များ ဖွေးဖွေးလှုပ်နေတော့သည်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တိပိဋကနှစ်ပုံခွဲအောင် ကိုယ်တော်ကလည်း သမားဂုဏ်ပြုလေ
 ရောသလားမသိ၊ တရားဟောတာပင် ရိုးရိုးဆရာတော်များလိုမဟုတ်။
 ရိုးရိုးဆရာတော်များ တရားဟောသည့်အခါ ယခု တရားတော်သည်
 ဘယ်ပါဠိတော်၊ ဘယ်အဋ္ဌကထာ၌ လာသည် စသည်လောက်သာ ဟော
 ပြောကြသည်။ ယခု ဆရာတော်က တော်တော်ပင် အသေးစိတ်ကျသည်။
 ဘယ်ပါဠိတော် ဘယ်သုတ်၊ စာမျက်နှာ ဘယ်လောက်၊ ကြောင်းရေက
 ဘယ်လောက် စသည်အထိ အသေးစိတ်ဟောသည်။

ထိုသို့ဟောတာကိုပင် မြို့သူမြို့သားများက တိပိဋကနှစ်ပုံခွဲ အောင်
 ထားလို့သာ အခုလို တိတိကျကျ ဟောနိုင်တာဟု ယူဆပြီး ဆထက်ထမ်း
 ပိုး အကြည်ညို တိုးနေကြပြန်ပါသည်။ ဆရာတော်ကြံမည့် လမ်းတစ်
 လျှောက် မျက်နှာသုတ်ပုဝါများ ခင်းထားလိုက်သည်မှာ မြေကြီးလွတ်
 သည့်နေရာပင် မရှိတော့ပေ။ ဆွမ်းဆန်စိမ်းလောင်းလှူပြုကြီးကား အောင်
 မြင်စွာ ပြီးဆုံးသွားပေပြီ။ ဆွမ်းဆန်၊ ငရုတ်၊ ကြက်သွန်များ ကားကြီး
 နှစ်စီးတိုက်ခန့် ရရှိသွားသည်။

တိပိဋကနှစ်ပုံခွဲအောင် ကိုယ်တော်ကြံပြီး အတော်လေးအကြာမှာ
 ပင် သဒ္ဓါနှင့် ပညာမျှသော တကယ့် ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဖြစ်သော ဒကာ
 တစ်ယောက် မြို့နယ်ဥက္ကဋ္ဌအိမ်ပေါ်သို့ အမောတကော တက်လာပါသည်။
 တကယ့် ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဟု ဆိုလိုက်ရာ တခြားအလကား ဗုဒ္ဓဘာသာ
 ဝင်ရှိသေးလို့လားဟု မေးစရာ ရှိလာပြန်သည်။ အလကား ဗုဒ္ဓဘာသာ
 ဝင်ဟူ၍ကားမရှိပါ။ မိရိုးဖလာ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဟုကား ရှိနေပါသေးသည်။
 မိရိုးဖလာ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်နှင့် တကယ့်ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်တို့၏ ခြားနား
 ချက်ကို ဖော်ပြပါဦးမည်။ မိမိတို့၏ အဘိုးအဘွား၊ အဖေအမေတို့က

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဖြစ်လိုသာ မိမိလည်းဗုဒ္ဓဘာသာဝင် ဖြစ်လိုက်ရသည်။
ဗုဒ္ဓဘာသာအကြောင်း စာပေများကိုလည်း တတ်အားသမျှ မလေ့လာ၊
တရားဒေသနာများကိုလည်း မနာကြားသဖြင့် ဗုဒ္ဓဘာသာအကြောင်း
နက်နဲတစ်လုံးမျှ မသိသောသူကို မိရိုးဖလာ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဟု ခေါ်သည်။

ဗုဒ္ဓဘာသာစာပေများကိုလည်း တတ်အားသမျှ လေ့လာ၊ တရား
ဒေသနာများကိုလည်း အခါအားလျော်စွာ နာကြားပြီး ရတနာသုံးပါးကို
နှစ်နှစ်ကာကာ ယုံကြည်ကိုးကွယ်သောသူများကို တကယ့် ဗုဒ္ဓဘာသာဟု
ခေါ်ရပေသည်။

ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်နှစ်မျိုးလုံးတို့သည် သာမန်အချိန်တွင်ကား အတူ
တူပင် ဖြစ်၏။ ကွဲပြားသွားသည့်အချိန်ကား ဘာသာခြားနှင့် အိမ်ထောင်-
ပြုသော အချိန်၊ ဘာသာခြားတို့က တိုက်တာ၊ ဥစ္စာ လာဘ်လာဘတို့
ဖြင့် ဆွဲဆောင်လာသောအချိန်တို့ပင် ဖြစ်သည်။ ထိုသို့သောအချိန်သို့
ရောက်လာလျှင် မိရိုးဖလာ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များသည် မိမိဘာသာကို ကြက်
ကလေး၊ ငှက်ကလေးလို သဘောထားပြီး အလွယ်တကူ စွန့်ပစ်ကာ
ဘာသာခြားအယူကို ယူလိုက်ကြပါတော့သည်။

တကယ့် ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များကား ဘယ်လို ဘာသာခြားနှင့်ပင်
အိမ်ထောင်ကျကျ၊ ဘယ်လိုဥစ္စာ တိုက်တာနှင့်ပင် ဆွဲဆောင်လာလာ
မိမိဘာသာကို ဘယ်သောအခါမှ မစွန့်တော့ပေ။ တကယ့် ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်
ဖြစ်သော ထိုအမျိုးသားလေးသည် မြို့နယ်ဥက္ကဋ္ဌကြီးကို တွေ့လိုက်ရ
သည်နှင့်...

‘ဦးလေး ဒီဆန်အလှူခံတဲ့ ဆရာတော်က ဦးလေးနဲ့သိတာ ကြာပြီ
လား’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

‘မကြာသေးပါဘူး၊ မကြာသေးဆို အခု ဆန်လာအလှူခံမှပဲ သိတာပါ’

‘ဘယ်ကျောင်းတိုက်ကတဲ့လဲ’

‘မန္တလေးမြို့ () စာသင်တိုက်ကတဲ့၊ မင်းကလည်း ခုမှ ငါ့ကို ဘာလို့လာမေးနေတာလဲ၊ ဒီဆရာတော်ကို မသင်္ကာလို့လား’

‘ဟုတ်တယ် ဦးလေး၊ ကျွန်တော်လည်း ဘာသာရေးစာစောင်တွေ၊ သတင်းစာတွေအမြဲတမ်း ဖတ်နေတာပဲ၊ အဲဒီကျောင်းတိုက်က တိပိဋက အောင်တာ တစ်ခါမှ မတွေ့မိဘူး’

‘မင်းကသာ မတွေ့မိနေ၊ ဟောဒီမှာ အဲဒီဆရာတော် တံဆိပ်တုံးနဲ့ ထောက်ခံစာတွေ’

‘ဦးလေးရာ... တံဆိပ်တုံးတွေ ထောက်ခံစာတွေက အတုလုပ်လည်း ရနိုင်တာပဲ၊ အဲဒီတော့ ဒီလိုလုပ်၊ အဲဒီ စာသင်တိုက်က ဖုန်းနံပါတ် ကျွန်တော့်ဆီမှာရှိတယ်၊ ဦးလေး ဖုန်းဆက်ကြည့်ပေတော့’

‘ဘာသာရေးကိစ္စမှာ ဒီလောက် မေးမြန်းစုံစမ်းနေလို့ ကောင်းပါ့မလားကွာ၊ တော်ကြာ အားနာစရာတွေ ဖြစ်နေပါ့မယ်’

‘ဦးလေး စာသင်တိုက်က ဆရာတော်တွေဟာ အင်မတန်လောဘနည်းပြီး ရောင့်ရဲကြတယ်၊ ကိုယ့်ဆွမ်း ကိုယ်ခံစားပြီး စာချနေကြတာ၊ တကူးတက လာပင့်ရင်သာ အလှူခံကြရင် ကြွမယ်၊ ဒီတိုင်းကြီးတော့ ဘယ်မြို့ကိုမှ အလှူခံကြလေ့မရှိဘူး၊ ကဲ... ဒါနဲ့ သိပ်နောက်ကျသွားမယ်၊ ကျွန်တော်ကလည်း အခုမှ အဝေးက ပြန်ရောက်တာ၊ အဲဒီကျောင်းကို မြန်မြန်သာ ဖုန်းဆက်မေးလိုက်ပါ’

ဖုန်းဆက်ပြီး ခဏအကြာမှာပင် ရက်ကွက်ကောင်စီဥက္ကဋ္ဌကြီးမျက်နှာ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ကွက်ခနဲ ပျက်သွားသည်။ ဖုန်းကိုင်ထားရင်းကပင် နောက်လှည့်၍...

‘ဟုတ်တယ်ဟေ့၊ တို့တစ်တွေတော့ အလိမ်ခံရပြီ၊ အဲဒီကျောင်း
တိုက်က ဘာအလှူခံမှ မလွှတ်ဘူးတဲ့’

‘ကဲ... ဦးလေး အချိန်သိပ်မရှိတော့ဘူး၊ ရဲစခန်းကို အကြောင်း
ကြား၊ ဒီမြို့က ရဲစခန်းကမှတစ်ဆင့် လူလိမ်တွေရဲ့ကား ဖြတ်သွားမယ့်
မြို့နယ်တိုင်းက ရဲတပ်ဖွဲ့တွေကို ချက်ချင်း အကြောင်းကြားပြီး မြို့အဝင်က
စောင့်ဖမ်းခိုင်းပေတော့’

ထိုလူလိမ်အဖွဲ့ကြီးကို မန္တလေးမြို့အဝင်မှာပင် ဖမ်းမိလိုက်ပါသည်။
သေချာ စစ်ဆေးကြည့်တော့ သင်္ကန်းအရေခြုံ လူလိမ်တစ်ယောက်ဖြစ်
ကြောင်း သိရတော့သည်။ ဤကဲ့သို့သော သာသနာစော်ကားသည့် လူလိမ်
များ အင်မတန်မှ များပြားလှပါသည်။ သတိရှိနိုင်ကြပါစေ။



ရင်နာစရာ လိပ်အင်းကျေးရွာ

ရန်ကုန်နှင့်သုံးဆယ်မြို့နယ်ကြားတွင် လိပ်အင်းအမည်ရှိ ရွာတစ်ရွာ ရှိသည်။ တစ်နေ့တွင် သာသနာရေးအရာရှိတစ်ယောက်ထံ ထိုရွာမှ လူကြီး အချို့ရောက်လာကြပြီး သာသနာရေးအကူအညီတစ်ခု တောင်းကြသည်။

‘ဆရာ ကျွန်တော်တို့ရွာမှာ ဘုန်းကြီးကျောင်း မရှိဘူး၊ ကျောင်း တစ်ကျောင်းလောက် ဆောက်ပြီး ဘုန်းကြီးတစ်ပါးလောက် ကိုးကွယ် ထားချင်ပါတယ်။ အဲဒါ ဘေးရွာက သံဃာနာယကအဖွဲ့များက ခွင့်ပြု ချက်မပေးဘူးဖြစ်နေပါတယ်။ ဆရာတတ်နိုင်ရင် ကူညီပါ’

‘သာသနာရေးအရာရှိ မျက်မှောင်ကြုတ်သွားသည်။ သာသနာ စည်ပင် ထွန်းကားမယ့်အရေးကို ဘယ်သံဃာမှ တားမြစ်မည်မဟုတ်။ ဒီရွာမှာ အကြောင်းထူးတစ်ခုရှိခဲ့လို့သာ သံဃာ့အဖွဲ့အစည်းက ကျောင်း ဆောက်ဖို့ ချက်ချင်း ခွင့်မပြုတာဖြစ်မယ်’ဟူသော အတွေးနှင့်သေချာ သိရန် လိပ်အင်းကျေးရွာအထိ လိုက်သွားလိုက်သည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

လိပ်အင်းကျေးရွာထိပ် ရောက်ကြတော့ ဆည်းဆာအချိန် ဖြစ်နေပြီ။ ရွာထိပ်တွင် ပြိုကျပျက်စီးနေသော ကိုးတောင်ပြည့်စေတီလေး တစ်ဆူကိုသာ တွေ့ရသည်။ ဘုန်းကြီးကျောင်းမရှိဘဲ စေတီပျက်လေးတစ်ဆူသာ ရှိနေခြင်းကလည်း ထူးခြားချက်တစ်ခုပင်။ ဒီစေတီ ဘယ်သူ တည်ခဲ့သနည်း။ ဒီလောက် စေတီလေးတစ်ဆူကို ဘာကြောင့် ဒီရွာသားများက မဖြုပြင်ကြသနည်း။

‘နည်း’ပေါင်းများစွာကို အတွေးနယ်ချဲ့ရင်းဖြင့် လိပ်အင်းရွာမှ ရှေ့မီနောက်မီ ရပ်မိရပ်ဖတစ်ဦးဖြစ်သည့် အဘတစ်ယောက်ကို မေးကြည့်ရပါတော့သည်။ ထိုအခါကျမှပင် ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်အားလုံးအတွက် ရင်နာစရာကောင်းလှသော လိမ်လည်မှုဖြစ်ရပ်ဆန်းတစ်ခုကို သိလိုက်ရပါတော့သည်။ အိမ်ခြေက နည်းပြီး ပစ္စည်းရှိသူ ရှားသောကြောင့်လောမသိ။ အစဉ်အဆက်ကပင် လိပ်အင်းကျေးရွာတွင် ဘုန်းကြီးကျောင်းမရှိခဲ့။ တခြားရွာမှ ကျောင်းကိုသာ စုပေါင်း ကိုးကွယ်ကြရသည်။

ကိုယ့်ကျောင်းနှင့် ကိုယ့်ဆရာတော်နှင့် ကိုးကွယ်ချင်လွန်းလှသဖြင့် ဆရာတော် ကောင်းကောင်းရှာနေသည်မှာ အတန်ကြာလေပြီ။ တစ်နေ့တွင် ရပ်မိရပ်ဖတစ်ဦးက ပဲခူးဘက်တွင် ရေရှင်ဆရာတော်အဖြစ် နာမည်ကြီးနေသော ဆရာတော်တစ်ပါးကို မရအရ ပင့်လာပါတော့သည်။ ထိုဆရာတော်က ဒကာ၊ ဒကာမအချို့က ရဟန္တာဟု သမုတ်ကြသည်ဆို၏။

ဘုရားရှင်နှင့်ရဟန္တာချင်းသာ သိနိုင်သောအရာကို ဒကာ၊ ဒကာမများက ဘယ်လိုပေတံနှင့် တိုင်းတာပြီး ရဟန္တာအဖြစ် သတ်မှတ်နေကြသည် မသိပေ။

တစ်ဖန် ထိုဆရာတော်လက်နှင့် ထိထားသောရေသည် အသက်ရှိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

သည့်အလား လှုပ်ရှားလာသောကြောင့် ရေရှင်ဆရာတော်ဟု ခေါ်ကြသည်ဆိုပြန်၏။ ထိုရေကို သောက်လျှင် ရောဂါကင်းသည်။ လာဘ်ကောင်းသည်။ ဈေးရောင်းကောင်းသည် စသော အမျှော်များဖြင့် ဆွဲဆောင်လိုက်ရာ ထိုဆရာတော်ရောက်ပြီး မကြာမီမှာပင် လိပ်အင်းကျေးရွာမှာ လူတရားရုံးနှင့် စည်ကားလာပါတော့သည်။

သုံးဆယ်နှင့် ရန်ကုန်မြို့ပေါ်မှ သူဌေးများပင် လိပ်အင်းကို ချောင်းပေါက်အောင် လာနေကြသည်။ မနက်မိုးလင်းသည်နှင့် ရေရှင်ဆရာတော် လက်နှင့်ထိထားသော ရေကိုယူချင်သူများက ကျောင်းရှေ့တွင်စီတန်းနေကြပြီး သဒ္ဓါလွန်ကြသူ အမျိုးသမီးများက လက်နှင့်ထိသောရေပင် ဒီလောက်စွမ်းလျှင် တစ်ကိုယ်လုံးနှင့် ထိထားသော ရေဆိုလျှင် ပိုလို့ပင် စွမ်းနိုင်သည်ဟူသော အယူအဆဖြင့် ရေရှင်ဆရာတော်၏ ချီးရေကိုပင် အရယူရန် ကြိုးစားကြသဖြင့် မနည်း တားမြစ်ကြယူရသည် ဟူ၏။

လူအများ၏ယုံကြည်မှုကို ရသည်နှင့် ပွပေါက်ကြသော ဇာတ်လမ်းကား စလေပြီ။ အကြည်ညိုလွန်နေကြသော လိပ်အင်းကျေးရွာသူရွာသားများက ကျောင်းဆောက်လှူချင်နေကြသော်လည်း ရေရှင်ဆရာတော်က လက်မခံ၊ သာသနာအတွက် ပို၍ အရေးကြီးသော သတ္တဝါတွေကို ကယ်တင်မည့် (သူ၏ အယူအဆ) စေတီကိုသာ ရှေးဦးစွာ တည်လိုသည်ဟု တောင်းဆိုလိုက်ရာ ဘာမျှမသိကြရှာသော ရွာသူရွာသားများမှာ ပို၍ပင် အကြည်ညိုတိုးသွား ကြရပြန်သည်။

နာမည်ကြီးဆရာတော် စေတီတည်မည်ဆိုသည်နှင့် သူဌေးများရော ဆင်းရဲသားများရော စုပေါင်း၍ လှူလိုက်ကြရာ ကိုးထောင်ပြည့်စေတီလေးမှာ ခဏနှင့်ပြီးဆုံးသွားသည်။ စေတီဌာပနာ ထည့်သွင်းပူဇော်ရန်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

အတွက်လည်း စိန်ရွှေငွေ လက်ဝတ်လက်စားများကို ဝိုင်းဝန်းလှူဒါန်း လိုက်ကြရာ လက်ကိုင်ပဝါ အကြီးတစ်ထပ်စာခန့်မျှ ရရှိသွား၏။

ဌာပနာသွင်းခါနီးသောအခါ ရေရှင်ဆရာတော်က ပရိတ်သတ် အားလုံးကို အဝေးသို့သွားခိုင်းပြီး သူတစ်ပါးတည်း စိတ်ကြိုက်စီမံပြီး ဌာပနာသွင်းသည်။ ဌာပနာသွင်းခြင်းကိစ္စပြီးမှ ပရိသတ်များကို စေတီနားသို့ လာခွင့်ပေးသည်။ ဌာပနာသွင်းပြီးနောက် စေတီထီးတော်တင်မည့်ရက် တွင်ကား ထီးတော်တင်ပွဲကြည်ညိုချင်သူများ၊ ရေရှင်ဆရာတော်ကို ဖူး ချင်သူများဖြင့် လိပ်အင်းရွာသည် ကြက်ပျံမကျ စည်ကားနေပါတော့သည်။

ဖွတ်ထွက်မှ တောင်ပို့မှန်းသိကြပြီ

ထိုအချိန်မှာပင် ဆရာတော်ကြီးတစ်ပါးနှင့် ဒကာအချို့ ရေရှင် ဆရာတော် သီတင်းသုံးရာ ယာယီစံကျောင်းတော်ပေါ် ကြွရောက်တော်မူ လာရာ အကြောင်းမသိသော ပရိတ်သတ်အချို့က တကယ့်အချိန်မှာ ဘာလာရှုပ်တာလဲ မသိဘူးဟူသော အတွေးဖြင့် ဆရာတော်ကြီးနှင့် ကျောင်းပေါ်တက်လာသော ဒကာအချို့ကို စောင်းငဲ့ကြည့်လိုက်သည်။

အကြောင်းသိဖြစ်သော ရေရှင်ဆရာတော်သည်ကား ဆရာတော် ကြီးကို မြင်သည်နှင့် ပလ္လင်ပေါ်မှ ချက်ချင်းခုန်ချကာ...

‘ဆရာတော်ဘုရား... တပည့်တော်ကို ခွင့်လွှတ်ပါဘုရား၊ နောက် တပည့်တော် ဒီလို မလုပ်တော့ပါဘူး ဘုရား၊ တပည့်တော် အခုပဲ လူ ဝတ်လဲပါ့မယ် ဘုရား’ ဟုဆိုကာ အနီးရှိ ဒကာများထံမှ အင်္ကျီပုဆိုးများကို ယူဝတ်ကာ ချက်ချင်း လူဝတ်လဲလိုက်ပါတော့သည်။ ရဟန္တာသည် လူ ထွက်ရိုး ထုံးစံမရှိပါ။ ယခု ရေရှင်ဆရာတော်ကား ချက်ချင်း လူထွက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

လေပြီ။

ဝေဝေဝါဖြင့် ဝေခွဲမရဖြစ်နေသော ပရိတ်သတ်များကို ဆရာတော် ကြီးက သေချာ ရှင်းပြတော်မူသည်။

‘ဒကာ၊ ဒကာမတို့ ဒီပုဂ္ဂိုလ်ဟာ ဆရာတော်တို့ရွာမှာ ဖဲရိုက်၊ အရက်သောက်ပြီး လိမ်ညာစားနေတဲ့ လူလိမ်ငပိန်ဆိုတာ သူပဲ၊ ရွာက နှင်ထုတ်လိုက်လို့ ထွက်သွားတာ အတော်ကြာမှ ဒီရွာမှာ ထပ်လိမ်နေပြန် ပြီလို့ သတင်းကြားလို့ ဘုန်းကြီးတို့ လိုက်လာခဲ့ကြတာပဲ’

‘ကဲ... ဒကာ၊ ဒကာမတို့ လက်တွေ့သိရအောင် ပိတ်ထားတဲ့ ဌာပနာတိုက်ကို အများရှေ့မှာ ဖွင့်ပြပါ’

ဆရာတော်စကားဆုံးသည်နှင့် ဒကာအချို့က သံတူရွင်း၊ တူတို့ကို ယူ၍ ဌာပနာတိုက်ကို ဖွင့်ချလိုက်ရာ ရတနာပစ္စည်းတစ်ခုကိုမှ မတွေ့ရဘဲ မိန်းမထဘီစုတ်၊ အင်္ကျီစုတ်တို့ကိုသာ တွေ့ရလေရာ ပရိတ်သတ်များမှာ ထိုအခါကျမှ စိတ်မထိန်းနိုင်တော့ဘဲ ရေရှင်ဆရာတော်အမည်ခံ လူလိမ်ငပိန်ကို ဝိုင်းသတ်မည် လုပ်ကြသဖြင့် သက်ဆိုင်ရာကိုခေါ်ကာ အချုပ်ထံ မြန်မြန်ထည့်လိုက်ရပါသည်။ ထိုအကြောင်းကြောင့် သံဃာ့နာယကများက ချက်ချင်း ကျောင်းဆောက်ခွင့်မပြုခြင်း ဖြစ်သည်။

ဤနေရာ၌ လက်တွေ့မကြုံဘူးသေးသော စာဖတ်သူအချို့က မိမိအပေါ် ဒါလောက် ယုံကြည်အားထားသူများအပေါ် လိမ်ရက်လေခြင်းဟု ယူကနူးမရ ဖြစ်ပေလိမ့်မည်။ ဤအချက်နှင့်ပတ်သက်၍ တရားရုံးတွင် ဖြောင့်ချက်ပေးနေသော လူလိမ်တစ်ယောက်နှင့် တရားသူကြီး၏အမေးအဖြေ ဟာသတိုလေးတစ်ခုကို ဖတ်ရဖူးသည်။

(တရားသူကြီး) မောင်မင်းဟာ ကိုယ့်အပေါ် ဒီလောက်ယုံကြည်စိတ်ချ

ယောဂရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တဲ့ သူ့အပေါ်ကိုမှ လိမ်ယူရက်တာ အံ့ဩစရာကောင်းတယ်။

(လူလိမ်)

တရားသူကြီးရဲ့စကားက ပိုပြီး အံ့ဩစရာကောင်းတယ်။ ကျွန်တော်တို့လို လိမ်ညာစားတဲ့ သူတွေအနေနဲ့ ကိုယ့်အပေါ် မယုံကြည်တဲ့သူကို ဘယ်လိုလုပ်ပြီး လိမ်ညာလို့ရမလဲ။ ကိုယ့်အပေါ် ယုံကြည်လာတဲ့သူကိုမှ လိမ်ညာလို့ရမှာပေါ့။

ဘာသာရေးနှင့် ပတ်သက်လာလျှင် တကယ့်သီလ၊ သမာဓိ၊ ပညာကို မကြည်ညို မလေးစားဘဲ၊ အထူးအဆန်း အံ့ဩဖွယ်ရာကိုသာ ရှာကြံ၍ ကြည်ညိုနေသမျှ၊ လေးစားနေသမျှ လူလိမ်လူညာတို့၏ စက်ကွင်းမှ ဘယ်သောအခါမှ လွတ်မြောက်မည် မဟုတ်ပါချေ။

သဒ္ဓါ ပညာ ချိန်ခွင်လျှာ

သဒ္ဓါအားသည်၊ ပညာနည်းက၊ အရည်းမည်ခါ၊ ယူမိစ္ဆာ၌၊ သဒ္ဓါလေးမြတ်၊ ဆည်းကပ်တတ်၏၊ ပရမတ်အရာ၊ မလိမ္မာဘဲ၊ သဒ္ဓါနဲ့နည်း၊ ပညာကံလည်း၊ အလွဲပြေးဝင်၊ အမြင်ယွင်းစွ၊ တိမ်းပါးကြလျက်၊ မီးပြသမား၊ တွင်းကျွဲမှားသို့၊ ဆယ်ပါးကောင်းမှု၊ လှူဝတ္ထုကို၊ စွန့်ပြုမလွတ်၊ စိတ္တပါဒ်မျှ၊ ဒါနအလှူ၊ မြောက်သောဟူ၍၊ အယူဖောက်လွဲ၊ မိစ္ဆာစွဲ၏။

(မာဃဒေဝ)



လက်ပွားမြင့်ဦး

လက်ကလေးတစ်ချောင်း အပိုပါသောကြောင့် သူ့ကို နတ်ကတော်
 လောကတစ်ခုလုံးအား လက်ပွားမြင့်ဦးဟု ခေါ်ကြသည်။ နတ်ကတော်
 ဖြစ်လာကြခြင်းတွင် အကြောင်းအမျိုးမျိုး ရှိပေလိမ့်မည်။ သို့သော် မြင်းခြံ
 နယ်မှ နတ်ကတော်ကြီး (အမျိုးသား) တစ်ဦးကတော့ သူ နတ်ကတော်
 ဖြစ်လာရခြင်း၏ အကြောင်းကို အရှိအရှိတိုင်း ရင်ဖွင့်ဖြလိုက်သည်မှာ
 နက်ကိုးကွယ်သူတိုင်း သိထားသင့်ပါသည်။

စာရေးသူ၏မိတ်ဆွေ ဦးပဏ္ဍိတအမည်ရှိ ရဟန်းတစ်ပါး၏ ကိုယ်
 တွေ့ဖြစ်သည်။ တစ်နေ့တွင် ရဟန်း၊ သံဃာများကို ကြည့်ညှိလည်း
 ကြည့်ညှိ၊ ခင်လည်းခင်မင်သော အမျိုးသမီးကြီးတစ်ဦးသည် ခင်မင်ရာ
 သံဃာ ၅-ပါးခန့်ကိုပင့်ပြီး ဆွမ်းကပ်သည်။ ၎င်းသံဃာမှာ သူ့အိမ်တွင်
 ဆွမ်းခံကြွနေသော ဦးပဏ္ဍိတအပါအဝင် သံဃာများဖြစ်ကြသည်။

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဆွမ်းကပ်ပြီး သီလပေး ရေစက်ချပြုလုပ်သောအခါ ထောင်ထောင်
မောင်းမောင်းနှင့် ဥပဓိရုပ်ကောင်းလှသော အမျိုးသားကြီးတစ်ယောက်
သည် ငါးပါးသီလကို လိုက်အဆိုတွင် သုရာမေရယကို လိုက်မဆိုဘဲ
နေသည်ကို ဦးပဏ္ဍိတ သတိထားလိုက်မိသည်။ သီလပေးပြီးသောအခါ
၎င်းအမျိုးသားကြီးက...

‘တပည့်တော်က နတ်ပွဲကိစ္စ ဆက်လုပ်ရဦးမှာဆိုတော့ အသောက်
အစား ဘယ်လိုမှ မကင်းနိုင်လို့ သုရာမေရယ သိက္ခာပုဒ်ကို လိုက်မဆိုဘဲ
နေတာ ခွင့်လွှတ်တော်မူပါဘုရား’

ဦးပဏ္ဍိတတို့ သံဃာများက နားမလည်သော အမူအရာဖြင့် ဆွမ်း
အစ်မကြီးကို လှမ်းကြည့်လိုက်သောအခါ ဆွမ်းအစ်မကြီးက...

‘ဪ... တပည့်တော်မလည်း လျှောက်မလိုပါပဲ ဘုရား၊ ဒီနေ့
ကစပြီး နောက်သုံးရက်ထိ တပည့်တော်အိမ်ကို ဆွမ်းခံမကြွဘဲ နားပေး
ကြပါဦးဘုရား၊ တပည့်တော် ရိုးရာအတိုင်း နတ်ကနား သုံးရက်ပေးရမှာ
မို့ပါ။ ဒီ ဒကာကြီးက ကနားစိပါဘုရား’

ထိုသို့လျှောက်ပြီးသည်နှင့် ဆွမ်းအစ်မကြီးက အိမ်အောက်ထပ်သို့
ဆင်းသွားသည်။ တရားလည်းနာပြီးသည်မို့ တခြား ပရိတ်သတ်များလည်း
အောက်ထပ်သို့ ထမင်းစားဆင်းသွားကြသဖြင့် အပေါ်ထပ်တွင် ရဟန်းဖျို
ငါးပါးနှင့်ခန့်ညားပြီး ယောက်ျားပီသလှသော ကနားစီးဒကာကြီးတစ်
ယောက်သာ ကျန်ပေတော့သည်။

ထိုအချိန်မှာပင် ပွင့်လင်းပြီး ပြောင်ကျလှသော ဦးပဏ္ဍိတက...

‘ဒကာကြီး စိတ်မဆိုးဘူးဆိုရင် ပွင့်ပွင့်လင်းလင်း မေးကြည့်ချင်
တယ်ဗျာ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

‘မေးပါ၊ ဘုရားတပည့်တော်လည်း ပွင့်ပွင့်လင်းလင်းပဲ ကြိုက်ပါတယ်ဘုရား’

‘ဒကာကြီးရဲ့ ဥပဓိရုပ်နဲ့ဆိုရင် သမာအာဇီဝကျပြီး အဆင့်မြင့်တဲ့ အလုပ်တစ်ခုခုနဲ့ပဲ လိုက်ဖက်ပါတယ်၊ ဒီ နတ်ကတော် (ကနားစီး)အလုပ်နဲ့ လုံးလုံးမလိုက်ဖက်ပါဘူး၊ အဲဒါ ဒကာကြီး ဘာဖြစ်လို့ ဒီနတ်ကတော် အလုပ်ကို လုပ်ဖြစ်လာရတာလဲဆိုတာ ဦးပဉ္စင်းတို့ သိချင်လွန်းလို့ပါ’

‘အင်း... ဦးပဉ္စင်းတို့က အပြုစိတ်ထားနဲ့ ပွင့်ပွင့်လင်းလင်း မေးလာတော့လည်း တပည့်တော်က ရိုးရိုးသားသားနဲ့ အမှန်အတိုင်း ပြန်ဖြေရတာပေါ့ ဘုရား၊ တပည့်တော်ဟာ ကျီးအာသီးလိုပဲ ဘုရား၊ ဥပဓိရုပ် သန်ပြန်ခန့်ညားသလောက် အတွင်းစိတ်ညှိတယ်ဘုရား၊ သူတစ်ပါးအပေါ် မကောင်းတဲ့ စိတ်ယုတ်မာကတော့ မဟုတ်ပါဘူး ဘုရား’

‘အလုပ်ကို လက်ကြောတင်းအောင် လုပ်မစားချင်တဲ့၊ ရေသာခို အချောင်လိုက်ချင်တဲ့ စိတ်ဓာတ်ပါပဲ၊ ဒါနဲ့ အရွယ်ရောက်လာတဲ့အခါမှာ ပင်ပင်ပန်းပန်း မလုပ်ရဘဲ အချောင်ထိုင်စားနိုင်တဲ့အလုပ်ကို စဉ်းစားကြည့်လိုက်တော့ ရုပ်ကွက်လူကြီးအလုပ်လို့ ထင်မိတယ်ဘုရား၊ နည်းမျိုးစုံနဲ့ ကြိုးစားလိုက်တာ ရုပ်ကွက်လူကြီး ဖြစ်သွားတာပါပဲ၊ လူကြီးဖြစ်တာနဲ့ နည်းမျိုးစုံသုံးပြီး စားပစ်လိုက်တာ အတော်လေးစုမိတဲ့အချိန်မှာပဲ အပြစ်တွေပေါ်လာလို့ လူကြီးအဖြစ်က ပြုတ်သွားတယ်။’

‘လူကြီးဘဝက ပြုတ်ပြီးတော့ နောက်ထပ် အချောင်နေ အချောင်စားရမယ့်နေရာကို လှေလာကြည့်လိုက်တော့ အရှင်ဘုရားတို့ ရဟန်းဘဝကို သွားမြင်မိတယ်၊ အချောင်နေ အချောင်စားရတယ်ဆိုတော့ တပည့်တော်ရဲ့ အမြင်ပါ၊ ဒါပေမဲ့ တပည့်တော် ကံကောင်းသွားတယ်၊ ရဟန်း’

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

မဝတ် ဖြစ်လိုက်ပါဘူး။ သင်္ကန်းဝတ်နဲ့ ထင်သလိုနေခဲ့ရင် နောင်ဘဝမှာ ပိုပြီး ခံရမယ်ဆိုတဲ့ အတွေးဝင်လာလို့ပါ။

‘ဒါနဲ့ နောက်ထပ်တစ်မျိုး ဆက်ပြီး တွေးကြည့်လိုက်တော့ ဒီ နတ်ကတော်အလုပ်ကို လာတွေ့တာပါပဲ။ မပင်မပန်း အချောင်စားချင်တဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်တွေအတွက်ကတော့ နတ်ကတော်အလုပ်ထက် ကောင်းတဲ့အလုပ် မရှိပါဘူး ဘုရား’

ဤကား နတ်ကတော်တစ်ယောက်ရဲ့ ဖွင့်ဟဝန်ခံချက်တစ်ခုပင်။ ဖော်ပြလတ္တံ့သော နတ်ကတော်မြင့်ဦး၏ လိမ်လည်မှုသည်ကား ပဉ္စလက် ဆန်ဆန် ထူးဆန်းအံ့ဩဖွယ်ရာ ကောင်းလှသဖြင့် မြန်မာပြည်အနှံ့အပြား တော်တော် အလိမ်ခံကြရမည်ဟု ယူဆရသည်။ ရန်ကုန်မြို့၌ပင် အချို့ကြီး အလိမ်ခံရသည်မှာ နှစ်ကြိမ်ဖြစ်သည်။ ဤသည်မှာ စာရေးသူနှင့်သာ ပတ်သက်သော အသိုက်အဝန်းမှဖြစ်သည်။

စာရေးသူတို့ မသိသော နေရာများ၌ ဘယ်လောက်များ လိမ်ညာ ထားမည် မသိရပေ။ စာရေးသူ သိရသော နေရာများမှာ သန်လျင်ကျောက် တန်းဘက်တွင် တစ်ခုနှင့် လှိုင်မြို့နယ် (၅)ရပ်ကွက်တွင် တစ်ခုဖြစ်သည်။ ယခု လှိုင်မြို့နယ် (၅)ရပ်ကွက်မှ လိမ်လည်မှုကြီးကို အစအဆုံး ဖော်ပြ ပါမည်။ အလိမ်ခံရသော မိသားစုတစ်စုမှာ စာရေးသူနှင့်အလွန်ရင်းနှီး သောကြောင့် အများအကျိုးငှာ မရမက တောင်းပန်ပြီး မေးမြန်းသော ကြောင့်သာ ပြောပြကြခြင်းဖြစ်သည်။ ထိုမိသားစု ယခုအချိန်ထိ ရွှေပြည် သာတွင် ရှိနေပါသေးသည်။



ရွှေပွားပေးမည့် နတ်ကတော်

လွန်ခဲ့သော ၁၅-နှစ်ခန့်က လှိုင်မြို့နယ်၊ (၅)ရပ်ကွက်အတွင်းရှိ လမ်းမကြီးတစ်ခုပေါ်တွင် ဟည်းထနေအောင် ထိုးထားသော မဏ္ဍပ်ကြီး တစ်ခုကို အဝေးမှပင်မြင်နေရသည်။ လူချမ်းသာတစ်ဦးပေးသည့် ကန္ဓားပွဲ ဖြစ်သောကြောင့်လည်း အစစအရာရာ အဆင့်အတန်းမြင့်ပြီး ပြည့်စုံလှ သည်။ ရွှေပွားပေးနိုင်သည်ဆိုသော ကန္ဓားစီးနတ်ကတော် လက်ပွားမြင့်ဦး ဖြစ်နေသောကြောင့်လည်း ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များမှ သူ့ထက်ငါ နတ်ပွဲ ဆီသို့ အလှအယက် လာနေကြသည်။

မသုံးစဖူး အသုံးထူးထားသော ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာဝင်ဟူသော စကားလုံးလေးကို စာဖတ်သူများ နားရှင်းအောင် အနည်းငယ် ရှင်းပြဖို့ တာဝန်ရှိလာပါသည်။ ရန်ကုန်မြို့၊ သရက်တောကျောင်းတိုက်၊ ဖျာပုံတိုက် သစ်ဆရာတော် ရေးသားသော သုတေသန သမ္မာမဂ္ဂင်္ဂပဉ္စကျမ်း အဆို အရ ဘုရား၊ တရား၊ သံဃာ ရတနာသုံးပါးကိုသာ ဆည်းကပ်ကိုးကွယ်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

သူများကို ဗုဒ္ဓဘာသာ အစစ်ဟုမှတ်ရမည်။

ရတနာသုံးပါးနှင့် နတ်၊ ဘိုးတော် မယ်တော်များကို တစ်တန်းစား တည်းထားပြီး နှစ်မျိုးလုံး ကိုးကွယ်သောသူများကို ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာဝင် ဟုဆိုထားသည်။ ယခုလည်း လက်ပွားမြင့်ဦး ခေါင်းဆောင်သောနတ်ပွဲ သို့ ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များ မဏ္ဍပ်လှုံထွက်သည်အထိ ဝင်လာကြ သည်။ လူများတော်တော်စုံလာသည်နှင့် နတ်ဝင်နေပြီဖြစ်သော လက်ပွား မြင့်ဦးက အနီးဆုံးလူနှစ်ယောက် သုံးယောက်ထံမှ အတန်ကြီးပိုက်ဆံ သုံးလေးရွက်ခန့်တောင်းပြီး မျက်နှာသုတ်ပဝါကြီးတစ်ခုနှင့် အုပ်ထားလိုက် သည်။

မျက်နှာသုတ်ပဝါကို လက်ဝါးနှင့် လေးငါးချက်ခန့်ရိုက်ပြီး လှန် လိုက်သည်နှင့် သုံးလေးရွက်သာရှိခဲ့သော အတန်ကြီးပိုက်ဆံများမှာ အပုံ လိုက်ကြီး ဖြစ်နေပါတော့သည်။ လက်ပွားမြင့်ဦးက အပုံလိုက်ဖြစ်နေသော အတန်ကြီး ပိုက်ဆံများကို အံ့နေသော ပရိတ်သတ်ထံသို့ အကုန်ကြပစ် လိုက်ပါတော့သည်။ ထိုသို့ကြဲလိုက်သော ပိုက်ဆံများသည်ပင် သောင်း ဂဏန်းထိရှိသည်။ ထိုတစ်ချက်နှင့်ပင် ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာများ မြင့်ဦးမေ သရဏံ အညံ့နတ္ထိ မြင့်ဦးသရဏံ ဂစ္ဆာမိ ဖြစ်သွားကြတော့သည်။

ပထမရက်ကပြလိုက်သော ငွေပွားပြကွက်ကြောင့် နောက်ရက်တွင် ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များ ထိန်းမနိုင်သိမ်းမရ ဖြစ်လောက်အောင် လှိန်ဝင် လာကြတော့သည်။ ဒုတိယနေ့ကား ကန်တော့ပွဲအတွင်းမှ ငှက်ပျောသီး ခြောက်ဖီးလောက်ကိုထုတ်ပြီး ဝါးနှင့်ရိုက်ကာ သိဒ္ဓိတင်လိုက်သည်ဆို၏။ ပြီးလျှင် တစ်လုံးစီဖြုတ်၍ ပရိတ်သတ်ထံ ပစ်ကြချလေတော့သည်။ အသံချဲ့စက်မှလည်း နတ်အမျိုးမျိုးနှင့် ပဋ္ဌာန်းဆက်ပါသူများ ငှက်ပျောသီး

ယုပတလုံ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

အတွင်းမှ ရွှေစများရနိုင်ကြောင်း ကြေညာပေးရာ ငှက်ပျောသီးများကို မရ၊ အရ လှကြလေတော့သည်။

ထိုငှက်ပျောသီးများထဲတွင်လည်း ဘယ်လောက်ရင်းလိုက်သည် တော့မသိ တချို့ပုဂ္ဂိုလ်များ ရွှေစအချို့ ရသွားကြသည်ကတော့ အသေ အချာပင်။ ထိုညမှာပင် လက်ပွားမြင့်ဦးက တစ်ခါတည်း ကြေညာတော့ သည်။

‘ဆိုင်ရာပိုင်ရာ ပုဂ္ဂိုလ်များက ဒီရပ်ကွက်မှာ ကရတာသိပ်ပျော် နေကြပါတယ်၊ ဒီရပ်ကွက်က သားသမီးတွေနဲ့လည်း ပဋ္ဌာန်းဆက်ပါတယ် လို့ မနောမှာ လာအသိပေးပါတယ်၊ ဒါကြောင့်လည်း ရွှေတွေ၊ ငွေတွေ နတ်ပွဲ ကျင်းပစရိတ် ကုန်ကျငွေထက်သာလွန်အောင် သားသမီးများကို ပေးခဲ့တာဖြစ်ပါတယ်၊ အားလုံးရဲ့ မျက်မြင်ကိုယ်တွေ့ပါပဲ’

‘အခုလည်းဆိုင်ရာ ပိုင်ရာက ကျွန်တော့်ရဲ့မနောကနေ ပြောနေပါ တယ်၊ ဒီရပ်ကွက်သူ ရပ်ကွက်သားများကို ရွှေပွားပေးချင်ပါတယ်တဲ့၊ ဒီအတွက် ဘာလုပ်ကြရမလဲဆိုတာ ရွှေပွားချင်သူများက မြေအိုးအသေး လေးများရှာပြီး မိမိတို့ပွားချင်သလောက် ရွှေထည်များကို ထည့်ယူလာကြ ပါ၊ ကျွန်တော့်ကို ပေးစရာလည်း မလိုပါဘူး၊ ကျွန်တော့်ဆီမှာ ထားစရာ လည်းမလိုဘူး၊ ကိုယ့်အိမ်မှာပဲ ကိုယ်ထားရမှာပါ’

‘မနက်ဖြန် နောက်ဆုံးည နတ်ကနေတဲ့အချိန်မှာ ရွှေပွားချင်သူများ က မိမိတို့ရဲ့ ရွှေထည့်ထားတဲ့ အိုးလေးများကို ကျွန်တော့်ကို ပြရုံပဲပြ ရပါမယ်၊ ပြပြီးတာနဲ့ ကိုယ့်အိမ်ကို ပြန်ယူသွားရမှာပါ၊ တစ်ခုတော့ ရှိပါတယ်၊ ရွှေဟာ ထက်ဝက်ပဲ တိုးပါ့မယ်၊ ထက်ဝက်ထက်တော့ ပို မတိုးပါဘူး၊ အဲဒါကြောင့် များများတိုးချင်ရင် များများထည့်မှပဲ ရနိုင်ပါ

စေတနာကယ်သော လိမ်လည်မှု

သူ့အမည်က ဂီတစာဆို ပန်တျာမြင့်လှိုင် ရန်ကုန်တိုင်းရွှေပြည်သာမြို့၊ အမှတ် (၆)ရပ်ကွက်တွင် နေထိုင်သည်။ တေးရေးဆရာအလုပ်ကို နှစ်ပေါင်းလေးဆယ်ကျော် လုပ်ကိုင်ခဲ့ပြီဖြစ်သောကြောင့်လည်း ဂီတအသိုင်းအဝိုင်းသာမက ပြည်သူ့အချို့ကပါ သိရှိနေကြပါပြီ။ တစ်နေ့တေးသံသွင်းရန် ကိစ္စတစ်ခုဖြင့် ရန်ကုန်မြို့ထဲအရောက် သပ်ရပ်စွာ ဝတ်ဆင်ထားသော အသက်လေးဆယ်ခန့်ရှိ အမျိုးသားတစ်ယောက်က...

‘ဟာ... ဆရာ ဘယ်သွားမှာလဲ’

‘ဪ... ကျွန်တော့်ကို မေးနေတာလား’

‘ဟုတ်တယ်လေ ဆရာကလည်း ကိုယ့်တပည့် ကိုယ်မေ့နေတာကို တောင်တွင်းကြီးတုန်းက ဆရာရဲ့ဦးလေးကတောင် ဒီကောင်ကြီး အနုပညာနဲ့အကျိုးပေးသားပဲ၊ ငါတို့က ဒီလိုဖြစ်မယ်တောင် မထင်ဘူး၊ မင်းရောက်ရင် ဝင်သွားဦးလို့တောင် မှာလိုက်သေးတယ်’

ယောဂီ (ရွှေပြည်သာ)

‘ဪ... အေး... အေး’ ဦးလေးတစ်ယောက်လည်း တောင်တွင်းကြီးမှာ တကယ်ရှိနေသောကြောင့် သူ့စကားကို ထောက်ခံလိုက်ရတော့သည်’

‘လာပါ ဆရာရယ်၊ လမ်းလယ်ကောင်ကြီး၊ လက်ဖက်ရည်လေးဘာလေး သောက်ရအောင်’ ဟုဆိုကာ နီးရာလက်ဖက်ရည်ဆိုင်တစ်ခုထဲ ရောက်သွားကြသည်။ စားပွဲတွင် ထိုင်မိသည်နှင့် ဦးမြင့်လှိုင်က ထိုလူရွယ်ကို အလစ်မပေးဘဲ စောင့်ကြည့်နေပြီး ကိုယ်လည်း ရန်ကုန်သားတစ်ယောက်ပဲ သည်လောက်တော့ မအ,သေးပါဘူး။

အယုံသွင်းပြီး ရသမျှ ညှစ်ယူမည့် သဘောဖြစ်ရမည်ဟု သုံးသပ်လိုက်မိသည်။ ပြီးတော့ လွန်ခဲ့သော အပတ်ကမှ ဂျာနယ်တစ်စောင်ထဲက ဖြစ်ရပ်က ပူပူနွေးနွေးရှိနေသေးသည်။

သူ့လို လူတစ်ယောက်ပင် လူနှစ်ယောက်၏ အသေးစားလိမ်လည်မှုလေးကို ခံလိုက်ရသည်။ ဖြစ်ပုံက ယခု သူ့ဖြစ်ရပ်နှင့် ခပ်ဆင်ဆင်ပင်။ လူနှစ်ယောက်က အလွန်ရင်းနှီးခဲ့သော တပည့်တပန်းနှင့် အယုံသွင်းပြီး လက်ဖက်ရည်ဆိုင် ခေါ်သွားသည်။ ဆိုင်ရောက်တော့ မုန့်မျိုးစုံမှာပြီး စားသောက်ကြသည်။ ဆရာဟု အခေါ်ခံရသူမှာ ဘုမသိဘမသိနှင့် ရောယောင် စားသောက်နေရသည်။ တစ်ခဏအကြာမှာပင် လူနှစ်ယောက်လုံး ရေနွေးထတောင်းသလိုလို၊ ကွမ်းယာထွက်ဝယ်သလိုလိုနှင့် ကိုယ်ဖျောက်စောရ ဖြစ်သွားကြသည်။ နောက်ဆုံးတော့ မိမိသည်သာလျှင် လက်ဖက်ရည်ဖိုး (၁၄၀) ခန့်ကို ရှင်းပေးခဲ့ရပါတော့သည်။ လက်ဖက်ရည်ဖိုးပင် လိမ်သော ခေတ်ကြီးပါတကား။

ယခု မိမိလည်း သည်လိုပုံစံနဲ့များ အလိမ်ခံရလေမည်လားဟု

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသျှများအကြောင်း

သတိရသဖြင့် ထိုလူရွယ်ကို သတိထားကြည့်နေရခြင်း ဖြစ်သည်။ မှာထားသော လက်ဖက်ရည်နှင့် မုန့်များရောက်လာသည်နှင့်...

‘ဆရာ သုံးဆောင်ပါ။ ကိုယ့်ဆရာကို ကြိုတုန်းပြုစုရတာမို့ အားရပါးရ ကျွေးပါရစေ၊ ဒါနဲ့ ပဲခူးက ဆရာအစ်မကြီးရော ကျန်းမာရေးကောင်းရဲ့လား မသိဘူး၊ ကျွန်တော်တောင် အလုပ်များနေတာနဲ့ မဝင်ဖြစ်ခဲ့ဘူး’

‘ဪ... အင်း... အင်း ပဲခူးမှာ အစ်မကြီးတစ်ယောက်ကလည်း တကယ်ရှိနေသည်မို့ သူ့စကားကို အင်းလိုက်ရပြန်သည်။ သည်အထိတောင် သိနေသည်မို့လည်း မယုံသင်္ကာစိတ်က နည်းနည်းလျော့သွားသည်။ ထိုအခိုက်မှာပင် လူရွယ်တစ်ယောက် သုတ်သီးသုတ်ပျာဖြင့် လက်ဖက်ရည်ဆိုင်ထဲ ဝင်လာပြီး ဦးမြင့်လှိုင်တို့စားပွဲရှေ့ ရပ်လိုက်သည်။

‘ဆရာ... ပစ္စည်းယူမယ့်လူတွေ ရောက်နေပြီ၊ ဆရာပြောထားတဲ့ဈေးထက် နည်းနည်းပဲလျော့ပါ အလုပ်ဖြစ်မယ်လို့ ပြောပါတယ်၊ အဲဒါ ပစ္စည်းပေးစားလိုက်ရမလား’

‘ခြောက်သောင်းကဗျော့ မလျော့ဘူးကွာ၊ ပစ္စည်းက ကောင်းနေတာပဲ၊ တစ်ယောက်မယူ တစ်ယောက်ယူမှာပေါ့’

‘ဒါဆို ခြောက်သောင်းရရင် ကျွန်တော် လွတ်လိုက်တော့မယ်’
‘အေး’

‘ကျွန်တော် အခု ကျောက်လေးဘာလေးပါ ကိုင်နေတယ်ဆရာ၊ ဆရာဆီမှာ အနုပညာသင်ခဲ့ပေမယ့်လည်း အခြေအနေအရ ဖြစ်ချင်တာထက် ဖြစ်သင့်တာကို ဦးစားပေးရတာပေါ့ ဆရာ’

‘လက်ဖက်ရည်သောက်ပြီးစ အချိန်မှာပင် စောစောက လူရွယ်

ယောဂီ (ရွှေပြည်သာ)

အထုပ်တစ်ထုပ်ပိုက်ကာ ဆိုင်ထဲဝင်လာသည်။ နှစ်ယောက်လုံးကိုတော့ သတိထားကြည့်နေရသေးသည်။ လက်ဖက်ရည်ဖိုးက မရှင်းရသေးဘူး မဟုတ်ပါလား။

‘ဆရာ အဆင်ပြေတယ်။ ပစ္စည်းပေးလိုက်ပြီ ငွေလည်းတစ်ခါ တည်း စစ်ဆေးပြီးယူခဲ့တယ် ဒီမယ် ဆရာ’ နှစ်ရာတန် ခြောက်ဆောင်း ထုပ်ကြီးတစ်ထုပ် စားပွဲပေါ်ရောက်လာသည်။

‘အေး... မင်းလည်း ဒီမှာ ထိုင်လေကွာ၊ ငါ ငါ့ဆရာနဲ့ဆွေးနွေး စရာ ကျန်နေသေးတယ်။ ဒါနဲ့ ဆရာ ကျွန်တော် ပဲခူးမှာ ဂီတအနုပညာ ဆိုင်ရာ ဟောပြောပွဲလေးတစ်ခု စီစဉ်ထားတယ်။ ဆရာတို့လို ဝါရင့်ဂီတ ဆရာ၊ တေးရေးဆရာတွေလည်း တော်တော်များများ ဖိတ်ထားတယ် ဆရာ အဲဒါ မဖြစ်မနေ ဟောပြောစေချင်တယ်။ ကျွန်တော်တို့နဲ့ ဒီနေ့ တစ်ခါတည်း လိုက်ခဲ့ပေါ့ဆရာ။ ဟောပြောပွဲကတော့ မနက်ဖြန်မှပါ။ ပဲခူးမှာ ဆရာတစ်ည နှစ်ညတော့အိပ်ပါ။ ဆရာအစ်မဆီလည်းအလည် သွားရင်းပေါ့’

ဘယ်လိုကြောင့်မသိ လုံးဝလိုက်ချင်စိတ်က ပေါ်မလာ။

‘ဆရာဆီ အပ်ထားတဲ့သီချင်းတွေ သိပ်များနေတယ် ရက်လုပြီး မနည်းပြီးအောင် ရေးနေရတယ်။ အဲဒါကြောင့် ဆရာကိုတော့ ခွင့်ပြုပါ တခြား ဆရာကြီးတွေ ဟောပြောကြပါလိမ့်မယ်’

‘ဟာ ဆရာကလည်း ကျွန်တော်က ဆရာ့ကို အားကိုးပြီးလုပ်တဲ့ ဟာကို ငွေရေးကြေးရေးလည်း ဘာမှ ပူစရာမလိုပါဘူး ဆရာ၊ ဆရာ လိုက်ဖြစ်အောင် လိုက်ခဲ့ပါ’

‘မဖြစ်လို့ပါကွာ၊ ဆရာ့ကိုခွင့်လွှတ်ပါ။ ကဲ... ဆရာ စီးရီးကိစ္စ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်္ဂါများအကြောင်း

အတွက် တေးသံသွင်းကို သွားတော့မယ်၊ လက်ဖက်ရည်ဖိုး ဆရာရှင်း လိုက်ရမလား'

'ဟာ... မဟုတ်တာ၊ ဆရာကလည်း ကျွန်တော်က ဆရာ့ကိုခေါ် လာတာပဲ ကျွန်တော် ရှင်းမှာပေါ့၊ ပြောပြောဆိုဆို ဦးမြင့်လှိုင်တစ်ယောက် တေးသံသွင်းဆိုင်သို့ ကမန်းကတန်း ထပြန်ခဲ့သည်။ လက်ဖက်ရည်ဖိုး အလိမ်မခံရလို့ တော်ပါသေးရဲ့ဟု သက်ပြင်းချမိသည်။ စတူဒီယို ခန်းမ သို့ရောက်ပြီး သီချင်းနှစ်ပုဒ်ခန့် သွင်းအပြီးမှာတင် စိတ်ထဲက ဘယ်လို ဖြစ်သည်မသိ၊ အိမ်ကိုပဲ ပြန်ချင်နေသည်။

ထိုကြောင့်ပင် တီးဝိုင်းခေါင်းဆောင်နှင့် အဆိုတော်တို့ကို သေချာ မှာကြားပြီး မိရာကားဖြင့် ရွှေပြည်သာသို့ အရေးတကြီး ပြန်ခဲ့ပါတော့ သည်။ ဦးမြင့်လှိုင်ကို စိတ်မချသော တပည့်နှစ်ယောက်ကလည်း တစ်ပါ တည်း လိုက်လာကြသည်။ ဤနေရာ၌ ဖြတ်ပြောချင်သည်မှာ ဦးမြင့် လှိုင်တို့မိသားစု၏ စေတနာပင်။ အိမ်အလည်လာသော ဧည့်သည်မှန်သမျှ ဘယ်တော့မှ ထမင်းမစားဘဲ မပြန်ရ။ နာမည်ရ တေးရေးဆရာမို့ ရေးရ သလောက်လည်း ရပါသည်။

သို့သော် ရသလောက်ကုန်သည်။ ပေးစရာရှိလာလျှင် သားသမီး တပည့် သားမြေး မခွဲခြားဘဲ ပေးသည်။ အမိုက်စော်ကားသော တပည့် တချို့က ပိုက်ဆံချေးရုံ၊ တောင်းရုံနှင့်ပင် အားမရ တစ်ခါတစ်ရံ ဦးမြင့် လှိုင်အိမ်မရှိခိုက်နှင့် ကြုံနေလျှင် ဦးမြင့်လှိုင်၏ အဖိုးတန်စာအုပ်များကို ပင် အဟောင်းဈေးကွက်တွင် ရောင်းစားသွားကြသည်။

ဆရာ ကျွန်တော့်မှာ ငွေပြတ်နေလို့ ဆရာစာအုပ်လေးတစ်အုပ် ရောင်းပြီး ငွေယူသွားပါတယ်။ တပည့် မောင်နိုင်...

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဤထုချေလွှာလေး ရေးထားလိုက်ရုံနှင့် ကိစ္စကပြတ်သည်။စိတ်ဆိုးခြင်း၊ ဆူခြင်း လုံးဝမရှိ၊ ထို့ကြောင့်ပင် ငွေမည်မျှဝင်သော်လည်း နေ့စဉ်အိမ်လေးမှ တော်တော်နှင့် မတက်နိုင်ရှာပါ။

ဦးမြင့်လှိုင် မြို့ထဲမှ ရွှေပြည်သာသို့ ပြန်လာသောအချိန်မှာပင် မုသာဝါဒ-အဖွဲ့သားနှစ်ယောက်က ဦးမြင့်လှိုင်အိမ်သို့ ရောက်နှင့်နေပါပြီ။ အိမ်မှာကလည်း ဇနီးနှင့်ချွေးမသာ ရှိသည်။ သားနှစ်ယောက်ကလည်း သူ့အလုပ်နှင့်သူ။ လူရွယ်နှစ်ယောက်က အိမ်ထဲရောက်သည်နှင့်...

အဒေါ်... ဆရာ ကျွန်တော်တို့နဲ့ ပဲခူးကိုလိုက်မှာ နှစ်ရက် သုံးရက်တော့ ကြာမယ်၊ ခုမြို့ထဲမှာ စောင့်နေတယ်၊ အဲဒါ ဆရာရဲ့တိုက်ပုံအင်္ကျီတို့ ပုဆိုးတို့ပါ ထည့်ပေးလိုက်ပါ၊ သိပ်များများစားစားတော့ မလိုပါဘူး၊ ကျွန်တော့်ဆီမှာလည်း ရှိပါတယ်။

ဘာအတွက် သွားကြမှာလဲ
ဂီတပညာဆိုင်ရာ ဟောပြောပွဲအတွက်ပေါ့ အဒေါ်၊ ကျွန်တော့်ပဲဦးစီးပြီး ကျင်းပမှာပါ၊ ဒီနှစ်ရက်အတွင်း အဒေါ်တို့လည်း သုံးစရာရှိတာ သုံးရအောင် ကျွန်တော် ပေးခဲ့ပါဦးမယ်။
ပြောပြောဆိုဆို ထိုလူရွယ်က အိတ်ထဲမှ ငွေနှစ်ရာတန်ထုတ်ပေးရင်း...

အဒေါ် ကျွန်တော့်ကို မှတ်မိလား
ကိုမြင့်လှိုင်တပည့်တွေက အများသားဆိုတော့ အကုန်တော့ မမှတ်မိတော့ဘူးကွဲ့။

အဒေါ်က သတိမထားမိလို့ပါ၊ ဟာသံတာထွန်းရင်လာတိုင်း ကျွန်တော်ပါတာချည်းပဲ။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုပျားအကြောင်း

‘ဪ... အေး... အေး၊ ဟုတ်မှာပေါ့ကွယ်၊ အဒေါ် သတိမထား
မိလို့ အမှတ်မရတာ စိတ်မရှိပါနဲ့.’

‘ကဲ...သမီး ညည်းအဖေရဲ့ပုဆိုးနဲ့အင်္ကျီတွေ ထည့်ပေးလိုက်ပါဦး’
အင်္ကျီငါးထည်နှင့် ပုဆိုးခြောက်ထည်ခန့် ထည့်ပြီးသည်နှင့် လူရွယ်
နှစ်ယောက် ဦးမြင့်လှိုင်အိမ်မှ သုတ်ခြေတင်ပါတော့သည်။

လူလိမ်နှစ်ယောက် အိမ်မှအထွက် လမ်းချိုးတစ်ခုသို့ အရောက်
မှာပင် အရေးတကြီး ပြန်လာသော ဦးမြင့်လှိုင်တို့ ဆရာတပည့်သုံးဦး
နှင့် ပက်ပင်းတိုးပါတော့သည်။ ထိုလူနှစ်ယောက်၏ လက်ဆွဲအိတ်နှစ်လုံး
သည်လည်း ဦးမြင့်လှိုင်၏ ပုဆိုးအင်္ကျီတို့ဖြင့် ဖောင်းကားနေသည်ကို
တွေ့ကြရသည်။

‘ဟ... မင်းတို့က ဘယ်လိုကနေ ဘယ်လို ဒီရောက်နေကြတာလဲ’
ထိုလူနှစ်ယောက်ကား မျက်နှာပျက်နေချေပြီ၊ ဦးမြင့်လှိုင်၏အမေး
ကို ချက်ချင်း ပြန်မဖြေနိုင်၊ ခဏကြာမှ တစ်ယောက်က...

‘ဒီနားက ကျွန်တော်တို့အသိအိမ် ခဏဝင်တာပါ ဆရာ၊ သွားတော့
မယ်နော်’ လူလိမ်နှစ်ယောက် ခြေလှမ်းအပြင်မှာတင် ဦးမြင့်လှိုင်နှင့်
တပည့်နှစ်ယောက်တို့က လက်မောင်းတစ်ဖက်စီဆွဲကာ အိမ်သို့ခေါ်ခဲ့ကြ
ပါတော့သည်။ အားလုံးအလိမ်ပေါ်ပြီဖြစ်သော်လည်း မေတ္တာသမား
ဦးမြင့်လှိုင်က လူလိမ်များကို အချုပ်ခန်း မပို့ခဲ့ပါ။ နှိပ်လည်း မနှိပ်စက်
ပါ။ မိမိပစ္စည်းများကိုသာ ပြန်ယူပြီး ပြန်လွှတ်ပေးခဲ့ပါသည်။

ဦးမြင့်လှိုင်ကို လူလိမ်များလက်မှ ကယ်တင်လိုက်သည်မှာ သူတစ်
ပါးအပေါ်ထားသော သူ၏ စေတနာပင် ဖြစ်ပါတော့သည်။

(မှတ်ချက်) အမည်နှင့်နေရပ်အတိအကျကို ပြောင်းလွှဲထားပါသည်။



သုံးပွင့်ဆိုင်

အင်းစိန်မြို့နယ်ရှိ ကြီးမားသော ဝါးခနီဆိုင်ကြီးတစ်ဆိုင်ရှေ့သို့ ဒေါဂျစ်တစ်စီး ဆိုက်လာပြီး သားနားသပ်ရပ်သော လူရွယ်တစ်ယောက် ဆင်းလာသည်။ သူ၏ ကိုယ်အင်္ဂါအစိတ်အပိုင်းများတွင်လည်း ရွှေတို့က နေရာမလပ်အောင် ရှိနေကြသည်။ သူဌေးသားတစ်ယောက်ဆိုသည်က တော့ မပြောဘဲ သိနိုင်လောက်သည့် ပုံသဏ္ဍာန်နှင့်။

ဆိုင်ထဲသို့ရောက်သည်နှင့်...

‘ဦးလေး... ခနီတစ်ရာ ဘယ်ဈေးလဲ’

‘လေးရာဈေးရှိတယ် ငါ့တူ၊ များများယူရင်တော့ သုံးရာငါးဆယ် နဲ့ပေးလိုက်မယ်’

(မှတ်ချက်) ခနီဆိုသည်မှာ အုန်းပင်နှင့်အလားတူသော အပင် တစ်မျိုးဖြစ်သည်။ အုန်းပင်လိုတော့ ပင်စည်အရှည်ကြီးမဟုတ်ပါ။ ခပ်ပုပု နှင့် အစိမ်းရောင်ရှိသည်။ သူ၏အလက်ကား အုန်းပင်နှင့် တစ်ပုံစံတည်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

ဖြစ်သည်။ ရန်ကုန်၌ သူ၏ အရွက်များကိုစီပြီး အပျစ်လုပ်ကာ အိမ်မိုးကြသည်။ ခန့်ရွက်ရင့်လျှင် လေးနှစ်ခန့်ခံသည်။ မရင့်လျှင်ကား တစ်နှစ်နှင့် ပိုးစားသည်။ အထက်သားများအသိနည်း၍ ရေးပြခြင်း ဖြစ်ပါသည်။ စာရေးသူလည်း ရန်ကုန်ရောက်မှ ခန့်ကိုမြင်လည်းမြင်ဖူး၊ ကြားလည်း ကြားဖူးခဲ့ပါသည်။

‘အပျစ်ငါးရာ ယူမယ်ဗျာ၊ ဩော်... ဒါနဲ့ ဦးလေးတို့ဆိုင်မှာ ခန့်တင်မယ့် အလုပ်သမား ရှိသလား’

‘အခု လောလောဆယ်တော့ မရှိဘူး၊ အိမ်ခဏပြန်နေကြတယ်’
‘ရပါတယ်လေ၊ ဟိုနားက ဆိုက်ကားသမားတွေ ကျွန်တော် သွားခေါ်လိုက်ဦးမယ်’

ပြောပြောဆိုဆို လူငယ်က ဆိုက်ကားသမားများထံ ထွက်သွားသည်။ ပြန်လာတော့ ဆိုက်ကားသမားနှစ်ယောက် ပါလာသည်။ ကားပေါ်တင်ပေးခ ခန့်တစ်ရာကို ငါးဆယ်၊ ခန့်ငါးရာဆိုတော့ နှစ်ရာငါးဆယ်ဖြင့် ဈေးတည့်လာကြသည်။

ဆိုက်ကားသမားနှစ်ယောက် ခန့်များကို ကားပေါ်သို့ စတင်နေကြလေပြီ။ ထိုအချိန်မှာပင် လူရွယ်က ဆိုင်ရှင်ထံ ခန့်ဖိုးရှင်းမလိုလိုနှင့် သွားတွေ့ပြီး အနားရောက်သောအခါ...

‘ဦးလေး ငွေနှစ်ရာငါးဆယ်လောက်များ လွယ်လားမသိဘူး၊ အထမ်းသမားတွေ ကြိုပေးထားလိုက်ချင်လို့၊ ခန့်ဖိုးရှင်းတဲ့အခါကျမှ တစ်ခါတည်း ကျွန်တော် ထည့်ရှင်းပေးပါ့မယ်၊ ကျွန်တော့်ဆီမှာ အတန်ကြီးတွေပဲ ဖြစ်နေတယ်’

ပြောပြောဆိုဆို သူ၏ ပိုက်ဆံအိတ်ထဲမှ ငါးရာတန်တစ်ခေါက်

ယတ္တရူပံ (ရွှေပြည်သာ)

ကို မြင်သာအောင် ပြလိုက်သေးသည်။ ထိုအခါ ဆိုင်ရှင်က လွယ်လင့်တကူပင် ငွေနှစ်ရာငါးဆယ်ကို ထုတ်ပေးလိုက်သည်။ ၎င်းငွေရသည်နှင့် လူရွယ်၏ ခြေလှမ်းများက အထမ်းသမားတို့ဆီ သွားမလိုလိုနှင့် ကားဆရာဆီ ရောက်သွားသည်။

‘ကားဆရာ ငွေသုံးရာလောက် လွယ်သလားဗျာ၊ ခန့်ဖိုးက စကောစက သုံးရာထဲ ခွန်းထွက်နေတယ်၊ ပြီးတော့ ကားခနဲရောပြီး ကျွန်တော် တစ်ခါတည်း ရှင်းပေးပါ့မယ်’

ခနဲတွေ့ကိုလည်း မိမိကားပေါ်တင်နေပြီ။ ဆိုင်ရှင်နှင့်လည်း ရင်းရင်းနှီးနှီးပြောဆိုနေကြသည်ကို တွေ့ရသောကြောင့် ကားဆရာကလည်း ငွေသုံးရာကို အလွယ်တကူ ထုတ်ပေးလိုက်ပြန်သည်။ ကားဆရာထံမှ ငွေရသည်နှင့် အထမ်းသမားနှစ်ယောက်ထံ ချဉ်းကပ်ပြီး...

‘ဦးလေးတို့ ကွမ်းစားသလား’

‘ဟ စားတာပေါ့ကွ’

‘ကဲ... ဒါဆို ကျွန်တော် သွားဝယ်လိုက်ဦးမယ်’ ပြောပြောဆိုဆို တစ်ခေါ်လောက်တွင်ရှိနေသော ကွမ်းယာဆိုင်ဆီသို့ ထိုလူရွယ် ထွက်သွားသည်။ အထမ်းသမားတို့ ခန့်ငါးရာသာ ကားပေါ်တင်ပြီးသွားသည် ကိုယ်တော်ကား ပေါ်မလာတော့။ တစ်နာရီခွဲခန့် ကြာသောအခါ ကားဆရာက စိတ်မရှည်တော့ဘဲ...

‘ဟေ့လူ ခုထိ မသွားသေးဘူးလားဗျာ၊ ကျုပ်မှာ နောက်ထပ်ဆွဲစရာနေရာတွေ ရှိသေးတယ်’ဟု ပြောဆိုကာ ကားနောက်ဘက်သို့ လျှောက်လာသည်။ ထိုလူရွယ်ကိုကား မတွေ့၊ ခန့်ငါးရာတင်ပြီး လျှာထွက်နေသော အထမ်းသမားတစ်ဖြစ်လဲ ဆိုက်ကားသမားနှစ်ယောက်ကို

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

သာ တွေ့ရသည်။

သံသယဝင်လာသော ဆိုင်ရှင်ကလည်း ကားသမားထံသို့ လျှောက်လာကာ...

‘ကားဆရာ... ထွက်မသွားနဲ့ဦးနော်၊ ကျုပ်ခနိဖိုးတွေ မရှင်းရသေးဘူး’

‘ဟော့ဗျာ ကျုပ်ကိုပြောတော့ ခင်ဗျားခနိဖိုးရှင်းတာ ငွေသုံးရာအစွန်းထွက်နေလို့ဆိုပြီး ကျုပ်ဆီကတောင် ငွေသုံးရာ ခေတ္တယူသွားသေးတယ်’

‘ဟင်... ကျုပ်တို့တော့ အလိမ်ခံရပြီ ထင်တယ်ဗျို့၊ ကျုပ်ဆီကလည်း အထမ်းသမားတွေအတွက် ချက်ချင်းရှင်းချင်လို့ဆိုပြီး ငွေနှစ်ရာ ငါးဆယ်ယူသွားတယ်’

‘ဘာမှ မပေးရသေးပါဘူးဗျာ၊ နာရီဝက်လောက်လုပ်ရုံနဲ့ ငွေနှစ်ရာငါးဆယ်ရမယ်လို့ အားခဲပြီး လိုက်လာခဲ့တာပါဗျာ၊ ခုလိုဆိုတော့ ကိုယ့်ဆိုက်ကား ကိုယ်နင်းတာကမှ စိတ်ချရပါသေးတယ်’

အကျဉ်းချုပ်တော့ ခနိဆိုင်ရှင်၊ ကားသမား၊ အထမ်းသမားတို့သည် သုံးပွင့်ဆိုင်ပင် အလိမ်ခံလိုက်ရခြင်းပါတကား။

နင့်ကိုကျွေးတာ

တစ်ခါက တောသူဋ္ဌေးကြီးတစ်ယောက်သည် မြို့သူဋ္ဌေး သူငယ်ချင်း၏ ဖိတ်ကြားချက်အရ အလှူပြုတစ်ခုသို့ ရောက်လာခဲ့သည်။ သို့သော် တောသူဋ္ဌေးကြီးက သာမန် တစ်ပတ်နှမ်းဝတ်စုံကိုသာ ဝတ်ဆင်ခဲ့သောကြောင့် အကျွေးအမွှေး ကြီးကြပ်သူများက ဆင်းရဲနွမ်းပါးသူထင်ကာ

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

အရေးတယူခေါ်ငင်ကာ မကျွေးကြပေ။ ဝတ်ကောင်းစားလှ ဝတ်ထားသော တခြားသူများကိုသာ ဂရုတစိုက် ခေါ်ယူကျွေးမွေးကြလေသည်။

ထိုအခါ တောသူဌေးကြီးသည် အိမ်ပြန်၍ ဝတ်ကောင်းစားလှဝတ်၍ လက်ဝတ်တန်ဆာတို့ကို ဆင်မြန်းပြီး နောက်တစ်ခေါက် ထပ်သွားပြန်လေသည်။ ထိုအခါ အကျွေးအမွေးကြီးကြပ်သူတို့က ပျာပျာသလဲ ခေါ်ယူကျွေးမွေးလေရာ တောသူဌေးကြီးက အကောင်းစားအင်္ကျီကြီးကိုချွတ်ပြီး စားပွဲပေါ်ပုံလိုက်ကာ ထမင်းဟင်းတို့ကို လောင်းထည့်ပြီးနောက် ပြောလိုက်သည်က...

နှင့်ကိုကျွေးတာဟေ့၊ ငါ့ကို ကျွေးတာမဟုတ်ဘူး ဟူ၏။ တောသူဌေးကြီး အရွံ့ခံရသောသူများကဲ့သို့ ကောင်းမြတ်သော စိတ်ဓာတ်ကို အထင်မကြီးဘဲ အဝတ်အစားနှင့် လက်ဝတ်တန်ဆာကို အထင်ကြီးနေကြဦးမည်ဆိုလျှင်ဖြင့် သုံးပွင့်ဆိုင်ပြဇာတ်ထဲတွင် မကြာခဏ ပါနေကြရဦးမည်သာ။



အကျွေးအမွေးကြီးကြပ်သူတို့က ပျာပျာသလဲ ခေါ်ယူကျွေးမွေးလေရာ တောသူဌေးကြီးက အကောင်းစားအင်္ကျီကြီးကိုချွတ်ပြီး စားပွဲပေါ်ပုံလိုက်ကာ ထမင်းဟင်းတို့ကို လောင်းထည့်ပြီးနောက် ပြောလိုက်သည်က...

ပွဲစားကို ဆွဲသွားခြင်း

ရုနစ်လပိုင်း ကိုးဆယ့်ရုနစ်ရုနစ်၏ နေ့တစ်နေ့၊ ရွှေပြည်သာမြို့ ၆/၉ ရုပ်ကွက်နေ အိမ်ခြေပွဲစား ဒေါ်သန်း၏အိမ်သို့ ကက ကားတစ်စီး ထိုးဆိုက်လာကာ အမျိုးသမီးတစ်ဦးနှင့် အမျိုးသားနှစ်ဦးတို့ ဆင်းလာကြ သည်။ အမျိုးသမီးက...

‘ဒါ အိမ်ပွဲစား ဒေါ်သန်းရဲ့အိမ် ဟုတ်ပါသလား’

‘ဟုတ်ပါတယ်ရှင်၊ ဒီမှာ ထိုင်ကြပါဦး၊ ဒေါ်သန်းဆိုတာ ကျွန်မ ပါပဲ’

‘ဪ... ကျွန်မတို့က ဗဟန်းကပါ၊ ဒီမြို့ထဲမှာ အိမ်ကောင်း ကောင်းတစ်လုံးလိုချင်လို့ အစ်မဆီ လာခဲ့တာပါ’

‘ညီမတို့က ဘယ်လောက်ထိ လိုက်နိုင်မလဲ’

‘ငွေအိမ်က မဟုတ်ဘူး၊ အိမ်နဲ့နေရာကောင်းဖို့ အဓိကပါ၊ အိမ် ထောင်ခွဲသွားတဲ့ သူ့သားက နားအေးပါးအေး နေချင်တယ်ဆိုလို့ ကျွန်မ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တို့သူဌေးက ဒီမြို့မှာ ရှာခိုင်းလိုက်ပါ။ ငွေကတော့ ဘယ်လောက်ကျကျပါ’
 လှိုင်နှင့် ကမာရွတ်မှအိမ်များ လျော်ကြေးရပြီး ရွှေပြည်သာသို့
 အလုံးအရင်းနှင့် ဆင်းလာသော အချိန်ဖြစ်သောကြောင့် အိမ်ဈေး၊ မြေ
 ဈေးများ ခေါင်ခိုက်နေသောအချိန်ပင်။ သို့နှင့်ရေမီးအစုံပါသော သပ်သပ်
 ရပ်ရပ် တစ်ထပ်တိုက်လေးတစ်လုံးကို ရှစ်သိန်းနှင့် ဈေးတည့်သွားကြ
 သည်။ ဈေးစကားပြောပြီးသည်နှင့် အဝယ်လာသူသုံးဦးထဲမှ အသက်ကြီး
 ကြီး အမျိုးသားက...

‘ကဲ... ဈေးလည်းတည့်သွားပြီဆိုတော့ ငွေချေဖို့ပဲ လိုတော့တာ
 ပေါ့၊ ကျွန်တော်တို့က အခုလောက် လွယ်လွယ်ကူကူဖြစ်မယ်လို့တောင်
 ထင်မထားဘူး၊ ဒါကြောင့် သူဌေးကို တစ်ခါတည်းခေါ်မလာတာ၊ အဲဒီ
 တော့ ဒီလို လုပ်ကြရအောင်၊ ကျွန်တော်တို့လည်း နှစ်ခါပြန်မလာရအောင်၊
 ငွေချေရတဲ့ကိစ္စလည်း တစ်ခါတည်းပြီးသွားအောင် အိမ်ရှင်အိမ်မကြီးရော
 အိမ်မဒေါ်သန်းပါ ကျွန်တော်တို့နဲ့အတူတူ သူဌေးအိမ်ကို တစ်ခါတည်း
 လိုက်ခဲ့ကြတာပေါ့၊ မဖြစ်မှာကတော့ ဘာမှမပူနဲ့၊ သူဌေးက ကျွန်တော်
 တို့ကို တစ်ခါတည်းအပြီးလွှဲထားတာပါ’

‘တစ်ခါတည်း အပြီးလွှဲထားတယ်လည်းဆိုသေးတယ် ငွေကတော့
 တစ်ခါတည်း မချေနိုင်ကြဘူး၊ ဘယ်လိုသဘောပါလိမ့်၊ လိမ်ညာရအောင်
 လည်း ငါတို့ဆီက ဘာမှ မထွက်ရသေးဘူး၊ အင်း... ဒါပေမဲ့ ကား
 ပေါ်ရောက်မှ တို့ဆေးသုံးပြီး လက်ဝတ်လက်စားတွေ လိမ်နိုင်သေးတယ်’
 ပွဲစားဒေါ်သန်းက အတွေ့အကြုံရင့်ကျက်သူပီပီ ထိုသို့တွေးတောကာ
 အိမ်ရှင်အဒေါ်ကြီးနှင့် တီးတိုးတိုင်ပင်ပြီး လက်ဝတ်လက်စားတို့ကို ချွတ်
 ထားခဲ့ကြသည်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ကားထွက်လာပြီး အင်းစိန်သို့ရောက်သည်နှင့် အဝယ်တော် အမျိုးသမီးက...

ကိစ္စဆိုတာ တစ်ခါတည်း ပြီးသွားတော့ အချိန်ကုန်သက်သာတာပေါ့။ ကျွန်မတို့ အင်းစိန်က ရှေ့နေနှစ်ယောက်လောက် လက်မှတ်ထိုးတဲ့နေရာမှာ ပိုပြီး အဆင်ပြေအောင် တစ်ခါတည်း ငှားသွားကြမယ်။

ရှေ့နေနှစ်ယောက် ငှားပြီးသောအခါ ကားက မဆုံတော့သည့်အတွက် နောက်တစ်စီး ထပ်ငှားရပြန်သည်။ ရှေ့နေနှစ်ယောက်၊ အိမ်ရှင်အဒေါ်ကြီး၊ ပွဲစားဒေါ်သန်းတို့က တစ်စီး၊ အဝယ်တော်သုံးယောက်အဖွဲ့က တစ်စီးဖြင့် ကားနှစ်စီး ယှဉ်မောင်းလာခဲ့ကြသည်။

လှည်းတန်းမီးပွိုင့်ကျော်၍ မြေနီကုန်းဘက်အရောက်မှာပင် သားနားသပ်ရပ်၍ အဆင့်မြင့်လှသော စားတော်ဆက်တစ်ခု၏ ရှေ့တွင်ကားများကို ရပ်လိုက်ကြသည်။ ရှေ့ကားမှ အဝယ်တော်အမျိုးသမီးတစ်ဦး ဆင်းလာပြီး က... အစ်ကိုတို့၊ အစ်မတို့ လုပ်ငန်းအောင်မြင်တဲ့ အထိမ်းအမှတ်အဖြစ် ကျွန်မတို့က ကျွေးမွေးပါရစေ၊ ခဏဆင်းကြပါဦး။

ကိုယ့်ဘက်က နာစရာမရှိသော အလုပ်ဖြစ်သဖြင့်လည်း လေးယောက်သား ကားပေါ်မှ တစ်ခါတည်းဆင်းပြီးသား ဖြစ်သွားသည်။ စားပွဲကြီးတွင် ခုနစ်ယောက်သား ထိုင်ပြီးသည်နှင့် စားချင်တာများကို မေးမြန်းပြီး အဝယ်တော်အမျိုးသမီးကိုယ်တိုင် စားပွဲထိုးကို မှာကြားပေးလေသည်။

ဘားရင်းသောက်ရင်းမှာပင် အဝယ်တော်အမျိုးသမီးက 'သူဌေးက အိမ်နေရာအဆင်ပြေရင် သူ့သားရဲ့မိတ်ဆွေတွေကို နှုတ်ဆက်စဉ်ခံပွဲလုပ်ပေးရမယ်လို့ ကျွန်မတို့ကို ပြောထားတယ်၊ အဲဒီတော့ တစ်ခါတည်း

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

ကိစ္စပြီးသွားအောင် ဒီဆိုင်ကပဲ လိုအပ်တာတွေ ဝယ်သွားကြတာပေါ့'

အမျိုးသမီး စကားဆုံးသည်နှင့် အမျိုးသားနှစ်ယောက် အရောင်း မန်နေဂျာဆီ ထွက်သွားကြပြီး စကားအနည်းငယ်ပြောကာ အဖိုးတန် အရက်နှင့် စားစရာအချို့ကို ကားပေါ်တင်နေသည်ကို တွေ့ကြရသည်။ ထိုအချိန်တွင် စားရင်းသောက်ရင်းဖြင့် အဝယ်တော်အမျိုးသမီးက သူတို့ သူဌေး သဘောကောင်းပုံ၊ ချမ်းသာပုံအကြောင်းတို့ကို ရွန်းရွန်းဝေအောင် ပြောပြနေရာ အိမ်ရှင်အဒေါ်ကြီး၊ ပွဲစား ဒေါ်သန်းနှင့် ရှေ့နေနှစ်ယောက် တို့က စားလို့လည်းကောင်း၊ နားထောင်လို့လည်းကောင်းနှင့် ပျော်စရာ ကြီး ဖြစ်နေပါတော့သည်။

စားကောင်း၊ နားထောင်ကောင်းနေဆဲမှာပင် အဝယ်တော်အမျိုး သမီးက ဆိုင်နောက်ပိုင်းထဲ ဝင်သွားသဖြင့် မိမိတို့ဘာသာ ဣန္ဒြေမပျက် ဆက်စားနေကြသည်။ နာရီဝက်ခန့်ကြာသည်အထိ အဝယ်တော်အမျိုး သမီးမှာ ဆိုင်နောက်ပိုင်းမှ ထွက်မလာသဖြင့် စားပြီးသား ပန်းကန်ခွက် ယောက်များကို ကြည့်ပြီး သံသယဝင်စပြုလာကြလေပြီ။

စားသောက်ဖွယ်ရာများကို ကားပေါ်မှာတင်နေသော အဝယ်တော် အမျိုးသားနှစ်ဦးမှာလည်း ပျောက်ချင်းမလှ ပျောက်သွားကြလေပြီ။ သံသယစိတ်၏ တွန်းကန်မှုကြောင့် လေးဦးသား အပြင်ထွက်ရန် ပြင်လိုက် စဉ်မှာပင် မသင်္ကာစိတ်ဖြင့် စောင့်ကြည့်နေသော ဆိုင်မန်နေဂျာက...

'ခင်ဗျားတို့ စားသောက်ခတွေ့ မရှင်းသေးဘဲ ကျုပ်ဆိုင်ထဲက ထွက်ခွင့်မပေးနိုင်ဘူး။ စောစောက သုံးယောက်လည်း မယောင်မလည် နဲ့ထွက်သွားပြီ၊ ခင်ဗျားတို့ပါ ထွက်သွားရင် ကျုပ် ဘယ်သူ့ဆီကို ပိုက်ဆံ လိုက်တောင်းရမှာလဲ'

သရဏံ ဝေဇာနည် ဝိပဿနာ

ယခုခေတ်တွင် နိုင်ငံခြားသွားပြီး စီးပွားရှာနိုင်မှ ဂုဏ်ရှိသည်ဟု ထင်တတ်ကြသည်။ နိုင်ငံခြားရောက်နေသူများက ပန်းကန်ဆေး၊ တံမြက် စည်းလှည်း လုပ်နေရသော်လည်း မြန်မာပြည်ရှိ ဆွေမျိုးများကတော့ ခေတ္တဂျပုန၊ ခေတ္တအမေရိကန် စသည်ဖြင့် ဖိတ်စာထဲတွင် ထည့်ရိုက်ကာ ဂုဏ်ယူနေကြသည်။ မြန်မာပြည်မှာ ဆရာဝန်ဘွဲ့ရသော်လည်း ဂျပန် ရောက် စားပွဲထိုးအဆင့်ပင် မရကြသဖြင့် ချောင်ထဲမှာ ပန်းကန်ဆေးပြန် ခဲ့ရသော ဆရာဝန်တစ်ဦး၏ ကိုယ်တွေ့ဖွင့်ဟချက်တစ်ခုကြောင့် ယခုကဲ့ သို့ သိရခြင်းပါ။

ခေတ္တ ဂျပုနများ သတိထား

ယခုလည်း ခေတ္တစင်္ကာပူဟူ၍ မကြာခဏ ထည့်တတ်သော မိသားစုတစ်စု၏ ဖြစ်ရပ်ကို ဖော်ပြအပ်ပါသည်။
လေးလပိုင်း ၉၅-ခုနှစ်ခန့်ကပင်ဖြစ်ပါသည်။ လှိုင်မြို့နယ်() ရပ်ကွက်၊ သမဝါယမအရောင်းဆိုင်သို့ သေသပ်ကျနစွာ ဝတ်ဆင်ထား

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ပြီး ဥပဓိရုပ်သန့်ပြန့်လှသော အသက်၅၀-ခန့် အမျိုးသားကြီးတစ်ယောက် က ဝင်ရောက်လာပြီး...

‘ဒီဆိုင်က မသန်းသန်းဝင်းဆိုတာများ ရှိသလား’

‘ရှိပါတယ် ဦးကြီး၊ ကျွန်မပါပဲ၊ ဘာကိစ္စရှိလို့လဲ မသိဘူး၊ ဒီမှာ ထိုင်ပါဦးရှင်’

‘ဪ... ဦးကြီးက ရန်ကုန်မြို့ထဲကပါပဲ၊ ကိစ္စကတော့ မနေ့က စင်္ကာပူက ဦးကြီးရဲ့သမီးကရော တူမရဲ့အစ်မဆီကပါ စာလာတယ်၊ ဟောဒီမှာစာ’

သန်းသန်းဝင်း၏ အစ်မတစ်ယောက်မှာ စင်္ကာပူတွင် အလုပ်ဝင်နေသည်မှာ လေးလခန့်ရှိပြီ။ ငွေရော၊ ပစ္စည်းရော ဘာမျှမပိုဘူးသေးပါ။ သို့အတွက် ယခုလို စာလာသည်ဆိုတော့ သန်းသန်းဝင်းမှာ ဝမ်းသာအားရဖြစ်ရသည်။ စာကိုဖတ်ကြည့်လိုက်ရာ...

သို့

အဖေအမေနဲ့တကွ မိသားစုများထံ သမီး သတိတရဖြင့် စာသဝင်္ဇာလွှာ ပါးလိုက်ပါသည်။

သမီးရဲ့လုပ်ငန်းလည်း အဆင်ပြေပါသည်။ ပြီးခဲ့တဲ့လမှစ၍ လစာငွေ စတင် ထုတ်ယူရပါသည်။ စားစရိတ်၊ နေစရိတ်ကို ချန်၍ ကျန်သောငွေကို ရေခဲသေတ္တာနှင့် တီဗွီတစ်လုံးဝယ်၍ ပို့ပေးလိုက်ပါသည်။ ယခုစာယူလာသော ဦးမြင့်အောင်၏သမီးနှင့်ကျွန်မတို့မှာ တစ်ဌာနတည်းဖြစ်၍ ညီအစ်မလို ခင်မင်နေကြပါသည်။

ယခု ပစ္စည်းများကို အဖေအမေတို့မှာမည်နှင့် ပို့ပေးထားသော်

ဇယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

လည်း ထုတ်ယူတဲ့အခါ ဦးမြင့်အောင်တို့၏ အကူအညီရအောင်
 အကြောင်းကြားစာကိုတော့ ဦးမြင့်အောင် နာမည်နှင့်သာ ရေး
 ပို့လိုက်ပါသည်။ အဖေတို့က နိုင်ငံခြားကပို့တဲ့ပစ္စည်း တစ်ခါ
 မှ ထုတ်မယူဘူးသေးတော့ ယောင်ချာချာ ဖြစ်နေမှာစိုးလို့
 ဦးမြင့်အောင်ကိုပဲ အကူအညီတောင်းပြီး တစ်ခါတည်း ထုတ်ယူ
 လိုက်ပါ။ ဦးမြင့်အောင်သမီးကလည်း ကက်ဆက်နှစ်လုံး ပို့
 ထားတယ်။ ဦးမြင့်အောင်က အစအဆုံး ကူညီပါလိမ့်မယ်၊
 အဖေတို့အိမ်လိပ်စာက သိပ်ချောင်ကျနေလို့ ရှာလို့လွယ်မယ့်
 ညီမလေး သန်းသန်းဝင်းတို့ရဲ့ သမဆိုင်ကိုပဲ လမ်းညွှန်လိုက်
 တယ်။

အဖေအမေနဲ့တကွ မိသားစုအားလုံး ကျန်းမာချမ်းသာကြပါစေ။

သမီး မြင့်မြင့်ဝင်း

(ခေတ္တ) စင်္ကာပူ

စာဆုံးသောအခါ အံ့သြဝမ်းသာမှု ပီတိအရှိန်ကြောင့် သန်းသန်း
 ဝင်း၏ မျက်နှာလေးမှာ ဝင်းထိန်သွားတော့သည်။ အိမ်သို့ရောက်ကြ
 သောအခါ အဖေကတော့ အလုပ်သွားသဖြင့် အမေနှင့်သာ တွေ့သည်။
 ထိုဦးကြီး၏ သမီးနှင့်အစ်မတို့မှာ ဘယ်လောက်များ ရင်းနှီးနေကြသည်
 မသိ။ အဖေအမေတို့၏ ဘိုးဘွားအစဉ်အဆက်နှင့် ဇာတိရပ်ရွာတို့ကိုပါ
 ဦးမြင့်အောင်က အကုန်သိနေသဖြင့် အမေနှင့်ဦးမြင့်အောင်မှာလည်း ခေတ္တ
 နှင့် ရင်းနှီးကျွမ်းဝင်သွားကြသည်။

အဖေ ငွေ ဘယ်လောက်ယူသွားရမလဲ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယုများအကြောင်း

‘ငါ ဘယ်သိမလဲ၊ နှင့်ဦးကြီးကို မေးကြည့်လေ’

ဦးမြင့်အောင်၏ အပြောကောင်းမှုကြောင့် နာရီဝက်ခန့်စကား ပြောပြီးသည်နှင့် ဦးမြင့်အောင်မှာ သန်းသန်းဝင်းနှင့် ဦးကြီးတော်သွား ရပေပြီ။ သန်းသန်းဝင်း ထပ်မမေးခင်မှာပင် ဦးမြင့်အောင်က...

‘ငါးထောင်လောက်ဆိုရင် လောက်ပါပြီ၊ ပြီးခဲ့တဲ့ ငါးလ လောက်က ဦးရဲသမီးပို့တုန်းကလည်း အကောက်ခွန်ခက အဲဒီလောက်ပဲ ကျတယ်’

သို့နှင့်ငွေငါးထောင် လက်ကိုင်အိတ်ထဲထည့်ပြီးသည်နှင့် နှစ် ယောက်သား ထွက်လာခဲ့ကြသည်။ သုခလမ်းထိပ်ရောက်သောအခါ...

‘တူမရေ လိုင်းကားစီးရတာ ကြာလည်းကြာတယ်၊ စိတ်လည်း မချရဘူး၊ အဲဒီတော့ လေးဘီးပဲ ငှားစီးကြစို့’ ပြောပြောဆိုဆို ဦးမြင့် အောင်က ကားလမ်းရှေ့ထွက်၍ လေးဘီးတစ်စီးကို တားလိုက်ကာ ဒရိုင် ဘာအား တစ်စုံတစ်ခု ပြောနေသည်ကို သန်းသန်းဝင်းက လှမ်းမြင်နေ ရစေသည်။

ခဏအကြာမှာပင် လေးဘီးကားက သန်းသန်းဝင်းရှေ့သို့ နောက်ဆုတ်လာကာ ရပ်ပေးလိုက်သည်။ ကားရပ်သည်နှင့် ဦးမြင့် အောင်က သန်းသန်းဝင်း၏ ပခုံးကိုတစ်ချက်ပုတ်လိုက်ကာ...

‘ကဲ... တူမရေ မြန်မြန်တက်၊ နောက်ကျရင် ရုံးပိတ်သွားလို့ နောက်တစ်ရက် ပြန်လာနေရမယ်’

နှစ်ယောက်သား ကားပေါ်ရောက်သည်နှင့် ကားက အင်းစိန် ဘက်သို့ဦးတည်ကာ ထွက်သွားသည်ကိုတော့ တစ်ချက် သတိထားလိုက် မိသည်။ နောက်တော့ လူတစ်ကိုယ်လုံး ဘယ်လိုဖြစ်လာသည်မသိ နုံးပြီး

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ပျော့ခွေသလို ဖြစ်လာသည်။ ဦးမြင့်အောင်ပြောသော စကားများကိုလည်း မကြားတစ်ချက် ကြားတစ်ချက် ဖြစ်လာသည်။ အနီးစပ်ဆုံး ဥပမာပြ ရပါက အိပ်ရာမှယောင်ပြီး ထလာသူနှင့် တစ်ပုံစံတည်း တူလှပါသည်။

ကားစီးပြီး တစ်နာရီနီးပါးခန့် ကြာသောအခါတွင် ဦးမြင့်အောင် က...

‘ကဲ... တူမအိတ်ထဲက ငွေတွေ ဦးလေးကို ပေးထား’

စကားအဆုံးမှာပင် သန်းသန်းဝင်းက အသင့်ထည့်ထားသော ငွေငါးထောင်ကို တစ်ခါတည်း ထုတ်ပေးလိုက်သည်။ ပိုက်ဆံပေးပြီးသည် နှင့် ကားက စက်ရှိန်သတ်ပြီး ရပ်သွားသည်ကို တွေ့ရသည်။ ထိုအခါ ဦးမြင့်အောင်ထံမှ ဒုတိယ အမိန့်ပေးသံ ပေါ်လာပြန်သည်။

‘ကဲ... တူမ ကားပေါ်က ဆင်းပေတော့’

ထိုအခါ ခလုတ်နှိပ်ပေးလိုက်သော စက်ရပ်ကဲ့သို့ ဧည့်သည် ဆင်းလိုက်ပြန်သည်။ သန်းသန်းဝင်း ကားပေါ်က ဆင်းလိုက်သည်နှင့် ကားက တစ်ရှိန်ထိုး မောင်းထွက်သွားတော့သည်။ သန်းသန်းဝင်းတစ် ယောက်သာလျှင် ပေတစ်ရာလမ်းမကြီးတွင် ဦးတည်ရာမဲ့ကာ တစ်ရွေရွေ လျှောက်နေသည်မှာ မည်မျှ ကြာသွားသည်မသိ။

သတိဝင်လာသဖြင့် ပြာပြာသလဲ ပတ်ဝန်းကျင်ကို လှေ့လာ လိုက်သောအခါ မင်္ဂလာဒုံလမ်းမကြီးပေါ် ရောက်နေသည်ကို တွေ့ရသည်။ လိုင်းကားများလည်း မရှိတော့ မှောင်ရီပင် ပျိုးစပြုနေပေပြီ။ ကံကောင်း ထောက်မစွာ စစ်ကားတစ်စီးကို အကူအညီတောင်းပြီး ပို့ခိုင်းသဖြင့် ငွေငါးထောင်ကို လိမ်ညာသွားခြင်းပင်။ အလိမ်ခံရမည့်သူများ၏ နေရပ် လိပ်စာ၊ ဆွေစဉ်မျိုးဆက်များကို မည်ကဲ့သို့သိအောင် လှေ့လာထားသည်

အချို့ဖမ်းခံရခြင်း

ရန်ကုန်အခေါ်အရ တစ်စုံတစ်ယောက်၏ အလိမ်အညာခံရလျှင်
အချဉ်ဖမ်းခံရသည်ဟု ပြောလေ့ရှိသည်။ ယခုဖြစ်ရပ်ကား အလိမ်ခံရတာ
ပင်ဖြစ်သော်လည်း ထန်းလျက်တောင်းများက ဇာတ်လိုက်အဖြစ် ပါနေ
သောကြောင့် အချို့ဖမ်းခံရသည်ဟု ပြောရမလို ဖြစ်နေသည်။

ကိုဘသောင်း၏ လေးဘီးကားလေး ပွဲရုံတစ်ခုရှေ့မှ ဖြတ်အသွား
တွင် လူတစ်ယောက်က လက်ပြတားသဖြင့် ရုပ်ပေးလိုက်ရာ ထိုသူက...

အချို့ဖမ်းခံရခြင်း

ရန်ကုန်အခေါ်အရ တစ်စုံတစ်ယောက်၏ အလိမ်အညာခံရလျှင်
အချဉ်ဖမ်းခံရသည်ဟု ပြောလေ့ရှိသည်။ ယခုဖြစ်ရပ်ကား အလိမ်ခံရတာ
ပင်ဖြစ်သော်လည်း ထန်းလျက်တောင်းများက ဇာတ်လိုက်အဖြစ် ပါနေ
သောကြောင့် အချို့ဖမ်းခံရသည်ဟု ပြောရမလို ဖြစ်နေသည်။

ကိုဘသောင်း၏ လေးဘီးကားလေး ပွဲရုံတစ်ခုရှေ့မှ ဖြတ်အသွား
တွင် လူတစ်ယောက်က လက်ပြတားသဖြင့် ရုပ်ပေးလိုက်ရာ ထိုသူက...

‘ထန်းလျက်တောင်းလေးတောင်း အင်းစိန်ထိ တင်မယ် ဘယ်
လောက်ပေးရမလဲ’

‘ခြောက်ရာတော့ပေးပါ’

‘အင်း... ပေးတာပေါ့၊ ကဲ... ထန်းလျက်တောင်းတွေ ဝိုင်းတော့
တင်ပေးဦးဗျာ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

အမြဲဖောက်သည်ဖြစ်ပါစေခြင်း အကျိုးငှာ ထန်းလျက်တောင်းလေး
တောင်းကို ရွေးယုံသည်အထိ ကားပေါ် ဝိုင်းတင်ပေးလိုက်သည်။ တင်ပေး
နေချိန် တစ်ချက် သတိထားမိလိုက်သည်မှာ ထန်းလျက်တောင်းလေး
တောင်းလုံး စုတ်စုတ်ပြတ်ပြတ်များ ဖြစ်နေခြင်းပင်။ ကားပေါ်တင်ပြီး
သည်နှင့်

ဟောဗျာ ပစ္စည်းတင်ပြီးမှ ပိုက်ဆံလေးရာကျန်နေတာ သတိရ
စာတုတယ်။ ကဲ... ကားဆရာ ငွေလေးရာလောက် လွယ်ရင် ခဏပေးပါ
ဦး၊ မြန်မြန်ထွက်ရအောင်၊ ပြီးမှ ကားခကို တစ်ထောင်ပေါင်းရှင်းလိုက်
တာပေါ့။

ပစ္စည်းများကားပေါ်ရောက်ပြီ ဖြစ်နေသောကြောင့် ဘာမှ သံသယ
ဖြစ်မနေဘဲ ငွေလေးရာကို ထုတ်ပေးလိုက်သည်။ ထိုသူသည် ငွေလေးရာ
ရသည်နှင့် ပွဲရုံမန်နေဂျာရှိရာ အခန်းတွင်းသို့ လှမ်းဝင်သွားသည်ကို
တွေ့ လိုက်ရကသည်။ ၁၅-မိနစ် ပေါ်မလာ၊ နာရီဝက်ထိ
ပေါ်မလာသောအခါ ကိုဘသောင်းမနေနိုင်တော့၊ ပွဲရုံတွင်းသို့ ဝင်၍
မေးရလေပြီ။

သို့သော် ထန်းလျက်လေးတောင်းဝယ်သော လက်ခံဘောင်ချာ
မန်နေဂျာထံတွင် မတွေ့ရ။ ငွေလေး လေးရာနှင့် နှစ်ထောင်ဖိုးခန့်ရှိသော
ထန်းလျက်တောင်းများကိုတော့ ထားမပစ်ခဲ့နိုင်ဟူသော အတွေးဖြင့်
နောက်ထပ် နာရီဝက်ခန့် ဆက်စောင့်နေမိပြန်သည်။

သို့သော် သူကား ပေါ်မလာ။ စိတ်ကောင်းရှိပြီး ဖော်ရွေတတ်သော
မြန်မာတို့၏ မေတ္တာကို ခုတုံးလုပ်ပြီး လိမ်ညာသွားခြင်းကို ကိုဘသောင်း
တစ်ယောက် မရိပ်မိနိုင်ရှာသေး။ တစ်နာရီကျော်သည့်အခါတွင် အိမ်ဘက်

သူတို့၏ ဉာဏ်ရည်ဉာဏ်သွေး

လူလိမ်လူညာတို့၏ ဉာဏ်ရည်ဉာဏ်သွေးသည် ကောင်းသော ဘက်၌ အသုံးချနိုင်မည်ဆိုလျှင် နိုင်ငံအတွက် အင်မတန်မှ အကျိုးရှိပေ လိမ့်မည်။ လူလိမ်တို့၏ စုံစမ်းရေး မည်မျှကောင်းပုံကို (ခေတ္တ)ဂျပန်များ သတိထားဟူသော ခေါင်းစဉ်ဖြင့် ဖော်ပြခဲ့ပြီး ဖြစ်ပေသည်။

ယခုလည်း သူတို့၏ တိကျသော စုံစမ်းရေးဉာဏ်ဖြင့် စက်ဘီး တစ်စီး အပျောက်ရိုက်သွားပုံကို တင်ပြပါဦးမည်။ မောင်မြင့်ကြည်ရေး သော လူလည်လူပါး စီးပွားချမ်းသာဟူသော စာအုပ်၌ ဖတ်ရသည် ထင်ပါသည်။ နှစ်အတန်ကြာသွား၍ သေချာမမှတ်မိတော့ပါ။

တစ်ခုသော ညနေ၌ ဟံသာဝတီအိုင်းအနီးရှိ စာပေဗိမာန်ပုံနှိပ် တိုက်ဝင်းကြီး၏ရှေ့သို့ ၁၅-နှစ်သားခန့်ရှိ လူငယ်လေးတစ်ယောက် စက် ဘီးကို အပြင်းနင်း၍ ရောက်လာသည်။ စက်ဘီးကို ဝိုင်းထံထံသွင်းရန် ပြင်နေဆဲမှာပင် အသက်ကြီးကြီးလူကြီးတစ်ယောက် ဝင်းအတွင်းမှ ထွက် လာပြီး...

ဗေဏ္ဍာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

‘ဟေ့... မင်း ဒီက ဦးမြင့်မောင်သား မဟုတ်လား’

‘ဟုတ်ပါတယ် ခင်ဗျာ၊ အခု အိမ်မှာ အရေးတကြီးကိစ္စပေါ်လို့ အဖေ့ကိုလာခေါ်တာပါ’

‘အေး... ဒါဆို မြန်မြန်သွားခေါ်လိုက်၊ စက်ဘီး ဒီမှာပဲထားခဲ့၊ ငါ ကြည့်ထားလိုက်မယ်’

‘ဟုတ်ကဲ့ ကျေးဇူးပါပဲ ဦးလေး’

သူခိုးကိုမှ ရွှေတိုက်စိုးခန့်မိသည့်အဖြစ်ကို မသိရှာသော ထိုလူငယ် လေးက လိမ်မည့်သူကို ကျေးဇူးပင်တင်လိုက်သေးသည်။ ပုံနှိပ်စက်များ ကြားမှ သားအဖနှစ်ယောက် ထွက်လာသောအချိန်တွင်မတော့ လူလိမ် ကိုရော စက်ဘီးကိုရော အစအနပင် မမြင်ရတော့ပါ။ လုပ်သားကြီး ဦးမြင့်မောင်၏ အမည်၊ စက်ဘီးဖြင့် လာတတ်သော သူ၏သား။

ဤအချက်တို့ကို ကွက်တိဝင်အောင် ကြိုတင်ထောက်လှမ်းထား သော လူလိမ်၏ ဉာဏ်နီဉာဏ်နက်ကား ပေါ်သေးသေးမဟုတ်တာတော့ သေချာပေသည်။ ဒုစရိုက်မှုဖြစ်၍ ချီးကျူးဖို့တော့ မဟုတ်ပါ။ သို့သော် သူခိုးတစ်ယောက်ကို ကြိဖန်ချီးကျူးသော အိမ်ရှင်တစ်ယောက်ကိုကား တွေ့ခဲ့ဖူးပါသည်။

တစ်ခါတော့ ထိုအိမ်ရှင်၏ အိမ်သို့သူခိုးကပ်လေရာ အိမ်ရှင်က မကြာခဏ နီးတတ်သူဖြစ်၍ သူခိုးမှာ ခိုးခွင့်မကြိုနိုင်ဖြစ်နေရလေသည်။ ညဉ့်နှစ်ချက်တီးခန့်အချိန်တွင် အိမ်ရှင်အိပ်မောကျလောက်ပြီအထင်နှင့် သူခိုးက ချောင်းနေရာမှ အိမ်တွင်းသို့ ဝင်ရန် ကပ်လာလေသည်။

ထိုအခါမှာပင် တိုက်တိုက်ဆိုင်ဆိုင် အကောင်းမြင်ဝါဒရှိသော အိမ်ရှင်က အပေါ့အပါးသွားရန် အိမ်ပြင်သို့ထွက်အလာနှင့် ကြိုနေရပြန်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပီယုများအကြောင်း

သဖြင့် စိတ်ဆိုးလာသော သူခိုးက ဒီလောက် မအိပ်ချင်တဲ့ကောင် သေက္ခာ ဆိုပြီး ဝါးရင်းတုတ်ဖြင့် လှမ်းပစ်ကာ ထွက်ပြေးလေတော့သည်။

အမှောင်ထဲ မှန်းပစ်လိုက်သော ဝါးရင်းတုတ်က အိမ်ရှင်၏နဖူး တည့်တည့်ကို မှန်သဖြင့် ပက်လက်လှန် လဲသွားပါတော့သည်။ ထိုအခါ နဖူးမှထွက်လာသောဘုကို ကိုင်ကြည့်၍ ထိုအိမ်ရှင်ပြောလိုက်သော စကားမှာ...

‘တော်တော်ကို လက်တည့်တဲ့သူခိုးပဲဟေ့၊ ဒီလောက်မှောင်နေတဲ့ ကြားထဲကတောင် ငါ့နဖူးကို တည့်တည့်မှန်အောင် ပစ်နိုင်တယ်’ ဟူ၏။ ထူးဆန်းသော အကောင်းမြင်ဝါဒပါတကား။



[Faint, mostly illegible text follows, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

စေတနာစော်ကား လှူလိမ့်များ (၁)

ကြာတော့ ကြာခဲ့ပါပြီ။ သို့သော် ယခုခေတ်ကျမှ ထပ်ဆင့်ဖော်ပြ နေရခြင်းမှာ ထိုကဲ့သို့သော မေတ္တာစေတနာကို စော်ကားပြီး လိမ်ညာစား နေကြတုန်း ဖြစ်သောကြောင့်ပင်။ တကယ့်ကို ဖြူစင်ကြသော စေတနာ ရှင်၊ မေတ္တာရှင်တို့သည် အစိမ်းအကျက်မရွေး ဒုက္ခတွေ့တာ မြင်ကြလျှင် ကူညီစောင့်မကြသည်သာ ဖြစ်သည်။

ထိုကဲ့သို့သော စေတနာရှင်၊ မေတ္တာရှင်များရှိနေသောကြောင့်ပင် အတ္တသမားတို့ ကြီးစိုးရာလောကကြီးသည် တစ်စိတ်တစ်ဒေသအားဖြင့် နေချင့်စဖွယ်ရာ ဖြစ်နေသေးခြင်း ဖြစ်သည်။ ရှားရှားပါးပါး ထိုကဲ့သို့ သော မေတ္တာရှင်၊ စေတနာရှင်တို့ကိုမှ လိမ်ညာပြီး ကိုယ်ကျိုးရှာကြသော အခါ တကယ့် ဒုက္ခသည်တို့နှင့် တွေ့သောအခါ၌ ထိုမေတ္တာရှင်၊ စေတနာ ရှင်တို့၏ အေးမြဖြူစင်သော မေတ္တာစေတနာတို့ ပေါ်ထွက်မလာခြင်း သည်ကား ကမ္ဘာလောကကြီးတစ်ခုလုံးအတွက် ကြီးမားသော အနှုတ် လက္ခဏာကြီးတစ်ခုပင် ဖြစ်ပါတော့သည်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

လွန်ခဲ့သော နှစ်ပေါင်း ၄၅-နှစ်ခန့်ကာလ မန္တလေးဘူတာကြီးကို စတင် တည်ထောင် ဖန်ဆင်းနေသော အချိန်ကာလဖြစ်သောကြောင့် အနယ်နယ် အရပ်ရပ်မှ ပန်းရံ၊ လက်သမား၊ ကာယလုပ်သားများ ဘူတာဝင်းကြီးအတွင်း တဲငယ်လေးများထိုး၍ နေထိုင်လုပ်ကိုင်နေကြသော အချိန်ပင် ဖြစ်ပါသည်။

စစ်ကိုင်းမြို့နယ်၊ ညောင်ကုန်းရွာဇာတိဖြစ်သော အသက် ၂၀-ကျော်အရွယ်သာရှိသေးသော ကိုထီ၊ မသိန်းရင် အမည်ရှိ ဇနီးခင်ပွန်း နှစ်ယောက်သည်လည်း ထိုအလုပ်သမားအသိုင်းအဝိုင်းတွင် အပါအဝင် ဖြစ်လေသည်။ တစ်နေ့ညနေစောင်း နေဝင်ရီတရောအချိန်တွင် အသက် ၆၀-ကျော်ခန့်ရှိ အဘိုးအိုတစ်ယောက် ဘူတာပလက်ဖောင်းတွင် ထိုင်ကာ ချောင်းတစ်ဟွတ်ဟွတ်ဆိုးနေသည်ကို တွေ့ရသည်။

ထိုအဘိုးအိုကို ဘူတာဝင်းအတွင်းမှ အလုပ်သမားတိုင်း မြင်ကြ သည်သာ။ သို့သော် တစ်ဦးတစ်ယောက်မှ ထွက်ပြီး မေးမြန်းစုံစမ်း အကူအညီပေးခြင်း မပြုကြ။ သက်ရှိလူသားတိုင်း မေတ္တာစေတနာမရှိ ဟူသော စကား၏အဓိပ္ပာယ်သည် ဤနေရာမှာ ပေါ်လွင်နေပါသည်။

ထိုအချိန်မှာပင် ရေချိုးရာမှ ပြန်လာကြသော ကိုထီနှင့်မသိန်းရင် တို့က ထိုအဘိုးကြီးကို မြင်သဖြင့် အနားကပ်သွားကြကာ...

‘အဘိုး ချောင်းတွေသိပ်ဆိုးနေပါလား၊ ဘယ်ကိုများ ဆက်သွားရ မှာတုန်း’

‘ဪ... အဘိုးက မြစ်ကြီးနားကို ပြန်ရမှာကွဲ့၊ အခု အဘိုးရဲ့ အိတ်လေး လူဆွဲခံရလို့ ရထားလက်မှတ်တစ်စောင်တောင် မဝယ်နိုင်တော့ ပါဘူးကွယ်’

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ကဲပါ အဘိုးရယ် ရထားလက်မှတ်ဖိုးတော့ ကျွန်မတို့လင်မယား ကပဲ စိုက်ပေးလိုက်ပါမယ်၊ အေးကအေးနဲ့ အဘိုး တစ်ညလုံး ဒီနေရာမှာ နေရင် ဒုက္ခရောက်လိမ့်မယ်၊ ကျွန်မတို့ တဲကိုသာ တစ်ညလိုက်တည်းပါ။

ပြောပြောဆိုဆို လင်မယားနှစ်ယောက်လုံး အဘိုးအိုကိုတွဲကာ မိမိတို့ဘဲဆီသို့ ခေါ်ခဲ့ကြတော့သည်။ တဲသို့ ရောက်သောအခါ ဆေးတိုက်၍ ထမင်းကျွေးလိုက်ကြသည်။ ညရောက်သောအခါတွင်လည်း မိမိတို့ မြို့မည့်စောင်ကိုပင် တစ်ထည်ခွဲပေးကာ မေတ္တာစေတနာအပြည့်ဖြင့် ပြုစုကြပါသည်။

မနက်မိုးလင်း၍ အဘိုးကြီးကို လက်ဖက်ရည်အချိုလေး ဝယ်တိုက်ရန် ထွက်အဝယ်မှာပင် အိပ်ရာတွင် အဘိုးကြီးဖိုရီတော့ကြောင်း တွေ့ကြရသည်။ သင်္ကာမကင်းဖြစ်သည်နှင့် မိမိတို့၏အဝတ်အထည်နှင့် ငွေထည့်ထားရာ ထန်းခေါက်ဖာကို ဖွင့်ကြည့်လိုက်သောအခါ နှစ်လစာ လုပ်ငွေနှင့် မသိန်းရင်၏ အသစ်ဖြစ်သော ဝတ်စုံသုံးစုံ ပါသွားသည်ကို တွေ့ကြရပါတော့သည်။



စေတနာစော်ကား လူလိမ်များ (၂)

ရွှေပြည်သာမြို့သစ်တွင် အဖြစ်ထွန်းဆုံး သစ်ပင်သုံးမျိုးရှိသည်။ မယ်ဇလီ၊ သရက်၊ အုန်းပင်တို့ပင်။ အစေ့ကို မြေပေါ်ပစ်ချထားရုံဖြင့် အပင်စိုက်ပြီးသား ဖြစ်သွားသည်။ မိုးကလည်းကောင်း၊ ရေကလည်း ကောင်းသောကြောင့် အထွားလည်းမြန်ကြသည်။ ရွှေပြည်သာမြို့ တည်ထောင်သည်မှာ ဆယ်နှစ်ခန့်သာရှိသော်လည်း သစ်ပင်များ စိမ်းစိမ်းစိုစို နှင့် နေချင့်စဖွယ် ဖြစ်နေပေပြီ။

(၆)ရပ်ကွက်တွင် နေထိုင်သော ဦးဘမောင်၏ ခြံတွင်း၌လည်း ကောင်း၊ အိမ်ရှေ့၌လည်းကောင်း မယ်ဇလီပင်များ၊ သရက်ပင်များနှင့် အပြိုင်ဖြစ်ထွန်းလှသည်။ တစ်နေ့ ထိုနေ့သည်ကား နေခင်းပိုင်းဖြစ်သည့် အတွက် သားသမီးများရော မြေးများပါ စီးပွားရေးကိစ္စ၊ ကျောင်းကိစ္စ ဖြင့် အသီးသီးထွက်သွားနေကြ၍ အိမ်တွင်မရှိကြ။

‘အဘ ခြံထဲဝင်ပြီး မယ်ဇလီဖူး နည်းနည်းခုပါရစေ’

လောကီရှင် (ရွှေပြည်သာ)

‘ဪ... အေးအေး၊ စိတ်ကြိုက်ခူးနိုင်ပါတယ်ဗျာ’

မိန်းကလေးက ဝမ်းသာအားရ ခြံထဲဝင်လာကာ မယ်ဇလီဖူးများကို ဝါးလုံးဖြင့် နှိမ်ကာနှိမ်ကာဖြင့် စိတ်ကြိုက်ခူးနေသည်။ အပြင်ဘက်မှလည်း မယ်ဇလီပင်တွေ အများသားနဲ့ ခြံထဲမှာဝင်ပြီး ဘာဖြစ်လို့များ ခူးချင်တာ ပါလိမ့်ဟု အတွေးတစ်ချက် ဝင်လိုက်မိသေးသော်လည်း စေတနာရှင်တစ် ဦးပီပီ ဪ... သူ့စိတ်ချမ်းသာရာ ခူးပါစေလေဟု သဘောထားကာ ဖတ်လက်စ စာအုပ်ကို ဆက်ဖတ်နေလိုက်သည်။

ထိုအခိုက်မှာပင် မိန်းကလေးထံမှ ခပ်အုပ်အုပ်ထွက်လာသော ညည်းညူသံကြောင့် အိမ်ပေါ်မှ အပြေးတစ်ပိုင်း ဆင်းကြည့်လိုက်ရာ မယ်ဇလီပင်ကို မှီ၍ နားထင်နှစ်ဖက်ကိုကိုင်ကာ ဝေဒနာခံစားနေရသော မိန်းကလေးကို တွေ့ရသဖြင့် ဦးဘမောင်မှာ ဘာလုပ်ရမှန်းမသိ၊ ခြေ မကိုင်မီ၊ လက်မကိုင်မီ ဖြစ်သွားပါတော့သည်။ မိန်းမပျိုလေးတစ်ယောက် ဖြစ်နေသည့်အတွက်လည်း ကိုင်ရပြုရမှာ ခက်နေသည့်အတွက် ဘေးအိမ်များကို အသံပြုရန် ပြင်လိုက်စဉ်မှာပင် မိန်းကလေးက...

‘အဘ ဘယ်သူ့ကိုမှ ခေါ်မနေနဲ့၊ ဒီခေါင်းကိုက်တာက ကျွန်မ ဖြစ်နေကျရောဂါပါ၊ လမ်းထိပ်ဆေးဆိုင်က အကိုက်အခဲပျောက်ဆေးသာ ဝယ်ပေးပါ’

လမ်းထိပ်ဆေးဆိုင်နှင့် ဦးဘမောင်တို့အိမ်ကလည်း သိပ်ဝေးသည် မဟုတ်၊ အိမ်ခြောက်လုံးလောက်ကျော်လျှင် ရောက်သည်သာဖြစ်သည်။ ထို့ကြောင့်လည်း ဆေးဆိုင်ဆီသို့ ချက်ချင်း သုတ်ခြေတင်ကာ အကိုက် အခဲပျောက်ဆေးကို ဝယ်၍ အိမ်သို့ ချက်ချင်းပြန်ပြေးခဲ့ရသည်။

သို့သော် အိမ်ပြန်နောက်ကျ၍ ဆေးမတိုက်ရမီမှာပင် မိန်းကလေးက

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ပျောက်နေပေပြီ။ ပျောက်သွားသည်က ရောဂါတော့မဟုတ်။ မိန်းကလေးကိုယ်တိုင်ပင် ဖြစ်ပါတော့သည်။ မေတ္တာသမားပီပီ ငါ ဆေးဝယ်တာ ကြာနေလို့များ တခြား ထွက်သွားသလားဟူသော အတွေးနှင့်အတူ ဦးဘမောင်တစ်ယောက် အကိုက်အခဲပျောက်ဆေးလေးကို ကိုင်၍ ငိုနေမိသေးသည်။

အတန်ကြာမှ ဖျတ်ခနဲ အသိတရားတစ်ခု ဝင်လာသဖြင့် အိမ်ပေါ်သို့ ပြေးတက်ပြီး ကြည့်လိုက်သောအခါ စားပွဲတင်နာရီနှင့်တိုင်ကပ်နာရီတစ်လုံးမှာ မရှိတော့ပါတကား။ နာရီနှစ်လုံးပျောက်တာကို မြင်သောအခါမှပင် စေတနာစော်ကားဖို့ရာ ဝန်မလေးသော လူလိမ်လူညာတို့၏ ဉာဏ်နီဉာဏ်နက်ကို ရိပ်စားမိပါတော့သတည်း။

ဖြူစင်သော မေတ္တာရှင်၊ စေတနာရှင်များ လူလိမ်လူညာတို့၏ဘေးမှ ဝေးကြပါစေသော်။



အတန်ကြာမှ ဖျတ်ခနဲ အသိတရားတစ်ခု ဝင်လာသဖြင့် အိမ်ပေါ်သို့ ပြေးတက်ပြီး ကြည့်လိုက်သောအခါ စားပွဲတင်နာရီနှင့်တိုင်ကပ်နာရီတစ်လုံးမှာ မရှိတော့ပါတကား။ နာရီနှစ်လုံးပျောက်တာကို မြင်သောအခါမှပင် စေတနာစော်ကားဖို့ရာ ဝန်မလေးသော လူလိမ်လူညာတို့၏ ဉာဏ်နီဉာဏ်နက်ကို ရိပ်စားမိပါတော့သတည်း။

ဖြူစင်သော မေတ္တာရှင်၊ စေတနာရှင်များ လူလိမ်လူညာတို့၏ဘေးမှ ဝေးကြပါစေသော်။

ဒီပနီ (အနုပညာ) ဝိသုဒ္ဓိ

ကလေးတို့ကို ပြောရမည့် အရာများကို ရေးသားပေးခြင်းဖြင့် ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။ ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။ ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။

မိခင်များသည် ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။ ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။ ကလေးတို့၏ စိတ်ကို ပျော်ရွှင်စေရန်အတွက် ရေးသားပေးခြင်းဖြစ်သည်။

မီးချောင်းပြင်သူများ သတိထား

လှိုင်မြို့နယ်၊ (၃)ရပ်ကွက်၊ (၁၂)လမ်းအတွင်းတွင် ဖြစ်သည်။ လမ်းပေါ်မှ အော်သွားသော လူတစ်ယောက်၏အသံက လျှပ်စစ်မီးထွန်းသူတိုင်းအတွက် စိတ်ဝင်စားစရာ ဖြစ်နေသည်။ သူအော်နေသည်က...

'မီးချောင်းအကျွမ်းတွေကို မီးထွန်းလို့ရအောင် ဈေးချိုချိနဲ့ပြင်' သူသူကိုယ်ကိုယ် လျှပ်စစ်မီးထွန်းသူတိုင်း မီးချောင်းအကျွမ်းများကတော့ အနည်းနှင့်အများရှိကြသည်သာ။ အလကားဖြစ်သွားမည့် အရာများကို ဈေးချိုချိနှင့်ပြန်ကောင်းအောင် လုပ်ပေးသည်ဆိုသည်နှင့် ဖြစ်နိုင်၊ မဖြစ်နိုင်ကို စဉ်းစားမနေတော့ဘဲ အိမ်ပေါ်ကို အမြန်ခေါ်လိုက်မိတော့သည်။

အိမ်ပေါ်တက်လာသော အသက်၃၀-ခန့် ကုလားကိုကြည့်၍ ဒေါ်ရီက သေချာအောင် ထပ်ပြောလိုက်သေးသည်။

'မီးပျန်းကြည့်လို့ မလင်းရင်ကော မင်းကို ပိုက်ဆံမပေးနိုင်ဘူးနော်'

ယုံမှတ်လို ပုံအပ်ယူပျားအကြောင်း

‘စိတ်ချပါ အဒေါ်၊ မီးမလင်းရင် ပိုက်ဆံမပေးပါနဲ့’
 သို့ဖြင့် ကျွမ်းနေသော မီးချောင်းအဟောင်းသုံးချောင်းကို ထုတ်ပေး
 လိုက်ရာ ကုလားက ဟိုကိုင်ဒီကိုင်ဖြင့် စတင် ပြင်နေပါတော့သည်။
 သူ့ထဲတွင်လည်း ထူးထူးခြားခြားတော့ ဘာပစ္စည်းမှ ပါလာသည်ကို
 မတွေ့ရ။ ခဏကြာ ကုလားက အနားတွင် ထိုင်ကြည့်နေသော ဒေါ်ရီနှင့်
 တူဖြစ်သူကို သေချာကြည့်ကာ ပထမဆုံး တူဖြစ်သူ စိုးမောင်ကို အရင်
 ခိုင်းလိုက်သည်က...

‘ညီလေး ပလာယာလေးတစ်ခုလောက် ခဏယူပေးပါ’
 မောင်စိုးမောင် ထွက်သွားပြီးချင်း မကြာမီမှာပင်...

‘အဒေါ်မီးဖိုထဲက ဆားတစ်ဆုပ်လောက် ယူပေးပါ၊ မီးချောင်းပေါ်
 မှာ ဆားပုံပေးရပါမယ်’

ဒေါ်ရီလည်း ဘုမသိ၊ ဘမသိဖြင့် မီးဖိုချောင်ထဲ ဝင်လိုက်ရပြန်
 သည်။ ထိုအချိန်၌ ဧည့်ခန်းထဲတွင် မီးချောင်းပြင်သော ကုလားတစ်
 ယောက်သာရှိနေသည်။ ခဏအကြာတွင် ဒေါ်ရီရော၊ မောင်စိုးမောင်ရော
 နှစ်ယောက်လုံး ပြန်ရောက်လာကြရာ ကုလားလည်း ဣန္ဒြေမပျက် ဆက်
 ပြင်နေသည်။

ဘာမှတော့ သံသယဖြစ်ဖွယ် မတွေ့ရ။ နောက် ငါးမိနစ်လောက်
 အကြာတွင် ‘အဒေါ် ဟိုနှစ်အိမ်ကျော်မှာ ကျွန်တော့်ပစ္စည်းလေးတစ်ခု
 ကျန်နေခဲ့တယ်၊ ခဏသွားယူပါရစေ’ အေး သွားယူလေ’ ကိုယ့်ပစ္စည်း
 လည်း ဘာမှပါသွားသည်မဟုတ်သောကြောင့် ထိုကုလားကို အလွယ်
 တကူပင် သွားခွင့်ပြုလိုက်ခြင်း ဖြစ်သည်။ နာရီဝက်လောက်ကြာသည်
 အထိ ပြန်မလာသောအခါ တူဖြစ်သူ စိုးမောင်က...

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

‘အဒေါ် ဒီကုလား အလကားနေမှာပါ၊ ကျွမ်းပြီးသား မီးချောင်း ပြန်ကောင်းအောင် ပြင်တယ်ဆိုတာ မဖြစ်နိုင်ပါဘူး၊ ဟုတ်များ ဟုတ် မလားလို့ ကျွန်တော်က စောင့်ကြည့်နေတာ၊ လာမှာလည်း မဟုတ်တော့ ပါဘူး။ ကျွန်တော် အလုပ်သွားတော့မယ်’

‘မရလည်း ဘာဖြစ်တုန်းဟယ်၊ ကိုယ့်ပစ္စည်း ဘာပါသွားတာမှတ် လို့’ စကားအဆုံးတွင် စိုးမောင်တစ်ယောက် တစ်စုံတစ်ခုကို ရှာလေဟန် ဖြင့် လှမြေ့မရသဖြင့် ဒေါ်ရီက...

‘ဟဲ့... မင်းက ဘာရှာနေတာတုန်း’

‘နာရီရှာနေတာ အဒေါ်ရ၊ ကျွန်တော် ရေချိုခါနီးတုန်းက ဗီရိုပေါ် မှာ သေချာတင်ထားတာပဲ’ သူတို့ ဘယ်လိုပင်ရှာသော်လည်း လက်ပတ် နာရီက မတွေ့တော့ပါ။

ဘယ်မှာတွေ့တော့မည်နည်း။ သူတို့နှစ်ဦး ပလာယာနှင့် ဆားသွား ယူစဉ် အချိန်လေးကပင် မီးချောင်းပြင်သည့်ကုလားက အိတ်ထဲထည့်ယူ ထားလိုက်ပြီ မဟုတ်ပါလား။ အိမ်ထဲဝင်လာပြီဆိုကတည်းက မည်သည့် ပစ္စည်းယူရမည်ကို လူလိမ်က သေချာကြည့်ပြီးလေပြီ။ ထို့နောက် ယူချိန် ရရန်အတွက် အနားရှိလူများကို တစ်စုံတစ်ခု ယူခိုင်းရင်းဖြင့် ဝေးရာသို့ နှင်ထုတ်လိုက်သည်။

အနားမှာလူမရှိတော့သည်နှင့် ကြည့်ထားသော ပစ္စည်းကို အိတ်ထဲ အသာကောက်ထည့်ထားပြီး အချိုသတ်ကာ လစ်ထွက်သွားခြင်းပင်။ အကွက်ကျပြီး ပိရီသေသပ်လှသဖြင့် အထူးသတိထားနိုင်ကြပါစေ။



ကော်ဖီတစ်ခွက်သုံးသောင်း

ကော်ဖီတစ်ခွက်ကို ငွေသုံးသောင်းပေး၍တော့ မည်သူမျှ သောက်မည်မထင်ပါ။ သို့သော် မကွေးတိုင်း၊ ချောက်မြို့နယ်တွင်ပါဝင်သော မင်းနောင်ရွာသား ကိုဖိုးထောင်သည်ကား တကယ်ပင် သောက်ခဲ့ရပါသည်။ သောက်ခဲ့ရပုံက ၉၇-ခုနှစ်၊ လေးလပိုင်းအတွင်းကပင် ဖြစ်ပါသည်။ ချောက်-ရန်ကုန် ပြေးဆွဲသော ကြိတ်တိုင်းအောင် အမြန်ကားကြီးသည် ရန်ကုန်မှချောက်သို့ တစ်ရိပ်ရိပ် ပြေးနေသည်။

ထိုင်ခုံချင်းယှဉ်လျက် စီးလာသော ခရီးသည်တစ်ဦးက ကားစီးရင်း မိတ်ဖွဲ့သည့်အနေဖြင့် ကိုဖိုးထောင်ကို အာလူးကြော်နှင့် မြေပဲဆားလှော်များကို ကျွေးသည်။ ထို့နောက် ရောက်တတ်ရာရာ စကားလက်ဆုံကျရင်းဖြင့် ကိုဖိုးထောင်ထက် ကြီးဟန်တူသော ထိုခရီးသည်က 'ညီမောင်က ရန်ကုန်ကို အလည်သွားတာပဲလား'

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

‘မဟုတ်ဘူး နောင်ကြီး၊ ရွာကထွက်တဲ့ မြေပဲဆံကို ရန်ကုန်က ဘုရင့်နောင်ပွဲရုံထိ လာသွင်းတာ နောင်ကြီး မကွေးတို့၊ ရေနံချောင်းတို့၊ ချောက်တို့မှာလည်း ရောင်းရင်တော့ ဖြစ်ပါတယ်၊ ဒါပေမဲ့ ရန်ကုန်ထိ ဆင်းရောင်းတော့ ဈေးပိုရတာပေါ့ဗျာ’

‘ကောင်းတာပေါ့ဗျာ၊ မျက်စိလည်းပွင့် ဒေသန္တရ ဗဟုသုတလည်း ရပေါ့’

ထိုသို့ စကားကောင်းနေကြရင်းဖြင့် ခရီးတစ်ဝက်ခန့်အရောက်တွင် ကားခဏနားသဖြင့် နှစ်ယောက်သား ဆင်းလာကြသည်။ လက်ဖက်ရည် ဆိုင်ထဲ ရောက်သောအခါ ထိုခရီးသည်က ‘ညီမောင် လက်ဖက်ရည်၊ ကော်ဖီ ဘာကြိုက်တုန်း၊ နောင်ကြီး ဒကာခံပါရစေ’

‘ကျွန်တော် ကော်ဖီပဲ ကြိုက်ပါတယ် ခင်ဗျ’

ကော်ဖီမှာအပြီးမှာတင် ကိုဖိုးထောင်ကလည်း ကွမ်းယာနှင့်ဆေး လိပ်ပြန်ပြီး ဒကာခံလိုသဖြင့် ကွမ်းယာဆိုင်ဘက်သို့ ခဏလျှောက်သွား လိုက်သည်။ ကွမ်းယာနှင့်ဆေးလိပ်ဝယ်ပြီးနောက် လက်ဖက်ရည်ဆိုင် အတွင်း ပြန်ဝင်ကာ မှထားသော ကော်ဖီကိုနှစ်ယောက်သား သောက် လိုက်ကြသည်။

ကော်ဖီသောက်ပြီးစအထိတော့ ကိုဖိုးထောင် ဘာမှမဖြစ်သေး၊ ကားထိုင်ခုံ၌ ပြန်ထိုင်သောအခါကျမှပင် ခေါင်းက မူးနောက်နောက် ဖြစ်လာသည်။ ကော်ဖီသောက်စဉ်က ခါးသက်သက်အရသာတစ်မျိုးကို တော့ သတိထားလိုက်မိသည်။ သို့သော် နောက်ကျသွားပြီ။ မူးနောက် နောက်သာမက ယောင်နုနုပင် ဖြစ်လာကာ မျက်လုံးက ဘယ်လိုမှ ဖွင့်မရတော့။ သူတို့ရွာ၊ မင်းနောင်ကားဆိပ်သို့ရောက်သော်လည်း မဆင်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပုံများအကြောင်း

နိုင်ဘဲ ချောက်ထိ ဂိတ်ဆုံးပါသွားသည်။

ဂိတ်ဆုံးမှ ကားသမားများက တွဲခေါ်၍ ဂိတ်စခန်းတွင် ခွေအိပ်
နေရသေးသည်။ နာရီတော်တော်ကြီးကြာမှပင် လူကောင်းပကတိပြန်
ဖြစ်သည်။ ထိုအချိန်တွင်မတော့ ပွဲရုံမှပေးလိုက်သော မြေပဲဆံဖိုး သုံး
သောင်းအပြင် လက်ပတ်နာရီပါမကုန် မရှိတော့ပါပေ။ ခရီးသွားမိတ်ဆွေ
ယောင်ဆောင်ပြီး ကော်ဖီတွင် ဆေးခတ်ကာ အပျောက်ရိုက်သွားခဲ့ခြင်းပင်။

ထိုလူလိမ်လူညာကား ဘယ်မြို့တွင် ဆင်းနေခဲ့မှန်းပင် မသိရပေ။
တစ်ခါကလည်း ချောက်မြို့မှ လူငယ်တစ်ဦး မန္တလေးအသွားခရီးတွင်
ကိုဖိုးထောင်နည်းတူ ခတ်ဆေးမိသဖြင့် ငွေများပါသွားသည့်ပြင် ခတ်ဆေး
က ပြင်းထန်လွန်းသောကြောင့် ဆေးရုံတွင် တစ်ပတ်တိတိ တက်ရောက်
ကုလသလိုက်ရသေးသည်ဟု သိရသည်။

ဤဖြစ်ရပ်ကို ထောက်ဆ၍ ခရီးသွားများအနေဖြင့် တဒဂံတွေ
ရသော ပုဂ္ဂိုလ်များကို အရှည်မျှော်ပြီး သတိနှင့်ဆက်ဆံကြဖို့ သတိပေး
လိုပါသည်။ မည်မျှထိ အရှည်မျှော်ရမည်ကိုတော့ အောက်ပါဖြစ်ရပ်လေး
ကို ဖော်ပြပြီး သတိပေးပါရစေ...

တစ်ခါက ရထားတွဲတစ်တွဲပေါ်တွင် ထိုင်ခုံကပ်လျက်ကျသော
လူငယ်တစ်ဦးက အသက်၅၀-ကျော်ခန့်ရှိ လူကြီးတစ်ဦးကို...

‘ဦးကြီး ဘယ်နှုနာရီထိုးပလဲခင်ဗျ’
‘မသိဘူးကွာ’

‘ဟောဗျာ ဦးကြီးကလည်း နာရီလေးပြောရတာများ’

‘အေး... မင်းနာရီမေးတာကို ငါကဖြေလိုက်ရင် မင်းနဲ့ ငါနဲ့
ခင်သွားမယ်၊ ခင်သွားတော့ နောက်ဘူတာရပ်ရင် မင်းက ငါ့ကိုလက်ဖက်

ငွေသုံးသိန်းနှင့် အမေရေယဉ်

သုံးဆယ်မြို့၊ စည်ပင်သာယာဖြတ်လမ်းတွင် နေထိုင်သော အသက် (၂၅)နှစ်အရွယ် မချိုသဲအမည်ရှိ ကနားစီးတစ်ယောက်သည် သူ့ကိုယ်သူ အမေရေယဉ်ခေါင်းစွဲ (နတ်ထိန်း)ဟု ကြေညာပြီး ဟောပြောစားသောက် လျက်ရှိသည်။ တစ်ခုသော ရက်တွင်ကား သာမန်ဟောချက်ပင် မဟုတ် တော့ဘဲ အမေရေယဉ်၏ မစမူဖြင့် ငွေသားကို ထက်ဝက်တိုးပြမည် ဆိုသောကြောင့် ၎င်းနေ့တွင် မချိုသဲအိမ်၌ အချောင်ငွေတိုးလိုသူများ ကြိတ်ကြိတ်တိုးနေသည်ကို တွေ့ရသည်။

အချိန်ကျရောက်သောအခါ ပဋ္ဌာန်းဆက်ပါမှ ရသည်ဟုပြောပြီး ဈေးထဲမှ ဈေးသည်နှစ်ယောက်ကိုသာ ငွေတိုးပွားပေးရန် လက်ခံလိုက် သည်။ ပြီးလျှင် ဈေးသည်နှစ်ဦးထံမှ ငွေတစ်ထောင်စီကို ယူ၍ ငွေဖလား တွင်းထည့်ကာ ပိတ်ဖြူစဖြင့် အုပ်ထားလိုက်သည်။ ပြီးလျှင် အမေရေယဉ် ကိုအာရုံပြုပြီး အုပ်ထားသော ပိတ်ဖြူစကို ဖယ်လိုက်သည်နှင့် ငွေနှစ်

ဖေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ထောင်က လေးထောင်ဖြစ်သွားသည်ကို မျက်ဝါးထင်ထင် တွေ့မြင်ကြရသဖြင့် သုံးဆယ်မြို့အတွင်း ပြောမဆုံးပေါင် တောသုံးထောင် ဖြစ်သွားပါတော့သည်။

တစ်ခုသောရက်တွင်ကား အချောင်ငွေတိုးပွားချင်ကြသော ဈေးအတွင်းမှ ဆိုင်ကြီးများကို မချီသဲကိုယ်တိုင် ပေါက်ချလာသည်။

‘အဒေါ် အမေရေယဉ်ရဲ့ ပဋ္ဌာန်းဆက် အဒေါ်မှာပါနေပြီ၊ ငွေပွားချင်တယ်ဆိုရင်တော့ ဒီတစ်ကြိမ်မှာ အဒေါ်ပါဝင်လို့ရနေပြီ၊ အဲဒါ အဒေါ်ဆန္ဒသိရအောင် ကျွန်မ လာမေးတာ’

‘အမယ်လေး မပါဝင်ချင်ဘဲ နေပါ့မလားအော့၊ တစ်နေ့ကဟာ ကြည့်ပြီး သိပ်အားကျနေတာ၊ ကဲ... ငါက ဘယ်လောက်ထိ ပွားလို့ရမလဲ၊ ပွားခွင့်ရတုန်း များများပွားလိုက်ချင်တယ်’

‘စီးပွားဖြစ် အများကြီးတော့ မရဘူးအဒေါ်၊ အများဆုံးတစ်ဦးကို နှစ်သောင်းအထိပဲ ပွားပေးနိုင်မယ်’

‘အေး... ဒါဆိုရင်လည်းရသလောက်ပေါ့အေး၊ ရော နှစ်သောင်း’

သို့ဖြင့် ဈေးဝင်းအတွင်းမှ ငွေသုံးသိန်းခန့် ရရှိသွားခဲ့သည်။ နေ့လယ်တစ်နာရီခန့်တွင် မိမိငွေကို မိမိလာယူကြရန်ပြောပြီး ကနားစီးမချီသဲ အိမ်သို့ ပြန်သွားလေသည်။ နေ့လယ်တစ်နာရီထိုးသည်နှင့် အချောင်ငွေတိုးချင်သည့် ဈေးသည်များ မချီသဲအိမ်သို့ အုပ်လိုက်ချီတက်လာကြပါတော့သည်။

မချီသဲအိမ်သို့အရောက်တွင်ကား ခဲလေသမျှ သဲရေကျ ဖြစ်ရလေပြီ။ အမေရေယဉ်ခေါင်းစွဲ၊ ကနားစီးမချီကား ငွေသုံးသိန်းကိုပိုက်၍ ဝေးရာသို့ ပြေးခဲ့လေပြီ။ လောဘောအတ္တံ နဇာ နာတိ = မတရားလို

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

ချင်သော လောဘာလွမ်းစိုးခံရလျှင် အကြောင်းအကျိုး၊ အကောင်းအဆိုး
ဘာမျှ မတွေးတော မသိနိုင်တော့ဟု ဗုဒ္ဓဟောကြားခဲ့သည်မှာ မှန်လွန်းလှ
ပါသည်။

ယခုဖြစ်ရပ်တွင်လည်း ငွေကိုသာ တကယ် ပွားပေးနိုင်ရိုးမှန်လျှင်
ပုထုဇဉ်သာဖြစ်သော မချိုသဲသည် သူတစ်ပါးငွေတွေကို အဘယ်မှာ
အချိန်ကုန်ခံ၍ ပွားပေးနေမည်နည်း။ မိမိကိုယ်ပိုင်ငွေများကို နေ့စဉ်ပွား၍
သူဌေးမကြီး လုပ်နေပေလိမ့်မည်။ လိုချင်လောဘ၏ အလွမ်းစိုးခံရသော
ကြောင့် ၎င်းအချက်ကလေးကိုပင် မတွေးမိသဖြင့် အစုလိုက် အပြုံလိုက်
အလိမ်အညာ ခံလိုက်ကြရပေသည်။

သတိထားနိုင်ကြပါစေသော်။



နတ်လိမ်ခံထိသော မိသားစုစုံ

အလွတ်အမြတ်ဖြင့် နှစ်လိမ်ခံထိသော မိသားစုစုံ... နတ်လိမ်ခံထိသော မိသားစုစုံ... နတ်လိမ်ခံထိသော မိသားစုစုံ...

နတ်လိမ်ခံထိသော မိသားစုစုံ

ပထမမိသားစုမှာ စာရေးသူတို့ ရွှေပြည်သာမြို့ (၆)ရပ်ကွက် အတွင်းမှာ နေထိုင်ကြသည်။ မိတာဘောက် မရသေးသော သူလိုကိုယ် လို မြန်မြန်ရချင်သည်။ သို့နှင့် လိုင်းမင်းတစ်ယောက်နှင့် ဆက်သွယ်မိ တော့သည်။ လိုင်းမင်းက တစ်လအတွင်းရမည်ဟု ရဲရဲကြီးတာဝန်ခံကာ ငွေတစ်သောင်းတောင်းယူသွားသည်။ နှစ်လကြာသွားသည်။ လိုင်းမင်း က ပေါ်မလာတော့။

သေချာစုံစမ်းကြည့်သောအခါမှ ငွေတောင်းယူသွားသော လိုင်း မင်းက ပိပိရီရီ လိမ်သွားကြောင်း သိလိုက်ရသည်။ လိုင်းမင်းတော့ လိုင်းမင်းပင်။ သို့သော် သူ လိုင်မင်းဘဝက အတိတ်မှာကျန်ခဲ့တာ ကြာ ပြီ။ လျှပ်စစ်ဌာနက အလုပ်ဖြုတ်လိုက်သည်ကို ပြည်သူကမသိ။ မသိ တော့ လိုင်းမင်းဖြုတ်အနေနှင့်လိမ်ချင်တိုင်း လိမ်၍ရနေသည်။ သတိထား စရာပင်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ထိုကိစ္စဖြစ်ပြီး မကြာမီမှာပင် ၎င်းအိမ်ပေါ်၌ နတ်ကတော် အခြောက် သုံး၊ လေးယောက်ကို မကြာခဏတွေ့လာရသည်။ လေ့လာ ကြည့်တော့ စက်နှင့်ပတ်သက်တာမှန်သမျှ မင်းလေး မင်းကြီးနှင့်သာ ဆိုင်သည်။ မင်းလေး မင်းကြီး တစ်သိန်းကုန် သုံးရက် ကနားပေးလိုက် လျှင် မိတာဘောက်လည်းရမည်၊ အလိမ်ခံထားရသောငွေလည်း အလိုလို ပြန်ရမည်၊ စီးပွားရေး၊ ကြီးပွားရေးလည်း ယခုထက် တိုးတက်လာတော့ မည်တဲ့။

ဟုတ်၊ မဟုတ် စောင့်ကြည့်ရပေတော့မည်။ တစ်သိန်းတန် သုံးရက် ကနားကို အလျှော့အတင်း ဈေးညှိကြတော့ စရိတ်ငြိမ်း (၇)သောင်းနှင့် ဈေးတည့်သွားကြသည်။ ကနားပွဲဖြစ်တော့မည်ဆိုသည်နှင့် အမူးသမား၊ အရူးသမားတို့က ပျော်နေသလောက် မိမိချွေးနှံစာဖြင့် ရိုးရိုးသားသား ဘဝကို ရပ်တည်နေကြရသော လက်လုပ်လက်စားနှင့် ဝန်ထမ်းမိသားစု များမှာတော့ စိတ်ဆင်းရဲကြရသည်။

အဘယ်ကြောင့်ဆိုသော် အလုပ်သမားအများစုအနေဖြင့် နားချိန် ဆိုသည်မှာ ညအိပ်ချိန်လေး တစ်ချိန်သာ ကောင်းကောင်းရှိပါသည်။ ထိုကဲ့သို့ နားရမည့်အချိန်ကလေးပင် ဗရုတ်သုတ်ခ ဝိန်းဗောင်းသံများ ဆူညံနေမည်ဆိုလျှင် အဘယ်မှာ စိတ်ချမ်းသာစွာ အနားယူရတော့မည် နည်း။

ကနားမကမီ တစ်ရက်အလိုမှာပင် ငွေခုနစ်သောင်းယူသွားသော ကနားစီးများ ရှာမတွေ့တော့ဟူသော သတင်းတစ်ခု ရောက်လာပါတော့ သည်။ ဒုတိယအကြိမ် အလိမ်ထိပြန်လေပြီ။ ဇာတ်သရဏတောဘယံ = ရတနာသုံးပါးမှတစ်ပါး အခြားကို ကိုးကွယ်ရာမှ ဘေးဖြစ်ရလေပြီ။

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဘာသာရေးသတိ အမြဲရှိကြပါစေ။

(မေး) ရတနာသုံးပါးကိုစွန့်ပြီး ဘိုးတော်၊ မယ်တော် ရိုးရာနတ်တွေကို ကိုးကွယ်လိုက်ရင် သရဏဂုံပျက်ပြီး ဗုဒ္ဓဘာသာ မဟုတ်တော့ဘဲ သိရပါပြီဘုရား၊ ရတနာသုံးပါးလည်း ကိုးကွယ်မယ်၊ ဘိုးတော် မယ်တော် ရိုးရာနတ်တွေလည်း ကိုးကွယ်မယ်ဆိုရင် ကောဘုရား။

(ဖြေ) အဲဒါဆိုရင် ဒေါင်ဒေါင်မြည် ဗုဒ္ဓဘာသာအစစ်မဟုတ်တော့ဘူး၊ ကပြားဗုဒ္ဓဘာသာ ဖြစ်သွားတယ်။

(သုတေသန သမ္မာမဂ္ဂဂပညာကျမ်းမှ)

နစ်လိမ်ခံထိသော ဒုတိယမိသားစုမှာ ဗုဒ္ဓလက်ထက်တော်အခါ ကာဖြစ်သည်။ မြတ်စွာဘုရား သာဝတ္ထိပြည် ဇေတဝန်ကျောင်း၌ သီတင်း သုံးနေတော်မူစဉ်က ဖြစ်သည်။ သာဝတ္ထိမြို့၌နေသော အမျိုးသမီးတစ် ယောက်ကို နေပုဒ်တစ်ခု၌နေသော ဆွေမျိုးမိဘများက မိမိတို့သားအတွက် နေ့စပ်ကြောင်းလမ်း၍ မင်္ဂလာရက်သတ်မှတ်ကာ နေရပ်သို့ ပြန်ခဲ့ကြ လေသည်။

နေရပ်သို့ရောက်သောအခါ မိမိတို့ဆည်းကပ်နေသော ဗေဒင် နက္ခတ်ဆရာ အာဇီဝကကို သတ်မှတ်လာသော မင်္ဂလာနေ့ရက်သည် နက္ခတ်ကောင်း၊ မကောင်း မေးမြန်းလေသည်။ ထိုအခါ အာဇီဝကက အစကတော့ မမေးဘဲ သူတို့စိတ်ကြိုက် ရက်သတ်မှတ်ပြီးမှ ငါ့ကို လာ မေးကြတယ်ဟု အမျက်ဒေါသဖြစ်ပြီး မင်္ဂလာပွဲပျက်စေရန် အကြံနှင့်...

ငှင်းနေ့ လက်ထပ်မင်္ဂလာပွဲ ပြုလုပ်လေလျှင် ကြီးစွာသော ပျက်စီးခြင်းနှင့် တွေ့ကြုံရမည်ဟု ဟောကြားလိုက်လေသည်။ ကိုယ်ပိုင်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ဉာဏ်မရှိသောအမျိုးတို့သည် ဆရာဖြစ်သူ အာဇီဝက၏ စကားကိုယုံကာ မင်္ဂလာဆောင်မည့်ရက်တွင် မသွားဘဲ နေကြလေသည်။

သာဝတ္ထိမြို့မှ သတို့သမီးမိဘများကလည်း မင်္ဂလာအခမ်းအနား ပြင်ဆင်ပြီးမှ သတို့သားဘက်မှ မလာသောအခါ မင်္ဂလာပွဲကို အပျက်မခံဘဲ တခြားအမျိုးသားတစ်ဦးနှင့် လက်ထပ်ပေးလိုက်လေတော့သည်။ နောက်ရက်မှ သတို့သားမိဘများသွားကြသောအခါ အမျိုးမြတ်၍ ဥစ္စာပေါ့၊ ရုပ်ချောသော အမျိုးသမီးကို မရတော့ဘဲ သာဝတ္ထိမြို့သားများနှင့် ခိုက်ရန် စကားများကာ လာလမ်းအတိုင်း ပြန်ခဲ့ကြရလေတော့သည်။

ထိုအဖြစ်ကို ဗုဒ္ဓအားလျှောက်ကြားရာတွင် ဗုဒ္ဓက ဤအာဇီဝကသည် ယခုဘဝမှာသာ ထိုအမျိုးတို့၏ မင်္ဂလာကို ဖျက်ဆီးသည်မဟုတ်သေး၊ ယခင်ဘဝတစ်ခုကလည်း ဖျက်ဆီးခဲ့ဖူးသည်သာဟု မိန့်တော်မူပြီး အတိတ်ကို ဆောင်ယူတော်မူပါသည်။ လွန်ခဲ့ပြီးသော အတိတ်ဘဝတစ်ခုက ယခု သတို့သား မိဘများနှင့် နက္ခတ်ဆရာ အာဇီဝကတို့သည် ဗာရာဏသီပြည်မှာ ဖြစ်ခဲ့ကြဖူးသည်။

တစ်နေ့တွင် ဇနပုဒ်မှ အမျိုးသမီးတစ်ယောက်ကို သားအတွက် ဓေစပ်ကြောင်းလမ်းရက် သတ်မှတ်ပြီး ဆရာဇီဝကကိုပင် သတ်မှတ်ထားသောရက် နက္ခတ်ကောင်း၊ မကောင်း မေးမြန်းရာ ရက်သတ်မှတ်ပြီးမှ လာမေးရမည်လောဟု အမျက်ထွက်ကာ မင်္ဂလာပွဲ ပျက်စေရန်အကြံနှင့်...

နက္ခတ်မကောင်းကြောင်း ဤရက်၌ မင်္ဂလာပွဲပြုလျှင် ကြီးစွာ ပျက်စီးမည်ဟု ဟောကြားလိုက်လေသည်။ အာဇီဝက၏စကားကို ယုံကြည်ကြသော သတို့သားမိဘများသည် မင်္ဂလာနေ့ရက်တွင် သတို့သမီးရှိရာ ဇနပုဒ်သို့ မသွားကြတော့ချ။ မင်္ဂလာအခမ်းအနားမပျက်လိုသော

ယောဂီ (ရွှေပြည်သာ)

သတို့သမီး မိဘများက သမီးဖြစ်သူအား တခြားအမျိုးသားတစ်ယောက်
နှင့် ပေးစားလိုက်ကြလေသည်။

နောက်ရက်မှ ရောက်လာသော သတို့သားမိဘနှင့် သတို့သမီး
မိဘများ ခိုက်ရန်စကားများနေကြသည်ကို တွေ့မြင်ရသောဘုရားလောင်း
ပညာရှိကုန်သည်က...

နက္ခတ် ပဋိမာနေဇ္ဇ၊

အတ္ထောဗာလံ ဥပစ္စဂါ၊

အတ္ထော အတ္ထဿနက္ခတ္တံ၊

ကိံကရိဿန္တိတာရကာ။

နက္ခတ်ကောင်းကို စောင့်မျှော်သော လူမိုက်ကို ကောင်းကျိုးချမ်း
သာများက လွန်မြောက်၍ သွားကြသည်။ ကောင်းသောအလုပ်ကို စလုပ်
သောနေ့သည်ပင် ကောင်းသောနက္ခတ်ဖြစ်၏။ ကောင်းကင်မှာသွားနေ
သော နက္ခတ်ကြယ်တာရာများသည် အဘယ်အကျိုးစီးပွားကိုမှ ပြီးမြောက်
အောင် ဆောင်ရွက်ပေးနိုင်မည်မဟုတ်ဟူ၍ ရွတ်ဆိုလိုက်ပါသည်။

(ဧကနိပါတ်၊ နက္ခတ္တဇာတ်)

ဗုဒ္ဓနှင့်ဗေဒင်

ဘုရားဟောတာထက် ဗေဒင်ကိုယုံကြည်သူတွေ၊ နမန္နာကျမ်းကို
ယုံသူတွေက များပါတယ်။ တစ်နှစ်တစ်ခါထုတ်တဲ့ သင်္ကြန်စာမှာ ဗြဟ္မာ
မင်းကြီးက ဦးခေါင်းပြတ်ကြီးကို နတ်သမီးများ တစ်ယောက်လက်
တစ်ယောက် ကမ်းနေတာ မြင်တယ်မဟုတ်လား၊ မြတ်စွာဘုရားက နတ်
ဗြဟ္မာများ၏ ခန္ဓာကိုယ်သည် ကမ္မဇရပ်တွေချည်းမို့ သေလျှင် မီးတောက်

ယုံပုတ်လို့ ပုံအိမ်ပျားအကြောင်း

သမ္ဗုဒ္ဓ ပျောက်ကွယ်သွားတယ်လို့ ဟောတယ်။ ဗေဒင်က ယခုထိ ခေါင်းပြတ်ကြီး မပုတ်သေးဘူး။

မြန်မာပြည်က ယုံကြည်လက်ခံသမျှ ပုပ်မှာ မဟုတ်ဘူးကွဲ့။

ဗေဒင်က ရက်ရာစာနဲ့ ပြဿဒါးကို ပဓာနထားသကဲ့။ မြတ်စွာ ဘုရားက ကုသိုလ်နဲ့ အကုသိုလ် ပဓာနထားကွဲ့။ ဗေဒင်က မဟာဘုတ် လေးပါးကို ပဓာနထား၍ ထူသကဲ့။ မြတ်စွာဘုရားက သမ္ဗုဒ္ဓိလေးပါး ကို အဓိကထား၍ ထူသကဲ့။

‘ကဲ... မဆန့်ကျင်ပါလား၊ မြတ်စွာဘုရားနဲ့ဆန့်ကျင်တာကို ယုံလျှင် ဘုရား၊ တရား မယုံရာကျတာပေါ့။ မြတ်စွာဘုရားဟောတာ သဗ္ဗေကမ္မသကာသတ္တံ၊ ကမ္မံသတ္တေ ဝိဘဇ္ဇတိတဲ့။ ကဲ... ဘယ်မှာလဲကွဲ့။

နဂါးခံတွင်းကျရင် ပျက်စီးတယ်လို့လည်းမပါ။

မသာကို စုံချရင် တစ်လောင်းနှင့် ကိစ္စမပြီးတတ်ဘူးလို့လည်းမပါ။ အိမ်တိုင်ထူတာ နက္ခတ်မကောင်းရင် ပျက်စီးတတ်တယ်လို့လည်း မပါ။

မင်္ဂလာဆောင်တာ ရက်မရွေးမိလို့ ပျက်စီးရတယ်လို့လည်းမပါ။

ဓမ္မာသောက အင်းဝရာဇာကျလို့ ပျက်စီးရတယ်လို့လည်းမပါ။

သားဦးစနေ မီးလိုမွှေဆိုတာလည်းမပါ။

တနင်္ဂနွေ၊ တနင်္လာ၊ အင်္ဂါဆိုတာတွေဟာ ပညတ်သင်္ကေတတွေပဲ၊ လူကို ကောင်းအောင်၊ ဆိုးအောင် မလုပ်နိုင်ပါဘူး။

ကုသိုလ်ကံကသာ ကောင်းအောင်လုပ်နိုင်၍၊

အကုသိုလ်ကံကသာ မကောင်းအောင်လုပ်နိုင်တယ်။

ဒီတော့ အကုသိုလ်ကံဆိုရင် မြွေဆိုး၊ ကင်းဆိုးကဲ့သို့ ကြောက်လန့်

ကားနှစ်စီးနှင့် အလှူရှင်

တောင်ဥက္ကလာပမြို့တွင် ဘုန်းကြီးကျောင်းများကို တစ်ဝိုင်းနှစ်ဝိုင်း စသည်ဖြင့် သူ့ဝိုင်းနှင့်သူ ဝိုင်းဖွဲ့ပြီး ဆောက်ထားသည်ကို တွေ့ရသည်။ တစ်ဝိုင်းလျှင် ကျောင်းပေါင်းအစိတ် သုံးဆယ်ခန့် ရှိသည်။ တစ်နေ့တွင် အလှူမင်္ဂလာဆောင်များကို စေတနာဖြင့်အိုးခွက်၊ ပန်းကန်များငှားပေး လေ့ရှိသော ကျောင်းတစ်ကျောင်းသို့ ကိုရိုလာနှင့် ပါပလေကာ ကားလေး နှစ်စီး ရှေ့ဆင့်နောက်ဆင့် ဝင်ရောက်လာသည်ကို တွေ့ရသည်။

ပါပလေကာကားမှ လူနှစ်ယောက်က ကားပေါ်မှ မဆင်းဘဲ ကိုရို လာကားပေါ်မှ ကားပိုင်ဖြစ်ဟန်တူသော အသက် ၅၀နီးပါးခန့် ၀၀ခန့်ခန့် လူကြီးတစ်ဦးသာလျှင် ကျောင်းထိုင်ဆရာတော်ကို ဝတ်ဖြည့်လျက်ရှိသည်။ ဝတ်ဖြည့်ပြီးသည်နှင့်...

တပည့်တော် ()ရပ်ကွက်၊ အိမ်အမှတ် ()က ဦးထွန်းမောင်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ပါဘုရား၊ ဒီတိုက်ကို တစ်နေ့ကမှ ဝယ်လိုက်တာပါဘုရား၊ လူသစ်ဆို တော့ ဘုန်းကြီးကျောင်းလည်း အသိအကျွမ်းမရှိသေးတော့ မနက်ဖြန် အိမ်တက်မှာ ဘယ်ကျောင်းဘယ်လိုပင့်ရမယ်ဆိုတာ မသိဘူးဖြစ်နေတုန်း လမ်းထဲက အိမ်တွေက အရှင်ဘုရားကျောင်းကို ညွှန်တာနဲ့ ရောက်လာ တာပါဘုရား'

'ဪ... ကိစ္စမရှိပါဘူး၊ မသိလည်းရပါတယ်၊ ဘုန်းကြီးတို့က လည်း ဒကာ အစိမ်းအကျက် မရွေးပါဘူး၊ ကိုယ်နိုင်တဲ့ အကူအညီက တော့ ပေးလိုက်တာပါပဲ၊ ဒါနဲ့ ဒကာကြီးက ဘာတွေများလိုအပ်ပါသလဲ'

'တပည့်တော်တို့လည်း ပြောင်းစဆိုတော့ ဘာမှ ပါမလာဘူး ဘုရား၊ အိုးတို့၊ ပန်းကန်တို့၊ ကော်စောတို့ကအစ အကုန်ငှားရမှာပဲ ဘုရား'

'ရပါတယ် ဒကာကြီး၊ လိုတာ ယူသွားပါ'

'မနက် အရုဏ်ကပ်မှာပါဘုရား၊ သံဃာငါးပါးလောက် ကြွပေး ပါဘုရား'

'ဖြစ်ပါတယ် ဒကာကြီး၊ က... ဦးပဉ္စင်း ဒကာကြီး လိပ်စာကို ရေးမှတ်ပြီး လိုတာတွေ ထုတ်ပေးလိုက်ပါ'

ထိုအခါကျမှ အသင့်စောင့်နေကြသော ပါပလေကာကားပေါ်မှ လူနှစ်ယောက်က ဝိုင်းဝန်းတင်ပေးကြသဖြင့် အိုး၊ ခွက်၊ ပန်းကန်တို့မှာ ပါပလေကာကားပေါ်တွင် အပြည့်ဖြစ်သွားပါသည်။ ကားထွက်ခါနီးတွင် ထိုဒကာက...

'မနက်ကို တပည့်တော်ကိုယ်တိုင် ငါးနာရီအရောက် လာမင့်ပါ့မယ် ဘုရား' ဟု လျှောက်ထားသွားသေးသည်။ သို့နှင့် သံဃာငါးပါးသာရှိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယျားအကြောင်း

သော ၎င်းကျောင်းမှာ နောက်တစ်နေ့နံနက်တွင် အရုဏ်ဆွမ်းမချက်တော့
ဘဲ သင်္ကန်းလေးများကို အသင့်ရုံပြီး စောင့်နေကြသည်။ သို့သော်ဖိ-
နာရီသာ ထိုးပြီးသွားသည်။ ကားနှစ်စီးနှင့် အလှူရှင်ကား ပေါ်မလာ။

၇-နာရီလောက်ထိုးသောအခါ ဆရာတော်မှာ စိတ်မရှည်နိုင်တော့
ဘဲ ဦးပဉ္စင်းတစ်ပါးအား လိပ်စာအတိုင်း လိုက်ပြီး စုံစမ်းခိုင်းလိုက်သော
အခါမှ လူလိမ်ထိမှန်း သိကြရပါတော့သည်။ ၎င်းရပ်ကွက်တွင် ၎င်းအိမ်
အမှတ်ကား အမှန်တကယ်ပင် ရှိပါသည်။ သို့သော် မည်သူ့ကိုမျှ ရောင်း
ချခြင်းမရှိပါ။ ယခင် အိမ်ရှင်များပင် နေထိုင်လျက် ရှိပါသည်။

မိမိ၏အလိမ်အညာခံရမှုကို သူတစ်ပါးအား ဖွင့်ပြောသူမှာ
အင်မတန်မှ ရှားပါးသည်။ ထို့ကြောင့်လည်း ၎င်းလိမ်နည်းမျိုးဖြင့် မြန်မာ
ပြည်ရှိ ဘုန်းကြီးကျောင်း တော်တော်များများ အလိမ်ခံလိုက်ကြရပါ
သည်။ ထိုနည်းဖြင့် တစ်ပြည်လုံးနီးနီး အလိမ်ခံလိုက်ကြရသောအခါမှ
ဘုန်းတော်ကြီးများသည် ပစ္စည်းများကို အလွယ်တကူ မငှားကြတော့ပါ။

ထိုနည်းဖြင့် မရသောအခါ လူလိမ်တို့က နောက်တစ်နည်းသုံးလာ
ကြပြန်သည်။ ၎င်းနည်းကား...



သောတော်... အသက် ၃၀-ခန့်ရှိ ဒကာတစ်ယောက် သံလမ်းဘက်ကျသော ဘုန်းကြီးကျောင်း ၃-ကျောင်း ကပ်လျက်ရှိနေသည်။ မီးလောင်ပြီးနောက် ခွဲကား တစ်ကျောင်းမှာ မီးထဲပါသွားသဖြင့် ရွှေပြည်သာမြို့သစ်သို့ ရွှေ့ပြောင်းလိုက်ရသည်။ ကျန် ၂-ကျောင်းမှာကား ယခုအချိန်ထိ တည် ရှိနေပါသေးသည်။ ၎င်းရပ်ကွက်ကြီး မီးမလောင်ခင် တစ်ခုသောနေ့...

ဒကာတစ်ယောက် တဏှာပေါက်၍

လှိုင်မြို့နယ် (၅)ရပ်ကွက်၊ ဒိုဘီလိုင်းတွင် မီးမလောင်ခင်က ဘုန်းကြီးကျောင်း ၃-ကျောင်း ကပ်လျက်ရှိနေသည်။ မီးလောင်ပြီးနောက် ခွဲကား တစ်ကျောင်းမှာ မီးထဲပါသွားသဖြင့် ရွှေပြည်သာမြို့သစ်သို့ ရွှေ့ပြောင်းလိုက်ရသည်။ ကျန် ၂-ကျောင်းမှာကား ယခုအချိန်ထိ တည် ရှိနေပါသေးသည်။ ၎င်းရပ်ကွက်ကြီး မီးမလောင်ခင် တစ်ခုသောနေ့...

အသက် ၃၀-ခန့်ရှိ ဒကာတစ်ယောက် သံလမ်းဘက်ကျသော ဘုန်းကြီးကျောင်းတစ်ကျောင်းသို့ ဝင်ရောက်လာသည်။ ကျောင်းထိုင် ဆရာတော်ကို ဦးချပြီးသည်နှင့်...

တပည့်တော် (၅)ရပ်ကွက်၊ သီတာမြိုင်လမ်းကပါဘုရား၊ တပည့် တော်အမေ ရက်လည်အတွက် ဆွမ်းစားလာပင့်တာပါ ဘုရား၊ သက် ပျောက်နဲ့ မြေဆွမ်းကတော့ လမ်းမှာတွေ့ရတဲ့ ဆွမ်းခံကိုယ်တော်တစ်ပါး နဲ့ ပြီးသွားပါတယ်ဘုရား၊ တပည့်တော်တို့ ဆင်းရဲတော့ အိမ်မှာဆွမ်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

လည်း တစ်ခါမှ မကပ်ဖူးပါဘူး ဘုရား၊ အခု ဆွမ်းကပ်တာဟာ ပထမ ဆုံးပါဘုရား၊ ပြီးတော့ တပည့်တော်တို့အိမ်ကလည်း ကျဉ်းတော့ မနက် အာရုဏ်ဆွမ်းကို သုံးပါးပဲ ကြွပေးပါဘုရား'

'ဒီနားမှာ ဘုန်းကြီးကျောင်း သုံးကျောင်းတောင် ရှိတာပဲ၊ ဒကာ က ဘယ်လိုကြောင့် ဒီကျောင်းကို ရွေးလိုက်ရတာလဲ'

'ဪ... ဒါက တပည့်တော် အရှင်ဘုရားကျောင်းနား ရောက်ရင် ပဲ လှူတန်းချင်တဲ့ သဒ္ဓါက ချက်ချင်းကို ပေါက်လာတယ်ဘုရား၊ ဒါနဲ့ ဒီကျောင်းကို ဝင်ပင့်တာပါပဲ ဘုရား'

ဒကာ၏ လျှောက်ထားချက်ကို ဘုန်းကြီးသည် တော်တော်သဘော ကျသွားဟန်ရှိသည်။ ပြုံးပြုံး ပြုံးပြုံးနှင့် ဖြစ်သွားသည်ကို တွေ့ရသည်။ ကျောင်း၂-ကျောင်းကပ်လျက် ရှိနေရာက မိမိကျောင်းကိုမှ သဒ္ဓါပေါက် သည်ဆိုသဖြင့်လည်း တော်တော် သဘောကျသွားဟန်ရှိသည်။

'ဒါနဲ့ အိုးတို့၊ ပန်းကန်ခွက်ယောက်တို့ ငှားဦးမှာလား' ထိုမေးခွန်းကို မေးလိုက်သောအချိန်တွင် ဆရာတော်၏မျက်ဝန်း၌ မသင်္ကာသလိုရှိသော အရိပ်အရောင်ကို သတိထားမိလိုက်ဟန်တူသော ဒကာက...

'တပည့်တော်က ကြီးကြီးကျယ်ကျယ်လည်း မဟုတ်တော့ ပန်းကန် ခွက်ယောက်တော့ မငှားတော့ပါဘူး ဘုရား၊ အိမ်ကရှိတာနဲ့ပဲ သုံးပါးစာ ပန်းကန်ကတော့ လုံလောက်ပါတယ်၊ ဒါပေမဲ့ အချိန်၁၅ လောက်ဆုံတဲ့ ဒန်အိုးတစ်လုံးတော့ ငှားချင်ပါတယ် ဘုရား၊ ခုခေတ်ကလည်း လူလိမ် လူကောက်ကပေါတော့ တစ်ချက်ခုတ်နှစ်ချက်ပြတ်အနေနဲ့ ဒန်အိုးကိုလည်း စိတ်ချရအောင်၊ မနက်ကြွတော့ တပည့်တော် အိမ်ကိုလည်းသိအောင်

သတ္တရင်း (ရွှေပြည်သာ)

သံဃာတစ်ပါးပါ ထည့်ပေးလိုက်ပါဘုရား၊
ဒကာလျှောက်ထားပုံက အကွက်စေ့လှသဖြင့် ဆရာတော်လည်း
ဘာမျှမပြောတော့ဘဲ ဒန်အိုးတစ်လုံး ငှားလိုက်ကာ နောက်က ကိုရင်
တစ်ပါးကိုလည်း ထည့်ပေးလိုက်သည်။ ဒကာက ရှေ့က ဒန်အိုးကိုထမ်း၊
ကိုရင်က နောက်ကလိုက်ဖြင့် ကျောင်းထဲမှ ထွက်သွားကြလေပြီ။
ကျောင်းနှင့် နှစ်လမ်းအကျော်လောက်အရောက် အိမ်တစ်အိမ်ရှေ့
အရောက်တွင် ထိုဒကာက ကိုရင်အား...

ကိုရင် ဒီမှာ ခဏစောင့်ဦးနော်၊ ဒီအိမ်က တပည့်တော်ရဲ့အဒေါ်
အိမ်၊ မနက်ဖြန်ခါ ဆွမ်းကျွေးအတွက် ဝင်ဖိတ်လိုက်ဦးမယ်
ပြောပြောဆိုဆို ထိုအိမ်ထဲသို့ မနက် ၈-နာရီခန့်က ဝင်သွားသည်
မှာ ၉-နာရီထိုးပြီးသည်အထိ ပြန်ထွက်မလာတော့၊ စိတ်မရှည်တော့
သော ကိုရင်က ထိုအိမ်ထဲသို့ဝင်ပြီး စုံစမ်းကြည့်သော်လည်း ထိုအိမ်မှ
လူများကလည်း ဘာမျှမသိကြ။ နောက်ဆုံးတော့ ကိုရင်မှာ ခေါင်းငိုက်
စိုက်ချပြီး ကျောင်းကိုသာ ပြန်ခဲ့ရတော့သည်။

ထိုအဖြစ်ကို မသိရှာသေးသော ကဗျာဝါသနာပါသည့် ကျောင်း
ထိုင်ဆရာတော်က ရုတ်တရက် သူ့ကျောင်းရှေ့ရောက်မှ သဒ္ဓါပေါက်ပြီး
ဆွမ်းစားပင့်သည့် ဒကာအကြောင်းကို တွေးရင်း ဒကာတစ်ဦးတော့
တိုးပြီဟူသော အသိကလေးဖြင့် အောက်ပါကဗျာတိုလေးကို ရေးစပ်လိုက်
လေသည်။ ကဗျာလေးက...

ဒကာတစ်လောက်
သဒ္ဓါပေါက်၍
လာရောက် လှူဒါန်း

ဖေဖာရုံ (ကျွန်ုပ်တို့)

ဤအခန်းဝယ်

ဝမ်းပန်းတသာ

ရှိလှစွာ၏... တဲ့။

အကယ်၍များ ကိုရင် ပြန်ရောက်၍ အလိမ်နည်းသစ်ကို ခံလိုက်ရ မှန်းသိမည်ဆိုလျှင်တော့ ဒကာတစ်ယောက် တဏှာပေါက်၍ ဟူ၍များ ပြောင်းစပ်လေမည်လားမသိ။



[Faded text, likely bleed-through from the reverse side of the page]

(ကောသလ) နှစ်ပတ်စလုံး

အလုပ်အကိုင်များကို မနက်ပိုင်းမှာ သွားပို့ပြီး ညနေပိုင်းမှာ ပြန်ယူကြသည်။ ဆွမ်းအလှူရှင်တို့က ဟင်းကိုတော့ ချက်ပေးလိုက်ပြီး ဆွမ်းအတွက် ကတော့ ဆန်စိမ်းကိုသာ ထည့်ပေးလိုက်သည်။ ကျောင်းရောက်မှ ကိုရင်၊ ကျောင်းသားများက မနက်စောစောထကာ ချက်ပြုတ်ကြရသည်။ မြို့သူ မြို့သားများပီပီ အလုပ်ကိစ္စများကြတော့ တစ်ခါတစ်ရံတော့ ဟင်းချက် ချိန်မရသဖြင့် ဟင်းချက်စရာ အစိမ်းလိုက် ထည့်ပေးလိုက်သည့်အခါ လည်း ရှိသည်။

နှစ်ဦးသဘောတူ အကောင်းကြိုက်ရာမှ

တခြားမြို့သားများတော့မသိ၊ ရွှေပြည်သာမြို့၏ ထုံးစံကတော့ အရက်ဆွမ်းချိုင့်များကို မနက်ပိုင်းမှာ သွားပို့ပြီး ညနေပိုင်းမှာ ပြန်ယူကြသည်။ ဆွမ်းအလှူရှင်တို့က ဟင်းကိုတော့ ချက်ပေးလိုက်ပြီး ဆွမ်းအတွက် ကတော့ ဆန်စိမ်းကိုသာ ထည့်ပေးလိုက်သည်။ ကျောင်းရောက်မှ ကိုရင်၊ ကျောင်းသားများက မနက်စောစောထကာ ချက်ပြုတ်ကြရသည်။ မြို့သူ မြို့သားများပီပီ အလုပ်ကိစ္စများကြတော့ တစ်ခါတစ်ရံတော့ ဟင်းချက် ချိန်မရသဖြင့် ဟင်းချက်စရာ အစိမ်းလိုက် ထည့်ပေးလိုက်သည့်အခါ လည်း ရှိသည်။

ဆွမ်းချိုင့်ကြီးကိုင်ပြီး အိမ်အထိသွားပို့ရသော အလုပ်ကိုတော့ များသောအားဖြင့် ငယ်ရွယ်သော ကျောင်းသား၊ ကိုရင်များသာ လုပ်ကြသည်။ ဤအချက်သည်ပင် လူလိမ်လူညာတို့အတွက် လွယ်လွယ်စား ပေါက်တစ်ခု ဖြစ်သွားခဲ့သည်။ တစ်နေ့ ()ကျောင်းမှ ကိုရင်တစ်ပါး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

နှစ်ထောင်ကျော်ခန့် တန်ဖိုးရှိသော စတီးလေးဆင့်ချိုင့်လေးကို ကိုင်၍ ဆွမ်းချိုင့်အလှူရှင်အိမ်သို့ ထွက်လာသည်။

ဆွမ်းအလှူရှင်ရှိရာ ရပ်ကွက်တွင်းသို့ ရောက်ခါနီးမှာပင် အသက် ၂၅-နှစ်ခန့်ရှိ လူရွယ်တစ်ဦးပေါ်လာကာ...

— ‘ကိုရင်လေး၊ ဒီဆွမ်းချိုင့်က ဦးစိန်မောင်အိမ်ပို့မှာ မဟုတ်လား’
‘ဟုတ်ပါတယ် ဒကာလေး’

‘ကဲ... အဲဒါဆိုရင်လည်း ချိုင့်တပည့်တော် ယူသွားလိုက်မယ်၊ ပေး ပေး၊ တပည့်တော်က ဦးစိန်မောင်သားပဲ’

ကိုရင်လေးကလည်း ယုံယုံကြည်ကြည်ပင် ပေးလိုက်ကာ ကျောင်းသို့ ပြန်ခဲ့လေတော့သည်။ ညနေ ချိုင့်သွားယူမှပင် လူလိမ်ခံရမှန်း သိကြသည်။ ဤနည်းဖြင့် လိမ်လိုက်ကြရာ မြန်မာပြည်ရှိ ဘုန်းကြီးကျောင်းအတော်များများ အထိခံလိုက်ကြရသည်။ နောက်ပိုင်း ထိုလိမ်နည်းကို ဘုန်းကြီးအများစု သိလာ၍ စားပေါက်ကျပ်လာသောအခါ လူလိမ်တို့က လိမ်နည်းအသစ် ထွင်လာကြပြန်၏။



ဖော်မြူလာ နည်းသစ်

ဤလိမ်နည်းသစ်ကို စော်ဘွားကြီးရှိ ရွှေကျင်ကျောင်းမှပထမဆုံး အထိခံလိုက်ရသည်။ ၁၉၉၅-ခုနှစ်၏ တစ်ခုသော ညနေပိုင်းတွင် အသက် ၅၀နီးပါးခန့်ရှိသော ဒကာတစ်ဦး ကျောင်းတွင်းသို့ ဝင်ရောက်ကာ ဆရာတော်ကို ဆွမ်းစားပင့်နေသည်ကို တွေ့ကြရသည်။

‘မနက်ဖြန် မနက် တပည့်တော်တို့အိမ်ကို သံဃာငါးပါး အာရုဏ် ဆွမ်း ဘုဉ်းပေးကြတော်မူပါ ဘုရား’

‘ဒကာကြီးတို့အိမ်က ဘယ်နားမှာပါလိမ့်’

‘အနီးလေးပါ ဘုရား၊ ဒီကျောင်းကနေဆိုရင် နှစ်မှတ်တိုင်သာသာ ပဲ ရှိပါတယ်ဘုရား၊ ကားလမ်းဘေးက ချိုးဝင်လိုက်ရင် သုံးအိမ်ကျော် လောက်က သွပ်မိုးပျဉ်ကာ နှစ်ထပ်အိမ်လေးပါ ဘုရား’

ဆွမ်းစားပင့်တာတော့ မှန်၏။ သို့သော် ဒကာတော် ညွှန်ပြသော အိမ်ကိုလည်း မိမိလည်း တစ်ခါမျှမရောက်ဘူးသောကြောင့် ပစ္စည်းများ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်္ဂါပျက်အကြောင်း

လိမ်ငှားသွားမှာကိုတော့ ဆရာတော်ခမျာ အတော် စိုးရိမ်နေရှာသည်။

‘ဆွမ်းက ဘာအတွက် ရည်စူးကျွေးတယ် မသိဘူး’

‘ဪ... တပည့်တော် အမေအတွက်ပါ ဘုရား၊ အသက်၈၀-
ပြည့်နေပါပြီ ဘုရား၊ အဲဒါ ကျန်းမာရေးလည်း သိပ်မကောင်းတာနဲ့
မွေးနေ့ သဘောမျိုးနဲ့ ကျွေးတာပါ ဘုရား’

ပစ္စည်းငှားမယ့်ဆီ စကားရောက်သွားမှာစိုးသဖြင့် ဆရာတော်
ကလည်း စကားမစ၊ ဒကာကလည်း ပစ္စည်းကိစ္စ ဘာမျှ မပြောသဖြင့်
ဆရာတော်မှာ အတန်ငယ် စိတ်အေးသွားရသည်။ ဒကာမှာ စကားပြော
ကောင်းလှသောကြောင့် တစ်ခဏအတွင်းမှာ ဆရာရင်း၊ ဒကာရင်းကဲ့သို့
ဖြစ်သွားကြသည်။

အတော်လေးကြာအောင် စကားပြောပြီးသည်နှင့်...

‘တပည့်တော်ကို ခွင့်ပြုပါဦးဘုရား၊ မနက်အတွက် စီစဉ်စရာလေး
တွေ ကြိုပြီး စီစဉ်ရအောင်ပါ။ နီးနီးနားနားဆိုတော့ မနက်ကျ ဘာမှ
ငှားမနေတော့ဘူး ဘုရား၊ ဆရာတော်တို့ လမ်းလျှောက်ရင်း ကြွကြွတာ
ပေါ့၊ တပည့်တော်ကိုယ်တိုင် လာပင့်ပါ့မယ် ဘုရား’ဟု လျှောက်ထား
ကာ ပြန်သွားလေတော့သည်။ ကျောင်းမှ ဘာပစ္စည်းမှ ငှားရမ်းတာ
မတွေ့သောကြောင့် ဆရာတော်လည်း သံသယကင်းသွားလေသည်။
နောက်တစ်နေ့ မနက် ၅-နာရီခန့်မှာပင် မနေ့က ဒကာတော်ကိုယ်တိုင်
ရိုရိုသေသေ အချိန်ကို လေးစားစွာဖြင့် လာပင့်တာ တွေ့ရသောကြောင့်
ဒကာအပေါ် သံသယဝင်မိသည်ကိုပင် ဆရာတော်မှာ အားနာသွားမိရှာ
သည်။

တစ်ဆက်တည်းမှာပင် စာရေးဆရာကြီး ဦးရန်အောင်၏ ရှာမှ

ဇယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

ရှားသော အယူအဆတစ်ခုကိုလည်း ချက်ချင်း သတိရလိုက်မိသည်။ ဆရာကြီးသည် သဘောထားကြီးပြီး လက်လွယ်လွန်းသောကြောင့် စာရေး ဆရာအသစ်အဟောင်း မှန်သမျှ ဆရာကြီးထံမှ ပိုက်ဆံမချေးဘူးသူ အလွန်ရှားဟူ၏။

လောကတွင် လူမိုက်နှင့် လူလိမ္မာ လူမိုက်ကများသည်ဟူသော ဗုဒ္ဓဒေသနာအတိုင်း အကြွေးပြန်ဆပ်သူနှင့် မဆပ်သူ နှစ်ဦးတို့တွင် မဆပ် သူက များပြားလေသည်။ သို့သော် သနားတတ်သည့် ဆရာကြီးမှာ စိတ်နာသည်မရှိ။ အခက်အခဲရှိ၍ ပိုက်ဆံလာချေးလျှင် ပေးလိုက်သည် သာ။

တစ်ခါတစ်ရံ မိမိမှာ အသင့်ရှိမနေလျှင် သူတစ်ပါးထံမှပင် တာဝန် ခံပြီး ချေးပေးလိုက်သေးသည်။ ထိုသို့သောအခါမျိုးတွင် နေအေးလို တပည့်မျိုးဖြစ်နေသောကြောင့် မရှိမဲ့ရှိမဲ့ကြားထဲက အကြွေးစိုက်ဆပ် ပေးရသည်မှာလည်း ဘယ်တော့မျှ အမျှင်မပြတ်။ ထို့ကြောင့်ပင် တပည့် တစ်ဦးက...

‘ဆရာကြီး... ကိုယ့်အပေါ်မှာ ဒီလောက် လိမ်ညာနေကြတာကို သိရုံသားနဲ့ ဆရာကြီးက အမှတ်သည်းခြေမရှိ ဘာကြောင့် ခဏခဏ သူများကို ပိုက်ဆံချေးနေရတာလဲ’

ထိုအခါ ဆရာကြီးက...

‘အေး... လူလိမ်တစ်ယောက်ကို အကြောင်းပြုပြီး ဘယ်သူ့ကိုမှ မကူညီတော့ဘူးဆိုရင် တကယ်ဒုက္ခရောက်ပြီး အကူအညီလာတောင်းတဲ့ သူတော်ကောင်းတွေ စိတ်ဆင်းရဲသွားမှာစိုးလို့ပါ’ ဟူ၏။ အတ္တဆန်ပြီး လောဘကို ကိုးကွယ်နေသော ယခုလို ခေတ်အခါကြီးတွင် ပရဟိတဆန်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုပျားအကြောင်း

ပြီး ဗြဟ္မစိုရ်တရား လက်ကိုင်ထားသော ဆရာကြီး၏အထက်ပါစကား လေးသည်ကား ကမ္ဘာတည်သရွေ့ သူတော်ကောင်းတို့၏ နှလုံးအိမ်တွင် ကိန်းခိုနိုင်ပါစေသတည်း။

‘ဟော... ဆရာတော်တို့ ဆွမ်းချိုင့်မယူခဲ့ဘူး ထင်တယ်’
ဆရာတော်သည် မည်မျှ အတွေးလွန်နေသည်မသိ။ ကျောင်းနှင့် တစ်မှတ်တိုင်သာသာခန့်ရောက်မှပင် ဆွမ်းစားပင့်သော ဒကာတော်၏ စကားကြောင့် အတွေးစမှာ ပြတ်သွားခဲ့ရသည်။

‘ဆွမ်းချိုင့်က ဘာအတွက်လဲ ဒကာကြီး၊ ရက်လည်တို့၊ လပတ် တို့မှ မဟုတ်ဘဲ ဆွမ်းချိုင့်လိုသေးလို့လား’

‘ဪ... တပည့်တော် အမေက ကျောင်းမှာကျန်နေခဲ့တဲ့ ကိုရင် တွေကိုပါ ဘုဉ်းပေးစေချင်လို့တဲ့ဘုရား၊ တပည့်တော်ကို သေချာမှာလိုက် တာ၊ ကိုရင်တွေဆိုတာ ကောင်းကောင်းမွန်မွန် ဘုဉ်းပေးရခဲတယ်၊ ဆွမ်း စား ကွမ်းစားဆိုရင် ကိုရင်တွေကို ပင့်တာမဟုတ်ဘူး၊ ရဟန်းတွေကိုသာ ပင့်ကြတာ၊ အဲဒီလို ပြောဖူးတယ် ဘုရား၊ ကဲပါ... ဆရာတော်တို့ ဒီနားက ခဏစောင့်ပါ၊ တပည့်တော်ပဲ ပြေးယူလိုက်ပါမယ်’

ပြောပြောဆိုဆိုနှင့် ဒကာတော်က လျင်မြန်သွက်လက်စွာ ကျောင်း ဘက်သို့ လျှောက်သွားသည်ကို ဆရာတော်အပါအဝင် သံဃာငါးပါးမှာ လမ်းမှာပင် ရပ်စောင့်နေကြရသည်။

နာရီဝက်ခန့်ကြာသည်အထိ ဒကာတော် ပေါ်မလာသောအခါ ဆရာတော်က စိုးရိမ်ပူပန်စ ပြုလာသည်။ စိုးရိမ်သည့်အတိုင်း မဖြစ်ပါ စေနှင့်ဟု ဆုတောင်း၍ ကျောင်းသို့ ခပ်သုတ်သုတ်ပင် ပြန်ကြည့်ကြရ တော့သည်။ ကျောင်းရောက်သည်နှင့်...

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

‘ဟေ့... ကိုရင်တွေ၊ ဒကာတစ်ယောက် ချိုင့်လာယူသေးလား’
‘ယူပါတယ် ဘုရား၊ ဆရာတော်တို့ကို ပင့်သွားတဲ့ ဒကာကြီးပဲ၊
ဆရာတော်က ချိုင့်ကြီးကြီးတစ်လုံး ပေးလိုက်ပါဆိုလို့ အကြီးဆုံးစတီးလ်
ချိုင့်ကြီး ပေးလိုက်ပါတယ် ဘုရား’

‘အေး... အဲဒါ မင်းတို့၊ ငါတို့ကို လိမ်သွားတာပဲကွ၊ အင်း...
ဆရာကြီးဦးရန်အောင်လို စိတ်ထားမျိုး ထားနိုင်ဖို့ဆိုတာ တော်တော်တော့
မလွယ်ပါလား’ ဆရာတော် နောက်ဆုံးပြောလိုက်သော စကားတစ်ခွန်း
ကို သံဃာတော်များမှာ သဘောမပေါက်ကြသဖြင့် ဆရာတော်ကိုသာ
ငေးစိုက်ကြည့်နေကြလေသည်။

ခေတ်ကြီးသည် နာရီနှင့်အမျှ တိုးတက်လျက်ရှိသလို အချောင်
သမားတို့၏ လိမ်နည်း၊ ညာနည်းများသည်လည်း ခေတ်ကြီးနှင့် အမီလိုက်
လျက်ရှိသည်။ ယခင်က လိမ်နည်းတစ်ခုကို လအတန်ကြာသည်အထိ
အသုံးပြုပြီး အလိမ်ခံရသူများ သတိထားမိကြသောအခါမှပင် နောက်တစ်
မျိုး ပြောင်းလဲသုံးကြသည်။

ယခုတော့ ထိုသို့မဟုတ်တော့။ လိမ်နည်းအသစ်များကို တစ်ဖြိုင်
တည်း အသုံးပြုလျက်ပင် ရှိကြသည်။ ယခုလည်း ကြည့်ပါ။



နှစ်ဦးလုံးကို အထူးနှုန်းဖြင့်

ဦးဂန္ဓမာ၏ကျောင်းတွင် ကျောင်းသားမရှိပါ။ ထို့ကြောင့်လည်း (၂၆-၈-၉၇)ယနေ့မနက် ကြွရောက်သော ရက်လည်ဆွမ်းသွတ်ကို ရဟန်းများကိုယ်တိုင် ချိုင့်ကိုင်ပြီး ကြွခဲ့ရသည်။ ငါးထောင်တန် စတီးချိုင့် အကြီးစားကြီး ဖြစ်သောကြောင့် ရဟန်းတော်များကိုယ်တိုင် ကိုင်လာသည်က စိတ်ချရပါသည်။ မလည်မဝယ် ကျောင်းသားကိုင်ခိုင်းလျှင် လူလိမ်လက်ထဲ ပါသွားနိုင်သည် မဟုတ်ပါလား။

ရက်လည်ဆွမ်းကပ်မည့် အိမ်မှာ ယခင် နှစ်ကြိမ်ခန့်ကလည်း ဆွမ်းစားကြဖူးသောကြောင့် အရင်းနှီးကြီးမဟုတ်သော်လည်း အသိဒကာ တစ်ဦးအဖြစ် သတ်မှတ်နိုင်ပါပြီ။ ထို့ကြောင့်လည်း အပင့်မလွှတ်ခိုင်းတော့ဘဲ ရဟန်းတော်ငါးပါး တစ်ခါတည်း ကြွခဲ့ကြခြင်းဖြစ်သည်။ ရွှေပြည်သာမြို့သစ်တွင် ဘုန်းကြီးကျောင်းများကို စုချထားသောနေရာ သုံးနေရာရှိသည်။

ဇေယျာရင် (ရွှေပြည်သာ)

အမှတ်(၆)ရပ်ကွက်၊ (ည)ရပ်ကွက်နှင့် (ထ)ရပ်ကွက်တို့ဖြစ်သည်။
ထိုတွင် (ည)နှင့် (ထ)မှာ ကျောင်းအရေအတွက် နှစ်ဆယ်ကျော်စီသာ
ရှိသော်လည်း ပထမဆုံးချထားပေးသော (၆)ရပ်ကွက်တွင်ကား ကျောင်း
ပေါင်း ၆၀-ကျော် ရှိသည်။ သို့အတွက် (၅)ရပ်ကွက်နှင့် (၇)ရပ်ကွက်
မှာ ဘုန်းကြီးကျောင်းများနှင့် နီးနီးနားနားရှိသဖြင့် တော်ပါသေးသည်။

(ဈ)ရပ်ကွက်၊ (၉)ရပ်ကွက်တို့မှာကား ဘုန်းကြီးကျောင်းများနှင့်
ဝေးလှသဖြင့် ဆွမ်းတစ်ခါကပ်လျှင် ဆွမ်းဖိုးထက် ဘုန်းကြီးပင့်ရသော
စရိတ်က ပိုကုန်သည်ဟုပင် ပြောရမလို ဖြစ်နေသည်။ (၇)ရပ်ကွက်မှာ
တော့ ခြောက်ရပ်ကွက်နှင့်ကပ်လျက် ဖြစ်သောကြောင့် ဘုန်းကြီးပင့်ရ
လွယ်ကူပါသည်။ ဦးဂန္ဓမာတို့ သံဃာတော်များ (၇)ရပ်ကွက်ထဲသို့ ချိုး
အဝင်လိုက်မှာပင် အသင့်စောင့်ကြိုနေသော အသက်၂၀-အရွယ် ကောင်
လေးတစ်ယောက်ကို တွေ့လိုက်ရသည်။ ထိုဒကာလေးက...

‘ဆရာတော် လမ်းမှားမှာစိုးလို့ တပည့်တော် ထွက်ကြိုနေတာ
ဘုရား၊ တပည့်တော်ကို ချိုင့်ပေးပါဘုရား၊ တပည့်တော် ဆွဲခဲ့ပါ့မယ်’

‘ဪ... အေး.. အေး.. ကျေးဇူးပါကွာ၊ ကဲ... ဦးပဉ္စင်
ဒကာလေးကို ချိုင့်ပေးလိုက်’

ချိုင့်ရသည်နှင့် ထိုဒကာလေးကပင် ဦးဆောင်ပြီး ဆွမ်းကပ်မည့်
အိမ်ထဲ ဝင်သွားကြသည်။ ဆွမ်းဒကာများကလည်း ဝမ်းပန်းတသာ ကြိုဆို
ကြသည်။ အရဏ်ဆွမ်းဖြစ်သည့်အတွက် ဆွမ်းကို အရင်ကပ်ကြသည်။
ဘုန်းကြီးများ ဆွမ်းစားပြီး အချိပွဲဘုဦးပေးနေစဉ်မှာပင် ဆွမ်းဒကာကြီး
က...

‘ကဲ့ဟေ့... ဆရာတော်တွေ အချိပွဲ ဘုဦးပေးနေတုန်း ပါလာတဲ့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

ကျောင်းသားကို တစ်ခါတည်းပြင်ကျွေးကြ'

ဆွမ်းဒကာကြီး၏ စကားကြောင့် ဦးဂန္ဓမာသည် ယောင်ချာချာ
ဖြစ်သွားကာ...

'ဒကာကြီး ဘုန်းကြီးတို့မှာ ကျောင်းသားမပါဘူး'

'ဟင်... ဒါဖြင့် စောစောက ချိုင့်ဆွဲဝင်လာတာ ဆရာတော်တို့
ခေါ်လာတဲ့ ကျောင်းသားမဟုတ်ဘူးလား'

'ဟာ... ဘယ်က ဟုတ်ရမှာလဲ၊ ဒကာကြီးတို့အိမ်က အိမ်သား
တစ်ယောက် မဟုတ်ဘူးလား၊ ဘုန်းကြီးတို့ လမ်းမှားမှားစိုးလို့ဆိုပြီး လမ်း
က ထွက်စောင့်နေတာလို့ ပြောတာပဲ'

'ဒုက္ခပဲ တပည့်တော်တို့လည်း ဆရာတော်တို့ အိမ်ကို နှစ်ခါတောင်
ကြွပြီးသားဆိုတော့ သိလောက်ပါတယ်ဆိုပြီး ဘယ်သူမှ မလွှတ်ဘူး
ဘုရား၊ ဟေ့... ဟေ့.. စောစောက ချိုင့်ကိုင်ဝင်လာတဲ့ကောင်ကို ရှာ
ကြစမ်း၊ ဒါ ဆရာရော၊ ဒကာရော နှစ်ဦးလုံးကို ပိပိရိရိ လိမ်သွားတာပဲ'

ထိုအခါကျမှ အိမ်သားများရော၊ ဧည့်သည်များ ရပ်ကွက်အတွင်း
ပြေးလွှားရှာဖွေပါသော်လည်း အစအနပင် မတွေ့တော့ချေ။ ဆရာနှင့်
ဒကာ နှစ်ဦးစလုံးကို အထူးနှုန်းဖြင့် လိမ်ညာသွားခြင်းပါတကား။



ပါရမီရှင်တို့အမြင်

ဘာသာရေးဆောင်းပါးများကို ရေးနေကျဖြစ်သောကြောင့် စိတ်ထဲတွင် ပေါ်လာသော ဘာသာရေးအသိတစ်ခု မျှဝေပါရစေ။ ဘုရားအလောင်းတော် မဟာဇနကမင်းကြီးသည် သရက်ပင်နှစ်ပင်ကိုကြည့်ပြီး တောထွက်ခွဲဖူးသည်။ စာရေးသူတို့အပါအဝင် များစွာသော သူတို့မှာ တော့ သရက်ပင်ပေါင်းများစွာကို မကြာမဇာ တွေ့မြင်နေရသော်လည်း ဘာသံဝေဂမှ မရခဲ့ကြ။

အဘယ်ကြောင့်နည်း။ မြင်ပုံခြင်းမတူသောကြောင့်ဟု ဆိုကြရပါလိမ့်မည်။ မဟာဇနကမင်းကြီး မြင်ပုံကို ရှုပါ။ ဥယျာဉ်တွင်း ဆင်ဖြင့် လှည့်လည်ရင်းဖြင့် တစ်နေရာအရောက် အသီးများပြုတ်သိပ်စွာ သီးနေသော သရက်ပင်တစ်ပင်နှင့် လုံးဝအသီးမရှိသော သရက်ပင်တစ်ပင်တို့ကို တွေ့ရသည်။ သီးနေသော သရက်သီးများမှာ လှပပြီး ထွားကျိုင်းလှသော

ယုံမှတ်လို ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

ကြောင့် ကိုယ်တော်တိုင်ခူးပြီး ပွဲတော်တည်လိုက်ရာ အလွန် ချိုမြိန်လှ ကြောင်းကို တွေ့ရသည်။

ထို့ကြောင့် နောက်တစ်နေ့များတွင်လည်း နေ့စဉ် ပွဲတော်တည်မည် ဟု စိတ်ကူး၍ ထိုနေရာမှ ထွက်လာခဲ့သည်။ အပြန်ခရီးတွင် ၎င်းသရက် ပင်နှစ်ပင်နားရောက်သောအခါ မထင်မှတ်သော ဖြစ်ပျက်မှုများကို မဟာ ဇနကမင်းကြီး တွေ့လိုက်ရသည်။ နေ့စဉ်ပွဲတော်တည်မည်ဟု မှန်း လာခဲ့သော သရက်ပင်မှာ အကိုင်းတွေ ကျိုးပဲ့၍ သေကျေပျက်စီးနေသည် ကိုတွေ့ကြရသည်။

သို့အတွက် ဥယျာဉ်မှူးကို ချက်ချင်း ခေါ်မေးမိသည်။

‘မောင်မင်း ဒီသရက်ပင်ဟာ ဘာကြောင့် သေကျေပျက်စီးသွား ရသလဲ’

‘မှန်လှပါ၊ ဘုရင်မင်းတရားကြီး ပွဲတော်တည်ပြီးတဲ့ အပင်က အသီးကို နန်းတွင်းသူ၊ နန်းတွင်းသားများအားလုံး စားပိုင်ခွင့်ရှိကြပါတယ်၊ ယခု မနက် အရှင်မင်းကြီး ဒီသရက်ပင်က အသီးတစ်လုံးကို ပွဲတော် တည်ပြီးသွားတဲ့ အတွက် နန်းတွင်းသူ၊ နန်းတွင်းသားများက သရက်သီး များကို အပင်ပေါ် တက်ခုခံကြ၊ ရိုက်ချကြ၊ ပစ်ချကြနဲ့ ထင်သလို ခူးကြတဲ့အတွက် သရက်ပင်ကြီး သေကျေပျက်စီးရခြင်း ဖြစ်ကြောင်းပါ ဘုရား’

‘ဒါနဲ့ ဒီဘက်က သရက်ပင်ကရော ဘာကြောင့်မပျက်စီးရသလဲ’

‘မှန်ပါ၊ အဲဒီ သရက်ပင်ကတော့ အသီးတစ်လုံးမှ မသီးတဲ့အတွက် ဘယ်သူကမှ ဖျက်ဆီးခြင်း မရှိကြောင်းပါ ဘုရား’

‘အင်း... အသီးသီးတဲ့ သရက်ပင်ဟာ အသီးကြောင့် လူအများ

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ရဲ့ ဖျက်ဆီးခြင်းခံရသလို၊ ဥစ္စာစည်းစိမ်ပေါများတဲ့ ငါတို့လို ရှင်ဘုရင်များဟာလည်း ဥစ္စာစည်းစိမ်ကြောင့် သူတစ်ပါးရဲ့ သတ်ဖြတ်ညှဉ်းဆဲခြင်းကို ခံကြရတာပါလား။ အသီးမသီးတဲ့ သရက်ပင်ကတော့ အသီးမရှိတဲ့အတွက် ဘယ်သူကမှ မဖျက်ဆီးသလို ဥစ္စာစည်းစိမ်မရှိကြတဲ့ ရသေ့၊ ရဟန်းတွေကိုလည်းပဲ ဥစ္စာစည်းစိမ်မရှိတဲ့အတွက်ပင် ဘယ်သူကမှ မဖျက်ဆီးတာပါလား။

အထက်ပါအမြင်ကို ရရှိပြီးသည်နှင့် မဟာဇနကမင်းကြီးသည် မင်းစည်းစိမ်ကို သားတော်ကြီးအား လွှဲအပ်ကာ တောထွက်တော်မူခဲ့ပါသည်။ ရွှေဘိုခရိုင်၊ ဒီပဲရင်းမြို့နယ်၊ ကျန်းရင်းရွာကျောင်းဘုန်းကြီးဦးဝါယမသည်လည်း ပါရမီရှင်တို့၏ စိတ်ထားဖြင့် အဆိုးထဲမှ အကောင်းကို မြင်အောင် ကြည့်ခဲ့ဖူးသည်။ တစ်ရက်တွင် ညသန်းခေါင်အချိန်ကြီး၌ ဆရာတော်၏ ကျောင်းကို အနုကြမ်း ဝင်အစီးခံရသည်။

ဓားပြတို့၏ ပစ်မှတ်က ဘုရားခန်းအတွင်းမှ အချို့ အဖိုးတန်ရတနာနှင့် ရွှေငွေများ၊ ကျောင်းပေါ်တွင်လည်း ကိုရင်၊ ကျောင်းသားတစ်ဦးမျှ မရှိသောကြောင့် လွယ်လွယ်ကူကူပင် ဆရာတော်ကို လက်ပြန်ကြီးတုတ်ကာ ဘုရားခန်းအတွင်းမှ ရတနာများကို ရသမျှ သိမ်းကျူး၍ ယူငင်ထုပ်ပိုးနေကြသည်။

ထိုအချိန်မှာပင် စည်းထားသော ဓားပြတစ်ယောက်၏ မျက်နှာမှ အဝတ်စမှာ ပြေကျသွားသဖြင့် ရွာသားတစ်ယောက်ဖြစ်နေကြောင်း ဆရာတော်မှာ သိသွားခဲ့ရသည်။ ထိုကဲ့သို့ သိသွားခြင်းသည်ပင် ဆရာတော်အတွက် ကံဆိုးမိုးမှောင်ကျဖို့ ဖြစ်လာခဲ့သည်။ အဘယ်ကြောင့်ဆိုသော် ဓားပြများမှာ မူလက ပစ္စည်းယူရန်သာ ဖြစ်သော်လည်း မိမိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တို့အတွင်း လူတစ်ယောက်ကို ဆရာတော်က မထင်မှတ်ဘဲ သိသွားသော ကြောင့် ဆရာတော်ကို သတ်ပစ်ခဲ့ဖို့ ဆုံးဖြတ်ချက်ချလိုက်ကြသည်။

လောဘော အတ္တံ နဇာ နာတိ အားကြီးသော လိုချင်လောဘ တစ်ခု စွဲကပ်လာလျှင် အကျိုးအကြောင်း၊ အဆိုးအကောင်းကို ခွဲခြား ဝေဖန်နိုင်စွမ်းမရှိတော့ဟူသော ဗုဒ္ဓဒေသနာအတိုင်း ဓားပြများမှာ ဘာမျှ ခွဲခြားဝေဖန်နိုင်ခြင်း မရှိတော့ဘဲ ဆရာတော်ကို ခေါင်းဖြတ်သတ်ရန် အတွက် ကျောင်းနောက် လျှိုကြီးထဲသို့ ဆွဲခေါ်လာခဲ့ကြတော့သည်။ သတ်မည့် နေရာရောက်သည်နှင့် ဆရာတော်က...

ဒကာတို့ ပြုသူအသစ်၊ ဖြစ်သူအဟောင်းဆိုတဲ့ စကားအတိုင်း ဘုန်းကြီး အေးအေးပဲ အသတ်ခံပါ့မယ်၊ ဒါပေမဲ့ ဘုရားသားတော်ပီပီ မသေခင်လေးမှာ ဘုရားကို ခေတ္တလောက် ရှိခိုးခွင့်ပြုပါ'ဟု တောင်းပန် ရာ ဓားပြတို့က ခွင့်ပြုသဖြင့် လက်ပြန်ကြိုးတုတ်လျက်ပင်...

ဗုဒ္ဓံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ
ဓမ္မံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ
သံဃံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ

ဒုတိယမ္ပိ ဗုဒ္ဓံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ
ဒုတိယမ္ပိ ဓမ္မံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ
ဒုတိယမ္ပိ သံဃံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ

တတိယမ္ပိ ဗုဒ္ဓံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ
တတိယမ္ပိ ဓမ္မံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ

ဖေဖာရီ (ရွှေပြည်သာ)

တတိယမို့ သံဃံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ

ကိုးခေါက်တိတိ ရှိခိုးအပြီးမှာပင် မိုးမှောင်ကြီးများ ချက်ချင်းကျ လာပြီး ဘာမျှ မမြင်ကြရတော့ပေ။ ထိုခဏမှာပင် မိုးကြီးများလည်း ပစ်သဖြင့် ဓားပြများမှာ ကျောင်းမှ ပစ္စည်းများကိုသာမက မိမိတို့၏ လက်နက်များကိုပင် မယူနိုင်တော့ဘဲ ကြောက်လန့်တကြား ထွက်ပြေး ပါတော့သည်။

အံ့ဩစရာကောင်းသည်မှာ ထိုအချိန်အတွင်းမှာပင် ဦးဝါယမ၏ လက်တွင် တုပ်ထားသော ကြိုးများမှာ အလိုလို ပြေကျသွားခြင်းပင်။ ထိုအမှုကိစ္စဖြစ်အပြီးမှာပင် ဦးဝါယမတစ်ယောက် ကြီးမားသော သံဝေဂ တစ်ခုကို ရသွားခဲ့သည်။ ဪ... ဒီဥစ္စာရတနာတွေရှိလို့သာ ငါ ဓားပြအတိုက်ခံရတာပါလား၊ ဓားပြတို့၏ အပြစ်မဟုတ်၊ ဥစ္စာရတနာတွေ ထိန်းသိမ်းစောင့်ရှောက်ထားသော ငါ့ရဲ့ အပြစ်သာပါတကား။

ထိုကဲ့သို့သော ပါရမီရှင်တို့၏ အမြင်ဖြင့် နောက်တစ်နေ့မှာပင် ကျောင်းကို ကိုယ်တော်တစ်ပါးအား အပ်၍ အပြီးအပိုင် တစ်ခါတည်း တောထွက်တော်မူခဲ့ပါသည်။ ဤနေရာ၌ စာရှုသူအချို့က ဆိုကြပါမည်။ သူတို့တစ်တွေက ပါရမီရှင်တွေကိုး။ စွန့်လွှတ်နိုင်မှာပေါ့၊ တို့တစ်တွေ မှာက ပါရမီမှမရှိသေးဘဲဟု ဖြေပါမည်။ ထို့ကြောင့်လည်း ပညာရှင်တို့ က တစ်စတစ်စ စွန့်ပစ်မှသာလျှင်၊ ဘဝနောက်နောင်၊ ဆက်တိုင်းကောင်း ၏ ဟူ၍ ဆိုဆုံးမတော်မူခဲ့ကြပါသည်။ ပါရမီရှင်များဖြစ်အောင် ကြိုးစား အားထုတ်နိုင်ကြပါစေသော်။

လောကီမှုကို၊ အောင်စေလို၊ ကံကို မချရ၊
ကံကိုချလျှင်၊ ဝဋ်ထဲတွင်၊ ပူပင် ဆင်းရဲရ၊

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

နိဗ္ဗာန်ရွှေပြည်၊ ရောက်ခဲ့သည်၊ ပါရမီ မချရ၊
ပါရမီချလျှင်၊ ဝဋ်ထဲတွင်၊ ပူပင် ဆင်းရဲရ။

(မဟာစည်ဆရာတော်)

လူနတ်ချမ်းသာကိုတော့ လိုချင်ရှာ၊
ဒါနမူတော့ နည်းလိုက်တာ၊
လွဲပေါ့သံသရာ။

သက်ရှည်ကျန်းမာခြင်းကိုတော့ လိုချင်ရှာ၊
သီလမူတော့ နည်းလိုက်တာ၊
လွဲပေါ့သံသရာ။

နိဗ္ဗာန်ချမ်းသာကိုတော့ လိုချင်ရှာ၊
ဘာဝနာမူတော့ နည်းလိုက်တာ၊
လွဲပေါ့သံသရာ။

(ဆေးဝင်္ကပါဆရာတော်)



ကျောက်ခဲတစ်လုံးနှင့် သင်္ကန်းတစ်စုံ

ကမာရွတ် ကြံခင်းစာသင်တိုက်တွင် စာရေးသူ စာချဘုန်းကြီးဘဝက ဖြစ်ခဲ့သော ဖြစ်ရပ်တစ်ခုပင်။ ၁၉၉၂-ခုနှစ်လောက်ကပင်။ တစ်နေ့ မန္တလေးကို ကိစ္စတစ်ခုဖြင့် သွားရန်ကြိုလာသည်။ ရန်ကုန်ဘူတာကြီးသို့ ညနေငါးနာရီ ရထားစီးရန် ထွက်သောအခါ ကိုရင်နှစ်ပါး ပစ္စည်းသယ်ပေးရင်း လိုက်ပို့ကြသည်။ တစ်ပါးက ကြံခင်းဘက်က အသက် ၁၈-နှစ်ခန့်ရှိသည်။

မန္တလေးတွင် တစ်ပတ်ခန့်နေပြီး ကျောင်းသို့ ပြန်ရောက်သော နေ့မှာပင် လိုက်ပို့သော ကိုရင်နှစ်ပါးအနက် ကြံခင်းဘက်က ကိုရင်က ပစ္စည်းလေးတစ်ခု ကိုင်လာပြီး စာရေးသူအခန်းထဲ လူအခြေအနေကြည့်ဝင်လာသည်။ စာရေးသူက....

‘ဟ... ကဝိသာရ၊ မင်းက ခိုးကြောင်ခိုးဝှက်နဲ့ အခန်းထဲဝင်လာလိုက်တာ၊ ဘာထူးဆန်းတာများ ပြချင်လို့လဲ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယုများအကြောင်း

‘ထူးဆန်းတာတော့ အမှန်ပဲဘုရား၊ ဘာထူးဆန်းမှန်းတော့ မသိ
သေးဘူး၊ အဲဒါ ဆရာတော်ကို ပြရအောင် ယူလာတာပါ။’

ပြောပြောဆိုဆို သူ့လက်ထဲတွင် ကိုင်ထားသော ပစ္စည်းကို စာရေး
သူလက်ထဲ ထည့်ပေးလိုက်သည်။ သေချာကိုင်ကြည့်လိုက်သောအခါ
လက်သီးဆုပ်ခန့်ရှိ ကျောက်ခဲတစ်လုံးကို တိပ်တို့ဖြင့် အထပ်ထပ်
ပတ်ထားသည်ကို တွေ့ရသည်။

‘ဒါ မင်းက ဘယ်ကရတာလဲ’

‘ဆရာတော်ကို ဘူတာကြီးလိုက်ပို့တဲ့နေ့တုန်းက ဘူတာကြီးထဲ
မှာတွေ့တဲ့ ဒကာတစ်ယောက်က တပည့်တော်ကို အအေးကပ်ပြီး အဲဒီ
ပစ္စည်းကို ခဏသိမ်းပေးထားပါ။ ဖွင့်လည်းမကြည့်ပါနဲ့၊ သူ့တည်းခို
ခန်းမှာတော့ စိတ်မချရလို့လို့ ပြောပါတယ်’

‘ခုမှ တွေ့ရတဲ့လူတစ်ယောက်ကို ဘယ်လိုလူကမှ အဖိုးတန်ပစ္စည်း
မအပ်နိုင်ပါဘူး၊ မင်းဆီကပစ္စည်း၊ သို့မဟုတ် ငွေတစ်ခုခုကို လိမ်ချင်
လို့ ဒီလမ်းဘေးက ကျောက်ခဲကို အယုံသွင်းပြီး အပ်လိုက်တာ ဖြစ်ရ
မယ်၊ ကဲ ပိုပြီး တိတိကျကျပြောနိုင်အောင် မင်းကို မေးကြည့်ရမယ်၊
ကဲ ပြောစမ်း မင်းဆီက ဘာယူသွားသေးလဲ’

‘အဲ... ဟို အဖိုးတန်တော့ ဘာမှ ယူမသွားပါဘူး၊ သူ့မှာ ရုတ်
တရက် ငွေအခက်အခဲတွေ့နေလို့ တပည့်တော်ဆီက တက်ထရွန်သင်္ကန်း
အသစ်တစ်ခုတော့ ခဏယူသွားပါတယ်၊ ဒါလည်း သူ့ကိစ္စပြီးတာနဲ့
ပြန်ဝယ်ပေးမှာပါတဲ့’

‘ဘာမှ ပြန်ဝယ်မပေးဘူး၊ အဲဒါ မင်းကို လိမ်သွားတာ၊ ဒီတိပ်
တွေကိုလည်း အခုပဲ ခွာကြည့်လိုက်၊ ဘာအဖိုးတန်မှ မဟုတ်ဘူး၊ သံ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

လမ်းဘေးက ကျောက်ခဲတစ်လုံးပဲ ဖြစ်ရမယ်*

ပြောပြောဆိုဆို စာရေးသူက တိပ်များကို စခွာနေသောအခါ ကဝိသာရမှာ မျက်စိမျက်နှာ ပျက်နေသည်။

‘ဆရာတော်’ အဲဒီဒကာက ပစ္စည်းကို လုံးလုံးဖွင့်မကြည့်ဖို့ မှာထားတယ်ဘုရား၊ တပည့်တော်ကို စိတ်ချလို့ အပ်တာပါ’ တဲ့၊ ရိုးအလှသော တပည့်မှာ သူ့ကို လိမ်လို့လိမ်မှန်းပင် မသိရှာ၊ တိပ်များကုန်သွားသောအခါ ပလတ်စတစ်တစ်ထပ်ကို တွေ့ရသည်။ ပလတ်စတစ်ကုန်သောအခါတွင် စက္ကူတစ်ထပ်ကို တွေ့ရပြန်သည်။ စက္ကူကို ခွာလိုက်သောအခါတွင်ကား စာရေးသူပြောသလို လမ်းခင်းကျောက်ခဲတစ်လုံးကိုသာ တွေ့ကြရသည်။

ထိုအခါမှပင် ကဝိသာရမှာ ခေါင်းငိုက်စိုက် ကျသွားရှာသည်။ ထို့နောက် သူ၏ဖြစ်စဉ်ကို အစအဆုံး ပြန်ပြောသဖြင့် နည်းသစ်တစ်ခုဖြင့် လိမ်လည်သွားကြောင်း သိကြရသည်။ စာရေးသူအား ရထားပေါ်တင်ပြီး ပြန်အထွက်မှာပင် ရည်ရည်မွန်မွန် မျက်နှာဖြင့် သပ်ရပ်စွာ ဝတ်စားထားသော အသက် ၃၀-ခန့်ရှိ လူရွယ်တစ်ဦးက...

‘ကိုရင်တို့ အချိန်ရရင် အအေးဆိုင်ကို ခဏကြွပါဘုရား၊ တပည့်တော် အအေးကပ်ပါရစေ’

ခရီးသွားရင်း ရထားပေါ်၊ ကားပေါ်တို့တွင်လည်း သဒ္ဓါပေါက်သော ဒကာ၊ ဒကာမအချို့က ယခုလိုပင် ကပ်ကျနေပြီဖြစ်သဖြင့် ကိုရင်နှစ်ပါးလည်း ဘာမျှ မပြောတော့ဘဲ ဒကာခေါ်သော အအေးဆိုင်အတွင်းသို့ ဝင်ထိုင်လိုက်ကြတော့သည်။ အအေးကပ်နေရင်းမှပင် ထိုဒကာက...

‘တပည့်တော် ကိုရင်တို့ကို တွေ့တွေ့ချင်း ကိုယ့်ဆွေမျိုးရင်းချာ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တွေ့ကို တွေ့ရသလိုပဲ သိပ်ဝမ်းသာမိတယ် ဘုရား။ တပည့်တော် ဇာတိက ကသာဘက်ကပါ။ ကျောက်ကလေးဘာလေး အရောင်းအဝယ် လုပ်တယ်ပေါ့ဘုရား၊ ရန်ကုန်ရောက်တဲ့အခါတော့ တည်းခိုခန်းပဲ တည်းရတယ် ဘုရား။ ဒါနဲ့ ကိုရင်တို့က ဘယ်ကျောင်းကပါလဲဘုရား’

‘ကိုရင်တို့က လှိုင်မြို့နယ် (၅)ရပ်ကွက် ကြံခင်းကျောင်းကပါ။ အခု စာချဆရာတော်ကို လိုက်ဖို့ကြတာပါ’

‘အခုလို သိရတာ ဝမ်းသာပါတယ်ဘုရား၊ နောက်လည်း ကိုရင်တို့ကျောင်းမှာ တည်းရတာပေါ့’

အအေးသောက်ရင်း စကားပြောရင်းဖြင့် ခဏအကြာမှာပင် ကိုရင်နှစ်ပါးမှာ ထိုဒကာကို အတော်ပင် ခင်မင်သွားကြသည်။ အအေးသောက်ပြီး သွားခါနီးအချိန်မှာပင် ထိုဒကာက...

‘ကိုရင်တို့ အပန်းမကြီးဘူးဆိုရင် အကူအညီတစ်ခုတော့ တောင်းချင်တယ် ဘုရား’

‘တောင်းပါ ဒကာကြီး’

‘တခြားတော့ မဟုတ်ပါဘူး ဘုရား၊ တပည့်တော်ရဲ့ ပစ္စည်းလေးတစ်ခု ကိုရင်တို့ဆီမှာ အပ်ထားချင်တာပါ။ တည်းခိုခန်းမှာတော့ စိတ်မချရလို့ပါဘုရား၊ အရောင်းအဝယ် အဆင်ပြေသွားရင်လည်း ကိုရင်တို့ ကျေးဇူးကို မမေ့ပါဘူးဘုရား၊ တပည့်တော်က နဂိုကတည်းက အလှူအတန်း ဝါသနာပါပါတယ်’

‘ပစ္စည်းက များသလား ဒကာကြီး၊ ပြီးတော့ အခုမှ အပ်မှာလား’

‘မများပါဘူး ဘုရား၊ လက်သီးဆုပ်လောက်ဟာလေး တစ်ခုပါ။ အပ်မှာကတော့ နောက်နေ့မှာ တပည့်တော် ကမာရွတ်ဘူတာရုံထိပ်က

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

လက်ဖက်ရည်ဆိုင်မှာ ထိုင်စောင့်နေမယ်။ ကိုရင်တို့နှစ်ပါး လာခဲ့ကြပေါ့။ မနက်ကိုးနာရီလောက်ပေါ့။ ဘုရား’

‘ရပါတယ် ဒကာကြီး၊ ကိုရင်တို့ လာခဲ့ပါ့မယ်’

သို့နှင့် လမ်းခွဲခဲ့ကြပြီး နောက်တစ်နေ့ မနက်ကိုးနာရီမှာပင် ဘူတာရုံလမ်းထိပ်ရှိ လက်ဖက်ရည်ဆိုင်တစ်ဆိုင်တွင် ကိုရင်နှင့်ပါးနှင့်ဒကာတစ်ယောက်ကို တွေ့နေကြရသည်။ သို့သော် ကိုယ့်အလုပ်နှင့်ကိုယ်မို့ ဘယ်သူမျှ သတိမထားမိကြ။

လက်ဖက်ရည်သောက်ပြီး ခဏအကြာမှာပင် ဒကာက တိပ်ဖြင့် အထပ်ထပ်ပတ်ထားသော ပစ္စည်းလေးတစ်ခုကို ထုတ်ကာ...

‘ဒီပစ္စည်းလေးကို ကိုရင့်ဆီမှာ ခဏသိမ်းထားပေးပါ။ တပည့်တော်တည်းခိုခန်းမှာကတော့ လူစုံရှိနေတော့ စိတ်မချရဘူးပေါ့ ဘုရား၊ တစ်ခုတော့ ကတိပေးပါဘုရား၊ ဒီပစ္စည်းကို လုံးဝဖွင့်မကြည့်ပါဘူးဆိုတဲ့ ကတိပါပဲ။ ဒါကလည်း ကိုရင့်ကို စိတ်မချလို့မဟုတ်ပါဘူး၊ လုပ်ငန်းသဘောအရ လက်ရာခြေရာ ပျက်မှာစိုးလို့ပါ။ ဒီပစ္စည်းလေး ရောင်းထွက်သွားရင်လည်း ကိုရင်တို့အတွက် ဘယ်လိုလှူမယ်ဆိုတာ တပည့်တော် စိတ်ကူးပြီးသားပါ။ ဆွေမျိုးအရင်းလို ခင်မင်လွန်းလို့ အပ်ရဲတာပါ ဘုရား၊ တပည့်တော် စိတ်ချပါရစေ’

‘စိတ်ချပါ ဒကာကြီး၊ ကိုရင် လုံးဝဖွင့်မကြည့်ဘဲ သေချာ သိမ်းပေးပါ့မယ်’

ထိုကဲ့သို့ပြောပြီး ခဏအကြာမှာပင် ထိုဒကာနှင့် အရွယ်တူခန့်ပင် ရှိသော အမျိုးသားတစ်ဦး အရေးတကြီးပုံစံဖြင့် ဆိုင်ထဲဝင်လာကာ...

‘ဟာ... ထွန်းဝင်း၊ မင်းကို ရှာလိုက်ရတာကွာ၊ မင်းက ဒီရောက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

နေတာကိုး'

'အေး... ဒီမှာ ငါ့ဆွေမျိုးလို ကိုရင်တွေနဲ့တွေ့နေလို့ကွာ၊ ဒါနဲ့ ပစ္စည်းကိစ္စဘယ်နှယ်လဲ'

'အေး... အဲဒါပြောရအောင် လာတာပဲ၊ ပစ္စည်းတွေက အခု ပဲခူးကို ရောက်နေပြီ၊ လမ်းကြောင်းရှင်းပြီး ရန်ကုန်သယ်ဖို့အတွက် ငွေ ငါးထောင်လောက်လိုမယ်၊ အဲဒါ မင်းဆီမှာ အသင့်ရှိရဲ့လား'

ဒကာနှစ်ဦးမှာ မင်မောင်းကောင်းစွာ ပြောနေကြသဖြင့် ကိုရင် နှစ်ပါးမှာလည်း မျက်တောင်ခတ်ဖို့ပင် သတိမရနိုင်ဘဲ ပါးစပ်အဟောင်း သားဖြင့် တအံ့တဩ နားထောင်နေကြတော့သည်။ တစ်ဖန် ထိုဒကာ က...

'ဟ... ဘယ်ဖြစ်မလဲ၊ တော်ကြာ ငွေလေးနှစ်ထောင်လိုတာနဲ့ သိန်းဂဏန်းတန်တဲ့ ပစ္စည်းတွေ အဆုံးရှုံးခံလို့ ဘယ်ဖြစ်မလဲကွ၊ အခုပဲ ရအောင်ရှာကွာ၊ ပဲခူးကို ချက်ချင်းသွားမှ ဖြစ်မယ်၊ အချိန်ဆွဲနေလို့ မရဘူး'

ထိုအခါ အအေးအလှူရှင်ဒကာမှာ ခေါင်းကို တဖျင်းဖျင်းကုတ်၍ ကြံရာမရ ဖြစ်နေရှာသည်။ ကိုရင်ကဝိတို့နှစ်ပါးမှာလည်း မိမိတို့မှာ သာ ငွေအသင့်ရှိလျှင် ချက်ချင်း ပေးလိုက်ချင်စိတ်များ တဖွားဖွားပေါ်နေကြသည်။ များသောအားဖြင့် နယ်မှ တက်လာကြသော စာသင်သား သံဃာလေးများမှာ တစ်မိုးတွင်းစာ၊ သို့မဟုတ် တစ်နှစ်စာ လိုအပ်ချက်များကို ဝယ်ယူသုံးစွဲရန် မိဘ၊ သို့မဟုတ် ရဟန်းဒကာများက ထောင်ဂဏန်းထိရှိသော ဝတ္ထုငွေများကို လှူထားတတ်ကြသည်။

မိုးညှင်း မိုးကောင်းတို့ဘက်မှ စာသင်သားများဆိုလျှင် အရပ်မှ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တစ်ခေါက်ပြန်လာသည်နှင့် ဝတ္ထုငွေလေးငါးသောင်းထိ ပါလာတတ်ကြသည်။ သူတို့ လာဘ်လာဘာသည် စာချဘုန်းကြီးများထက်ပင် များနေပါသေးသည်။ ထိုအချက်များကို သိထားသဖြင့် လူလိမ်များက သည်ယုန်မြင်၍ သည်ချုံထွင်နေကြခြင်းပင်။ ကံကောင်းသည်မှာ ထိုအချိန်က ကိုရင်နှစ်ပါးလုံးတွင် ပါလာသော ငွေများ ကုန်နေခြင်းပင်။ အတော်စိတ်ညစ်သွားဟန်တူသော ကိုရင်နှစ်ပါးဘက်လှည့်ကာ...

‘ကိုရင်တို့မှာ ငွေနှစ်ထောင်လောက် လွယ်လွယ်ရှိရင် တပည့်တော်ကို ခဏချေးကြပါလား ဘုရား၊ ကိုရင်တို့ဆီမှာ သောင်းဂဏန်းမကတဲ့ ပစ္စည်းလည်း တပည့်တော် အပ်ထားပြီးပြီပဲ၊ ဒီပစ္စည်း အလုပ်ဖြစ်သွားရင် ဒီငွေက ခဏပါ’

‘ကိုရင်တို့ ဒကာကြီးမပြောခင်ကတည်းက ပေးချင်နေတာပါ။ ကိုရင်တို့မှာ ငွေပြတ်နေပြီ ဒကာကြီး’

‘ဒါဆို ကိုရင်တို့ တချဘုန်းကြီးတို့၊ ကျောင်းထိုင်ဆရာတော်တို့ ထံမှာ ခဏလှည့်ရင်ကော မရနိုင်ဘူးလား’

‘ဟာ... ဆရာတော်တွေတော့ မပြောရဲဘူး ဒကာကြီး’
ထိုအချိန်မှာပင် တည့်တည့်ပြောတတ်သော ရှမ်းကိုရင်က...

‘ဒကာကြီးရေ... အခုအချိန်မှာတော့ ကိုရင်တို့တောင် သုံးစရာပြတ်နေလို့ မိဘတွေဆီ အတင်းလှမ်းမှာနေရတာ၊ ကိုရင်တို့ဆီက ပိုက်ဆံချေးဖို့တော့ မျှော်လင့်မနေနဲ့၊ ကျောက်ခဲဆီကြိတ်တာကမှ ထွက်ချင်ထွက်ဦးမယ်၊ ကိုရင်တို့ဆီကတော့ တစ်ပြားမှ ထွက်မှာမဟုတ်ဘူး၊ ရှိမှ မရှိဘဲကိုး၊ အဲ... ဒကာကြီးတို့က လှူသွားရင် လှူသွားဖို့ပဲ ရှိတယ်’
ဟုပြောလိုက်ရာ လူလိမ်ဒကာမှာ မျက်နှာကို အီးမှန်သည့်အတိုင်း ရှုံ့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

မဲ့သွားပါတော့သည်။ လူလိမ်ဒကာ၏အဖြစ်ကား ဇရပ်ပေါ်မှာ တောက်ခေါက်မိသော သူတောင်းစားအဖြစ်နှင့်တူလှသည်။ တစ်ခုသောအခါက ဘဝပျက်၍ တောင်းရမ်းစားသောက်နေရသော သူတောင်းစားတစ်ယောက် ရှိသည်။

တစ်ရက်တွင် ဘယ်လိုဂြိုဟ်ဆိုးဝင်သည်မသိ၊ တစ်နေ့ကုန်သည် အထိ ဘာတစ်ခုမျှ တောင်းမရဘဲ ဖြစ်နေလေသည်။ နေဝင်ခါနီးအချိန် ကျမှပင် ရှားရှားပါးပါး အိမ်တစ်အိမ်မှ စာကလေးခွေတစ်ခုသာ ရရှာသည်။ ထိုစာကလေးခွေကိုယူပြီး ဘုရားဝိုင်းထဲမှ ဇရပ်တစ်ခုပေါ်သို့ ပင်ပန်းနွမ်းစွာ ထိုင်လိုက်ရှာသည်။

ဇရပ်ပေါ်ထိုင်မိသည်နှင့်...

‘ငါ့နှယ် ကံဆိုးလိုက်တာ၊ မရှိလို့ တောင်းစားတာတောင်မှ ဝဝ လင်လင်မစားရဘူး၊ ဒီနေ့တစ်နေ့လုံးအတွက် ဒီစာကလေးခွေတစ်ခုပဲ ရတယ်၊ ဆိုးလိုက်တဲ့ဘဝနှယ်ကွာ၊ တောက်...’ သူတောင်းစား၏ နာနာကြည်းကြည်း တောက်ခေါက်သံအဆုံးတွင် ခွေးလေးခွေးလှင့်တစ်ကောင်က သူ့ကို ကျွေးမလို့ ခေါ်သည်အထင်နှင့် ဇရပ်ပေါ်သို့ အမြီးတယမ်းယမ်းဖြင့် တက်လာရာ တောက်ခေါက်မိသဖြင့် ပို၍ ကံဆိုးသွားသော သူတောင်းစားမှာ တစ်ခုတည်းရလာသော စာကလေးခွေကို ထက်ဝက်ခွဲ၍ ခွေးကို ကျွေးလိုက်ရလေတော့သည်။

ယခုလည်း ကိုရင်နှစ်ပါးကို အပိုင်ချည်ပြီး လိမ်မည်ကြိကာမှ ငွေပြတ်နေသော ကိုရင်များကို မိမိကပင် ပြန်လှူရမလို ဖြစ်နေသဖြင့် ကိုလူလိမ်မှာ တော်တော်ပင် စိတ်ညစ်သွားဟန် တူသည်။

‘ကိုရင်တို့ဆီမှာ သင်္ကန်းအသစ်ကလေး တစ်စုံတလေ မရှိကြ

ဗဟုရင် (ရွှေပြည်သာ)

ဘူးလား၊ တပည့်တော်မှာက သိပ်အရေးကြီးနေလို့ပါ။ ဒီထောင်ဂဏန်း
လေး မလိုက်နိုင်တာနဲ့ သိန်းဂဏန်းကြီးပါ အဆုံးခံရမလို့ ဖြစ်နေလို့ပါ။
ကိုရင်တို့ဆီ အပ်ထားတဲ့ ပစ္စည်းကို ထုတ်ပြီးသွားရင် ဒီငွေလောက်
ကတော့ စကားထဲ ထည့်ပြောစရာကို မလိုပါဘူး’

ငိုချင်လျက် လက်တို့ဖြစ်သွားသော ကိုရင်ကဝိမှာ ကျောင်းမှာ
ရှိနေသော တက်ထရွန်သင်္ကန်းတစ်စုံကို ပြန်ယူ၍ လူလိမ်တို့အား ပေး
လိုက်မိရှာပါတော့သည်။ ထို့ကြောင့်ပင် တက်ထရွန်သင်္ကန်းတစ်စုံကို
လမ်းဘေးကျောက်ခဲတစ်လုံးနှင့် လဲလိုက်ရသကဲ့သို့ ဖြစ်သွားခဲ့ရပါတော့
သည်။ စာသင်သားသံဃာများ သတိရှိနိုင်ကြပါစေ။



အစစ်နှင့်အတု မြင်အောင်ရ

‘စန္ဒိမာ မိလာပြန်ပြီတဲ့’

တစ်ခုသော ဥပုသ်နေ့ညနေခင်းတွင် သိမ်ထဲမှာ ဥပုသ်ပြုရာမှ မိမိတို့ သီတင်းသုံးရာ ကျောင်းဆောင်အသီးသီးသို့ ပြန်ကြွလာကြသော စာရေးသူတို့အား အထက်ပါသတင်းက ဆီးကြိုနေပါ၏။ ဤသတင်းသည် စာရေးသူတို့အစို့တော့ မယုံကြည်နိုင်စရာ အံ့ဩဖွယ်ရာအတိသဘာ ဖြစ်ခဲ့ပါ၏။ အဘယ်ကြောင့်ဆိုသော် ထိုစန္ဒိမာအမည်ခံသူ အရေခြုံပုဂ္ဂိုလ်၊ တစ်နည်းခေါ်ရလျှင် ဒေါင်းယောင်ဆောင်သောကျိုးကို လွန်ခဲ့သော လေးငါးလခန့်က စာရေးသူတို့ မြတောင်တိုက်မှာ ဖမ်းမိပြီး ပညာပေးဆုံးမကာ သက်ဆိုင်ရာသို့ အပ်ပို့ထားသောကြောင့် ဖြစ်ပါသတည်း။ တစ်နေ့ဆီကမှ ဇာတ်အဋ္ဌကထာစာအုပ် ဒုတိယတွဲကြည့်နေရင်း ခြင်္သေ့အယောင်ဆောင်သော မြည်း(သီဟာခံမ္မ)အကြောင်း ဖတ်မိသဖြင့် ထိုဇာတ်တော်လာ အဖြစ်အပျက်နှင့် စန္ဒိမာဆိုသော ပုဂ္ဂိုလ်ကို သတိရသေး၏။

ပေတ္တာရှင် (ရှုပြည်သာ)

နောင်ကြည်အောင် ဆုံးမလိုက်ပြီး ဝန်ခံကတိပါ ယူထားသဖြင့် သည်ပုဂ္ဂိုလ်ကို သည်လိုအနေအထားနှင့် ကြုံရလိမ့်မည်ဟုတော့ စာရေး ဆရာ တွေးထင်မထားပါ။ ယခု သူ့အကြောင်း ကြားသိရသောအခါ လွန်ခဲ့သော လေးငါးလခန့်က အဖြစ်အပျက်ကို သတိရမိတော့၏။ စန္ဒိမာ သည် ဗုဒ္ဓဘာသာကို ကြည်ညိုကြသော သူတို့ကို အလွန်ပီရိသေသပ် စွာ လိမ်တတ်ပါသည်။

တစ်နေ့ စာရေးသူတို့ မြဲတောင်တိုက် ရွှေဝါဝင်ကျောင်း ဆရာ တော်ထံသို့ ငွေကြေးအတန် ကြွယ်စပုံရသော လူတစ်စု အထုပ်အပိုး တွေနှင့် ဆိုင်းမဆင့် ဗုံမဆင့် ရောက်လာကြ၏။ သူတို့က လျှောက်ကြ သည်။

‘ဆရာတော်ကို ယခုမှ ဖူးတွေ့ဖူးကြောင်း၊ ဆရာတော်တပည့်ဖြစ် သူကိုရင်စန္ဒိမာကို ရဟန်းခံရန် လာကြသူများဖြစ်ကြောင်း၊ ကိုရင်က သူ့အရင်ကြွနှင့်မည်ဆိုသဖြင့် နောက်မှလိုက်ခဲ့ခြင်းဖြစ်ကြောင်း’ စသည် ဖြင့် လျှောက်ထားကြတော့သည်။ ပထမဆုံးအကြိမ်ဖြစ်သဖြင့် ဆရာ တော်မှာ ဝေဝေဝါဖြစ်သွားရသည်။

အမှန်က သည်ကျောင်းမှာ ကိုရင် စန္ဒိမာမရှိပါ။ တစ်တိုက်လုံး ရှာကြည့်တော့လည်း မရှိပါ။ ရှိသည့်ဘွဲ့တူ (နာမည်တူ) တွေကလည်း ကိုရင်မဟုတ်၊ ဦးပဉ္စင်းသားဖြစ်ပါ၏။ သည်တော့မှ အညာခံလိုက်ရမှန်း သိတော့သည်။

‘တပည့်တော်တို့အိမ်မှာ ဆွမ်းခံကြနေတာဘုရား၊ ကိုရင်က ဓမ္မာ စရိယစာချတန်းလည်း အောင်ပြီး အသက်ကလည်း ပြည့်နေပြီ၊ ရဟန်း ဒကာလည်း မပေါ်သေးဆိုတာနဲ့ ရဟန်းခံဖို့ တာဝန်ယူလိုက်တာပါ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

ဘုရား၊ ပြီးတော့ သူက ဒီတိုက်ဆရာတော်ရဲ့ အတုတွေလုပ်ပြီး ပြတော့ အစစ်ထင်ပြီး ယုံကြည်မိတာပါဘုရား။

တောင်ကြီးကလာရသော ထိုဒါယကာ၊ ဒါယိကာမကြီးများအဖွဲ့မှာ ရှက်လည်းရှက်၊ ဝမ်းလည်းနည်း၊ ဒေါသလည်းဖြစ်ပြီး မအိမလည်ဖြစ်နေကြရရှာသည်။ စာရေးသူတို့မှာလည်း တိုက်နာမည်ဖျက်ခံရ၊ အလွဲသုံးစားလုပ်ခံရသဖြင့် အောင့်သက်သက်နှင့် ခံနေကြရပါသည်။ ဆရာတော်တို့ကလည်း နောက်ဆောင်မှာ သည်အဖြစ်မျိုးနှင့်ကြုံလျှင် လက်မခံဖို့အကြောင်း၊ တကယ့်အစစ်အမှန်ဖြစ်သူဆိုလျှင် ဤကဲ့သို့ အရှက်မရှိလှည့်လည်၍ ရဟန်းဒါကာမရှာကြောင်း။

ရဟန်းလိုချင်လျှင် နီးစပ်ရာ ကျောင်းတိုက်ကြီးများသို့သွား၍ ဆရာတော်ကြီးများထံ လျှောက်ထားတောင်းခံသည်က အကောင်းဆုံးဖြစ်ကြောင်း၊ ဓမ္မစရိယ လက်မှတ်တံဆိပ်တုံး စသည်တို့ကို လာမည့်တပေါင်းလမှာသာ ဆက်ကပ်ရိုး ထုံးစံရှိကြောင်း၊ ကိုရင်စန္ဒိမာ ကိုင်ထားသော '၁၃၄၈ခု၊ ဓမ္မစရိယစာချတန်းကို အောင်မြင်သဖြင့် ပြည်ထဲရေးနှင့် သာသနာရေးဝန်ကြီးဌာနမှ ဆက်ကပ်လှူဒါန်းသည်' ဟူသော စာတမ်းမှာ အတုသာဖြစ်ကြောင်း စသည်ဖြင့် အမျိုးမျိုးရှင်းပြလိုက်သည်။

လာခဲ့ရသော ခရီးမှာ အချည်းနှီးမဖြစ်ချင်ကြသော ထိုအဖွဲ့ကလည်း ကြိုတုန်းကြိုခိုက် ဆောက်လုပ်တော့မည့် 'နှစ်တစ်ရာပြည့် ဗိမ္မာန်ကြီး' အတွက် အလှူငွေများ ထည့်ဝင်လှူဒါန်းကာ ကုသိုလ်ယူ၍ ပြန်သွားကြပါ၏။ ဤကိစ္စ ဤတွင် ပြီးပြတ်သွားသည်ဟု ထင်ကာ စိတ်အေးနေလိုက်ကြသည်။ မကြာပါချေ။ တစ်လခန့်ကြာသောအခါ ကိုရင်စန္ဒိမာ ဇာတ်လမ်းက တစ်စခန်းထလာပြန်သည်။

လောကီ (ရွှေပြည်သာ)

လိမ်ပုံလိမ်နည်းမှာ ယခင်အတိုင်းသာ ဖြစ်၏။ အလိမ်ခံရသော အဖွဲ့ကသာ ကွဲသည်။ သည်တစ်ခါလာသောအဖွဲ့မှာ ရန်ကုန်ကဟုဆို သည်။ သည်တော့မှ မန္တလေးတိုင်း အကျိုးတော်ဆောင်ဖြစ်သော ဆရာတော်မှာ ခေါင်းခံရတော့၏။

သည်ပုံအတိုင်းသာဆိုလျှင် စန္ဒိမာသည် တစ်မြို့ပြီးတစ်မြို့ လှည့် လည်လိမ်နေဦးတော့မည်။ ယခု ရောက်လာသောအဖွဲ့မှာလည်း ငွေတစ် ထောင်ကျော်လောက် ပါသွားသည်တဲ့။ ထင်သည့်အတိုင်းပင် အခြား သော မြို့နယ်များမှ စန္ဒိမာ၏ အလိမ်ခံလိုက်ရသော ဒကာ၊ ဒကာမ များရောက်လာကြတော့၏။ ဟန်ဆောင်ကောင်းသောသူအား လောကကြီး သည် သရဖူဆောင်းပေးလျက်ရှိသည်ဟူသော အင်္ဂလိပ်စကားပုံတစ်ခု အတိုင်း ယခုအချိန်အထိတော့ စန္ဒိမာအား လောကကြီးက သရဖူဆောင်း ပေးလျက် ရှိသေး၏။ သို့သော်လည်း...

- ပါပေါပိပဿတိဘဒြိ
- ယာဝပါပံ နပစ္စတိ။
- ယဒါစ ပစ္စတိပါပံ။
- အထပါပေါ ပါပါနိပဿတိ။

မကောင်းမှုကို ပြုလုပ်သောသူသည် မကောင်းမှုအကုသိုလ် အကျိုး မပေးသမျှ ကာလပတ်လုံး ကောင်းကျိုးကို ခံစားရသေး၏။ မကောင်းမှု အကုသိုလ်ကံ အကျိုးပေးခွင့်ရလာသောအခါ၌ မကောင်းမှုကို ပြုသော သူသည် မကောင်းကျိုးမကောင်းဖြစ်တို့ကို မုချ ခံစားရသည်သာတည်း။

(ဧကနိပါတ်မရီရဂါရဇာတ်)

ဟူသော ဘုရားဟောပါဠိတော်နှင့်ညီစွာ မကောင်းမှုက အကျိုး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယျများအကြောင်း

မပေးခင် ကောင်းကျိုးခံစားနေရသော ကိုရင်စန္ဒိမာ၏ မကောင်းကျိုး ပေးချိန်ကား တန်၍လာပါတော့သည်။ တစ်နေ့ ဗုဒ္ဓဘာသာကို အခြေ အမြစ်ကျကျ လေ့လာထားသော ပွဲရုံတစ်ခုမှ ဒါယကာတစ်ဦးနှင့် ရုပ်ကွက်လူကြီးများ၊ ဘုန်းကြီးတစ်ပါးတို့သည် လူလိမ်စန္ဒိမာအမည်ခံ ပုဂ္ဂိုလ်ကို ဖမ်းဆီးခေါ်ဆောင်လာကြပါတော့သည်။

သေချာစွာ စစ်ဆေးလိုက်သောအခါ စန္ဒိမာ၏ ကလိမ်စေ့ငြမ်း ဆင်ဇာတ်လမ်းသည် ဖုံးမရအောင် ပေါ်လာတော့၏။ ရဟန်းတိုင်း ရထား ရမည့် ဒေသနာကြားကို မဆိုထားဘိ ဝါကပ်ပုံပါဠိကလေးကိုပင် မဆို တတ်ပါပေ။ စစ်ဆေးပြီး လူဝတ်လဲခိုင်းလိုက်ကြ၏။ လူဝတ်လဲလိုက်ခါမှ သူ့ပင်ကိုယ် မည်းကြုတ်ကြုတ်ရုပ်အသွင်က အထင်းသားပေါ်လာတော့ သည်။ ကျောင်းတိုက်နာမည် အဖျက်ခံရသဖြင့် ဒေါသထွက်နေသော ကိုရင်များနှင့် ဖွတ်ထွက်မှ တောင်ပို့မှန်းသိကြသော လူဒါယကာအချို့ က မှတ်သားလောက်အောင် ရိုက်နှက်ပြီး အမှတ်(၉) ရဲစခန်းသို့ အပ်နှံ လိုက်ကြ၏။

အလိမ်အညာဇာတ်လမ်း တစ်ခန်းရပ်လောက်ပြီဟု ထင်မှတ်ကာ မေ့မေ့လျော့လျော့နေလိုက်ကြရာမှ ဘယ်ပုံဘယ်နည်း လွတ်လာသည် မသိ၊ ယခု သင်္ကန်းပြန်ဝတ်ပြီး ဆက်လက် လိမ်ညာနေပြန်တော့သည်။ ဘွဲ့ကတော့ စန္ဒိမာသာ။ သို့သော် ယခုတစ်ကြိမ်တော့ စာချတန်းတံဆိပ် တုံးယပ်တောင်နှင့် မဟုတ်တော့။ ယပ်တောင်မှာ ရေးထားသည်ကား 'ဝိနယကောဝိဒ'ဟူ၍ပင် ဖြစ်ပါတော့သည်။

မည်၍မည်မျှ လိမ်ခဲ့သည်တော့ မသိရ။ ယခုအခါ အလွဲသုံးစား လုပ်ခံရသော ကျောင်းမှာ မစိုးရိမ်တိုက်သစ် ဖြစ်ပါသည်။ အလိမ်ခံရ

ဇေယျာရင် (ရွှေပြည်သာ)

သော ဒကာက ပထမအကြိမ် ငွေလှူပြီးနေပြီ။ ဒုတိယအကြိမ် ငွေလှူရန် တစ်နေရာကို ချိန်းလိုက်၏။ ပရိက္ခရာရှစ်ပါးတန်ဖိုးကို ပြောဆိုအလှူခံပြီး တစ်ဆင့်တက်ကာ လောဘာသမားတို့ထုံးစံ ရလေလိုလေ အိုတစ္ဆေ ဟူသကဲ့သို့ မျက်စိမကောင်း၍ မျက်မှန်ဖိုးက ဘယ်မျှ၊ စာအုပ်တွေက ဘယ်ဈေးဟု တွက်ချက်ကာ ဆက်လက် အလှူခံတော့သည်။

အတောမသတ်နိုင်သော လောဘပင် မိမိကို မျက်ဆီးပေလိမ့်မည် ဟု မတွေးမိရှာသော ထိုလူမိုက်သည် လက်ထဲမှ လွတ်ကျသွားသော ပြောင်းတစ်ခုကို လောဘာမသတ်နိုင်၍ လက်တစ်ဆုပ်စာ ပြောင်းစေ့များဆုံးရှုံးရသော ဇာတ်တော်လာ မျောက်တစ်ကောင်နှင့် တူသေးတော့သည်။ အစစ်အမှန်တို့၏ အလေ့ဓမ္မတာ မဟုတ်သောအကျင့်ကို ရိပ်စားမိလေသော ဒါယကာက ရင်းနှီးရာ ဦးပဉ္စင်းများနှင့် တိုင်ပင်ကာ ဖမ်းဆီးလိုက်သည်။ မစိုးရိမ်တိုက်သစ် ရောက်သောအခါတွင် မင်းသားခေါင်းစွပ်ထားသော ဘီလူးရုပ်သည် မိုက်မှောင်နေသော အခန်း၌ လေးပေမီးချောင်းထွန်းလိုက်ဘိသို့ ပေါ်လွင် ထင်ရှားလာတော့ခြင်း ဖြစ်ပါသည်။

ဤနေရာ၌ အယောင်ဆောင်သူများ ဒုက္ခလှလှ တွေ့ရတတ်ပုံ ဇာတ်တော်လာ သာဓကတစ်ခုပင် တင်ပြလိုပါသည်။ ငါးရာငါးဆယ် ဇာတ်တော် ဒုကနိပါတ်လာ သီဟဓမ္မဇာတ် ဖြစ်ပါ၏။ ရှေးအတီတော့ လွန်လေပြီးသောအခါ ဗာရာဏသီပြည်၌ ဗြဟ္မဒတ်မင်း မင်းပြုစဉ် ဘုရားလောင်းသည် တောင်သူယာလုပ်-ဓားမခတ်ဘဝဖြင့် အသက်မွေးနေလေသည်။

ထိုကာလ၌ မြင်းကုန်သည်တစ်ယောက် လှည့်လည်လျက်အရောင်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ဖို့သူများအကြောင်း

အဝယ်ပြုလုပ်ရာ တစ်နေ့သောအခါ ဘုရားအလောင်းနေသော ရွာသို့ ရောက်လာလေ၏။ ထိုသူသည် သူ၏မြင်းကို ခြင်္သေ့အရေ ဖုံးလွှမ်းပေးကာ ယာခင်းများကိုဆီသို့ လွှတ်ကျောင်းထားလေသည်။ ယာစောင့်သူများက အစစ်မှန်ခြင်္သေ့ထင်ကာ အနားမကပ်ရဲကြသဖြင့် ရွာထဲသို့ သွား၍ ရွာသူရွာသားများကိုခေါ်ကာ လက်နက်ကိုယ်စီ ကိုင်ဆွဲလျက် ထိတ်လန့်ဖွယ်ရာ ခရသင်းသံ၊ စည်ကြီးသံများဖြင့် ခြောက်လှန့်ကြ၏။

ထိုအခါ ခြင်္သေ့အတူကြီးသည် ကြောက်လန့်လှသဖြင့် ဣန္ဒြေမဆောင်နိုင်တော့ဘဲ သူ၏ ပင်ကိုယ် မြည်းသံကို အော်ဟစ်လိုက်လေသည်။ ထိုအခါ ခြင်္သေ့ယောင်ဆောင်ထားသော မြည်းမှန်းသိကြသည့် ရွာသားများ၏ တစ်ယောက်တစ်လက် ရိုက်နှက်မှုကြောင့် အယောင်ဆောင်မြည်းသည် အသက်ကုန်ခြင်းသို့ ရောက်ရလေ၏။

ထိုအခါမှ ကုန်သည်က ဤမြည်းသည် ခြင်္သေ့ရေခြံလျက် စိမ်းစိုသောကောက်ကို စားရသည်မှာ ကြာလေပြီ။ ယခုမူ သူ၏ အသံက သူ့ကို ဖျက်ဆီးအပ်လေ၏။ ခြင်္သေ့ရေ၏ အပြစ်မဟုတ်ဟု မှတ်ချက်ချလိုက်လေသည်။

(ဥဒ္ဒဇာတက ၄၊ စာမျက်နှာ ၁၀၀)

ဤဇာတ်တော်၌ ကုန်သည်က မြည်းကို ခြင်္သေ့ရေခြံလျက် အယောင်ဆောင်ခိုင်းသကဲ့သို့ ယခုလည်း ပုဂ္ဂိုလ်တချို့က အသက်မွေးမှု လွယ်ရန်နှင့် ရဟန်းသံဃာတို့အား အကြည်ညိုပျက်စေရန် စန္ဒိမာအား သင်္ကန်းအရေခြံပေးလိုက်ကြသည်။ လောက၌ အစစ်ရှိလျှင် အတုရှိမြဲ ဓမ္မတာရှိသောကြောင့် သာသနာတစ်လျှောက်လုံး၌ အစစ်နှင့်အတုတို့ သည် အမျိုးမျိုးပေါ်ထွန်းခဲ့ကြသည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

လူလိမ်လူညာများ၊ ကောက်ကျစ်စဉ်းလဲသူများသည် စေတနာ၊ သဒ္ဓါတရား အားကောင်းသော ဗုဒ္ဓဘာသာဝင် သူတော်စင်များ၏ သဒ္ဓါတရားကို အခွင့်ကောင်းယူကာ နည်းမျိုးစုံဖြင့် အသက်မွေးဝမ်းကျောင်း နေကြ၏။ ဤနေရာ၌ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်တို့ သတိပြုရမည့်အချက်မှာ အတုနှင့် အစစ်၊ အနှစ်နှင့်အကာကို ခွဲခြားသိမြင်တတ်ရေးပင် ဖြစ်သည်။ သို့သော် အချို့သော ဗုဒ္ဓသာသနာဝင်တို့မှာ အခြေအမြစ်ကျစွာ မလေ့လာ မလိုက်စားထားသဖြင့် ညာလုံးဖြန်းလုံး ကောင်းကောင်းနှင့် လိုမိုလိုက်လျှင် ယုံကြည်ကာ ကိုးကွယ်တတ်ကြတော့၏။

ယနေ့ ပရိယတ္တိနယ်မြေမှ ကြယ်ပွင့်လေးများမှာ ငတ်တစ်လှည့်၊ ပြတ်တစ်လှည့်ဖြင့် ညဉ့်နက်သန်းခေါင်အထိ စာကြည့်၊ စာပြန်၊ စာအံ၊ စာတွေး၊ စာရေးစာရွတ်တို့ဖြင့် သာသနာ့တာဝန်ကို ထမ်းဆောင်နေကြရသည့် အခန်းကဏ္ဍကိုတော့ အချို့က လျစ်လျူရှုနေတတ်ကြ၏။ အနာဂတ်သာသနာတော်ကို လက်ဆင့်ကမ်းအမွေခံပြီး ထိန်းသိမ်းမည့် ပုဂ္ဂိုလ်များမှာ ပရိယတ္တိနယ်မြေမှ စာသင်သားကလေးပင် မဟုတ်ပါလော။

ဘုရားလက်ထက်တော်အခါက အနာထပိဏ်သူဌေးကြီးနှင့် ဝိသာခါတို့မှာ အလွန်စေတနာ သဒ္ဓါတရား ထက်ကြသည်။ ကြည်လည်း ကြည်ညိုတတ်ကြသည်။ တစ်နေ့သ၌ ကျောင်းသို့ဘုရားဖူးလာသော ဝိသာခါသည် သင်္ကန်းရှားပါးသဖြင့် အဝတ်မပါဘဲ ရေချိုးနေကြသော ရှင်ဇော်ကလေးများကို အပြစ်မမြင်သည့်အပြင် ကရုဏာပွားပြီး ချက်ချင်းပင် သင်္ကန်းလှူခဲ့ဖူးလေသည်။ အတုယူစရာပင် မဟုတ်ပါလား။

မှန်၏။ အချို့သော ဗုဒ္ဓသာသနာဝင်တို့သည် သာသနာ လေးမပြု၊ ဆေးကုလို့ ကျောင်းထိုင်၊ ဗေဒင်လေး ဟောပြောနိုင်၊ ဖော်ပေါလှိုင်ဝါ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ကြား ဟူသော ကဗျာလေးထဲကလို ရဟန်းတို့နှင့် မအပ်စပ်သော ဗေဒင်ဟော၊ ဓာတ်ရိုက်ဓာတ်ဆင်၊ ဆေးကုခြင်းစသော မိစ္ဆာဇီဝအနေသနမှု ပြုကြသော ရဟန်းများကိုတော့ ရဟန္တာတမျှ ကြည်ညိုတတ်ကြသော်လည်း ဆွမ်းတစ်လုပ်အတွက်သော်မျှ အရှက်မရှိစွာ မပြောရဲ၊ မဆိုရဲရှိကြသော ရဟန်းသာမဏေလေးများကိုတော့ အပြစ်တွေကိုသာ ရှုလေ့ရှိကြသည်။

လွန်ခဲ့သော တစ်နှစ်ခန့်က စာရေးသူတို့ မင်းကွန်းသို့ ဘုရားဖူးသွားရင်း တိပိဋကဆရာတော်ကို ဝင်ဖူးခဲ့ရာ ဆရာတော်က ဤသို့ အမိန့်ရှိပါသည်။ 'ကိုယ်တော်တို့ စာသင်သားတွေကို တပည့်တော်နားလည်ပါတယ်။ ယခု ထုတ်ရတဲ့ (၇၂) ညွှန်ကြားလွှာက သာသနာတော်ကို ညှိုးနွမ်းအောင်၊ အကြည်ညိုမဲ့အောင် ကြိဆောင်နေကြတဲ့ ပုဂ္ဂိုလ်တွေကို ရှင်းစေချင်လို့၊ ကဲ... ကိုယ်တော် ဈေးချိုထဲမှာ ဇလုံတစ်ချပ်နဲ့ အလှူခံရဲလား၊ လက်ဖက်ရည်ဆိုင်တွေမှာ ပိုက်ဆံ အလှူခံရဲလား၊ ဘယ်ရဲမှာလဲ၊ အစစ်က ဘယ်အဲဒီလို အလှူခံရဲမှာလည်း မဟုတ်ဘူးလား'

ဆရာတော်စကားက သွေးထွက်အောင် မှန်ပါသည်။ တကယ့်အစစ်အမှန် ရဟန်းသာမဏေများ၊ အထူးသဖြင့် စာသင်သူတို့ စာသင်သားတန်းက ထိုကဲ့သို့ အလှူခံဖို့မဆိုထားဘိ ဆွမ်း၊ ဆွမ်းဟင်း ပြည့်စုံပါရဲ့လားဟူသော အမေးကိုပင် မပြည့်စုံသော်လည်း အမှန်အတိုင်း မပြောရဲကြပါ။ အလှူခံ မရဲတင်းကြပါ။ ဤသည်များကို သတိထား၍ သေချာစွာ ဝေဖန်ပြီး ကြည်ညိုတတ်ရန်နှင့် အစစ်အတု ခွဲခြားတတ်ရန် အကာပစ်ပြီး အနှစ်ရှာတတ်ရန် အရေးကြီးကြောင်း တင်ပြလိုက်ရပါသည်။

မှတ်ချက်။ ။ ၁၉၈၇-ခုနှစ်၊ မေလထုတ် ဓမ္မဗျူဟာ စာစောင်

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

တွင်ပါရှိသော တန်ဆည်အရှင်ဣဝံသာစာရ (ရွှေတောင်ကုန်း)၏ ဆောင်း
ပါးဖြစ်ပါသည်။ ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များ အရေးတကြီး အပြည့်အစုံသိသင့်
သဖြင့် ဆောင်းပါးတစ်ပုဒ်လုံးကို ကူးယူဖော်ပြပေးခြင်း ဖြစ်ပါသည်။
ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်များ သတိထားနိုင်ကြပါစေသော်။



[Faint, mostly illegible text, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

ရေတစ်ပုံး သုံးထောင်

ကသာမြို့ အစွန်ကျသော ရပ်ကွက်ကလေးတစ်ခုရှိ အိမ်ဆိုင်ကလေး တစ်ဆိုင်သို့ လူသုံးယောက် ဦးတည်လျှောက်လာနေကြသည်။ အိမ်ဆိုင်ကလေးရှေ့သို့ ရောက်သည်နှင့် ဦးဆောင်လာဟန်တူသော အဒေါ်ကြီးတစ်ဦးက...

‘ဟေ့... အိမ်ထဲမှာ ဒေါ်အေးရှိရဲ့လား’

‘ဪ... ဒေါ်ကြီးသန်းရီပါလား၊ ရှိပါတယ်၊ အိမ်ထဲကင်းခဲ့ကြလေ’
ထိုအခါကျမှ နောက်က အသင့်ပါလာသော အသက်သုံးဆယ်ခန့် လူရွယ်က ဆီပုံးကြီးကိုဆွဲလျက် နောက်မှ အသက်နှစ်ဆယ်ခန့် မိန်းကလေးကလည်း ရှက်ရွံ့သော အမူအရာနှင့် မဝံ့မရဲ အိမ်ထဲသို့ဝင်လာကြသည်။ အိမ်ထဲဝင်ထိုင်မိကြသည်နှင့် ဦးဆောင်ခေါ်လာသော ဒေါ်သန်းရီက...

‘တခြားတော့ မဟုတ်ပါဘူး၊ ဒီသူငယ်နဲ့ သူငယ်မက ဟောဒီ

ယောဂီ (ဣန္ဒြိယ)

ဆီတစ်ပုံး အရေးတကြီးရောင်းချင်လို့တဲ့၊ ငါ့အိမ်ကို ဝင်လာတယ်၊ ငါက လည်း ဒီလောက်အများကြီးတော့ ဝယ်မစားနိုင်ဘူးအေး၊ အဲဒါ ညည်းတို့က တော့ အိမ်ဆိုင်လေးဘာလေးဖွင့်ထားတော့ ဝယ်နိုင်မလားလို့ ငါက လိုက် ပို့တာပါ၊ ဆီကတော့ ပဲဆီအစစ်ပဲအေး၊ တော်တော်ကို ကောင်းတာပါ’

‘ဒါနဲ့ ဆီက ဘယ်လောက်သားပါသလဲ’

‘ဪ... ဒါ ၁၈-ပိဿာဆုံတဲ့ပုံးပါ၊ အပြည့်အလျှံကို ထည့် ထားတာပါ၊ ပိုပဲပိုပါမယ် မလိုစေရပါဘူး’

‘ဒါနဲ့ မြို့ထဲက ဆိုင်ကြီးတွေဆီ ဘာလို့သွားမရောင်းကြတာလဲ’

‘ဟာ.... မဖြစ်ဘူး ခင်ဗျ၊ မြို့ထဲမှာဆို ကျွန်တော့်အဖေရဲ့အသိ တွေချည်းပဲ၊ ဦးချစ်မြ၊ ဒေါ်တင်တင်ဆို လူတိုင်းသိပါတယ်၊ ကျွန်တော့် ကိစ္စကို အဖေတို့ မသိစေချင်လို့ပါ’

လူရွယ်က တစ်ဖက်မှ ဘာကိစ္စလဲဟူသော အမေးမရောက်လာခင် ပါလာသော မိန်းကလေး၏ မျက်နှာကို တစ်ချက်လှမ်းကြည့်လိုက်သည်။ မိန်းကလေးကိုယ်ထားသော လက်ဆွဲအိတ်ကို မြင်လိုက်လျှင်ပင် ဘာကိစ္စ ဆိုတာ မပြောဘဲသိနိုင်သော အနေအထားတွင် ရှိနေသည်။ မိန်းကလေး၏ မျက်နှာမှာလည်း နှင်းဆီရောင်သန်းလျက် မြေကြီးကိုသာ စိုက်ကြည့်နေ ရှာသည်။ ငယ်ရာမှ ကြီးလာသော ဒေါ်အေးအဖို့လည်း သည်လို အခက် အခဲမျိုးနှင့် တွေ့နေသော သူငယ်နှစ်ဦးကိုလည်း စိတ်ထဲမှ အလိုလိုပင် ကူညီနေချင်မိသည်။

‘ဒါနဲ့ ဈေးနှုန်းကရောကွဲ့’

‘ဒီတစ်ပုံးလုံးကို သုံးထောင်ပဲ ပေးပါတော့ခင်ဗျာ၊ ၁၉-ပိဿာ နီးနီးရှိပါတယ်၊ ဈေးအများကြီး လျှော့ပေးရပေမယ့်လည်း ရောင်းရတဲ့

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်သိပ္ပံများအကြောင်း

ကျွန်တော်တို့ကပဲ ကျေးဇူးတင်ပါတယ်။ ကျွန်တော်တို့ နှစ်ယောက်အတွက် ဒီငွေက မရရင် မဖြစ်လို့ပါ။ ကျွန်တော်တို့ အခက်အခဲကို ကူညီတဲ့အနေနဲ့ ယူလိုက်ပါခင်ဗျား'

လူရွယ်၏ သနားစဖွယ်အသံကလေး အဆုံးမှာပင် ဒေါ်အေးက ပလတ်စတစ်ပုံးမှ အဖုံးကို လှည့်၍ ဖွင့်လိုက်ရာ အဖုံးမကျွတ်ခင် တစ်ဝက်လောက်အရောက်မှာပင် မွှေးကြိုင်နေသော ပဲဆီများက လျှံကျလာသဖြင့် ချက်ချင်း ပြန်ပိတ်လိုက်ရသည်။ ဆီများက ပုံးနှင့်အပြည့်အလျှံ ထည့်ထားသည်ကတော့ အသေအချာပင်။

လျှံကျလာသော ဆီများကို လျှာနှင့်လျက်ပြီး နမ်းကြည့်လိုက်တော့လည်း ပဲဆီမှ ပဲဆီအစစ်၊ ဘာမျှ သံသယဖြစ်ဖွယ်မရှိ၊ ပဲဆီတစ်ပိဿာ ကာလပေါက်ဈေး သုံးရာကျော်လောက် ရှိနေချိန်တွင် ယခုရမည့်ဈေးက တစ်ပိဿာ တစ်ရာငါးဆယ်ဈေးပင် မရှိ၊ သူတို့အခက်အခဲလည်း ပြေလည်၊ မိမိလည်း များများမြတ်ဆိုသည့် သဘောဖြင့်...

'ကလေး... မင်းတို့လည်း အဆင်ပြေသွားအောင် အဒေါ်ယူလိုက်ပါ့မယ်၊ ကဲ... သမီးရေ ဒန်အိုးယူခဲ့၊ ဆီတွေ လှယ်ထည့်ရအောင်'

ဒေါ်အေးက လူရွယ်အား ငွေသုံးထောင်ကို ထုတ်ပေးရင်း သမီးဖြစ်သူကို ဆီလှယ်ရန် ဒန်အိုးယူလာခိုင်းလိုက်သည်နှင့် လူရွယ်က...

'ဟာ... အဒေါ် လှယ်မနေပါနဲ့တော့ နေပါစေ၊ အဲဒီဆီပုံးကို ကျွန်တော်တို့လိုက်ပို့တဲ့ အဒေါ်ကြီးကိုပဲ ပေးလိုက်ပါ၊ ကျွန်တော်တို့ မယူတော့ပါဘူး၊ ကျေးဇူးတင်ပါတယ် ခင်ဗျား၊ သွားပါဦးမယ်'

လူရွယ်တို့ပြန်သွားပြီး ခဏအကြာမှာပင် ဒေါ်အေးက သူ့အစ်မဖြစ်သူဒေါ်မြင့်ကို အခေါ်လွှတ်ပြီး အိမ်စားဖို့အတွက် ပိဿာလုံးယူရန်

ဇေယျာရုံ (ရွှေပြည်သာ)

ပြောရာ ဒေါ်မြင့်ကလည်း ဝမ်းသာအားရပင် ၅-ပိဿာယူမည်ဆိုသဖြင့် ဒန်အိုးကြီးတစ်လုံးထဲသို့ ဆီများကိုသွန်ချရာ ရေများကို သွန်ချသည့် အတိုင်း တဗွမ်းဗွမ်းနှင့် မြည်နေသဖြင့် မသင်္ကာသော ဒေါ်မြင့်က လက်နှင့်ကိုင်ကြည့်လိုက်ပြီး-

‘ဟဲ့... မိအေး၊ ညည်းဟာက ဆီမှမဟုတ်ဘဲ၊ အဝါရောင်ဆေးဆိုးထားတဲ့ရေတွေပဲ၊ ဟဲ့... ညည်းတို့တော့ အလိမ်ထိပြီ၊ ဘယ်က လာရောင်းတာတဲ့လဲ၊ ငါ့ကိုပြောစမ်း’

ထိုအခါကျမှပင် ဒေါ်အေးတို့မိသားစုမှာ မိမိတို့ အလိမ်ခံရမှန်း သိကြပါတော့သည်။ အဖုံးကိုဖွင့်ဖွင့်ချင်းကျလာသော ဆီများကတော့ ပဲဆီအစစ်များပင်။ ထိုပဲဆီအစစ် တစ်ဆယ်သားခန့်ကို ပလတ်စတစ်အိတ်အတွင်းထည့်ပြီး ဆီပုံးအဝတွင်ထားကာ အဖုံးနှင့်ညှပ်ပိတ်ထားခြင်းပင်။ ထို့ကြောင့် အဖုံးကိုဖွင့်လိုက်သည်နှင့် ပလတ်စတစ်အိတ်အတွင်း ထည့်ထားသော ပဲဆီအစစ်များက အရင်ထွက်လာသဖြင့် စစ်ဆေးကြည့်ရှုသူမှာ ဘယ်လိုမှ အမှန်ကို မသိနိုင်တော့ပါ။

ထွက်ပြေးကြမည့် သမီးရည်းစားကို ကယ်တင်ချင်သည့် ကရုဏာ၊ နောက် မတန်တဆ အချောင်လိုချင်သည့် လောဘ၊ ဤအညှာနှစ်ခုကို ပိုင်ပိုင်နိုင်နိုင် အသုံးချ၍ လိမ်လည်သွားခြင်းဖြစ်ရာ ဤအကြောင်းအရာကို မသိသူများအနေဖြင့် အလိမ်ခံထိနိုင်ပါသည်။ အချင်းချင်း အလိမ်မထိကြရအောင် တစ်ဆင့်စကားတစ်ဆင့်နားဖြင့် ပြောကြားပေးကြပါကုန်လော့။

မှတ်ချက်။ ။ ၁၉၉၇ ခုနှစ်ထုတ် မြတ်ကြေးမုံမဂ္ဂဇင်းမှ ဖတ်ရှုရသည်ကို ပြန်လည်၍မှတ်မိသမျှ တင်ပြခြင်းဖြစ်ပါသည်။ လ မမှတ်မိတော့ပါ။



တောသားတို့၏ နေထိုင်မှု

တောသားများသည် နေထိုင်ရာ နေရာကို ရွေးချယ်ရာတွင် အထူးဂရုပြုကြသည်။ သူတို့သည် နေရာကို ရွေးချယ်ရာတွင် မြေပြင်ညီညာပြီး ရေအရင်းအမြစ်များ ရှိပြီး နေရာအလှည့်အပြောင်း လွယ်ကူစေရန် ရည်ရွယ်ကြသည်။ သူတို့သည် နေရာကို ရွေးချယ်ရာတွင် မြေပြင်ညီညာပြီး ရေအရင်းအမြစ်များ ရှိပြီး နေရာအလှည့်အပြောင်း လွယ်ကူစေရန် ရည်ရွယ်ကြသည်။ သူတို့သည် နေရာကို ရွေးချယ်ရာတွင် မြေပြင်ညီညာပြီး ရေအရင်းအမြစ်များ ရှိပြီး နေရာအလှည့်အပြောင်း လွယ်ကူစေရန် ရည်ရွယ်ကြသည်။

လည်လွန်းတံဘီး ချေးသင့်

တောသားဆိုလျှင် ရိုးအ၊ သည်ဟူသော အစွဲသည် မြို့သားအားလုံး နီးပါး၌ ရှိနေတတ်သည်။ သို့သော် တောသားတိုင်း မအကြပါ။ လည်ဝယ်သော တောသားနှစ်ယောက်ကြောင့် မြို့မှ ရဲပစ္စည်းရောင်နှစ်ယောက် ဘင်ကျုံးကုလားဘဝကို ချုတ်ချက်ရောက်ခဲ့ကြရဖူးသည်။ လွန်ခဲ့သော နှစ်ပေါင်း ၃၀ ကျော် တစ်ခုသောနေ့တွင် တောသားနှစ်ယောက်သည် ညအချိန် မြို့တွင်း လှည့်လည်လမ်းလျှောက်ရင်း တစ်ယောက်သောသူက ဗိုက်နာပြီး ဝမ်းသွားချင်သဖြင့် အခက်ကြုံနေကြသည်။

မြို့ပေါ်ဖြစ်သည့်အတွက် တောမှာလို လွယ်လွယ်ကူကူ ဝင်ထိုင်စရာ ချုံပုတ်လည်းမရှိသောကြောင့် မတတ်သားသည့်အဆုံး လမ်းလယ်ကောင်မှာပင် ပုဆိုးခြုံပြီး ဖြစ်သလိုသွားရတော့သည်။ တစ်ယောက်က မတ်တပ်ရပ်ကာ အကာအကွယ်လှုပ်ပေးလိုက်သည်။ လူပြတ်သောအချိန် ဖြစ်နေသည့်အတွက် တစ်မျိုးတစ်ဖုံတော့ အဆင်ပြေသွားရသည်။

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

ကံဆိုးချင်တော့ ကိစ္စပြီးစအချိန်မှာပင် ကင်းလှည့်နေသော ပတ္တရောင် ရဲ့နှစ်ယောက်က ချက်ချင်းဆိုသလို သူတို့ရှိရာသို့ စက်ဘီးကို အပြင်းနင်း လာသည်ကို တွေ့လိုက်ရသည့်အတွက် တောသားနှစ်ယောက်မှာ များစွာ ထိတ်လန့်သွားရှာသည်။ ကြီးမားသော အပြစ်ကြီးမဟုတ်သော်လည်း လမ်းလယ်ကောင်မှာ မစင်စွန့်သည်ကို သိသွားလိုကတော့ နားရင်းပါးရင်း အအုပ်ခံရမှာကတော့ သေချာသလောက် ဖြစ်နေသည်။

ဘယ်လိုမှ မဇရှောင်နိုင်တော့သည့်အဆုံး ရဲသားတို့အနားမရောက် ခင်မှာပင် မစင်ပုံကို အသင့်ဆောင်ထားသော ခမောက်ဖြင့် အုပ်ထားလိုက် ရတော့သည်။ အနားရောက်လာသော ရဲသားနှစ်ယောက်က-

‘ဟေ့... မင်းတို့နှစ်ယောက် ဒီအိမ်ရှေ့မှာ ဘာချောင်းနေကြတာ လဲ၊ မှန်မှန်ပြောစမ်း’

ထိုအခါ တစ်ဏှိပုတ္တိညာဏ်ကောင်းလှသော တောသားက-

ကျွန်တော်တို့ ဟိုဘက်လမ်းထဲကအိမ်မှာတည်းတဲ့ တောက ဘုရားဖူးစည်သည်တွေပါ ခင်ဗျား၊ မယုံရင် လိုက်မေးပါ။ စောစောက အယ်ကလွတ်လာမှန်းမသိတဲ့ ကြက်တူရွေးလေးတစ်ကောင်တွေ့တာနဲ့ နှစ်ယောက် ဝိုင်းဖမ်းနေကြတာပါ’

တောသားနှစ်ယောက်မျက်နှာမှာလည်း မသိကာစရာ မတွေ့ရ သဖြင့် ရဲ့နှစ်ယောက်က ကြက်တူရွေးဆိုသည်ကို စိတ်မင်စားသွားကြ သည်။ ယဉ်ပြီးသား ကြက်တူရွေးတစ်ကောင် အလကားရနည်းလားဟူ သောအတွေးဖြင့် ရဲသားနှစ်ယောက်က-

အဲဒီကြက်တူရွေး ဘယ်မလဲ၊ မိပြုလား’

‘မိပါတယ်ခင်ဗျား၊ ဟောဟို ခမောက်အောက်မှာပါ။ ကျွန်တော်တို့’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ယူသွားရမလား'

'ဘာ... သူများကြက်တူရွေး အလကားယူချင်ရတာလဲ၊ နားရင်း ရိုက်လိုက်လို့ ခုနစ်ရက်ထမင်းမစားနိုင် ဖြစ်သွားရော့မယ်၊ သွားကြ မြန် မြန်။ ကြာရင် မင်းတို့နှစ်ယောက်လုံး အချုပ်ခန်းထဲ ဆွဲထည့်ပစ်လိုက်မယ်'

အချုပ်ခန်းဟူသောစကားကို ကြားသည်နှင့် တောသားနှစ်ယောက် ဖနောင့်နှင့်တင်ပါး တစ်သားတည်းကျအောင် ပြေးကြတော့သည်။ ခမောက် ရော၊ ကြက်တူရွေးရော ရမည့်အရေးကိုတွေးပြီး ရဲသားနှစ်ယောက် အားရ ပါးရ ပြုံးလိုက်ကြသည်။ တောသားနှစ်ယောက် တော်တော်ဝေးဝေး ရောက်သွားသည်နှင့် ရဲတစ်ယောက်က-

'ကဲ...ကံများကောင်းချင်တော့ စုတ်ရောလာဘ်ရော တစ်ခါတည်း ဝင်တာပဲဟေ့၊ ခမောက်ရော ကြက်တူရွေးရော ရပြီပေါ့ကွာ၊ လွတ်ခွားမှာ စိုးရတယ်ကွ၊ အဲဒီတော့ မင်းနဲ့ငါ နှစ်ယောက်ညှပ်ဖမ်းမှရမယ်၊ မင်းက ခမောက်ကို ကိုင်ပြီး အသာလေးဟပေးလိုက်၊ ငါက လက်နှစ်ဖက်နဲ့ တစ်ခါတည်း ဆုပ်ဖမ်းလိုက်မယ်'

တစ်ယောက်က ခမောက်ကို ဟအပေးလိုက်တွင် တစ်ယောက်က ခမောက်တွင်း လက်နှစ်ဖက်ဝင်၍ အားရပါးရဆုပ်ဖမ်းလိုက်ရာ ကြက်တူ ရွေးအစား ပုပ်ဟောင်ပျော့အိနေသော မစင်များကို ပယ်ပယ်နယ်နယ် ဆုပ်မိသွားပါတော့သည်။ ရွံရှာလွန်းလှသော ၎င်းရဲသားက 'အမယ် လေး... မစင်တွေဗျ'ဟုအော်ရင်း လက်နှစ်ဖက်ကို အားရပါးရခါလိုက် ရာ စက်ဘီးခြေနင်းဖြင့် ရိုက်မိသွားသဖြင့် နာလွန်းလှရကာ 'အားရိုးရိုး သေပါပြီဗျ'ဟု အော်ဟစ်ရင်း ရိုက်မိသောလက်ကို ပါးစပ်တွင်းထည့်၍ စုပ်မိသွားပါတော့သတည်း။ လည်လွန်းတဲ့ဘီး ချေးသင့်ဟူသော စကား ပုံနှင့် ကိုက်ညီပစ္စေ။



ယုံတံလို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

ဆိုင်ရှင်က ကရုဏာသက်သည့်ပုံစံဖြင့် အမေကြီးတို့က ဘယ်လောက်ပါလို့လဲ။

ဈေးက သုံးပုံတစ်ပုံတင်ထားပြီးဖြစ်သောကြောင့် တစ်ထောင်လောက်ပါခဲ့ရင် ရောင်းလိုက်ရန်ဖြစ်သည်။ သို့သော် အမေကြီးက- အမေကြီးတို့ဆီမှာ ငွေသားငါးရာပဲပါတယ်၊ အဲဒါ ပွဲရုံမှာ စပါးသွင်းလို့ရတဲ့ငွေ အကုန်ပဲ။

ဟာ... အလောက်နဲ့တော့ ဘယ်လိုမှမဖြစ်နိုင်ဘူး ခင်ဗျာ အဘိုးကြီးအဘွားကြီး တစ်ယောက်မျက်နှာ တစ်ယောက်ကြည့်လိုက်ကြရင်း အဘိုးကြီးက-

ကဲ... ဘယ်လိုလဲ ရှင်မ၊ ငါ မပြောဘူးလား၊ ဒီလောက်ငွေနဲ့ မင်းလိုချင်တဲ့ကက်ဆက် မရနိုင်ပါဘူးလို့။

တော်ကလည်း အသာနေစမ်းပါ၊ ကျုပ်ဆီမှာ ငါးမူးသားဆွဲကြီးလေးတစ်ကုံးပါလာတယ်၊ လိုလိုမယ်မယ်ယူလာတာ အတော်ဖြစ်သွားတာပေါ့။

ရှင်မ... စဉ်းစားပြီးမှလုပ်နော်၊ တော်ကြာမှ စိတ်ပြောင်းပြီး မဝယ်ချင်တော့ဘူး မလုပ်နဲ့။

မလုပ်ပါဘူးတော်၊ ဒီကက်ဆက် ဒီတစ်ခါတော့ ဖြစ်အောင်ကို ဝယ်မှာ၊ ကဲ... သူငယ် ဒီဆွဲကြီးက ငါးမူးသားရှိတယ်၊ ဘယ်လောက်ထားပေးနိုင်မှာလဲ။

ကောင်တာကိုကျော်၍ပေးလိုက်သော အမေကြီးလက်ထဲမှ ဆွဲကြီးလေးကို ဆိုင်ရှင်က လှမ်းယူလိုက်ရင်း-

ငါးမူးသားပြည့်ရင်တော့ အခု ကာလပေါက်ဈေးနဲ့ဆိုရင် တစ်

သတ္တရင်း (ရွှေပြည်သာ)

ထောင်ထားပေးရမှာပေါ့၊ ဒါပေမဲ့ ဒီအတိုင်းလက်ခံလိုတော့ မဖြစ်သေးဘူး ခင်ဗျာ၊ ရွှေဆိုင်သွားပြီး ငါးစူးသားပြည့်မပြည့်ရယ်၊ ရွှေစစ်၊ ဓိစစ်ရယ် ကို စမ်းသပ်အကြည့်ခံမှဖြစ်မယ်၊ ခင်ဗျာ...
...စမ်းသပ်ကြည့်နိုင်ပါတယ်၊ မြန်မြန်သွားလိုက်ပါ။
ဆိုင်ရှင်ထွက်သွားပြီး တစ်အောင်လောက်အကြာမှာပင် ပြန်ရောက်လာသည်။

ပြန်က... အမေကြီး၊ ရွှေလည်းစစ်ကွယ်၊ ငါးမူးသားလည်း ပြည့်ကွယ်၊ အဲဒီတော့ စောစောကငါးရာရယ်၊ အခုဆွဲကြီးက တစ်ထောင်ရယ်ဆိုတော့ ထောင့်ငါးရာအကိုက်ပါပဲ၊ ကက်ဆက်ယူမှာဆိုရင် ထုပ်လိုက်တော့မယ်နော်။

ဆိုင်ရှင်၏စကားသံအံ့ဆုံးမှာပင် အမေကြီးက...
ဟင့်အင်း... မဝယ်တော့ဘူး၊ အမေကြီးဆွဲကြီး ပြန်ပေးတော့...
ပြောပြောဆိုဆို ဆိုင်ရှင်လက်ထဲမှဆွဲကြီးကို ပြန်ယူပြီး အတွင်းခံအင်္ကျီအိတ်ထဲ သေချာပြန်ထည့်လိုက်သည်။ ပြီးမှ-

...ဒီဆွဲကြီးလေးက အမေကြီးတို့ ဘိုးစဉ်ဆောင်ဆက်က ဆွဲကြီးလေးမို့ မရောင်းရက်တော့လို့ပါကွယ်၊ အမေကြီးကို ခွင့်လွှတ်ပါ။
ပြောပြောဆိုဆို အဘိုးကြီးကိုဆွဲခေါ်၍ ဆိုင်ထဲမှထွက်လာခဲ့ကြရာ ဆိုင်ရှင်မှာ ဘာပြောရမှန်းမသိအောင် ပါးစပ်အဟောင်းသားနှင့် ဖြစ်နေပါတော့သည်။ ဆိုင်ပေါက်ဝရောက်သောအခါ နှစ်ယောက်သား စကားများနေကြပြန်သည်။

ရှင်မ... နင် ဘယ်လိုလုပ်လိုက်တာလဲ၊ မရှိဆိုင်ရှင်ကို ဘယ်လိုလောက်အားနာစရာကောင်းသလဲ၊ ခုဝယ်မယ်၊ ခြုံမဝယ်ဘူးနဲ့ နောက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအိမ်သိပ္ပံများအကြောင်း

ငါ့ကို ကက်ဆက်ဝယ်ပေးပါလို့ ဘယ်တော့မှမပူဆာနဲ့၊ နင်နဲ့လည်း ဘယ်
တော့မှ ဈေးမသွားတော့ဘူး၊ ဘယ်ဗျာ... ကလေးမဟုတ် ကုလားမဟုတ်၊
ခုယူမယ်၊ ခုမယူဘူးနဲ့

ခူပူနေသော အဘိုးကြီးကို အမေကြီးက မျက်နှာငယ်လေးနဲ့
ပြန်ကြည့်ရင်း

‘ကပါတော့၊ ဒါလောက်ဖြစ်လှတာ တစ်ခါတည်းဝယ်လိုက်ပါ
တော့၊ ကျုပ် ဆိုင်အပြင်ကပ် စောင့်နေတော့မယ်’

‘စိတ်ကို ယတိပြတ် ဆုံးဖြတ်လိုက်ဟန်ဖြင့် အမေကြီးက ဆွဲကြီး
လေးကို ဘကြီးအား ပြန်ထုတ်ပေးလိုက်ရင်း ဆိုင်ပြင်သို့ အရင်ထွက်သွား
နှင့်ပါတော့သည်။ ဘကြီးက ဆွဲကြီးနှင့်ငွေငါးရာကိုယူလာကာ ဆိုင်ရှင်
ကိုပေးလိုက်ရင်း-

‘ကဲ... မောင်ရင် ဒီငွေနဲ့ဆွဲကြီးကို မြန်မြန်သိမ်းပြီး ကက်ဆက်
ကိုသာ ချက်ချင်းထုတ်ပေးလိုက်ပါတော့’

ဈေးတင်ထားပြီးဖြစ်သဖြင့် အမြတ်များများရမည်ကို တွေးမိသော
ဆိုင်ရှင်က ကက်ဆက်ကို မြန်မြန်ထုပ်ပိုးပြီး ပေးလိုက်ပါသည်။ ဤ
ကက်ဆက်တစ်လုံး ရောင်းရငွေဖြင့်ပင် ယနေ့အဖို့ တွက်ချေကိုက်သွားပြီ
ဟူသောအတွေးနှင့်အတူ ဆွဲကြီးလေးကိုယူလာပြီး စောစောက ရွှေဆိုင်ကို
ပင် တစ်ခါတည်းသွားပြီး ရောင်းပါသည်။

ရွှေဆိုင်ရှင်က ဆွဲကြီးလေးကို သေချာကိုင်ကြည့်ရင်း-

‘ဟာ... မင်းဆွဲကြီးက ရွှေအတုကြီးပဲ’

‘ဟေ့ကောင်၊ မနောက်နဲ့ကွာ၊ ဒါ စောစောက မင်းစမ်းသပ်ကြည့်
တဲ့ဆွဲကြီးပဲကွ’

လက်ထပ် (ရွှေယုတ္တ)

'မဟုတ်ဘူး သူငယ်ချင်း၊ မင်း အလိမ်ခံလိုက်ရပြီ၊ ငါ ရွှေရောင်း ပြီး ပန်းထိမ်လုပ်စားနေတဲ့သူပဲ သိတာပေါ့၊ ကဲ့ပါ... မင်း စိတ်ချမ်းသာအောင် သေချာထပ်စစ်ပေးပါ့မယ်'

ပြောပြောဆိုဆို သေချာထပ်ပြီး စမ်းသပ်ကြည့်သောအခါ ကျမှ အတုမှန်း ပိုပြီး သေချာသွားပါတော့သည်။ ပထမ ရွှေအစစ်ဆွဲကြိုးကို ထုတ်ပေးအစစ်ခံလိုက်ပြီး တကယ်ပေးရသောအခါတွင်မှ မဝယ်တော့ဘူး လိုလိုနှင့် ဆွဲကြိုးအစစ်ကိုပြန်တောင်းပြီး အတုနှင့်လဲ၍ ပြန်ပေးခဲ့ခြင်းပင် ဖြစ်ပါသည်။ ဤတကယ်ဖြစ်ရပ်လေးကို ဈေးသည်အများ သတိရှိနိုင်ရန်အတွက် ရေဒီယိုမှ ဇာတ်လမ်းပမာအဖြစ် ထုတ်လွှင့်ခဲ့ပါသေးသည်။ တောသားများကို လူရိုးလူအများဟု ထင်နေမိတတ်သော မြို့သားတို့၏ ဉာဉ်ကို အသုံးချ၍ ပိပိရိုရို လိမ်လည်သွားခြင်းပါတကား။



ဒါကို ကိုယ်တို့ သိတဲ့ အတိုင်း အတုမဟုတ်ဘဲ... မဟုတ်ဘူး သူငယ်ချင်း... မင်း အလိမ်ခံလိုက်ရပြီ... ငါ ရွှေရောင်း ပြီး ပန်းထိမ်လုပ်စားနေတဲ့သူပဲ သိတာပေါ့၊ ကဲ့ပါ... မင်း စိတ်ချမ်းသာအောင် သေချာထပ်စစ်ပေးပါ့မယ်

ပြောပြောဆိုဆို သေချာထပ်ပြီး စမ်းသပ်ကြည့်သောအခါ ကျမှ အတုမှန်း ပိုပြီး သေချာသွားပါတော့သည်။ ပထမ ရွှေအစစ်ဆွဲကြိုးကို ထုတ်ပေးအစစ်ခံလိုက်ပြီး တကယ်ပေးရသောအခါတွင်မှ မဝယ်တော့ဘူး လိုလိုနှင့် ဆွဲကြိုးအစစ်ကိုပြန်တောင်းပြီး အတုနှင့်လဲ၍ ပြန်ပေးခဲ့ခြင်းပင် ဖြစ်ပါသည်။ ဤတကယ်ဖြစ်ရပ်လေးကို ဈေးသည်အများ သတိရှိနိုင်ရန်အတွက် ရေဒီယိုမှ ဇာတ်လမ်းပမာအဖြစ် ထုတ်လွှင့်ခဲ့ပါသေးသည်။ တောသားများကို လူရိုးလူအများဟု ထင်နေမိတတ်သော မြို့သားတို့၏ ဉာဉ်ကို အသုံးချ၍ ပိပိရိုရို လိမ်လည်သွားခြင်းပါတကား။

ဗိုလ်အောင်ဒင် ပြန်လာပြီ

ဗိုလ်အောင်ဒင်သည် လွန်ခဲ့သည့်နှစ်ပေါင်းများစွာက မင်းသား ခင်မောင်ရင်တို့ သရုပ်ဆောင်ခဲ့စဉ်ကလည်း နာမည်ကြီးခဲ့သည်။ ယခုတစ် ဖန် ကောလိပ်ဂျင်နေဝင်းလက်ထက်တွင်လည်း တိပ်ခွေမှတစ်ဆင့် နာမည် ကြီးခဲ့ပြန်သည်။ ထိုနည်းတူစွာ လွန်ခဲ့သောနှစ်ပေါင်း ၃၀-ကျော်မှ ရွှေတု လိမ်လည်နည်းသည် ၁၉၉၇ ခုနှစ်အတွင်းတွင် ပြန်လည်ခေတ်စားလာခဲ့ ပြန်လေပြီ။

နေရာကား မန္တလေးမြို့မှ နာမည်ကြီးရွှေဆိုင်တစ်ဆိုင်၊ ရတနာ မျိုးစုံကို ယောက်ျားတန်မဲ့ မျိုးစုံအောင်ဝတ်ထားသော အသက်၄၀-ခန့် သားသားနားနား အမျိုးသားတစ်ယောက် ဆိုင်ထဲသို့ ခပ်မှန်မှန်ခြေလှမ်း များလှမ်းပြီး လူကြီးလူကောင်းဟန်ဖြင့် ဝင်လာသည်။ သူ၏ဥပစိနှင့် ဝတ်ဆင်ထားသောရတနာတို့ကို မြင်လိုက်ရုံဖြင့် ကြေးနည်းဈေးဝယ်များ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

အလိုလို ဘေးကိုရှုံ့ပေးမိလျက်သား ဖြစ်သွားကြသည်။ ဆိုင်ရှင်က ပျာပျာ သလဲဖြင့် -

‘အစ်ကိုကြီး ဘယ်လိုပစ္စည်းများ လိုချင်ပါလိမ့်’

‘ကျွန်တော့်အတွက် နောက်ထပ်ပစ္စည်း မလိုတော့ပါဘူးဗျာ၊ လိုနေ တာက ငွေပါ။ အဲဒါ ဒီပစ္စည်းလေးကို ရွှေရည်စစ်ပြီး ဈေးဖြတ်ပေးပါ။ အဆင်ပြေရင်တော့ ခင်ဗျားတို့ဆိုင်မှာ တစ်ခါတည်းရောင်းသွားမယ်’

သူတင်ပေးလိုက်သောပစ္စည်းက တန်ဖိုးကြီးမားလှသော အခေါက် ရွှေတောင့်ကြီးတစ်တောင့်၊ ဆိုင်ရှင်က ဝမ်းသာလုံးဆိုသော မျက်နှာဖြင့် ချက်ချင်းကောက်ယူကာ အရည်အသွေးကို သေချာစစ်ဆေးလိုက်သည်။ အရည်အသွေးကောင်းလှသော ရွှေတောင့်ကြီးဖြစ်နေသည်ကို သေချာတွေ့ လိုက်ကြရသည်။ ဈေးညှိလိုက်တော့ သိန်းနှစ်ဆယ်နှင့် တည့်မလိုဖြစ်သွား ပြီးမှ ထိုသူက ဘယ်လိုစိတ်ကူးပေါက်သည်မသိ။ သူ့ရွှေတောင့်ကို အိတ် ထဲပြန်ထည့်ပြီး

ခဏဗျာ၊ ကျွန်တော် ရောင်းသင့်၊ မရောင်းသင့် စဉ်းစားပါရစေဦး။ ကျွန်တော့်မှာ ငွေအခက်အခဲကလည်း ဖြစ်နေတာအမှန်ပါ။ ဒါပေမဲ့ ဒီပစ္စည်း ကြီးကို အပြီးအပိုင်ရောင်းပစ်ရမှာမလည်း နှမြောသလိုဖြစ်နေတယ်ဗျာ၊ ထိုသူသည် ထိုသို့ပြောဆိုပြီး ဆိုင်ပေါက်ဝတွင် ဆယ်မိနစ်ခန့်ရစ် ပြီး စဉ်းစားခန်းဝင်နေသည်။ ခဏကြာမှ

ကဲဗျာ၊ မထူးတော့ပါဘူး၊ ကျွန်တော်ရောင်းတော့မယ်၊ စိတ်နှလုံး ကို ခုံးခုံးချလိုက်ပါပြီ’ ဟု ပြောဆိုကာ စောစောက အခေါက်ရွှေတောင့် ကြီးကို ဆိုင်ရှင်လက်ထဲ ထည့်ပေးလိုက်ပါတော့သည်။ ဆိုရှ်ရစ်လည်း စောစောလေးတော့ စစ်ပြီးသားဖြစ်နေတော့ ထပ်မစစ်တော့။ တစ်ခါတည်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုပ္ပားအကြောင်း

ငွေကို အကျေချေပေးလိုက်တော့သည်။ ရွှေအတုဖြစ်ကြောင်းကိုကား နာရီပေါင်းအတော်ကြာမှ သိကြရသည်။ မိနစ်ပိုင်းအချိန်လေးအတွင်း စစ်ဆေးကြည့်ချိန်က အစစ်ကိုပြပြီး တကယ်ပေးချိန်ကျမှ အတုကို ချလိုက်ခြင်းသည်ကား ရိုးစင်းလှသော လိမ်လည်နည်းဖြစ်သော်လည်း အလိမ်မခံရှုဖူးသေးသူ၊ ယခုဖြစ်ရပ်ကို မသိသေးသူများအတွက်ကား လိမ်နည်းအသစ်အဆန်းဟု ထင်စရာပါတကား။

တောသားလည်တော့

တစ်ခါက မြို့သားအရက်သမားတစ်ယောက်နှင့် တောသားအရက်သမားတစ်ယောက်တို့ အရက်ဆိုင်တစ်ဆိုင်တွင်ဆုံပြီး အတူတူအရက်သောက်ဖြစ်ကြသည်။ အရက်မူးလာသောအခါ မြို့သားအရက်သမားက-

‘ဒီမှာ သူငယ်ချင်း၊ မင်းနဲ့ငါ စကားထာဝှက်တမ်း ကစားကြရအောင်ကွာ၊ ပိုပြီး ပျော်အောင်ပေါ့’

ထိုအခါ တောသားအရက်သမားက-

‘အေး... ဝှက်တာပေါ့၊ ဒါပေမဲ့ ငါကတော့သားဆိုတော့ မင်းတို့ မြို့သားတွေထက် ဗဟုသုတနည်းတယ်၊ အတယ်၊ ဒါကြောင့် မင်းဝှက်တာကို ငါက မဖြေနိုင်ရင် ငွေအစိတ်ပဲပေးမယ်၊ ငါဝှက်တာကို မင်းမဖြေနိုင်တော့ရင်တော့ ၅၀ ပေးရမယ်၊ အဲဒါ သဘောတူရင် စကားထာဝှက်မယ်ကွာ’

‘အေး... သဘောတူပါတယ်ကွာ၊ ကဲ... မင်းပဲ အရင်စဝှက်ကွာ’ ထိုအခါ တောသားက မေးသည်မှာ-

‘ကဲ... ငါမေးမှာကို မင်းကြိုတင်ပြီး စဉ်းစားလို့ရအောင် ပြော

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ထားရမယ်ဆိုရင် သတ္တဝါတစ်ကောင်ကိုဝှက်မှာပဲကွ၊ အဲဒီသတ္တဝါဟာ တောင်ပေါ်ကိုတက်ပြီး အစာရှာတုန်းက ခြေနှစ်ချောင်းပဲရှိတယ်၊ ဒါပေမဲ့ တောင်အောက်ကို ပြန်ပြီးဆင်းလာတဲ့အခါ ကျတော့ ခြေထောက်သုံးချောင်း ဖြစ်လာတယ်တဲ့၊ အဲဒါ ဘာကောင်လဲဆိုတာ ဖြေပေတော့ဟေ့'

တောသား၏ အမေးအဆုံးတွင် မြို့သားအရက်သမားမှာ အမူးပြေ သည်အထိ သူသိထားသော သတ္တဝါများကို တွေးတောပါသော်လည်း ဘယ်လိုမျှ မပေါ်နိုင်ဖြစ်နေသဖြင့် နောက်ဆုံး ငွေငါးဆယ် ထုတ်ပေးလိုက် ရပါတော့သည်။ ငွေငါးဆယ်ရပြီးသည်နှင့် တောသားက-

'ကဲ... ငါ့အလှည့်ပြီးပြီ၊ မင်းအလှည့်ပဲ၊ မေးချင်တာမေးကွာ'

'ငါကတော့ တခြား ဘာမှမမေးချင်တော့ပါဘူးကွာ၊ မင်း စောစော ကမေးခဲ့တဲ့အကောင်ဟာ ဘာကောင်လဲဆိုတာကိုပဲ ပြန်ပြီးမေးပါရစေ' ထိုအခါ တောသားက စောစောကရလိုက်သော ငါးဆယ်ထဲမှ အစိတ်ကို ပြန်ထုတ်ပေးရင်း-

'အဲဒီမေးခွန်းကို ငါကိုယ်တိုင်လည်း မဖြေနိုင်ဘူးကွ၊ အဲဒါကြောင့် ရော... ငွေအစိတ် ပြန်ယူပေတော့' ဟူ၏။ တောသားတိုင်းကိုလည်း အထင်သေး၍တော့ မရပါ။ ဤသို့ လည်ဝယ်သော တောသားများလည်း ရှိပါသေးသည်။ သို့သော် အချို့သောမြို့သူမြို့သားများကား တောကိုက် ပေါက်နေသော ပုဂ္ဂိုလ်တစ်ယောက်ကို တွေ့လိုက်ရသည်နှင့် နည်းနည်း တော့ အထင်သေးစိတ်လေး ဝင်မိသည်သာ။

ထိုအထင်သေးစိတ်ကပင် မိမိကို ဒုက္ခပေးသွားတတ်ပုံကို အောက် တွင် ဆက်လက်ဖော်ပြအပ်ပါသည်။



ဈေးသည်သတိ (၂)

ကုန်တိုက်ဘက်မှ သိမ်ကြီးဈေးဘက်သို့ ကူးရန် ခုံးကျော်တံတားပေါ် တက်လိုက်မိသည်နှင့် နောက်က ခေါ်သံလိုလိုကြားလိုက်မိသည့် ဒေါ်ခင်မမတစ်ယောက် နောက်သို့ ဆတ်ခနဲလှည့်ကြည့်လိုက်မိသည်။ အသားဖြူဖြူ ထောင်ထောင်မောင်းမောင်းနှင့် ဥပမိရုပ် သန့်ပြန့်လှသော အမျိုးသားတစ်ယောက် သူမကို အမိလျှောက်လာသည်ကို တွေ့လိုက်ရသည်။

ဝတ်စားထားသည်က တောရိုက်ပေါက်နေသည့်အပြင် ပုဆိုးတစ်ထည်ကိုလည်း ခေါင်းပေါင်းထားသည့်အတွက် တောသားတစ်ယောက် ဆိုတာကိုတော့ မပြောဘဲသိလိုက်ရသည်။ အနားရောက်လာသည်နှင့် ထိုသူက-

‘ဪ... ညီမ ဒီကခေါ်တာပါ၊ အစ်ကိုက သုံးဆယ်ကပါ၊ ရွာမှာ သက်ကြီးပုဇွန်ပွဲအတွက် ပုဆိုးနဲ့လွယ်အိတ် တော်တော်များများ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဝယ်ချင်နေတာ အထည်တန်းကို ဘယ်ကဘယ်လိုဝင်ရမှန်းမသိတာနဲ့ ညီမကို လှမ်းခေါ်လိုက်တာပါ။ ညီမရော အထည်တန်းကိုသွားမှာလားလို့

ရေငတ်တုန်းရေတွင်းထဲကျသလိုပါပင်။ လွယ်အိတ်ဈေးသည်ကိုမှ လွယ်အိတ်ဝယ်ချင်တဲ့အကြောင်း လာမေးနေရာ သည်ထက်ကံကောင်း တာ ဘာရှိတော့မည်နည်း။ ပုဆိုးဆိုင်ကိုလည်း မိမိကိုယ်တိုင် ခေါ်သွားပေး လျှင် ကော်မရှင်ခ ရပေဦးမည်။ မိမိကိုယ်တိုင်လည်း လွယ်အိတ်တွေ ရောင်းရဦးမည်။ သည့်ထက်ကံကောင်းသောနေ့ ရှိပါဦးမလား။ ထို့အပြင် အသက်လေးဆယ်ကျော်စပြုနေသော မိမိကို ညီမဟုခေါ်လိုက်သည့်အသံ ကလည်း သူမအတွက် တစ်လောကလုံးတွင် အသာယာဆုံးအသံ ဖြစ်နေ ပါတော့သည်။

... 'ဪ... ကျွန်မ အကုန်ကုညီနိုင်ပါတယ်။ ကျွန်မကိုယ်တိုင်က ဒီသိမ်ကြီးဈေးထဲမှာပဲ လွယ်အိတ်ရောင်းတာလေ။ ပုဆိုးဆိုင်ကိုလည်း အသားကောင်းကောင်း ဈေးချိုချိုနဲ့ရမယ့်ဆိုင်ကို ပို့ပေးပါမယ်။

'ဟာ... ဝမ်းသာလိုက်တာဗျာ၊ ကျွန်တော်ကလည်း အများကား ယုံကြည်စိတ်ချပြီး တာဝန်ပေးလို့သာ လာရတာ၊ တစ်ခါမှ ဒီလို များများ စားစားဝယ်ဖူးတာ မဟုတ်ဘူး။

... သို့နှင့် တော်သားအဝယ်တော်ကို ခင်မမကိုယ်တိုင် မနှင်းတို့ပုဆိုး ဆိုင်သို့ခေါ်သွားပြီး ပို့ပေးလိုက်သည်။

... 'ကဲ... မနှင်းရေ၊ ဒါ ကျွန်မဖောက်သည်ပဲ ဆိုပါတော့၊ အသား ကောင်းကောင်းဈေးချိုချိုနဲ့ ပုဆိုးတွေ ထုတ်ပြပါဦး။ ဪ... ဒါနဲ့ အစ်ကိုကရော ဘယ်နှထည်လောက် ယူမှာတုန်း။

... 'အဲ... အထည်နှစ်ဆယ်ပေါ့ဗျာ၊ လှူကြီးဆင်လေးတွေရွေးပေး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်ပါယူမျိုးအကြောင်း

ပါ... ပြီးနောက်... အင်ပါယူမျိုး... အကြောင်း...
 ပြီးနောက်... အင်ပါယူမျိုး... အကြောင်း...
 တည့်သွားသည့်အတွက်... ခင်မမကိုယ်တိုင်ပင်... မင်းသားအားရကူညီပြီး
 ထုပ်ပိုးပေးလိုက်သည်။ ပြီးသည်နှင့်... ငွေချေကာ...
 ကျေးဇူးပြုပြီးနောက်... ပုဆိုးကတော့... ဖြည့်စုံပြီ။ လွယ်အိတ်ပဲ ကျန်
 တော့တယ်... ကံ... ဒါဆို ကျွန်မတို့ဆိုင်ကို... သွားကြမယ်...
 ဆောက်ထပ်ဆိုင်ပေါင်းဆယ်ဆိုင်ခန့်ကျော်အပြီး... ကျွန်တစ်ခုအရောက်
 မှာပင်... ခင်မမကိုဆိုင်... ရောက်လာသည်။ ဆိုင်မှာလည်း... တူမလေးက
 ဈေးရောင်းရင်း... ခင်မမကို... ဖော်ပြနေလျက်ပင်...
 ကံ... တူမရေ... ဒီကအစ်ကိုအတွက်... လွယ်အိတ်ကောင်းကောင်း
 လေးတွေ... ရှာပေးစမ်းပါဦး။ ခြောက်... အစ်ကိုက... ဘယ်နှလုံးယူမှာလဲ...
 အင်... အလုံးငါးဆယ်လောက်တော့... ယူရမယ်ဗျ...
 သို့နှင့်... လွယ်အိတ်အလုံးငါးဆယ်... ထုပ်ပိုးပြီးစအချိန်မှာမိ... ထိုသူနှင့်
 ရွယ်တူခန့်ရှိသော... အမျိုးသားတစ်ဦး... ချက်ချင်းရောက်လာကာ...
 ဟောကောင်... စောဦး၊ မင်းတာဝန်ကျတာတွေ... အကုန်ဝယ်ပြီးပြီ...
 လား... အေး... ပြီးပြီကွာ၊ ဒါနဲ့... တို့မြန်ရမှာ... နောက်ကျနေမယ်၊ မင်း
 ငွေချေပြီး... နောက်က... လိုက်ခဲ့ပေတော့... ပုဆိုးနဲ့လွယ်အိတ်တွေ... ငါ သယ်
 သွားနှင့်မယ်... အေး... သယ်သွားနှင့်ကွာ၊ ငါတောင် ဒီကညီမနဲ့... လမ်းမှာတွေ့...
 လာလို့... အခုလိုအဆင်ပြေသွားတာတွေ... ကံ... ကံ... မင်းသွားနှင့်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ကျော်ထွန်းဆိုသောသူ ပြန်သွားသည်နှင့် စောဦးဆိုသူက ငွေချေရန် ပိုက်ဆံအိတ်ကို ထုတ်ယူလိုက်သည်။ ပေးရမည့်ပိုက်ဆံကို ဖြည်းဖြည်းဆေးဆေး ရေတွက်နေစဉ်မှာပင် စောစောက ကျော်ထွန်းဆိုသောသူ အထုပ်အပိုးများနှင့် ပြန်ပေါ်လာကာ-

‘ဟေ့ကောင်...စောဦး၊ မင်း ပုဆိုးဝယ်တဲ့ဆိုင်က ပြောခိုင်းလိုက်တယ်၊ ငါးရာတန်လေးရွက် စုတ်နေလို့ ပြန်လဲပေးစမ်းပါဦးတဲ့’

‘ဪ... အေး... အေး... ကဲ... ညီမ၊ ပုဆိုးဆိုင်ကငွေကို အရင် သွားလဲပေးလိုက်ဦးမယ်နော်၊ လွယ်အိတ်ဖိုးတော့ ပြီးမှ တစ်ခါ တည်းရှင်းတာပေါ့’

‘ရပါတယ် အစ်ကို၊ သွားလဲပေးလိုက်ပါဦး’

ခင်မမ ထိုကဲ့သို့ အလွယ်တကူခွင့်ပေးလိုက်မိခြင်းမှာ (၁) လမ်းမှာကတည်းက မိတ်ဖွဲ့လာသဖြင့် ခင်မင်နေမိခြင်း၊ (၂) တောသားဖြစ်သည့်အတွက် ရိုးအမည်ဟုထင်မိခြင်း၊ (၃) မိမိရှေ့မှာပင် ပုဆိုးနှစ်ဆယ်အတွက် ငွေရှစ်ထောင်ကျော်ကို ချက်ချင်းထုတ်ရှင်းခဲ့ခြင်း၊ (၄) လွယ်အိတ်ဖိုးအတွက်ငွေများကိုလည်း ရှင်းခါနီး ရေတွက်နေသည်ကို ကိုယ်တိုင် မြင်ရခြင်း။

ဤအချက်လေးချက်ကြောင့် အလွယ်တကူ ပုဆိုးဆိုင်သို့ သွားခွင့် ပြုလိုက်ခြင်းပါ။ ပြန်လာလျှင် ဈေးဝယ်သူ အမောပြေသောက်ရန် မရင် ဒါတစ်လုံးပင် တူမလေးကို ဝယ်ခိုင်းထားလိုက်သေးသည်။ သို့သော် နာရီဝက်ကျော်လာသည်အထိ ထိုသူက ပေါ်မလာ။ ပေါ်လာသည်က ပုဆိုးဆိုင်က မနှင်း။

‘ခင်မရေ၊ စောစောက ခင်မနဲ့အတူ ပုဆိုးဝယ်သွားတဲ့သူလေ၊

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုပ္ပားအကြောင်း

နောက်ထပ် လိုနေသေးလို့ဆိုပြီး ပုဆိုးလေးထည် ထပ်ယူသွားတယ်၊ ပိုက်ဆံကိုတော့ ခင်မဆီမှာ လွယ်အိတ်ဖိုးရှင်းပြီးမှ လာပေးမယ်ဆိုလို့ စောင့်နေတာ၊ မလာတာနဲ့ ခင်မဆီထွက်လာတာ၊ သွားပါပြီ'

အထက်ပါအချက်လေးချက်ကို အဝင်ခွင့်ကျပြုလုပ်ပြီး ဈေးဆိုင် နှစ်ဆိုင်ကို လိမ်ညာသွားခြင်းပါတကား။

(မှတ်ချက်) ၉၇ ခုနှစ် အထူးထုတ်၊ ဖြစ်ရပ်မှန်မှုခင်းစာအုပ်မှ ရရှိပါသည်။



မိန်းမတို့ညွှန်

တစ်ခါက တက္ကသိုလ်ပြည်မှ ပညာသင်ပြန်လာသော မင်းသား တစ်ယောက်သည် ရွာတစ်ရွာ၏ထိပ်အရောက် ရေဆာလှသဖြင့် မိန်းမပျို တစ်ဦး ရေခပ်နေသော ရေတွင်းဆီသို့သွား၍-

မိန်းမတို့ညွှန်

‘နမ၊ ရေတစ်ပေါက်လောက် သောက်ပါရစေ’

‘ရပါတယ် မောင်ကြီး၊ လာသောက်ပါ၊ ဪ... ဒါနဲ့ မောင်ကြီး က ဘယ်ကလာလို့ ဘယ်ကိုသွားမှာလဲ’

‘တက္ကသိုလ်ပြည်က ပညာသင်ပြန်လာပြီး မိမိရဲ့မြို့ကို ပြန်မှာပါ’

‘စပ်စုတယ်တော့ မထင်ပါနဲ့၊ သိချင်လို့ မေးပါရစေ၊ မောင်ကြီးက တက္ကသိုလ်မှာ ဘယ်ပညာကိုအဓိကထားပြီး သင်ခဲ့ပါသလဲ’

‘မိန်းမတို့ရဲ့မာယာနဲ့ အမှုအကျင့်တွေကို အဓိကထားပြီး ကျမ်းကျန် အောင် သင်ခဲ့ပါတယ်’

‘မိန်းမမာယာနဲ့ အမှုအကျင့်တွေကို မောင်ကြီးတို့ ဘယ်လောက် သင်သင် အကုန်တတ်မယ် မထင်ပါဘူး’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယူများအကြောင်း

‘တတ်ပါတယ် နှမငယ်၊ ဘာကြောင့်လဲဆိုတော့ မောင်ကြီးက မိန်းမတွေရဲ့အကြောင်းကို ပိုပြီးသိချင်လို့ ဒီပညာရပ်ကို အဓိကထားပြီး သင်ခဲ့တာပဲ’

‘ဒါဆိုရင် စမ်းကြည့်လို့ရမလား’

‘နှမငယ် စမ်းကြည့်မယ်ဆို စမ်းကြည့်နိုင်ပါတယ်’

မင်းသား၏စကားဆုံးသည်နှင့် မိန်းမငယ်က ‘ဟောဒီမှာ ကယ် ကြပါဦး၊ ဟောဒီမှာ ကြယ်ကြပါဦးရှင့်၊ လူတစ်ယောက် ကျွန်မကို မတရားပြုကျင့်နေပါတယ်’ဟု ကျုံးအော်လိုက်ရာ ရွာနီးချုပ်စပ်မှ လူ တော်တော်များများ တုတ်၊ ဓားများဆွဲ၍ ရေတွင်းဆီသို့ တအားပြေးလာ ကြပါတော့သည်။ ထိုအခါ မင်းသားမှာ ကြောက်လန့်တကြားဖြင့် ဘာ လုပ်ရမှန်းမသိ ဖြစ်နေရင်း-

‘နှမ... မင်း ဘယ်လိုလုပ်လိုက်တာလဲ၊ ဟိုမှာ ငါ့ကိုသတ်ဖို့ ပြေးလာနေကြပြီ၊ ငါ ဘယ်လိုလုပ်ရမလဲ၊ ပြေးလို့လည်းလွတ်ဖို့မလွယ် တော့ဘူး’

‘ဪ... ဒါကတော့ မောင်ကြီးသင်လာတဲ့ မိန်းမကျမ်းထဲက ပညာကို ထုတ်သုံးပြီး လွတ်အောင်လုပ်ပါလား’

‘ကဲ... မိန်းကလေး၊ ငါ အရှုံးပေးပါတယ်၊ မိန်းမမာယာကို ဘယ်တော့မှကုန်အောင် မသင်နိုင်ပါဘူးလို့ ဝန်ခံပါတယ်၊ ငါ့ကိုပြေးလာ တဲ့ ရွာသားတွေရဲ့ရန်ကလွတ်အောင် ကယ်တင်ပါ’

‘ကဲ... ဒါဆိုရင် အလွယ်လေးပါ၊ ရှင် ဒီရေပုံးကြိုးကိုကိုင်ပြီး ရေတွင်းထဲ ဆင်းလိုက်ပါ’

မိန်းမငယ်၏စကားအဆုံးမှာပင် မင်းသားမှာ ကြီးကိုဆွဲပြီးရေတွင်း

ဗေဏ္ဍာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ထဲ ဆင်းလိုက်ရသည်။ မင်းသား ရေတွင်းထဲရောက်သွားသောအချိန်မှာ ပင် လက်နက်ကိုယ်စီဆွဲ၍ ပြေးလာကြသော ရွာသားများမှာ ရေတွင်းဆီ သို့ ရောက်လာကြလေပြီ။

‘ဟေ့... မိန်းကလေး၊ စောစောက မင်းဆီက အော်သံကြားလို့ ငါတို့ ပြေးလာကြတာ၊ မင်း ဘာဖြစ်တာလဲ’

‘ကျွန်မကတော့ ဘာမှမဖြစ်ပါဘူး၊ လူတစ်ယောက် ကျွန်မဆီမှာ ရေတောင်းသောက်ရင်းနဲ့ ခြေချော်လက်ချော်ဖြစ်ပြီး ရေတွင်းထဲကျသွား လို့ လှမ်းအော်ပြီး အကူအညီတောင်းရတာပါ’

မိန်းကလေးစကားအဆုံးမှာပင် ရွာသားများက ရေတွင်းထဲရောက် နေသော (သူတို့အထင်အားဖြင့် ရေတွင်းထဲကျနေသော) မင်းသားကို ဝိုင်းဝန်းဆယ်တင်လိုက်ကြပါသည်။

ထိုနေ့မှစ၍ ၎င်းမင်းသားအနေဖြင့် သူ့ကိုယ်သူ မိန်းမကျမ်းကျောသူ ဟူ၍ ဘယ်သောအခါမျှ ပြောတော့မည်မဟုတ်ပေ။ အဘယ့်ကြောင့်ဆို သော် တစ်ခဏတာအချိန်လေးအတွင်းမှာပင် တောသူ မိန်းကလေးတစ် ယောက်က သူ့လို မင်းသားတစ်ယောက်ကို ရွာသားများသတ်ချင်အောင်၊ ရွာသားများသနားပြီး ကယ်တင်ချင်အောင်လုပ်ပြသည်ကို နဖူးတွေ၊ ခူး တွေ ကြုံတွေ့ရသောကြောင့်ပင် ဖြစ်ပါသည်။

ထို့ကြောင့်လည်း မိန်းမတို့ဉာဏ်လျင်မြန်ပုံနှင့်ပတ်သက်၍ မန်လည် ဆရာတော်က မဃဒေဝလင်္ကာသစ်တွင် -

ယောက်ျားတို့ထက်၊ ရုတ်တရက်ဉာဏ်၊

ပဋိဘာန်ဖြင့်၊ လျင်မြန်မချွတ်၊

ကြံစည်တတ်၏၊ ကိစ္စတသီး၊ အရေးကြီး၍

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသုများအကြောင်း

မပြီးနိုင်က၊ ကြံမရသော်၊ မိန်းမတို့သာ။

တိုင်ပင်ရာ၏ ဟူ၍ ရေးသားတော်မူခဲ့ခြင်း ဖြစ်ပေလိမ့်မည်။ မိန်းမတို့ဉာဏ် လျင်မြန်ပုံနှင့်ပတ်သက်ပြီး ပုံပြင်းလေးနှစ်ပုဒ် မှတ်သား ရဖူးပါသည်။ တစ်ခုသောပုံပြင်က မြို့တစ်မြို့တွင် စာဆိုပညာရှင်ကြီး တစ်ဦးထံ၌ အမျိုးသားတစ်ဦးနှင့် အမျိုးသမီးတစ်ဦးတို့ ကဗျာစပ် သင် ယူကြသည်။ အမျိုးသမီး၏ ကဗျာစပ်ဉာဏ်က လျင်မြန်လှသောကြောင့် သူတို့နှစ်ဦး ကဗျာပြိုင်စပ်တိုင်း အမျိုးသားကချည်း ရှုံးသည်။

တစ်နေ့တွင် အမျိုးသားက တွေးသည်မှာ 'ဒီအမျိုးသမီးနဲ့ ကဗျာ ပြိုင်စပ်တိုင်း ငါချည်းပဲရှုံးတယ်၊ ဒီတစ်ခါတော့ သူ ပြန်ပြီးစာမချိုးနိုင်ခင် မှာ ငါက အရင်စာချိုးပြီး မြင်းနဲ့ထွက်ပြေးရမယ်၊ ဒါမှ ငါနိုင်တော့မှာပဲ' ဤသို့စဉ်းစားပြီး တစ်ခုသောရက်တွင် အမျိုးသမီးကဗျာဆရာမ၏ အိမ် ရှေ့ကို မြင်းနှင့်အပြေးဖြတ်ရင်း မြင်းပေါ်မှ စာချိုးလိုက်သည်မှာ-

'စောင်တင်းတိမ်နဲ့ ချင်းအိမ်ဟဲ့' ဟူ၏။ စောင်များ အိမ်ရှေ့ဝရန်တာ တွင် လှမ်းထားသည်ကိုကြည့်၍ စာချိုးလိုက်ခြင်းပင်။ ထိုခဏမှာပင် ပညာသင်ဖက် အမျိုးသမီး ချက်ချင်းပြေးထွက်လာကာ ဆံပင်မသန်သဖြင့် သေးကွေးသော သျှောင်ထုံး၊ အစာမဝသဖြင့် ပိန်ကပ်နေသောမြင်းတို့ကို ကြည့်ပြီး ချက်ချင်းလက်တန်းစပ်၍ ၎င်းအမျိုးသားကြားအောင် အော် ဆိုလိုက်သည်မှာ-

'သျှောင်ဖျင်းသိမ်နဲ့မြင်းပိန်ဟဲ့' ဟူပါ၏။ အမျိုးသမီးစာမချိုးနိုင်ခင် မြင်းကို အပြင်းနှင့်ပါသော်လည်း မလွတ်နိုင်ဘဲ စာချိုးခံရသည်သာ။ အမျိုးသမီးတို့၏ဉာဏ်ရည်ကား ဤမျှပင် လျင်မြန်လှပါ၏။ တစ်ခါက လည်း အထက်ကညာတွင် ဗျာတယော်ဟူသော ရွာတစ်ရွာရှိသည်။ ထို

မေတ္တာရင် (ရွှေပြည်သာ)

ရွာသူရွာသားများမှာ စာချိုးတော်လှသည်ဟု သတင်းကြီးသဖြင့် စာချိုးမြန်
သော ဘုရင့်လှေထိုးသားတစ်ယောက်သည် စာဖြိုင်ချိုးရန် ၎င်းရွာသို့
ထွက်လာခဲ့သည်။

ရွာထိပ်သို့အရောက်တွင် မိန်းမငယ်တစ်ဦးကို တွေ့ရလေသည်။
မိန်းမငယ်လေးကပင်စတင်၍ သူ့ကို မေးမြန်းသည်။

‘မောင်ကြီး... ဘယ်ကလာခဲ့ပါသလဲ’

‘မန္တလေးရွှေမြို့တော်ကပါ’

‘မောင်ကြီးက ဘယ်လိုအမှုမျိုး ထမ်းဆောင်ရပါသလဲ’

‘ဘုရင့်ရဲ့ လှေလှော်အမှုတော်ထမ်းတစ်ဦး ဖြစ်ပါတယ်’

‘ဒါနဲ့ မောင်ကြီးရဲ့နာမည်ကို ဘယ်လိုခေါ်ပါသလဲ’

နာမည်ကိုမေးသောအခါမှပင် မိန်းမငယ်သည် စာချိုးချင်၍ မေးနေ
ခြင်းဖြစ်ကြောင်း လှေထိုးသားက ရိပ်မိသွားသဖြင့် စာချိုး၍မရစေရန်
ခက်ခဲသောနာမည်တစ်ခုကို ပြောလိုက်သည်မှာ-

‘ငါ့နာမည်က ကိုဂွမ်းဂွမ်းဂွမ်း’ တဲ့။ ထိုလှေထိုးသား၏ အဖြေ
အဆုံးမှာပင် မိန်းမငယ်က လက်တမ်းစာချိုးလိုက်သည်မှာ-

မန်းရွှေမြို့ပေါ် လှေလှော်မှုထမ်း၊

ဗျာတယော် သူလာလို့စမ်း၊

ကိုဂွမ်းဂွမ်းဂွမ်း ဟူပါ၏။ စာချိုးအဆုံးမှာပင် ရှေ့ဆက်သွား
လျှင် အခြေမဟန်သည်ကိုသိသွားသော လှေထိုးသားမှာ ထိုနေရာမှပင်
လှည့်၍ ပြန်သွားပါတော့သည်။ ထိုမျှ လျင်မြန်လှသောသူတို့၏ဉာဏ်ကို
အပြုဘက်တွင် အသုံးမပြုဘဲ အပျက်ဘက်တွင် အသုံးပြုသောအခါ...



အပလီတစ်သိန်း မမငြိမ်း

ဆောင်းရာသီဖြစ်သည့်အတွက် ရန်ကုန်မြို့အတွင်း အနံ့အပြားဝယ် နံနက်ခင်း လမ်းလျှောက်သူများနှင့် အပြေးလေ့ကျင့်သူများ များပြားလှ သည်။ ရဲအရာရှိပင်စင်စားကြီးတစ်ဦးဖြစ်သော ဦးထွန်းအောင်သည်လည်း အများနှင့်ရောနှော၍ ခပ်သွက်သွက်လမ်းလျှောက်လျက်ရှိသည်။ ထိုစဉ် မှာပင် မိမိနှင့် ဝါးတစ်ရိုက်အကွာနောက်နားမှ လမ်းလျှောက်လျက်ရှိသော မိန်းကလေးကို ယနေ့လည်း ဦးထွန်းအောင် သတိထားလိုက်မိပြန်သည်။

ဤကဲ့သို့ သတိထားမိသည်မှာ ငါးရက်ခန့်ရှိသွားလေပြီ။ ထူးခြား သောအကြောင်းမရှိလောက်သဖြင့်လည်း သတိထားမိခြား ဘာမျှတော့ အရေးမစိုက်နိုင်ပါ။ လမ်းလျှောက်ပြီး တစ်နာရီခန့်အကြာမှာပင် တစ်ကိုယ် လုံးချွေးတွေရွဲလာသဖြင့် လမ်းနံဘေး သစ်ပင်တစ်ပင်အောက်သို့ ခဏ ထိုင်နားလိုက်မိသည်။ ထိုအချိန်မှာပင် ငါးရက်တိုင်တိုင် ဆက်တိုက်တွေ့ခဲ့ ရသော မိန်းမငယ်က သူ၏ဘေးနားသို့ နီးကပ်စွာထိုင်ချလာသည်ကို အံ့သြဖွယ်ရာတွေ့လိုက်ရသည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

သူမ၏အမူအရာက ရဲတင်းလွန်းလှသည်။ အနားသို့ကပ်၍ထိုင်လိုက်သည်မှာ သံကဲတူရွယ်တူသာဆိုလျှင် ချစ်သူနှစ်ဦးအဖြစ် ဧကန်မုချ တွေးထင်ကြပေလိမ့်မည်။ မသင့်တော်လွန်းလှသဖြင့် ဦးထွန်းအောင်တစ်ယောက် နေရာရွှေထိုင်ရန် ပြင်ဆင်လိုက်ချိန်မှာပင် ထိုမိန်းကလေးက-

‘ဒီမှာ ဦးကြီး၊ နာရီနဲ့လက်စွပ်ကို မြန်မြန်ချွတ်ပြီး ကျွန်မကို အသာတကြည်ပေးလိုက်ပါ။ မပေးဘူးဆိုတာနဲ့ ကျွန်မကို အဓမ္မပြုကျင့်နေပါတယ်လို့ လမ်းပေါ်ကလူတွေကြားအောင် အော်ပစ်လိုက်မယ်’

မိန်းကလေး၏စကားကို ကြားလိုက်သည်နှင့် ဦးထွန်းအောင်တစ်ယောက် ရုတ်တရက် ကြက်သေသေသွားရသည်။ အံ့သြခြင်းနှင့် ထိတ်လန့်ခြင်းတို့ ပေါင်းစုမိခြင်းကြောင့် ထိုကဲ့သို့ဖြစ်သွားရခြင်းပင်။ အတွေ့အကြုံ ရင့်ကျက်လှသော ရဲအရာရှိတစ်ဦးပီပီ ခဏအကြာမှာပင် ဦးထွန်းအောင်က နားဘေးသို့ လက်ကလေးကောလိုက်ရင်း-

‘မိန်းကလေး ဘာပြောလိုက်တာလဲ၊ ဦးက နားသိပ်လေးတယ်၊ တော်တော့အသံဆို မကြားရတော့ဘူး’

မိန်းကလေးသည် တော်တော်စိတ်ပျက်သွားသည့် အမူအရာမျိုးဖြင့် ဦးထွန်းအောင်နား ပို၍ကပ်လိုက်ကာ-

‘ဦးကြီးရဲ့နာရီနဲ့ လက်စွပ်ကို မြန်မြန်ချွတ်ပေးပါ။ မပေးရင် လမ်းလျှောက်နေတဲ့လူတွေကြားအောင် ကျွန်မကို အောင်းအဓမ္မပြုကျင့်နေပါတယ်လို့ အော်လိုက်မယ်’

မိန်းကလေးသည် အသံကျယ်ကျယ်နှင့် ပြောရသည်ဆိုသော်လည်း ကိစ္စမပြီးမီ လူသိခံ၍မဖြစ်သေးသဖြင့် စောစောကထက် အနည်းငယ် ကျယ်ရုံသာ ရှိသည်။

ယုံတတ်လို့ ပုံအပ်ပိယျများအကြောင်း

ထိုအချက်ကလေးကပင် ဘေးကျပ်နံ့ကျပ်ဖြစ်နေရှာသော ပင်စင်
စားအရာရှိကြီးအတွက် ထွက်ပေါက်တစ်ခု ဖြစ်သွားသည်ကို အပလီ
တစ်သိန်းမမငြိမ်းက မသိလိုက်ရှာ။ နားကိုလက်လေးကာရင်း နားထောင်
လျက်ကပင် ပင်စင်စားအရာရှိကြီးက-

‘ကဲ... မိန်းကလေး၊ မင်းပြောနေတဲ့ လေသံနဲ့ကတော့ ငါ ဘယ်
တော့မှ ကြားမယ်မထင်ဘူး၊ အဲဒီတော့ ဒီလိုလုပ်၊ ဒီမှာ စာရွက်နဲ့ဖောင်
တိန်ပါတယ်၊ မင်းပြောချင်တဲ့စကားကို စာနဲ့ရေးလိုက်ပြီးတော့ ငါ့ကိုပြ’
ပင်စင်စားကြီး၏ စကားအဆုံးမှာပင် မိန်းကလေးက စာရွက်နှင့်
ဖောင်တိန်ကိုယူလိုက်ပြီး-

‘ဦးကြီးရဲ့နာရီနဲ့ လက်စွပ်ကို မြန်မြန်ချွတ်ပေးပါ၊ မပေးဘူးဆိုရင်
လမ်းလျှောက်နေတဲ့လူတွေကြားအောင် ကျွန်မကို အတင်းအဓမ္မပြုကျင့်
နေပါတယ်လို့ အော်လိုက်မယ်၊ ပိုပြီးယုတ္တိရှိအောင် ကျွန်မရဲ့ရင်ဘတ်နား
က အင်္ကျီစကိုလည်း ဖြဲလိုက်ဦးမှာ၊ ကဲ... သဘောပေါက်နားလည်ရင်
မြန်မြန်ချွတ်ပေးတော့၊ ကျွန်မ ဒီအခွင့်အရေးရအောင် ငါးရက်တိတိ
စောင့်ခဲ့ရတယ်’ ဟုရေးကာ စာရွက်ကလေးကို ပင်စင်စားကြီးအား ပေး
လိုက်သည်။ စာဖတ်နေသော ပင်စင်စားကြီးကိုကြည့်ရင်း ဘယ်အချိန်
မျက်နှာကြီးအိုလာမလဲဟု တွေးတောကာ မိန်းကလေးက မဲ့ပြုံးတစ်ချက်
ပြုံးလိုက်သည်။ သို့သော်-

ပင်စင်စားကြီး၏မျက်နှာက ရှုံ့မဲ့မလာဘဲ ပြုံးရွှင်လာကာ စာဖတ်
ပြီးသည်နှင့် မိန်းကလေး၏လက်တစ်ဖက်ကို ခပ်ကြမ်းကြမ်းဆွဲကာ
ရဲစခန်းဆီသို့ ဦးတည်သွားလိုက်သည်။ သူ၏ လက်ရင်းတပည့်များ စခန်း
တွင် တာဝန်ထမ်းဆောင်လျက်ရှိသည် မဟုတ်ပါလား။ မိန်းကလေးကို

အပလိန်းအနန္တ ခင်မမ

ဖော်ပြပါဖြစ်ရပ်ကလေးသည် နှစ်ပေါင်းသုံးဆယ်ကျော် ကြာခဲ့ပါပြီ။ သတိထားရှောင်စရာနှင့် မိမိကိုယ်ကိုကာကွယ်နည်း ဆောင်စရာလေးများပါ၊ ပါသောကြောင့် မြန်မာ့အသံရေဒီယိုကပင် လွှင့်ထုတ်ပေးခဲ့ဖူးပါသည်။ ယခု ၁၉၉၇ ခုနှစ်တွင် ၎င်းဖြစ်ရပ်ကလေးများ ဆက်လက်ဖြစ်ပေါ်လာပြန်ပါသည်။ ယခု ကြားသိရသော ဖြစ်ရပ်လေးသည်လည်း မတွေ့အောင် ရှောင်စရာနှင့် မတတ်သာ၍တွေ့ခဲ့လျှင် ကာကွယ်နည်းဆောင်းစရာလေးပါ ပါသောကြောင့် ပြည့်စုံစွာ ဖော်ပြလိုက်ရပါသည်။

ကကလေးများပေါ်လာသည်နှင့် စီးလုံးငှားယာဉ်များ ဈေးလျှော့လာသည်ကတော့ အမှန်ပင်။ အကောင်းရှိသလို အဆိုးလည်းရှိစမြဲပင်။ ကားငှားခများ ဈေးလျှော့လာသော်လည်း ကကမောင်းပြီး ခရီးသည်ကို လစ်လျှင် လစ်သလို အနုကြမ်းစီးသူများကလည်း ဒုနှင့်ဒေး ပေါ်ပေါက်ခဲ့သည်။ ဤအချက်ကိုလည်း ကကငှားစီးသော ခရီးသည်များ သတိထားကြရပါမည်။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ယခုဖြစ်ရပ်ကား ကားသမားများ သတိထားရမည့်ဖြစ်ရပ်ဆိုလျှင် လည်း မှားအံ့မထင်။ တစ်ရိပ်ရိပ်ပြေးနေသော ကကကားလေးပေါ်တွင် ဒရိုင်ဘာကိုမောင်ခင်နှင့် အသက်အစိတ်အရွယ် မိန်းမပျိုတစ်ဦးသာ ရှေ့ခန်းတွင်ထိုင်ရင်း လိုက်ပါလာသည်ကို တွေ့ရသည်။ မိန်းမပျိုသည် အချောအလှကြီးမဟုတ်သော်လည်း ပေါ်လွင်အောင်ပြုပြင်ထားသောကြောင့် ကြည့်ကောင်းနေသည်ကတော့ အမှန်။

တာမေ့ဈေးနားနီးလာသည်နှင့် ကိုခင်မောင်က -
‘ကား ဘယ်နားမှာရပ်ပေးရမလဲခင်ဗျ’
‘ဈေးထိပ်မှာပဲရပ်ပါ’

မိန်းကလေး၏စကားအဆုံးမှာပင် ကိုမောင်ခင်က ကားကို ဈေးထိပ်ဘေးနားတွင် ကပ်ရပ်ပေးလိုက်သည်။ ကားခပေးတော့မည်အထင်နှင့် မိန်းမပျိုအား လှည့်ကြည့်လိုက်မိသော ကိုမောင်ခင်တစ်ယောက် ကားခမရဘဲ ခပ်စိမ်းစိမ်းကြည့်နေသော မိန်းကလေးထံမှ စကားအချို့ကိုသာ ရလိုက်သည်။

‘ကဲ... စတားများမနေနဲ့၊ ရှင့်အိတ်ထဲက ငွေတွေရယ်၊ ပတ်ထားတဲနာရီရယ် ချက်ချင်းဖြုတ်ပေးပါ၊ မပေးဘူးဆိုတာနဲ့ ကျွန်မအင်္ကျီကို ဆွဲဖြုတ်ပြီး အစမပြုကျင့်နေပါတယ်လို့ အော်လိုက်မယ်၊ ဘာပြဿနာမှ မဖြစ်ချင်ရင် မြန်မြန်ပေးပါ’

ပြောပြောဆိုဆို မိန်းကလေးက သူ၏ရင်သားအနီးမှ အင်္ကျီကို ချက်ချင်းဆွဲကိုင်လိုက်သည်ကို တွေ့လိုက်ရသည်။

ဘယ်လိုမျှမကြံဖူးသောအကျပ်အတည်းမို့ ကိုမောင်ခင်တစ်ယောက် ဘာလုပ်ရမှန်းမသိဖြစ်ကာ ဇောချွေးများပင်ပျံလာပါသည်။ ကားရှေ့ခန်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တွင်ချိတ်ထားသော ရွှေတိဂုံစေတီပုံလေးကို သေချာကြည့်ရင်း စိတ်ထဲမှ သစ္စာဆိုမိသည်။

‘ဘုရားတပည့်တော်၏ ဘဝတစ်လျှောက် သူတစ်ပါးကို ဘယ်သောအခါကမှ စိတ်ဆင်းရဲအောင် မပြုလုပ်ခဲ့ဖူးပါ။ ဤမှန်ကန်သော သစ္စာစကားကြောင့် ယခုကြုံနေရသောဒုက္ခဘေးမှ လွတ်ကင်းရပါလို့၏ ဘုရား’

ကိုမောင်ခင်၏စိတ်ထဲက သစ္စာစကားအဆုံးမှာပင် မိန်းကလေးထံမှ ခပ်မာမာအသံက ချက်ချင်းပေါ်လာပြန်သည်။

‘ရှင် ဘာတွေနေတာလဲ၊ မြန်မြန်ထုတ်ပေးလေ၊ ယောက်ျားတစ်ယောက် ထောင်ထဲပို့ရမှာများ သိပ်ခက်တယ်ထင်မနေနဲ့’

အချိန်သည် ကိုမောင်ခင်အတွက် သိပ်တန်ဖိုးရှိနေသည်။ လက်မှ နာရီကို ချက်ချင်းဖြုတ်ပေးလိုက်သည်။ အိတ်ထဲတွင် ပိုက်ဆံအနည်းငယ်သာရှိသည်။ ကက်ဆက်နှင့်ကပ်လျက် တိုလီမိုလီထည့်သည့် အခန်းလေးထဲတွင် ကားဓာတ်ဆီဖိုးပေးရန်နှင့် ယနေ့မောင်းရငွေ စုစုပေါင်းသုံးထောင်နီးပါးခန့် ရှိနေသည်။ ထိုအခန်းလေးက သော့နှင့်ဖွင့်မှရမည်။ ထို့ကြောင့်-

‘ပိုက်ဆံတွေက ဒီအခန်းထဲမှာ၊ မင်းကိုယ်တိုင်ဖွင့်ယူမလား’

‘လာခိုင်းမနေစမ်းနဲ့၊ ရှင်ကိုယ်တိုင်ဖွင့်ယူပေးပါ’

ကိုမောင်ခင် သော့ပေါက်ထဲကို သော့တံထည့်နေဆဲ ရုတ်တရက် ကြိတ်ခါးခုပေါ်လာသဖြင့် သော့ပေါက်ဖွင့်မရသောကြောင့် လက်နှစ်ဖက်စလုံး အသုံးပြုရသည့်ပုံစံမျိုးဖြင့် ခွေအသင့်ထည့်ထားသော ကက်ဆက်အသံဖမ်းခလုတ်ကို မိန်းကလေးမသိအောင် နှိပ်လိုက်သည်။ ပြီးသည်နှင့်-

‘ကဲ... မိန်းကလေး၊ နာရီရရင်လည်း တော်လောက်ရောပေါ့ကွာ၊

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဒီထဲက ဝမ်းစာပိုက်ဆံလေးကိုတော့ ယူမသွားပါနဲ့'

'ဘာလဲ၊ ရှင်က ထောင်နန်းစံချင်ပြီဆိုတဲ့ သဘောလား၊ ကျွန်မ တစ်ချက်အော်လိုက်တာနဲ့ ရှင် ဘာဖြစ်သွားမယ် ထင်သလဲ'

'ငါကမှ မင်းကို ဘာမှမလုပ်ဘဲနဲ့ မင်းအော်တိုင်း ဘေးကလူတွေ က ယုံမှာလား'

'အောင်မာ... ဒါများ ဘာခက်လို့လဲ၊ ဒီအင်္ကျီစကို ဆွဲဖြဲလိုက်တာ နဲ့ ရှင့်မှာ အဓမ္မမှုအလိုလို ဖြစ်သွားပြီပဲ'

'ကဲ... ငါ့ချွေးနဲ့စာလေးတော့ မင်းတောင်းတိုင်း အလကားမပေး နိုင်ဘူးကွာ၊ မင်းအော်ချင်အော် ရဲ့စခန်းကျမှရှင်းမယ်'

'ရှင် တကယ်ပြောနေတာလား'

'ဒါ နောက်စရာမဟုတ်ဘူး၊ မင်း အော်ချင် ကြိုက်သလောက် အော်၊ ငါ့ဘာသာ ရဲ့စခန်းမှာ အမှန်ပေါ်အောင်ရှင်းမယ်'

'ကဲ... ဒီလောက်ရှိလှတာ'

မိန်းကလေးက ရင်သားအနီးမှ အင်္ကျီစကို ခြိခနဲဆုတ်ဖြဲလိုက်ကာ-
'ဟောဒီမှာ ကယ်ကြပါဦးရှင်၊ ကားသမားက ကျွန်မကို မတရား ပြုကျင့်နေပါတယ်'

မိန်းကလေး၏ အော်သံအဆုံးမှာပင် ဈေးအနီးအနားမှ ယောက်ျား တစ်စု ကားအနီးသို့ ပြေးလာကြသည်။ လူအများ အနားရောက်သည်နှင့် မိန်းကလေးက မျက်ရည်များပင်ကျလာပြီး တိုင်တန်းနေတော့ရာ စိတ်ဆတ် သောလူတစ်စုက ကိုမောင်ခင်ကို ရန်ပြုရန်အားထုတ်လာကြသည်။ သည် နေရာ ကြောက်နေလျှင် ပိုခံရမည်။ ကိုမောင်ခင်တစ်ယောက် ရဲရဲဝံ့ဝံ့ပင် အားလုံးကြားအောင် အော်ပြောလိုက်သည်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယုများအကြောင်း

‘ဒီမှာ မိတ်ဆွေတို့၊ ဒါ မင်းမဲ့တိုင်းပြည်မဟုတ်ဘူး၊ ဥပဒေအပြည့် အဝရှိတဲ့တိုင်းပြည်မှာ မိတ်ဆွေတို့ ဘာမှသေချာမသိဘဲနဲ့ တစ်ဖက်သတ် မလုပ်ချင်ပါနဲ့၊ ကျုပ်ကို အခုချက်ချင်း ရဲစခန်းပို့ပါ၊ မိန်းကလေးကိုလည်း တစ်ခါတည်းခေါ်ခဲ့ပါ’

ရဲရဲပုံပုံပြောလိုက်သော ကိုမောင်ခင်၏စကားကြောင့် ရန်ပြုမည့် သူများ တွန့်သွားကြသည်။ သို့နှင့် ရဲစခန်းသို့ရောက်ကြရာ အပလိန်း အနန္တ ခင်မမက ဦးဆောင်ပြီး စုတ်ပြုနေသော အင်္ကျီစကိုပြကာ တိုင်ချက် ဖွင့်နေပါတော့သည်။ ခင်မမစကားဆုံးသည်နှင့် ကိုမောင်ခင်က-

‘ကဲ... စခန်းမှူးကြီးခင်ဗျာ၊ သူပြောတာတွေ ဟုတ်မဟုတ်၊ မှန် မမှန်ဆိုတာ သူနဲ့ကျွန်တော် ပြောခဲ့ကြတဲ့စကားသံတွေက သက်သေခံပါ လိမ့်မယ်၊ ဟောဒီမှာ ဖွင့်ကြည့်ပါခင်ဗျာ’ ဟုဆိုကာ ကက်ဆက်ခွေလေး ကို ပေးလိုက်ပါတော့သည်။ ကက်ဆက်ခွေလေးဖွင့်ပြီးသည်နှင့် ခင်မမ ထင်သည့်အတိုင်း ကိုမောင်ခင် အချုပ်ခန်းထဲ မဝင်ရဘဲ ခင်မမသာ အချုပ်ခန်းထဲ ဝင်သွားခဲ့ရသည်။ ရာဇဝတ်ဘေး ပြေးမလွတ်နိုင်ပါတကား။



အခြေခံဥပဒေ

အခြေခံဥပဒေသည် အလွန်အရေးကြီးသော ဥပဒေတစ်ရပ်ဖြစ်ပြီး အစိုးရအဖွဲ့၏ အဖွဲ့ဝင်များသည် အခြေခံဥပဒေကို ချိုးဖောက်ခြင်းမပြုရန် အထူးဂရုပြုရမည်။

သောကအခြေခံ ကလိမ်ညွှန်

၁-၉-၉၇ နေ့၊ နေ့ခင်းတစ်နာရီခန့်တွင် ၅/၅ ရပ်ကွက် ကားလေး
ဂိတ်မှတ်တိုင်အနီးတွင် နေထိုင်သော ဦးညွှန်၊ ဒေါ်သီသီတို့၏အိမ်ရှေ့သို့
ဆောက်လုပ်ရေးလုပ်သားဝတ်စုံကို ဝတ်ထားသော လူတစ်ယောက် အမော
တကောရောက်လာပြီး-

‘ဒီအိမ်ဟာ ဆောက်လုပ်ရေးမှာလုပ်တဲ့ ဦးညွှန်ရဲ့အိမ်ဟုတ်ပါ
သလား ခင်ဗျာ’

အရေးတကြီး အိမ်ရှေ့ထွက်လာသော ဒေါ်သီသီက-

‘ဟုတ်ပါတယ်ရှင်၊ ဒါ ဦးညွှန်အိမ်ဟုတ်ပါတယ်၊ ကျွန်မက ဦးညွှန်
ရဲ့ဇနီးပါ၊ ဘာအရေးတကြီးကိစ္စများ ရှိပါသလဲရှင်’

‘ဦးညွှန် အမြင့်ပေါ်ကလိမ့်ကျလို့ခင်ဗျာ၊ အဲဒါ အခု အလုပ်သမား
ဆေးရုံကြီး အခန်း-၂ မှာ တင်ထားပါတယ်၊ အဲဒါ ကျွန်တော့်ကို လူကြီး
တွေက လာအကြောင်းကြားခိုင်းလိုက်လို့ပါ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ထိုလူ၏ စကားအဆုံးမှာပင် ဒေါ်သီနှင့်သားသမီးများမှာ ဘာ စကားမျှမပြောနိုင်တော့အောင် ပူဆွေးသောက ရောက်သွားကြရသည်။ ရုတ်တရက်ဆိုတော့ ဘာလုပ်လို့လုပ်ရမှန်းပင် မသိတော့အောင်ဖြစ်သွားကြသည်။ ထိုအချိန်မှာပင် လာပြောသူက-

ကဲ... ကျွန်တော်က ဆေးရုံမှာ အချိန်ပြည့်အနီးကပ်နေပေးရမှာ၊ ကျွန်တော် အရင်သွားနှင့်တော့မယ်၊ အခန်းနံပါတ်လည်း သိပြီးပြီပဲ၊ နောက်က အေးအေးဆေးဆေးလိုက်ခဲ့ကြပေါ့၊ ဪ... ဒါနဲ့ အရေးတကြီး ထည့်ပေးလိုက်ချင်တဲ့ပစ္စည်းရှိရင်လည်း ထည့်ပေးလိုက်လေ၊ ကျွန်တော် သယ်သွားပေးပါမယ်

ကျေးဇူးပါပဲရှင်၊ ဟောဒီအိပ်ရာလိပ်နဲ့ စတီးချိုင့်လေး ယူသွားပေးပါ၊ ကျန်တာတွေတော့ ကျွန်မတို့ပဲ သယ်ခဲ့ပါမယ်

ထိုသူထွက်သွားပြီးနောက် နှစ်နာရီခန့်အကြာမှာပင် သားသမီးအချို့ကို အိမ်မှာထား၍ အချို့ကိုအဖော်အဖြစ်ခေါ်ကာ အလုပ်သမားဆေးရုံကြီးသို့ လိုက်သွားကြလေရာ ဆေးရုံရောက်မှပင် အလိမ်ခံရမှန်းသိကြရတော့သည်။ ဘယ်ဆောက်လုပ်ရေးက အလုပ်သမားမှ ဆေးရုံလာမတက်။ ညနေရောက်တော့ ဦးမြညွန့်ပြန်လာတော့ အလိမ်ခံရတာ ပိုသေချာသွားသည်။

မည်မျှလောက် အတွေးအခေါ်ရှိပါသည်ဆိုစေ သောက၊ ပရိဒေဝ နှိပ်စက်ခံရသောအခါတွင်ကား အတွေးအခေါ်မှန်သမျှ မိမိခန္ဓာကိုယ်မှ တစ်ခုမကျန် ထွက်ပြေးသွားကြသည်။ အတွေးအခေါ်ရာ စာပေဗဟု သုတပါ ရှိလှပါသည်ဆိုသည့်အမျိုးသားကြီးတစ်ဦးသည် တစ်ခါတွင် လူပျိုပေါက်အရွယ် သားလေးတစ်ယောက် လမ်းစရုာမရအောင် ပျောက်

ယတ္တရင် (ရှုပြည်သာ)

သွားခဲ့ဖူးသည်။ ထိုအခါ ဗေဒင်ရော၊ အကြားအမြင်ရော တစ်ခုမကျန် လိုက်မေးပါတော့သည်။

သည်ကြားထဲတွင် မိတ်ဆွေတစ်ယောက်ခေါ်လာသော နတ် ကတော်တစ်ဦး၏ အပြောကောင်းမှုကြောင့် ငွေတစ်ထောင်ကို ပက်ခနဲ ထုတ်ပေးလိုက်မိသည်။ ငွေလက်လွန်ပြီးသောအခါတွင်မှ ငါ့ကို လိမ်တာ များလားဟူသော အတွေးအခေါ် ရေးရေးလေးသာ ပေါ်လာနိုင်ရှာသည်။ ဆွေချာလှပါသည်။ နတ်ကတော်ကလည်း တကယ့်ကို လိမ်သွားပါသည်။ ပိုက်ဆံရှိသောပုဂ္ဂိုလ်တို့အတွက် မထောင်းတာလှသော်လည်း သူတို့လို လက်လုပ်လက်စားများအတွက်ကား နည်းနည်းနောနော မဟုတ်ပေ။

ထို့ကြောင့် စာရှုသူများအနေဖြင့် သောကအခြေခံ ကလိမ်ဉာဏ် လုပ်ဇာတ်များကို ဝေးဝေးမှရှောင်ရှားနိုင်ရန် တင်ပြခြင်းဖြစ်ပါ၏။



ပျားရည်ဝယ်လျှင်

ပျားဖွပ်၊ သားထိုး၊ မယားခိုး၊ နွားသိုးရွေးရိုက်၊ တောမီးတိုက် ဟူ၍ အပြစ်ကြီးသော အကုသိုလ်ငါးမျိုးကို ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်အများပင် ရှောင်ကျဉ်ကြပါသည်။ သို့သော် မိမိပယောဂမပါသော ပျားရည်တို့၊ အသားငါးတို့ကို ပုံသကူအနေနှင့် စားကောင်းသည်ဟုဆိုထားသောကြောင့် ဆေးဖက်ဝင်လှသော ပျားရည်ကိုတွေ့လျှင်ကား မြို့သူမြို့သားအများပင် အလှအယက် ဝယ်ယူလေ့ရှိကြသည်။

ထို့ကြောင့်လည်း ပျားရည်ကို အတုလုပ်ရောင်းသော တောသား အတုများလည်း အလျှိုအလျှို ပေါ်လာကြပါတော့သည်။ ကြာ၍ ခံရဖန် များလာသောအခါ မြို့သူမြို့သားများက ပျားရည်ကို အလွယ်တကူမဝယ် ကြတော့။ စမ်းသပ်နည်းအမျိုးမျိုးဖြင့် စမ်းသပ်ပြီးမှ ဝယ်ကြတော့သည်။ စမ်းသပ်နည်းကလည်း မျိုးစုံလှသည်။ တုတ်ချောင်းအဖျားပေါ် ပျားရည် ကို စိုစေ၍ မီးရှို့ကြည့်ရမည်။ မီးလောင်လျှင် ပျားရည်အစစ်၊ မလောင်

ဇမ္ဗူယျာဇ် (ရွှေပြည်သာ)

လျှင် အတု။ သတင်းစာစက္ကူပေါ် ပျားရည်ကို အနည်းငယ်လောင်းချ ကြည့်လိုက်ပါ။ သတင်းစာစာရွက် ပေါက်မကျလျှင် အစစ်၊ ပေါက်ကျ လျှင် အတု။ လက်ဖဝါးပေါ် ပျားရည်အနည်းငယ်နှင့် ထုံးမှုန့်အနည်းငယ် ထည့်ပြီး ပွတ်နယ်ကြည့်ပါ။ ပူလောင်လာလျှင် အစစ်၊ မပူလျှင် အတု။ ပျားရည်အနည်းငယ်ကို ခွက်တစ်ခုထဲထည့်ပြီး ခွေးမစားလျှင်၊ မလျက် လျှင် အစစ်၊ စားလျှင်၊ လျက်လျှင် အတု။ ဤကဲ့သို့ စစ်ဆေးနည်းမျိုးစုံ ဖြင့် စစ်ဆေးကြည့်ပါလျက် အတုထိသွားသော လူတော်တော်များများကို တွေ့လိုက်ရသေးသည်။ နောက်ဆုံးပေါ်လိမ်နည်းဟု ဆိုရပါလိမ့်မည်။ ဤမထိထားလျှင်တော့ အလိမ်ခံကြရဦးမည်သာ။ ဖြစ်ပုံကား-

တစ်ခုသော နေ့ခင်းအချိန်လောက်တွင် လှိုင်မြို့နယ်၊ (၅)ရပ်ကွက် သမဆိုင်ရှေ့သို့ တောရိုက်အပြည့်ဝတ်ဆင်ထားသော အသက် ၅၀ခန့်ရှိ အမျိုးသားတစ်ဦး တောင်းကြီးတစ်လုံးထမ်းကာ ရောက်လာပြီး အရောင်း စာရေးမလေးများကို အားကိုးတကြီးမျက်စိဖြင့် လှမ်းကြည့်ကာ-

“သမီးတို့ထဲက ပျားရည်အစစ် အသုံးလိုတဲ့သူများရှိရင် ပြောကြ ပါကွယ်၊ ဦးကြီးဆီမှာ ပျားရည်စစ်စစ် ဆယ်ပုလင်းလောက် ပါလာပါ တယ်၊ ဦးကြီးက တောကပါ၊ ဦးဘညိမ်သား ဘယဆေးဆိုင်ကို ပျားရည် အမြဲတမ်းသွင်းနေတာပါ၊ ဒီတစ်ခါတော့ ဈေးက အဆမတန်နိမ်တာနဲ့ သူတို့ဆီ မရောင်းတော့ဘဲ မြို့ထဲ ကိုယ့်ဘာသာလှည့်ရောင်းတာပါ၊ အစစ် ဖြစ်ကြောင်း အာမခံပါတယ်၊ ကြိုက်သလိုစစ်ကြည့်ကြပါ၊ အတုဖြစ်နေ ရင် အားနာမနေပါနဲ့၊ သမီးတို့စီးတဲ့ဖိနပ်နဲ့သာ ပါးကို ဘယ်ပြန်ညာပြန် ရိုက်လွှတ်လိုက်ကြပါ”

(မှတ်ချက်) စပါးကြီးသည်ခြေကဲ့သို့ အဖိုးတန်ဆေးဖက်ဝင်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

တိရစ္ဆာန်ထွက်ပစ္စည်းအတုများကိုလည်း အထက်ပါနည်းအတိုင်းပြောဆိုပြီး လိမ်ရောင်းလေ့ရှိသည်။ ဦးဘညိမ်သားဘယဆေးဆိုင်ကြီးကဲ့သို့ ထင်ရှားသောဆေးဆိုင်ကြီးများအမည်ကို အလွဲသုံးစားပြုပြီး လိမ်နေကြသည်မှာ လွန်စွာမှ အရုပ်ဆိုးလှပါသည်။ ထိုသို့ အသုံးပြုခြင်းဖြင့် သူတို့၏ ပစ္စည်းအတုကို ဝယ်မည့်သူများ စိတ်ဝင်စားသည်ကတော့ အမှန်ပင်။ ယခုလည်း ကြည့်ပါ။

ဦးဘညိမ်သား ဘယဆေးဆိုင်ကြီးကဈေးနှိပ်လို့ အပြင်ထွက်ပြီး ရောင်းတာပါဟု ဆိုလိုက်သည်နှင့် သမဆိုင်အရောင်းစာရေးမလေးများ အပါအဝင် ဆိုင်တာဝန်ခံနှင့်တကွ ဝန်ထမ်းအားလုံး စိတ်ဝင်တစားဖြင့် တောသားကြီးထံမှ ပျားရည်ပုလင်းများကို အသီးသီးယူကြည့်ကြကာ ဖော်ပြပါနည်းများအတိုင်း ပျားရည်စစ်၊ မစစ် စစ်ဆေးကြပါတော့သည်။

ဘယ်လိုစစ်စစ် အစစ်ဟူသောအဖြေသာထွက်နေသဖြင့် တောသားကြီးတောင်းထံမှ ပျားရည်ဆယ်ပုလင်းမှာ ခဏနှင့်ကုန်သွားပါတော့သည်။ တစ်ပုလင်းကို နှစ်ရာကျပ်ဆီပေးလိုက်ကြရသည်။ ၁၉၈၉-ခုနှစ်ခန့်ကမို့ ငွေကြေးတန်ဖိုး တော်တော်ရှိပါသေးသည်။ သုံးလေးရက်ခန့်ထိတော့ ဘာပြဿနာမှ မပေါ်သေး။ ဈေးမှန်ပစ္စည်းမှန် ရောင်းသွားသော တောသားကြီးကို ကျေးဇူးပင်တင်နေမိကြလေသည်။ ဘစ်ပတ်ခန့်ရှိသောအခါတွင် ကား အလိမ်ခံရမှန်းသိကြလေပြီ။ အဘယ်ကြောင့်ဆိုသော် ပုလင်းသုံးပုံ နှစ်ပုံလောက်တွင် ပျားဖယောင်းချက်များဖြင့်ပိတ်ထားပြီး ထိုပျားဖယောင်းချက်အောက်တွင် သကာရည်များကို ထည့်ထားသည်။

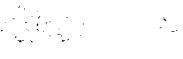
သကာရည်ဆိုသည်မှာ ထန်းလျက်မဖြစ်ခင် ထန်းရေချိုကို ကျိုထားသောအရည်ပင်။ ပုလင်းအပြင်မှကြည့်လျှင် ပျားရည်အရောင်နှင့် တစ်

ယောဂီရင် (ရွှေပြည်သာ)

ထေရာတည်း တူလှသည်။ တစ်ဖန် ထိုပုလင်းအထက် သုံးပုံပုံ တစ်ပုံ
လောက်တွင်မှ ပျားရည်အစစ်ကို ထည့်ထားခြင်းဖြစ်သည်။ ထို့ကြောင့်
ဘယ်လောက်စစ်စစ် အစစ်ဟူသောအဖြေသာ ထွက်နေခြင်းပင်။

အသုံးပြုသောအခါတွင်လည်း ထိုပျားရည်အစစ်ကလေးမကုန်ခင်
အခါတွင်ကား ဘယ်လိုမှ အတုမှန်းမသိနိုင်ပါ။ အင်မတန်မှ ပီရိသော
လိမ်လည်မှုပင်။ ထိုကဲ့သို့သော လိမ်လည်မှုမှ ကင်းလွတ်လိုလျှင်ကား
ဝယ်သောပျားရည်ကို မိမိပုလင်းထဲပြောင်းထည့်ယူရန်သာ ဖြစ်ပါသည်။





[Faint, mostly illegible text in Burmese script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

ဆရာတုဆရာယောင် သတိနှင့်ရှောင်

[Faint, mostly illegible text in Burmese script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

စုန်း၊ အောက်လမ်း၊ ပယောဂ၊ မိစ္ဆာပညာရပ်များသည် တကယ်ရှိ
သောပညာရပ်များ ဖြစ်ပါသည်။ ထိုမိစ္ဆာပညာရပ်များသည် နှိမ်နင်းနိုင်
သော အထက်လမ်းဟုခေါ်သည့် သမ္မာပညာများသည်လည်း တကယ်
ရှိပါသည်။ စာတွေ့၊ ကိုယ်တွေ့ နှစ်ခုစလုံးလေ့လာပြီးမှ ဤစကားကို
ရဲရဲဝံ့ဝံ့ပြောခြင်း ဖြစ်ပါသည်။

ဗဟုရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ဆရာစစ်၊ ဆရာမှန်ဆိုလျှင် လူနာရှင်က လူနာကို သေချာအပ်ပြီး ကုခိုင်းသော်လည်း ချက်ချင်းလက်ခံပြီး ကုမပေးသေးပါ။ စုန်း၊ အောက်လမ်း၊ ပယောဂရောဂါ ဟုတ်၊မဟုတ်ကို စစ်ဆေးပါသေးသည်။ ပယောဂရောဂါ မှန်မှ ကုပေးပါမည်။ ပယောဂ ဟုတ်မဟုတ် စစ်ဆေးသော အခါတွင်လည်း လူနာကို ရိုက်ခြင်း၊ နှက်ခြင်း မဆိုထားနှင့် အော်ငေါက်ခြင်းပင် မပြုပါ။ ရောဂါစကုသည်မှ ပျောက်ချိန်အထိ ငွေစကား၊ ပွဲတင်ဖို့စကား လုံးဝမပြောပါ။

လူနာရှင် စေတနာရှိသလောက် လှူသည်ကိုသာ လက်ခံပါသည်။ ထိုအကြောင်းများနှင့်ပတ်သက်၍ အကျယ်သိလိုလျှင် မနောစိတ္တုပ္ပာဒ် မူရင်းကျမ်းနှင့် ဘူတဝိဇ္ဇာ သုတေသီအောင်သက်ရေးသည့် ပယောဂလေ့လာ၊ သွေးလေ့လာ ပ၊ ဒု၊ တ သုံးအုပ်တွဲတို့ကို ဖတ်ကြည့်စေချင်ပါသည်။ ရှာမရလျှင် စာရေးသူထံအကူအညီတောင်းပါ။ စာအုပ်ကို ဖိုတိုစတက်ကူးပြီး ပို့ပေးပါမည်။

ရှားပါးစာအုပ်များဖြစ်နေ၍ မူရင်းစာအုပ်များကိုတော့ မငှားနိုင်တော့ပါ။ ထိုကဲ့သို့ အထွေထွေဗဟုသုတနည်းပါးမှုကြောင့်လည်း လူအတော်များများမှာ ဆရာတု၊ ဆရာယောင်များ၏ မသမာမှုများကြောင့်လည်း ဆရာစစ်၊ ဆရာမှန်တို့မှာ အထင်သေးအမြင်သေး ခံကြရပါသည်။

ထို့ကြောင့် မိမိဆွေမျိုးထံတွင် ပယောဂဝေဒနာ ဖြစ်ခဲ့ပြီဆိုလျှင် အထက်ဖော်ပြပါ အင်္ဂါရပ်တို့ကိုစိစစ်၍ ဆရာကောင်းဆရာမှန်ကို သေချာရှာပြီး ကုသပေးစေလိုပါသည်။ ဆရာတု၊ ဆရာယောင်များလက်ချက်ဖြင့် အသက်ဆုံးကြရသော လူနာများလည်း အရေအတွက်နည်းတော့မည်မဟုတ်ပါ။ စာရှုသူအပေါင်း သတိထားဆင်ခြင်နိုင်ရန် လွန်ခဲ့သော ၁၅-

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်္ဂါယူများအကြောင်း

နှစ်ခန့်က ဖတ်ခဲ့ရသော စံပယ်ဦးဝတ္ထုတိုပေါင်းချုပ်ပါ ဖြစ်ရပ်မှန်ဇာတ်လမ်းလေးတစ်ပုဒ်ကို စာရေးသူ၏အတွေ့အကြုံအချို့နှင့် တွဲစပ်၍ဖော်ပြပါဦးမည်။

မြင်ကွင်းကတော့မလှ။ ချည့်နဲ့ပိန်လို့နေသော အသက်နှစ်ဆယ်အရွယ်မိန်းမငယ်လေးတစ်ဦးကို မိန်းမကြီးနှစ်ယောက်က အတင်းချုပ်ကိုင်ပေးနေပြီး အရပ်ဆိုးဆိုး အသားမည်းမည်းနှင့်ဆရာဆိုသူက ဆေးတစ်ခွက်ကို မရမက ဇွတ်တိုက်နေသည်။ ဆေးတိုက်ပြီးသွားသည်နှင့် အသင့်ပြင်ထားသော အုန်း၊ ငှက်ပျောကန်တော့ပွဲရှေ့တွင် မတ်တတ်လက်အုပ်ချီပြီး တစ်စုံတစ်ရာကို အတန်ကြာရွတ်ဖတ်သရဇ္ဈာယ်နေသည်။ ပြီးသည်နှင့် ကန်တော့ပွဲအနီးချထားသော လက်သုံးလုံးခန့်ရှိ ထားဝယ်ကြိမ်လုံးကို ဟန်ပါပါကောက်ယူလိုက်သည်ကို တွေ့ရသည်နှင့် ကျွန်တော့်ရင်ထဲ ထိတ်ခနဲဖြစ်သွားရသည်။ အဘယ့်ကြောင့်ဆိုသော် ထိုကဲ့သို့သော ဆရာတု၊ ဆရာယောင်များ၏ အတင်းနှိပ်စက်ညှဉ်းပန်းမှုကြောင့် မသေသင့်သော လူနာအများအပြား သေဆုံးရသည်ကို လက်တွေ့မြင်ဖူးထားသောကြောင့်ပင်။

ပယောဂဝေဒနာဟု လူနာရှင်ကဆိုလိုက်သည်နှင့် ဟုတ်၊ မဟုတ်ဘာမှ စစ်ဆေးခြင်းမရှိဘဲ ဆေးကိုအတင်းတိုက်သည်ဆိုကတည်းက ထိုဆရာဆိုသူကို ကျွန်တော့်အနေဖြင့်မသင်္ကာတော့ပါ။ ဤရွာတွင် ကျွန်တော့်အနေနှင့် ဧည့်သည်တစ်ယောက်ဖြစ်နေသဖြင့်သာ ချက်ချင်း ဝင်မပြောသေးဘဲ အခြေအနေကို စောင့်ကြည့်နေမိခြင်း ဖြစ်သည်။ ပိန်လို့ချည့်နဲ့နေသော လူနာကိုတော့ ကြိမ်တစ်ချက်မျှအရိုက်မခံနိုင်ပါ။ အသက်ဘေးစိုးရိမ်စရာကောင်းလှသည်။

ဇေယျာရုံ (ရွှေပြည်သာ)

ယခုဆရာဆိုသူကား ဆရာယောင်ဖြစ်ဖို့ ရာခိုင်နှုန်းတော်တော်များနေပါသည်။ သို့သော် သူ၏အလိမ့်အညွှာကို လက်ဆုပ်လက်ကိုင်မပြနိုင်ဘဲ ဝင်ပြောလျှင်လည်း ဝိုင်းအုံတိုးဝေ့ကြည့်နေကြသော ရွာသားများက ကျွန်တော်စကားကို လွယ်လွယ်လက်ခံကြလိမ့်မည်မဟုတ်ဘဲ ဤနယ်တစ်ဝိုက်တွင် ထင်ရှားနေသော ၎င်းဆရာယောင်၏စကားကိုသာ အတည်ပြုကြပေလိမ့်မည်။

ပုဂ္ဂိုလ်ခင်မှတရားမင်သည်ဟူသော စကားသည်လည်း ရှိသေးသည် မဟုတ်ပါလား။ ထို့ကြောင့်ပင် ဘာမျှမပြောသေးဘဲ ဆရာဆိုသူ၏ မျက်နှာကိုသာ စူးစူးရှရှုစိုက်ကြည့်နေလိုက်သည်။ တိုက်တိုက်ဆိုင်ဆိုင်ပင် ကြိမ်လုံးကို ဆကာဆကာဖြင့် ဟန်ရေးပြနေသော ဆရာဆိုသူက မာန်ဝင့်သော မျက်နှာနှင့် ပရိသတ်ထံလှမ်းအကြည့်တွင် ကျွန်တော်နှင့်အတော်ကြာကြာ မျက်လုံးချင်းဆုံသွားမိကြသည်။

တဒင်္ဂါကြာ ဆင်နွဲလိုက်သောမျက်လုံးတိုက်ပွဲတွင် ကျွန်တော်က ဦးစွာ အနိုင်ရရှိလိုက်သည်။ ကျွန်တော်၏ စူးရှလှသောမျက်လုံးအကြည့်ကို မခံနိုင်သော ဆရာဆိုသူက အရင်မျက်လွှာချသွားရသည်။ မြောင်း... မြောင်း... မြောင်း... ဟူသော ရုတ်တရက်ထွက်ပေါ်လာသော အသံကြီးကြောင့် လူနာအပါအဝင်ကြည့်ရှုနေသောပရိသတ်အားလုံး ရုတ်တရက်မို့ ထိတ်ခနဲဖြစ်သွားမိကြသည်။ တခြားအသံတော့မဟုတ်။ ကြမ်းပြင်ကို ရိုက်လိုက်သောဆရာဆိုသူ၏ ကြိမ်လုံးသံပင် ဖြစ်ပါသည်။

‘ဟေ့... မိစ္ဆာနဲ့ဆရာနဲ့ ယှဉ်ပြိုင်နေချိန်မှာ မဆိုင်သူတွေ ဝင်မရှုပ်ကြနဲ့၊ ဘယ်လိုမိစ္ဆာလဲ၊ ဘယ်လောက်အဆင့်ရှိသလဲဆိုတာတွေကို ခဏ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ထားပြီး ဒီမိန်းကလေးခန္ဓာကိုယ်ထဲ ထည့်ထားတဲ့ အပင်းတွေကို အရင် ကျအောင်လုပ်ဖို့က ပိုပြီးအရေးကြီးတယ်။ ဒါကြောင့် အပင်းကျတဲ့ဆေးကို အရင်တိုက်ရတာပဲ။ ကဲဟေ့... ကြာတယ်။ မိစ္ဆာမလုပ်ထားတဲ့ အပင်းတွေ ဒီကလေးမပါးစပ်က ချက်ချင်းထွက်စမ်းဟေ့'

ပြောင်း... ပြောင်း... ပြောင်း...။ ဆရာ၏ အမိန့်ပေးသံနှင့်အတူ ကြိမ်သံပါ တစ်ခါတည်းပါလာသဖြင့် အထူးအဆန်းကြည့်လိုသူ ရွာသားများက အိမ်ပေါ်မှာတင် ပြည့်ကျပ်နေရုံမကတော့ဘဲ အိမ်ခြံပိုင်းအတွင်းမှာပင် ခြေချစရာမရှိအောင် ဖြစ်လာသည်။ အချိန်ကိုက် ကွက်တိကျလှပါသည်။ ဆရာ၏ကြိမ်သံနှင့်အမိန့်ပေးသံအဆုံးမှာပင် လူနာရှင်မိန်းကလေးသည် တုဝေါဝေါနှင့် ထွေးခံထဲ အန်ချပါတော့သည်။

မိန်းကလေး၏အန်ဖတ်ထဲတွင် အသားစကြီး လေး၊ ငါးတုံး ပါလာသဖြင့် ကြည့်ရှုနေသူများ အံ့ဩလန့်ဖျတ်သွားကာ နောက်သို့ရှုံ့သွားကြသည်။ ပြီးမှ အလုအယက် ရှေ့သို့တိုးကြည့်ကြပြန်သည်။ အန်ဖတ်ထဲတွင်ပါလာသော တစ်လက်မသာသာခန့်ရှိ အဆုတ်လိုလို၊ အသည်းလိုလို အသားစကြီးများမှာ အစိမ်းသက်သက်ကြီးဖြစ်နေသောကြောင့်လည်း ပို၍ အံ့ဩဖွယ်ရာဖြစ်နေကြပြန်သည်။ စကားသံအချို့လည်း ထွက်ပေါ်လာသည်။

'ဒါကြောင့်လည်း ဒီဆရာ ဒီနယ်တကြောမှာ နာမည်ကြီးပေတာပဲ'
'အေးဗျာ... ကျုပ်တစ်သက်နဲ့တစ်ကိုယ် လူတစ်ယောက်ခန္ဓာကိုယ်ထဲက အသားအစိမ်းအတုံးလိုက် ထွက်လာတာဆိုလို့ ဒီတစ်ခါပဲမြင်ဖူးသေးတယ်ဗျာ'

'နောင်ဆို ဒီဆရာ အခုထက်ကိုပိုပြီး နာမည်ကြီးဦးမှာသေချာတယ်'

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

အံ့ဩဆူညံစွာ အော်ဟစ်ပြောဆိုနေကြသော ရွာသားများ၏အသံကို ဆရာဆိုသူ၏အသံက လွှမ်းမိုးပြီး ထွက်လာပြန်သည်။

... က... နောက်ကရွာသားတွေလည်း သိပ်တိုးမနေကြနဲ့၊ ဒီမိစ္ဆာမလုပ်ထားတဲ့အပင်းတွေကို အိမ်နောက်ဖေးမှာမြုပ်မှ သေချာလာကြည့်ကြ၊ အပင်းထုတ်လိုပြီးသွားပြီဆိုတော့ ဒီမိစ္ဆာမရဲ့ ကြိုးအဆင့် ဘယ်လောက်ရှိတယ်ဆိုတာ လေ့လာကြည့်ရဦးမယ်' ပြောပြောဆိုဆို ဆရာဆိုသူက ကြမ်းကို ကြိမ်လုံးဖြင့် လေးငါးချက် ရိုက်လိုက်ပြီး-

... ကဟေ့... ဒီမိန်းကလေးကို လုပ်ထားတဲ့မိစ္ဆာမရဲ့ ပညာအဆင့်အတန်း ဘယ်၍ဘယ်မျှ ရှိတယ်ဆိုတာ ဟောဒီပွဲထဲက ငှက်ပျောသီးတွေမှာ ထင်ရှားအောင်ပြလိုက်စမ်း၊ အဲဒါ အထက်ဆရာများ၏အမိန့်၊ ငါဆရာ၏ အမိန့်ဟေ့'

အမိန့်ပေးပြီးသည်နှင့် ဆရာဆိုသူက ကန်တော့ပွဲကို စူးစူးစိုက်စိုက် ကြည့်နေရာ ပရိသတ်များကလည်း မျက်တောင်မှ မခတ်မိအောင် ဆရာဆိုသူနှင့်အတူ လိုက်ကြည့်နေလိုက်ကြသည်မှာ အပ်ကျသံပင် ခကြားလောက်အောင် တိတ်ဆိတ်သွားပါတော့သည်။ ခဏကြာသည်နှင့် ဆရာဆိုသူက-

... က...ဟေ့ တပည့်၊ ပွဲထဲက ငှက်ပျောတစ်ဖီးထုတ်ပြီး အခွံခွာ လိုက်စမ်းဟေ့'

ဆရာဆိုသူ၏ အမိန့်သံအဆုံးမှာပင် တပည့်ဖြစ်သူက ငှက်ပျောဖီးကို အများမြင်လောက်အောင် အထက်သို့မြှောက်ပြီး သုံးလေးလုံးခန့်ကို အခွံခွာပြလိုက်ရာ အထဲမှာ ငှက်ပျောသီးများအားလုံး မင်အရောင်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

အတိုင်း ပြာနှမ်းနေသည်ကို ထူးဆန်းဖွယ်ရာ တွေ့ရှိလိုက်ရပါတော့သည်။
...ဟယ်... ဟာ... ဟင်... ဟူသော အာမေဇိုတ်သံများက
အဆက်မပြတ် ပေါ်လာကြပါတော့သည်။

အဲဒီပြာနှမ်းနေတဲ့ ငှက်ပျောသီးများကို တွေ့ရခြင်းအားဖြင့် ခင်ဗျား
တို့သမီးကို ပြုစားထားတဲ့မိစ္ဆာမဟာ ၁၂ ကြိုးစုန်းဆိုတာ သေချာသိနိုင်
တာပေါ့

လူနာရှင်က-

ကျေးဇူးကြီးလှပါတယ် ဆရာရယ်၊ ကျွန်တော်သမီးလေးကို အခု
လို တစ်ထိုင်တည်းနဲ့ ရောဂါပျောက်အောင် ကုပေးတဲ့ဆရာကို ဆရာ
ကန်တော့ခိုင်းသလောက် ကန်တော့ပါမယ်၊ ဆရာ ကျွန်တော်တို့ ငွေ
ဘယ်လောက်ကန်တော့ရမယ်ဆိုတာ အမိန့်ရှိပါ ဆရာ

ထိုအခါ ဆရာဆိုသူက မျက်စိမှိတ်ပြီး လက်သုံးချောင်းထောင်ပြ
လိုက်သည်။ လူနာရှင်တို့ နားမလည်မှန်းသိထားသော ဆရာဆိုသူ၏
တပည့်က ဘာသာပြန်ပြလိုက်သည်မှာ-

ဆရာရဲ့အဓိဋ္ဌာန်အရ သုံးထောင်ကန်တော့ရမယ်လို့ ပြောတာပါ

ဆန်တစ်ပြည် နှစ်ဆယ်ခန့်သာရှိသေးသောအချိန်တွင် ၎င်းငွေ သုံး
ထောင်၏တန်ဖိုးကို မှန်းကြည့်နိုင်ပါသည်။ ဤဆင်းရဲသားများသည်
ငွေသုံးထောင်ကို အဘယ်မှာလျှင် အလွယ်တကူပေးနိုင်ပါလိမ့်မည်နည်း။
လူနာရှင်လင်မယား ငွေသုံးထောင်ပြည့်အောင် ဘယ်လိုပေးရမည်ကို
ခေါင်းရှင်းရိုက်နေစဉ်မှာပင် ကျွန်တော်က ဘီလူးက ဝင်ကလေပြီ။

ဒီမှာ ဆရာဆိုတဲ့ မိတ်ဆွေ၊ ခင်ဗျားရဲ့လုပ်ရပ်တွေကို ကျွန်တော်
အစအဆုံးကြည့်နေတာ၊ ခင်ဗျားလည်း သိပါတယ်၊ အဲဒီတော့ တိုတိုပဲ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ပြောမယ်ဗျာ၊ ဒီမြို့နယ်က စခန်းမှူးဟာ ကျွန်တော့်သူငယ်ချင်းပါ။ အဲဒီ မှာသွားပြီးတော့ ဒီရွာသားတွေကို သက်သေထားပြီး ခင်ဗျားနဲ့ကျွန်တော် နဲ့ ရှင်းမလား။ ဒါမှမဟုတ် ခင်ဗျား အခုချက်ချင်း ဒီရွာထဲကထွက်သွား မလား။

ကျွန်တော့်စကားအဆုံးမှာပင် ဆရာဆိုသူ၏မျက်နှာမှာ ကြောက်ရွံ့ ထိတ်လန့်သောအမူအရာက ဖုံးဖိမရအောင် ပေါ်လာသည်။ မည်မျှပင် သတ္တိကောင်းပါသည်ဆိုဆို ရာဇဝတ်မှုကျူးလွန်ထားသည်မှန်ပါက ဥပဒေ ကို ကြောက်ရွံ့ကြသည်မှာ ဓမ္မတာပင် မဟုတ်ပါလား။

သူတို့၏ကန်တော့ပွဲနှင့် ပစ္စည်းအချို့ကိုသိမ်းကာ အပြေးအလွှား အိမ်ထဲမှ ထွက်သွားကြသော ဆရာတပည့်နှစ်ယောက်ကိုကြည့်၍ ရွာသား များမှာ ဘာပြောရမှန်းမသိဘဲ ငေးကြောင်နေကြသည်။ ထိုဆရာဆိုသူတို့ ထွက်သွားပြီး အတန်ကြာမှပင် လူနာရှင်၏ညီဖြစ်သူက-

‘ဆရာလေး သူတို့လိမ်တယ်ဆိုတာကတော့ ကျွန်တော်တို့ သိရ ပါပြီ။ ဒါပေမဲ့ ဒီလို အသားစိမ်းတုံးတွေ ပါးစပ်ထဲက ထွက်လာအောင်၊ ငှက်ပျောသီးအသားတွေ ပြာနှမ်းနေအောင် ဘယ်လိုလုပ်တယ်ဆိုတာ နည်း နည်းလောက် ရှင်းပြပါဦး ဆရာလေး’

‘ဒါက မျက်လှည့်ရဲ့ သဘာတရားလို့ပေါ့။ မသိရင် ရွှေတစ်ဆုပ်၊ သိရင် ဖွဲတစ်ဆုပ်ဆိုလို့ကား အရှိသားပဲ။ အသားစိမ်းတုံးတွေဆိုတာ တခြားအသားတုံး မဟုတ်ဘူး။ မြင်းရဲ့အဆုတ်တွေပဲ။ မြင်းအဆုတ်ကို တစ်လက်မသာသာလောက်စီ တုံးထစ်ပြီး အဲဒီအဆုတ်တုံးတွေကို လက် ဝါးပေါ်မှာတင်ပြီး အရက်ပျံ့နဲ့ ပွတ်လိုက်ရင် ချေးတွန်းလို့ထွက်လာတဲ့ ချေးလိပ်ကလေးလောက်ထိ သေးငယ်သွားတယ်’

ယုံမှတ်လို ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

‘အဲဒီအလိပ်လေး လေးငါးလိပ်ကို အန်ဆေးနဲ့ရောပြီး တိုက်လိုက်ရင် ဝမ်းထဲရောက်သွားတာနဲ့ နဂိုအတိုင်း ပြန်ကြီးသွားတယ်။ ပါးစပ်က အန်လာတဲ့အခါကျတော့ အသားစိမ်းတုံးသက်သက်ပဲ ဖြစ်နေတာပေါ့။ ငှက်ပျောသီးအသားတွေ ပြာတာကတော့ ဓာတ်သဘောတွေအများကြီး ပါပါတယ်။ ငှက်ပျောသီးခိုင်ကို ခုတ်ယူပြီးတာနဲ့ အပင်မှာကျန်ခဲ့တဲ့ အညှာရယ်၊ ခုတ်ယူလာတဲ့အခိုင်မှာပါတဲ့ အညှာရယ် ဓားနဲ့ဖြတ်ထားတဲ့ နေရာကို မင်ပြာသုတ်ပေးလိုက်တာနဲ့ ငှက်ပျောဖီးအားလုံးမှာပါတဲ့အသားတွေဟာ ပြာသွားတော့တာပဲ။ အမှန်က ဒီလူဟာ မျက်လှည့်အဆင့်လောက် တတ်တဲ့ပညာလေးနဲ့ ခင်ဗျားတို့တစ်တွေကို လိမ်စားနေတာပဲပေါ့။ စခန်းမှူးကို အကြောင်းကြားထားပြီး နောက်တစ်ခါမိရင်တော့ တစ်ခါတည်း ဖမ်းခိုင်းရမှာပဲ’

ရွာသားများအားလုံး သဘောပေါက်သွားကြလေပြီ။
 စာရှုသူအားလုံးလည်း သဘောပေါက်နားလည်ပြီး အလိမ်အညှာ ဘေးမှ ကင်းဝေးကြပါစေသော်။



အလိမ္မံခံချင်သူများ (ဟောင်ကောင်)

ခေါင်းစဉ်ကို တွေ့လိုက်ရတော့ စာဖတ်သူအနေဖြင့် ဟုတ်မှဟုတ် ရဲ့လားဟု သံသယဝင်မိပေလိမ့်မည်။ ဟုတ်သမှဟုတ်ဟုတ်နဲ့တောင် မြည်နေသေးသည်ဟု ပြောရပါလိမ့်မည်။ အလိမ္မံခံချင်သူများမှာ မြန်မာပြည်တွင်ကား အများဆုံးဟုပင် ဆိုရပါလိမ့်မည်။ သို့သော် တခြားနိုင်ငံများတွင်လည်း ရှိသည်သာ။ သို့သော် နည်းတော့နည်းပါလိမ့်မည်။

အလိမ္မံခံချင်သူများ (ဟောင်ကောင်)

ခေါင်းစဉ်ကို တွေ့လိုက်ရတော့ စာဖတ်သူအနေဖြင့် ဟုတ်မှဟုတ် ရဲ့လားဟု သံသယဝင်မိပေလိမ့်မည်။ ဟုတ်သမှဟုတ်ဟုတ်နဲ့တောင် မြည်နေသေးသည်ဟု ပြောရပါလိမ့်မည်။ အလိမ္မံခံချင်သူများမှာ မြန်မာပြည်တွင်ကား အများဆုံးဟုပင် ဆိုရပါလိမ့်မည်။ သို့သော် တခြားနိုင်ငံများတွင်လည်း ရှိသည်သာ။ သို့သော် နည်းတော့နည်းပါလိမ့်မည်။

ထိုနည်းသည့်ထဲမှာ ဖတ်ဖူးထားသော နိုင်ငံတစ်နိုင်ငံကိုတော့ ဖော်ပြပါဦးမည်။ ၎င်းနိုင်ငံကား ဟောင်ကောင်။ လိမ်သူက အင်္ဂလိပ်ပညာ တတ်တစ်ယောက်။ နယ်နယ်ရရတော့မဟုတ်။ အဆောက်အအုံကန်ထရိုက်ရသော အင်ဂျင်နီယာကြီးတစ်ယောက်ပင်။ အရက်ကလည်း အလွန်သောက်၊ မိန်းမကလည်း ပွေလွန်းလှသဖြင့် နောက်ဆုံး အလုပ်ကအထုတ်ခံလိုက်ရသည်။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယုများအကြောင်း

အလုပ်ထုတ်ခံရတော့ ဒေါ်လာငွေမရှိတော့သဖြင့် ကြံမိကြံရာ ကြံရာမှ ဖမ်း၍မရသော လိမ်လည်နည်းတစ်ခုကို သွားတွေ့သည်။ တခြားတော့မဟုတ်။ ဟောင်ကောင်မှာ တရုတ်များက အများစုဖြစ်ရာ တရုတ်ဘို့သည် သားယောက်ျားလေးကို အင်မတန် တန်ဖိုးထားပြီး လိုချင်ကြသည်။ ထိုအချက်သည်ပင် အင်္ဂလိပ်လူလိမ်အတွက် စားပေါက်တစ်ခု ဖြစ်သွားသည်။

ယောက်ျားလေးမွေးသောဆေး ဖော်ရောင်းရလျှင် ကြီးပွားနိုင်သည် ဟူသောအတွေးဖြင့် ပုလင်းကလေး အတော်များများကို ကျန်နေမည့် ဒေါ်လာငွေဖြင့် ဝယ်ယူလိုက်သည်။ ထို့နောက် အနံ့မွှေးသည့် အရောင်ဆေးစပ်ပြီး ရေနင့်ရောကာ ပုလင်းလွတ်များထဲတွင် အပြည့်ထည့်လိုက်သည်။ ရေရှိနေသမျှ သူ့ဆေးက အမြဲတမ်း လိုသလောက် ရနေမည်သာ။

ပြီးသည်နှင့် ယောက်ျားကလေးသာ မွေးသောဆေးအရောင်းဆိုင်ဆိုသည့် ဆိုင်းဘုတ်ကြီးကို အိမ်ရှေ့တွင် ချိတ်ဆွဲလိုက်သည်။ မှန်ပီရီထဲတွင် ဆေးပုလင်းများကို စီစီညာညာ ထည့်ပြထားပြီး၊ အခန်း၏ ဘေးတစ်ဖက် တစ်ချက်တွင်လည်း အောက်ပါစာများ ရေးထားသည့် ဆိုင်းဘုတ်နှစ်ခုကို ထပ်ဆင့် ချိန်ဆွဲထားသည်။

ယောက်ျားလေး လိုချင်သူများအတွက် ယောက်ျားလေးမွေးသည့်ဆေးကို အင်္ဂလန်မှ မစ္စတာ()စမ်းသပ် ဖော်ထုတ်လိုက်ပြီ။ ဤဆေးသောက်လျှင် ယောက်ျားကလေး ကျိန်းသေမွေးရမည်။ ယောက်ျားလေးမမွေးလျှင် ငွေပြန်ပေးဖို့ စာချုပ်ဖြင့် အာမခံသည်။ အခမဲ့ဝင်ရောက်ဆွေးနွေးတိုင်ပင်ပါ။

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

သူကတော့ ဗီရိရေတွင် စားပွဲတစ်လုံးနှင့် ခပ်တည်တည် ထိုင်နေလိုက်သည်။ တစ်ရက်နှစ်ရက်လောက်တော့ လူမလာ။ သူ့အခန်းရှေ့ ဖြတ်သွားသော တရုတ်အထီးအမများ၊ သူ့ဆိုင်းဘုတ်ကစာကို ဖတ်ပြီး ပြုံးစိစိလုပ်သွားကြသည်။ ကွီကွီကွကွတွေ ပြောသွားကြသည်။ နှစ်ရက် မြောက်နေ့အထိ သူ့ဆေးပုလင်းမှာ မရောင်းရသေး။

သူကတော့ ဇွဲမပျက်၊ သူ့ဆိုင်းဘုတ် လာဖတ်သူမှန်သမျှကို အပြုံးဖြင့် နှုတ်ခက်လျက်သာ။ လေးရက်မြောက်သောနေ့တွင် ဆေးအကြောင်းစုံစမ်းရန်လာသူ ရဦးအနက် ၆-ဦးက ဆေးပုလင်းကို ဝယ်သွားကြသည်။ ဆေးတန်ဖိုးက မသေးပါ။ တစ်ပုလင်း ဟောင်ကောင်ဒေါ်လာ ၄၀ ဆယ်၊ တစ်နေ့ထဲ ဒေါ်လာသုံးရာ ရလိုက်သည်။

ဆေးတစ်ပုလင်း၏ ကုန်ကျငွေမှာ သုံးဒေါ်လာသာရှိရာ သူ့မြတ်လိုက်သည်ကမနည်း။ ဟိတ်ဟန်ရှိမှ လိမ်ညာသောသူများအဖို့ များများ အောင်မြင်သည်ဖြစ်ရာ သူ့ဆေးပုလင်းတော့ အဖုံးတံဆိပ်၊ ပုလင်းဘေးတံဆိပ်တွေနှင့် တူတူတန်တန် လုပ်ထားသည့်အပြင် ဆေးညွှန်းလည်း ထည့်ပေးထားသေးသည်။ ဆေးအညွှန်းတွင်...

- ၁။ ဆေးကို ဆားနှင့်သောက်ရမည်။
- ၂။ ကိုယ်ဝန်ဆောင်ထားစဉ် ယောက်ျားကလေးများကိုသာ ချီရမည်။
- ၃။ လှပသော ယောက်ျားလေးဓာတ်ပုံများ အိပ်ခန်းထဲတွင် ချိတ်ဆွဲထားရမည်။
- ၄။ ကိုယ်ဝန်ဆောင်ထားစဉ် မိန်းကလေးများကို မနမ်းရ။
- ၅။ ဤဆေးရည်ကို အညွှန်းအတိုင်း မွေးဖွားသည့်ရက်အထိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

မှန်မှန်သောက်ရမည်ဟု ရေးထားသည်။ ဆေးဝယ်သူ၏ နေရပ် လိပ်စာအပြည့်အစုံကို မှတ်တမ်းစာအုပ်ကြီးထဲတွင် ရေးမှတ်ပြီး၊ ယောက်ျားက လေးမမွေးရင်ငွေပြန်ပေးမည့်အကြောင်း အာမခံ စာချုပ်တစ်ခု ပေးလိုက်သည်။

သူ့ဆေးမှာ တစ်နေ့ထက်တစ်နေ့ ဝယ်သူများလာသည်။ ကျော်ကြားလာသည်။ သူ့အိတ်ကပ်ထဲသို့ ငွေတွေ ဝင်လာမစဲတသဲသဲ။ ဘဏ်စာရင်းပင် ဖွင့်ယူရသည်။ အလုပ်ထုတ်ခံရကာစက ကုန်းကောက်စရာ ပင်မရှိသော အင်္ဂလိပ်ကြီး ယခုတော့ အလိမ်ခံချင်သူများ၏ ကျေးဇူးကြောင့် တိုက်နှင့်ကားနှင့် တယ်လီဖုန်းနှင့် ဖြစ်လာသည်။

တစ်နှစ်လောက် ကြာသောအချိန်တွင်ကား သူ့ဆေးဆိုင်သို့ လူအဝင်အထွက် ပိုရှုပ်လာသည်။ လက်ဆောင်ပစ္စည်းတွေ တစ်ပွေ့တစ်ပိုက် ပိုက်ပြီး ပြုံးပြုံးရွှင်ရွှင် ဝင်လာသူများနှင့် သူပေးလိုက်သည့် စာချုပ်ကြီးတွေကို ကိုင်လျက် မဲ့မဲ့ရွဲ့ရွဲ့ ဝင်လာသူများ။

ပြုံးသူမှာ ယောက်ျားကလေးမွေးသူ။

မဲ့သူမှာ မိန်းကလေး မွေးသူ။

သူကတော့ မည်သူလာစေ ပြုံးလျက်သာ၊ ယောက်ျားကလေးမွေးသူက လက်ဆောင်တွေပိုက်ပြီး ဝင်လာလျှင် သူက သူ့ဆေး၏ အာနိသင်တန်ခိုးကို ပို၍ ကြွားလုံးထုတ်လိုက်သည်။ မိန်းကလေးမွေးသူက စာချုပ်ကြီးကိုရှင်၍ မဲ့မဲ့ရွဲ့ရွဲ့ ဝင်လာလျှင် သူက ပြုံးပြုံးကလေးစာချုပ်အတိုင်း ငွေပြန်ပေးသည်။

သို့သော် သူက သူ့ဆေး၏ အစွမ်းကိုတော့ ကျားကျားမီးယပ်ပဲဟူသော စကားအတိုင်း တစ်ပြားသားမျှမလျှော့။ မိန်းကလေးမွေးသူများ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ကိုသာ သို့ကလို အပြစ်ဖို့လိုက်သေးသည်။

စာချုပ်နဲ့တောင်ရောင်းတယ်ဆိုကတည်းက ကျွန်တော့်ဆေးအပေါ် ကျွန်တော် ဘယ်လောက်ထိ ယုံကြည်တယ်ဆိုတာ မိတ်ဆွေတို့ သတိထားမိလောက်ပါတယ်။ ကျွန်တော့်ဆေးကတော့ တကယ့်ကို အစွမ်းအာနိသင်နဲ့ ပြည့်စုံလောက်ပါတယ်။ မိတ်ဆွေတို့ဘက်ကသာ ဆေးညွှန်းအတိုင်း မလိုက်နာတာရယ်။ ဆေးကို မှန်မှန်မသောက်တာကြောင့်ရယ်။ ဒီအကြောင်းများကြောင့် ယောက်ျားကလေး မမွေးတာပါ။ ဆေးရဲ့အပြစ်မဟုတ်ပါဘူး။ မယုံရင် ဟောဒီမှာ ယောက်ျားလေးမွေးတဲ့ စာရင်းကို ကြည့်ပြီး လိပ်စာအတိုင်း အိမ်တိုင်ရာရောက် သွားမေးကြည့်နိုင်ပါတယ်။

ဟုဆိုကာ မှတ်တမ်းစာအုပ်ကြီးကို ထိုးပေးလိုက်သေးသည်။

သူ အပြောကောင်းတာနှင့် အထောက်အထားပြနိုင်တာနှင့်ပင် ကာယကံရှင်များက ငွေပြန်ယူရမှာပင် အားနာနေကြပြီ။ သူကတော့ ပကတိအတိုင်း ပြန်ပေးသည်။ ပြန်ပေးရခြင်းအတွက် သူ၏အရုံးငွေက သုံးဒေါ်လာသာပါ။ သို့သော် ယောက်ျားလေးမွေးသော သူများထံမှ ရလိုက်သည့်ငွေက အဆမတန်။

သူ့လိမ်နည်းကလေးက ရှင်းရှင်းကလေးသာ။ ကိုယ်ဝန်ဆောင်မိခင်များသည် ယောက်ျားကလေးချည်း မမွေး။ မိန်းကလေးချည်းမမွေး။ ထို့ကြောင့်လည်း သူ့မှတ်စုစာအုပ်ထဲတွင် ယောက်ျားကလေးမွေးသူ စာရင်းနှင့် မိန်းကလေးမွေးသူစာရင်းမှာ မျှမျှတတ ရှိနေသည်။ သို့သော် သူ့ကို မည်မျှ လိမ်ညာစားသူဟူ၍ စွပ်စွဲသူမရှိကြ။ အဘယ်ကြောင့်နည်း။

လူအတော်များများတို့သည် အလိမ်ခံ၍ စိတ်ဖြေရာကို ရှာနေကြသောကြောင့်ပါတည်း။



အလိမ်ခံချင်သူများ (မြန်မာပြည်)

မှတ်ချက်။ ။ ဖော်ပြပြီး အင်္ဂလိပ်လူလိမ်အကြောင်းနှင့် ယခုဖော်ပြမည့် ဘိုးတော် လူလိမ်တို့အကြောင်းတို့ကို ဆရာကြီး ကျော်မြသန်း၏ ဘိုးတော်ကင်းစာအုပ်မှ ထုတ်နှုတ်တင်ပြခြင်း ဖြစ်ပါသည်။ အင်္ဂလိပ်လူလိမ်အကြောင်းကို စာမျက်နှာမစားရန် အကြောင်းအရာကိုယူ၍ မိမိ၏ရေးဟန်ဖြင့် အကျဉ်းချုပ်နိုင်သမျှ ချုပ်၍ ဖော်ပြခဲ့ပါသည်။ ယခု ဘိုးတော်လူလိမ်အကြောင်းကိုကား အကျဉ်းချုပ်လိုက်လျှင် သိသင့်သိထိုက်သောအရာများ ကျန်သွားမည်ကို စိုးရိမ်၍ တစ်ကြောင်း၊ လွန်ခဲ့သောနှစ်ပေါင်း ၂၀-ကျော်က အင်မတန် နာမည်ကြီးခဲ့သော စာအုပ်တစ်အုပ်ဖြင့် မသိမိလိုက်ကြသော လူငယ်များ၊ ဆရာကြီး၏ တစ်မူထူးခြားသော လက်ရာကို မြည်းစမ်းကြည့်နိုင်ကြရန်အတွက် မူရင်းအတိုင်း ကောက်နုတ် ဖော်ပြလိုက်ပါသည်။

မင်းတို့ဝိဇ္ဇာလမ်းနဲ့ပတ်သက်ပြီး ဘယ်လောက် လေ့လာဖူးသလဲ၊ ဘယ်လောက် နားလည်သလဲဟု မေးလျှင် အသင့်အတင့် လေ့လာဖူးပါ

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

တယ်၊ အသင့်အတင့် နားလည်ပါတယ်ဟု ဖြေပါမည်။ ဒီထက်ပို၍ အဖြေပေးရလျှင် ဤလမ်း၊ ဤစခန်းများ မရှိပါဟု ကျွန်တော် မပြောပါ။ ရှိပါသည်ဟု ကျွန်တော် ဝန်ခံပါမည်။ သို့သော် အဆင့်မြင့်၍ ခက်ခဲနက်နဲသော လုပ်ငန်းတစ်ခုကို ငှက်ပျောသီးအခွံနှာသလို အလွယ်တကူလုပ်နေ၊ ပြောနေသည်ကိုမူ လက်မခံနိုင်ပေ။ တစ်နေ့ တစ်နာရီလောက် ပုတီးစိပ်ပြီး သုံးလလောက်နဲ့ ဘိုးတော်အမည်ခံနေသည်ကိုတော့ လုံးဝဘဝင်မကျနိုင်ပေ။

ကျွန်တော်၏ ဘိုးတော်ကင်းကို ခေတ္တဖြတ်၍ ဟင်္သာတ ဦးဘခင်ကိုယ်တွေ့ ဘိုးတော်ဇာတ်လမ်း တင်ပြပါမည်။ ဘိုးတော်ဇာတ်လမ်း၏ အနွယ်ဟု သဘောထား၍ ဖတ်ရှုကြရန် ဖြစ်ပါသည်။ ဦးဘခင်ပြောပြသည့် ဘိုးတော် အောင်မင်းစိန်ဇာတ်လမ်းကို ဦးဘခင် လေအတိုင်း ပြန်လည်ဖောက်သည်ချပါမည်။

ကျွန်ုပ်တို့ ဟင်္သာတနယ်မှာဖြစ်ပွားတဲ့ ဘိုးတော် အောင်မင်းစိန်ဇာတ်လမ်းကလေးပါပဲ၊ ဇာတ်လမ်းက စိတ်ဝင်စားစရာ ကောင်းသလို သင်ခန်းစာယူစရာတွေလည်း အပြည့်ပါပဲ၊ သူများပြောတော့ မဟုတ်ပါဘူး၊ ကျုပ် ကိုယ်တွေ့ပါ။ ဦးက ကုန်သည်ဆိုတော့ ဟင်္သာတနယ် အနံ့သွားရင်း အကြောင်းတိုက်ဆိုင်လို့ ကြုံတွေ့ခဲ့တဲ့ ဇာတ်လမ်းဆိုပါတော့၊ ဦးတို့ ဟင်္သာတနယ်ဟာ အထူးအဆန်းတွေ သိပ်ပေါ့တဲ့နယ်ပေါ့၊ တူမောင်တို့ ကြားဖူးပါလိမ့်မယ်။

မြန်မာတစ်ပြည်လုံး ဟိုးဟိုးကျော်သွားတဲ့ မယ်ကုဝဏ်တို့၊ ရေရှင်ကိုယ်တော်ကြီးတို့၊ နောက်ပြီး ဘိုးတော် ဘယ်သူ၊ ဘိုးတော် ဘယ်ဝါနဲ့ ဦးတို့တောမှာ မိုးတစ်ပြိုက်နှစ်ပြိုက်လောက် ရွာပြီး နေကလေး ပူလိုက်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအုပ်ပိသုပ္ပာအကြောင်း

ရင် ပေါက်လာတဲ့ ဂွီတွေလိုပါပဲ၊ အသေထွက်၊ အရှင်ထွက်ဆိုတဲ့ စကား
တွေကလည်း နှုတ်ဖျားမှာ သီးနေတာပဲ၊ ဘယ်ဘိုးတော်က ကောင်းကင်
မှာသွားနေတဲ့ လေယာဉ်ကို လက်နဲ့ဖမ်းဆွဲလိုက်တယ်၊ ဘယ်ဘိုးတော်
က လေဝင်ပေါက်မရတဲ့ ဂူထဲမှာ ကိုးရက်အဓိဋ္ဌာန်ဝင်ပြီး ထွက်လာတော့
သူ့တစ်ကိုယ်လုံးမှာ အရောင်တွေ လက်လက်ထအောင် တောက်နေတယ်။

ဘယ်ဘိုးတော်က မိုးကို တားလိုက်တယ်၊ ရေကို လမ်းလွှဲ
လိုက်တယ်၊ ဘယ်ဘိုးတော်က သမားတော်ကြီးတွေနဲ့ ဆေးရုံက လက်
လွှတ်လိုက်တဲ့ လူနာကို ရေတစ်ခွက်တည်းနဲ့ ပျောက်အောင် ကုလိုက်
တယ်၊ ဘယ်ဘိုးတော်က သစ်မြစ်တွေ ဓားနဲ့ခုတ်ပြီး လုံထဲထည့်လိုက်
တာနဲ့ ဝင်းဝင်းလက်လက် ရွှေတွေဖြစ်လာတယ်ဆိုတဲ့ ပါးစပ်ပုံပြင်တွေ
ကတော့ ပြောမဆုံးပေါင် တောသုံးထောင်ဆိုတာလို ခဏခဏ ကြားနေ
ရတာပဲ။

‘အဲဒီလို ဘိုးတော်တွေ ပေါတဲ့နယ်ကို အောင်မင်းစိန်ရောက်လာ
ပြန်တာပေါ့’

‘အောင်မင်းစိန်ဆိုတဲ့လ လူက ခုန တူမောင်ပြောတဲ့ သာဗိန္ဒူလိုပဲ
သူက လူချောလူဖြောင့်၊ အဲ... သာဗိန္ဒူနဲ့ မတူတာကတော့ သူက
သျှောင်နဲ့အသားကလည်း ဖြူဖြူဝင်းဝင်း၊ ဆံပင်က ကောင်းလည်းကောင်း
နက်လည်းနက်တော့ မင်းသားချော ချောတယ်လို့ ဆိုရမှာပေါ့၊ ရုတ်တ
ရက် သူ့ကို မြင်ရင် အကြောင်းမသိတဲ့လူက ဇာတ်မင်းသားလို့ ပြောမှာ
ပဲ၊ နောက် သူဝတ်လေ့ရှိတာက ရောင်ပြေးယောဂီ အနုရောင်ဆိုတော့
သူ့အသားအရေနဲ့ သူ့ဟန် သူ့အဝတ်အစားက အတော့်ကို ပန်သင့်တယ်
ဆိုပါတော့။’

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

‘အဝါဘက်ကို လုနေတဲ့ ဆင်စွယ်ပုတီးက အောက်ခံယောက်ျားရောင် ပေါ်မှာ အထင်းသားကြီး ဖြစ်နေတာကိုက တစ်မျိုးကြည့်ကောင်းတယ် လို့ ဆိုရမလားပဲ။ သူ့ကို အဝေးကြီးကပဲ ထင်းထင်းပပ မြင်နိုင်ပါတယ်’

‘အသက်ကော ဘယ်လောက်ရှိမလဲ ဦးရဲ့’

‘၃၀-ကျော် ၃၅-နှစ်လောက် ရှိမှာပေါ့။ အောင်မင်းစိန်ကို ဟင်္သာ တနယ်ထဲက ပင့်လာသူကတော့ ဦးသာဆိုင်တဲ့ ဦးတို့နဲ့ တော်တော်ရင်းနှီး တယ်။ သူကြီးလည်း သူကြီးဟောင်း၊ ကုန်သည် ကြေးရတတ်ဆိုတော့ သူ့ရွာအပေါ်မှာရော၊ အနီးအနားမှာရော အတော်လေး ဩဇာတိက္ကမ ရှိ တယ်။ ကိုသာဆိုင်က အထက်ဂိုဏ်းတို့၊ ဘာတို့ကို တော်တော်ဝါသနာ ပါတဲ့လူ၊ ဝါသနာကြီးတဲ့လူ၊ ဦးသိသလောက်တော့ ဘာသာရေး ကိုင်းရှိုင်း သူတစ်ယောက်ပါပဲ။ သူ့မှာ သမီးပျိုသုံးယောက် ရှိတယ်။ ထားကြည့်၊ အေးခင်၊ သန်းမေတဲ့၊ သမီးတွေကလည်း သမီး ချောတွေပါပဲ။ သမီးအကြီးကတော့ အသက် ၂၈-နှစ်လောက်ရှိတဲ့ အပျို ကြီးပေါ့။’

‘ကိုသာဆိုင်က စီးပွားရေးချောင်ချောင်လည်လည်မို့ သမီးလေး တွေကလည်း ခေတ်ဆန်ဆန်ပါပဲ။ သူတို့ရွာ အနီးတစ်ဝိုက်မှာတော့ ဟိုးလေးတကျော် ညီအစ်မသုံးဖော်ပေါ့။ ဒါပေမဲ့ ကိုသာဆိုင်ကို ကြောက် လို့ တော်ရုံယောက်ျားတွေက သူတို့ညီအစ်မကို မစရဲကြဘူး’

‘ဒါကြောင့်လည်း အကြီးဆုံးခမျာ အပျိုကြီး ဖြစ်နေတာပေါ့နော်’
‘အေးပေါ့ တူမောင်ရဲ့၊ ဒါကြောင့်ပဲဖြစ်ဖို့ ရှိတာပေါ့’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

‘ဒီလိုဆို အောင်မင်းစိန်နဲ့တော့ မလွယ်ဘူး ထင်တယ်နော်’

‘ဖြည်းဖြည်းပေါ့ တူမောင်ရယ်၊ တူမောင်ကလည်း လောလှချည်လား၊ မြန်မြန်ဇာတ်သိမ်းချင်ပြီ ထင်တယ်’

‘ဟဲ... ဟဲ... ဟဲ၊ ဦးလေးလည်း ကုလားဇာတ်ကားနဲ့ အင်္ဂလိပ်ဇာတ်ကားထဲက မင်းသား၊ မင်းသမီးတွေလို ဖြစ်နေပြီ ဦးရဲ့’

‘ဆိုစမ်းပါဦးကွဲ့’

‘ကုလားဇာတ်ကားထဲမှာ ဇာတ်လိုက်မင်းသားက မင်းသမီးကို ကိုင်ဖို့ အရေး သိချင်းဆိုရ၊ သစ်ပင်တွေပတ်ရနဲ့ တယ်ကြာပြီး အလုပ်ရှုပ်တာကိုး ဦးရဲ့၊ အင်္ဂလိပ်ဇာတ်ကားထဲမှာတော့ ကိုင်စရာရှိ ဆိုးခနဲ၊ ဆတ်ခနဲပဲ၊ နမ်းစရာရှိလည်း ဖလွတ်ရွတ်ပဲ၊ အဲဒီလို ဖြစ်လိုက်ချင်လို့ပါ’

‘အေး... အေး တူတော်မောင်တို့အကြိုက် ဇာတ်လမ်းကလေး ရောက်လာပါလိမ့်မယ်’

‘ဟုတ်ကဲ့ပါ ဦး၊ ကျွန်တော်က ရယ်စရာ ပြောတာပါ၊ ဇာတ်လမ်းအစုံသာ ဆက်ပြီး အမိန့်ရှိပါ ဦးရဲ့’

‘ကိုသာဆိုင်က သုံးဆယ်ကို အရောင်းအဝယ်ကိစ္စနဲ့သွားရင်း ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန်ကို တွေ့ခဲ့တာဆိုပဲ၊ တွေ့ပြီး သဘောကျတာနဲ့ သူ့ရွာကို ပင့်ခဲ့တယ်ဆိုတာပဲ၊ သူ့ရွာနဲ့ သူ့ပတ်ဝန်းကျင်ကလည်း သူ့ကို မှီပြီး ဒီဘက်မှာ တော်တော်ကလေး ဝါသနာပါကြတယ်လေ၊ ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန် ကြွလာတယ်ဆိုရင်ပဲ ရွာမှာ လူတွေ မစဲတော့ဘူးပေါ့၊ အောင်မင်းစိန်ကို လာအကဲခတ်ကြတာပေါ့လေ။’

‘အောင်မင်းစိန်ကလည်း ရွာရောက်စ၊ စကားများများ မပြောဘူး၊ မှင်နဲ့မောင်းနဲ့ တော်တော်လေး လူမြေ့ရရနေတယ်၊ ဦးကလည်း ဒီအချိန်

မေတ္တာရှင် (ထူးပြည်သာ)

မှာ ကိုသာဆိုင်အိမ်ကို အရောင်းအဝယ်နဲ့ ရောက်တာကိုး၊ အောင်မင်းစိန် ကိုတော့ ဘုရားခန်းမှာ ကော်ဖောအခင်းနဲ့ ကတ္တီပါခေါင်းစွပ်နဲ့ အကျပြင် ပေးရပါတယ်။ ကိုသာဆိုင်ကတော့ ဦး ဒီဘက်မှာ ဝါသနာမပါဘူးဆိုတာ သိတော့ ဝတ်ကျေတန်းကျေပဲ မိတ်ဆက်ပေးပါတယ်။

ဦးကလည်း သူ့အကဲခတ်၊ သူကလည်း ဦးအကဲခတ်နဲ့ပေါ့၊ သူက စကားများများ မပြောပေမယ့် သူ့ဆီလာတတဲ့ လူတွေကိုတော့ အပြုံး မျိုးစုံနဲ့ နှုတ်ဆက်ပြီး သူ့ဆီလာတဲ့ လူတွေကို အကဲခတ်နေဟန် တူပါတယ်။ သူ့ရောက်ပြီးနောက်မှာ ပိတ်ဖြူစင်ကြယ်ဝတ်နဲ့ အုန်းပွဲပြင်တော့ တာပါပဲ။ ပွဲနဲ့ပတ်သက်တဲ့ ပစ္စည်းတွေကို ဘယ်သူမှ မကိုင်စေရဘဲ သူကိုယ်တိုင် အကျအနု ဆေးကြောပြီး ပွဲတွေပြင်ပါတယ်။ ပွဲပြင်နေတုန်း လည်း ပါးစပ်က တတွတ်တွတ် ရွတ်နေတာပဲ။

ပွဲပြင်ပြီးတော့လည်း တစ်နာရီလောက်ကြာအောင် ရွတ်ဖတ်ပြီး ဝိဇ္ဇာတွေကို ပင့်ဖိတ်လိုက်တာ ရှင်အဗ္ဗဂေါဏ၊ ရှင်မထီး၊ ဘားမဲ့ဆရာ တော်၊ ယက္ကန်းစင်တောင်နဲ့ ဘိုးဘိုးအောင် အပါအဝင် ဝိဇ္ဇာရှစ်သောင်း ကို ပင့်ဖိတ်တော့တာပါပဲ။ နောက်ဆုံးမှာ ယခုအချိန်ကစပြီး သောကြာ သား ပိုင်ဆိုင်သည့် ဤဂေဟာကို ဓာတ်နန်း၊ ဓာတ်စခန်းစိုက်ခွင့်အမိန့် ချမှတ်ပေးဖို့နဲ့ အသိအမှတ်ပြုဖို့ အမိန့်ပြန်တမ်းထုတ်ပါတယ်။

နေပါဦး ဦးရဲ့ ဒီလို ဝိဇ္ဇာတွေကို အမိန့်ပြန်တမ်းထုတ်တယ်ဆို တော့ သူက ဝိဇ္ဇာတွေကို အမိန့်ပေးလိုက်တာပေါ့နော်၊ သူက ဝိဇ္ဇာပုဂ္ဂိုလ် ကြီးတွေထက် အဆင့်မြင့်တဲ့သဘော ဖြစ်မနေဘူးလား။

ဦးဟာ ဒီအထိအောင် နားမလည်ပါဘူး မောင်ရာ၊ တွေ့တာကို သာ ပြောပြရတာပါ။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိသူများအကြောင်း

‘ဦးသာဆိုင်ကြီးကတော့ တပြုံးပြုံးနဲ့ပေါ့၊ ပီတိစိတ်လွမ်းတဲ့ မျက်နှာကြီးနဲ့ အောင်ပြီ၊ အောင်ပြီလို့ ထအော်တော့တာပဲ၊ ပွဲပြင်ပြီးတဲ့ ညဘက်မှာတော့ အသံချဲ့စက်တွေ ဘာတွေငှားခိုင်းပြီး သုတ်၊ ပရိတ် တရားတွေကို အသံနေ အသံထားနဲ့ ရွတ်လိုက်၊ ဖတ်လိုက်တာ တစ်ရွာ လုံး ဦးသာဆိုင်အိမ်ရှေ့ ရောက်လာတော့တာပဲ’

‘အသံကလည်းကောင်းတော့ နားထောင်တဲ့လူတွေ သဘောကျ နေတာပေါ့၊ ဒီဘိုးတော်ဟာ ဘိုးတော်အစစ်ပဲ၊ အတော့်ကို တော်တာပဲ၊ ရွာမှာ ကြာကြာနေပါစေလို့ဆိုတဲ့ အသံတွေလည်း ကြွက်ကြွက်စီ ထွက် လာတယ်၊ သူတို့မပြောနဲ့၊ ဦးတောင် တော်တော်ကလေး အထင်ကြီးသွား တယ်၊ ရွတ်ဖတ်ပြီးတော့ အိမ်ရှေ့မှာ နားထောင်နေတဲ့ လူတွေဆီ ထွက် လာပြီး သူ့ပုတီးဖြူကြီးနဲ့ ခေါင်းတွေပေါ် ဝှေ့ပေးလိုက်တာပဲ’

‘အောက်ကလူတွေကတော့ အလိုလို လက်အုပ်ကလေးတွေ ချီလို့ ပေါ့၊ ပြုံးပြုံး ပြုံးပြုံးနဲ့ သဘောကျနေတဲ့ ဟန်တွေနဲ့ သူကလည်း ပါးစပ် က တတွတ်တွတ် ရွတ်ဆိုလို့ ဦးခေါင်းပေါ် ပုတီးကြီးနဲ့ ဝှေ့လိုက်သေး တယ်’

‘ဒါက ပရိတ်သတ်ကို စပြီး ဆွဲဆောင်လိုက်တဲ့ သဘောပေါ့ နော်’

‘ဒါပဲ ဖြစ်မှာပေါ့၊ သူတို့ အလုပ်တွေက ဒီလို စရတာပဲလေ၊ ဇာတ်ပွဲတွေလိုပေါ့၊ ဇာတ်မထွက်ခင် လူတွေလာအောင် ဆိုင်းဝိုင်းကြီးက အစွမ်းကုန်တီးပြီး ခေါ်လိုက်တဲ့သဘောမျိုးပေါ့၊ အဲဒီလို အဲဒီလို သုံးရက် ရွတ်ဖတ်ပြီးတဲ့နောက်မှာတော့ ဦးသာဆိုင်ရဲ့ အိမ်ပေါ်ထပ်ကို ဦးသာဆိုင် မှတစ်ပါး ဘယ်သူမှ မတက်ရလို့ အမိန့်ထုတ်ပြီး အဓိဋ္ဌာန်ဝင်တော့တာ

ယောဂီ (ရွှေပြည်သာ)

ကိုး၊ ဦးလည်း အောက်ထပ်ကို ပြောင်းပေးရတယ်။

‘အဲဒီ အဓိဋ္ဌာန်ဝင်တဲ့ ကိုးရက်အတွင်း ဘာတွေများ တွေ့ရသလဲဗျ်’

‘ဦးသာဆိုင်ကလွဲပြီး ဘယ်သူမှ မတက်ရဘူးဆိုတော့ သူ ဘာတွေ လုပ်နေတယ်ဆိုတာကို ဦးလည်း မမြင်ရဘူးလေ၊ ဒါပေမဲ့ ထူးဆန်းတာ တစ်ခုတော့ တွေ့ရတယ်၊ ဦးကြားဖူးသလောက်ကတော့ အဲဒီလို ဂိုဏ်း ဂဏသမားတွေ အဓိဋ္ဌာန်ဝင်တဲ့အခါ သတ်သတ်လွတ်စားကြတယ် ကြား ဖူးတာပဲ၊ အောင်မင်းစိန်ကတော့ ဒီလို မဟုတ်ဘူး၊ မနက်မိုးလင်းရင် ကြက်ဥကြော်၊ နွားနို့နဲ့ ကောက်ညှင်းပေါင်းပူပူ ပိုပေးရတယ်၊ ဗန်းနဲ့ ဘာနဲ့ သေသေချာချာ ပြင်ဆင်ပြီး ဦးသာဆိုင်ကိုယ်တိုင် ပိုရတယ်၊ ထမင်းစားချိန်ကျတော့ နေ့တိုင်း မနက် ည ကြက်သားကြော်၊ ငါးကြော် နဲ့ တစ်မျိုးမျိုး ပိုရတယ်’

‘ဘိုးတော် အောင်မင်းစိန်တို့ ကောင်းကောင်းစားပြီး အခန်းအောင်း တာကို ကြီးကြီးကျယ်ကျယ် အဓိဋ္ဌာန်ဝင်တယ်လို့ ပြောတာ ဖြစ်မှာပေါ့ နော်’

‘အင်းပေါ့လေ ဒီလိုပဲ ပြောရမှာပေါ့၊ ဦးကလည်း ကိုသာဆိုင်ကို မေးကြည့်သေးတယ်၊ ဘယ်နှယ်လဲ၊ အဓိဋ္ဌာန်ဝင်တာ သတ်သတ်လွတ်တွေ ဘာတွေနဲ့ မဟုတ်ပါလားဆိုတော့၊ အားရှိမှ အလုပ်လုပ်နိုင်တာတဲ့၊ ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန်က လူတစ်မျိုးတဲ့၊ သူ့သဘောနဲ့ သူ ဘာမှမလုပ် ရဘူး၊ ဝိဇ္ဇာတွေက အမိန့်ပေးတဲ့အတိုင်း လုပ်ရတာ၊ တစ်ခါတလေများ မီးလွတ်နဲ့အမိန့်ကျရင် ရေပဲ သောက်နေရတာ၊ နှုတ်ပိတ်အမိန့်ချလိုက် ရင် စကားကို လုံးဝ မပြောရတော့ဘူးတဲ့၊ ဒါ ဦးသာဆိုင်က ပြောပြတာ လေ၊ ဦးကသာ ဘဝင်မကျ ဖြစ်နေတာ၊ ကာယကံရှင်က ဘယ်လိုမှ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

မထူးခြားတော့ ကြည့်နေလိုက်ရုံပေါ့။

‘တစ်ခါထူးခြားတာက လေးရက်မြောက်နေ့ကျတော့ မြင်ကွင်း တစ်မျိုး ပြောင်းသွားပြန်ရော၊ နွားနို့၊ ကြက်ဥနဲ့ ထမင်းပို့တဲ့တာဝန်ကို ဦးသာဆိုင် မလုပ်ရတော့ဘူး၊ ထားကြည်လေးကို အစားထိုးရောဗျို့။’

‘မထားကြည်လား။’

‘ဦးသာဆိုင် သမီးအကြီးပေါ့။’

‘ဪ... ဦးသာဆိုင်ကလွဲလို့ ဘယ်သူမှ မတက်ရဘူးဆိုတဲ့ အမိန့် ပြန်တမ်းပြောင်းသွားပုံကလေးရော ဦးရဲ့။’

‘အေးဗျ... ဦးကလည်း ကိုသာဆိုင်ကို တိုက်ရိုက်မေးလို့ မကောင်းဘူး မဟုတ်လား၊ ဦးလည်း တူမောင်လိုပဲ ဒီအကြောင်းကိစ္စ သိချင်တာနဲ့ ထားကြည်ကိုပဲ မေးရတယ်။’

‘ဝိဇ္ဇာတွေက အမိန့်ချတယ်တဲ့၊ သောကြာနဲ့ ဓာတ်မရဘူး၊ စနေ သမီးနဲ့သာ ဓာတ်ကျတယ်၊ စနေသမီး ပါရမီဖြည့်မှ ဓာတ်နန်းအောင်မယ် လို့ အမိန့်ချလိုက်တာကိုး။’

‘ဟုတ်ကဲ့၊ ဓာတ်လမ်းက အလယ်ပိုင်း ရောက်လာတာပေါ့နော်၊ ဦးသာဆိုင်က ဘာမှ မပြောဘူးလား။’

‘ဟာ... ဘာပြောပါလိမ့်မလဲ၊ သူကတောင် ပျော်လို့၊ မြူးလို့၊ ထားကြည်က ဝိဇ္ဇာပဋ္ဌာန်းဆက်ပါတယ်လို့ သုံးဆယ်ဆရာတော်က ဟော ဖူးတယ်၊ အခု ဘိုးတော်ကလည်း အမိန့်ချတော့ တစ်ထပ်တည်းကျနေတာ ပဲဗျာလို့ လက်ဖျားတခါခါ တအံ့တဩ ပြောရှာတယ်၊ ဒီတစ်ခါတော့ သူ့ဓာတ်နန်းအောင်ပြီပေါ့၊ ဆေးတွေ၊ အင်းတွေလည်း ရပြီပေါ့၊ သူလည်း မကြာခင် ဘိုးတော်ဖြစ်တော့မယ်ဆိုပြီး ဝမ်းသာနေတယ်၊ ဦးကတော့

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

မရယ်မိအောင် မနည်းအောင့်ထားရတယ်လေ၊ ဒါပေမဲ့ ဦးအဖို့ကတော့ တော်တော်လေး အကျိုးရှိပါတယ်'

'ဟဲ... ဟဲ... ဟဲ ဦးလည်း ဝိဇ္ဇာဆက်နေပြီလို့ အမိန့်ချခံရတယ် ထင်တယ်'

'ဟာ... ဘယ်ကလာ ဟင်းကောင်းကျိတ်ကျိတ်နေရတာကို ထူးတယ်လို့ ပြောတာပါ။ ရှစ်ရက်မြောက်တဲ့နေ့ကျတော့ အမိန့်သစ်တစ်ခု ထုတ်ပြန်ရောဗျို့၊ အမိန့်ကတော့ ဦးနဲ့ပတ်သက်နေတဲ့ အမိန့်ပဲ'

'ဘယ်လိုအမိန့်များလဲ ဦးရဲ့'

'ဒီအမိန့်က ဒီအိမ်မှာ ဓာတ်နန်းစိုက်ထားသမျှ သူစိမ်းယောက်ျားတွေ ညဉ့်အိပ်ညဉ့်နေ မတည်းခိုရဘူး၊ လက်မခံရဘူးဆိုတဲ့ အမိန့်ပဲ'

'အမိန့်ကလည်း အဆန်းပါလား ဦးရဲ့'

'ဆန်းတာကတော့ အဆန်းထဲမှာ အညွန့်ထိပ်ခေါင်လို့ ဆိုရမှာပေါ့'

'ဒီတော့ ဦးက...'

'ဦးက ဘာရမလဲ၊ ပြောင်းပြေးရတာပေါ့၊ ဟဲ... ဟဲ ဦးသာဆိုင်က တောင်းတောင်းပန်ပန် ပြောရှာတယ်၊ ဒီတော့ ဦးကလည်း ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန် ဓာတ်နန်းက ခပ်လှမ်လှမ်းကို ခွာခဲ့ရတော့တာပေါ့'

'ဦးဇာတ်လမ်းကလည်း မအီမလည် မဆတ်တင့်ကြီးနဲ့ပေါ့'

'အိုး... အိုး မဆုံးသေးဘူးလေ တူမောင်ရဲ့၊ ဒါပေမဲ့ တူမောင်တို့လည်း ညောင်းရော့မယ်၊ အညောင်းလေးဘာလေး ဆန့်ရင်း လှဲကြဦးပေါ့၊ မနက်ကျမှ ဇာတ်လမ်းဆက်ကြတာပေါ့'

'ဟာ... ဦးကလည်း ရပါတယ်၊ နေ့တိုင်း အိပ်ဖူးနေတာပဲ၊ နောက်ပြီး ရထားကြီးပေါ်မှာ ဖိမိန့်အိပ်လို့ရတာမှတ်လို့ ဆက်သာပြောပါ။

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ယုံများအကြောင်း

ကျွန်တော်တို့တော့ နားထောင်ဖို့အသင့်ပါပဲ’

ကျွန်တော့်ဆန္ဒကို ကိုအောင်မြင့်ကလည်း ဝင်ရောက်ထောက်ခံ လိုက်ပြန်သဖြင့် ဇာတ်လမ်း ဆက်ပြန်သည်မှာ...

‘အဓိဋ္ဌာန်ပြီးလို့ ဆယ်ရက်မြောက်တဲ့နေ့ကျတော့ ဘိုးတော်တွေ ကြွလာလိမ့်မယ်၊ ဘိုးတော်တွေနဲ့ ဓာတ်ကူးချင်သူတွေက ညဘက် သူ့ အိမ်လာခဲ့ကြဖို့ ဦးသာဆိုင်ကိုယ်တိုင် လေးလေးစားစားပဲ လိုက်ဖိတ်ပါ သဗျ။’

‘ဓာတ်ကူးဖို့ လာမယ့်သူမှန်သမျှ ယောက်ျားဖြစ်ဖြစ်၊ မိန်းမဖြစ်ဖြစ် ခေါင်းလျှော်လာရမယ်၊ ဒီနေ့အဖို့တော့ အကုသိုလ်နဲ့ စပ်ဆိုင်သမျှ ဘာမှ မလုပ်ရဘူး၊ လုပ်ရင်လည်း ဘိုးတော်တွေရှေ့ကျရင် ပေါ်မှာပဲ၊ အဆိုက ဒီလိုဆိုတာကိုး’

‘ဦးကတော့ အစကတည်းက ဒါတွေ မယုံတဲ့အပြင် ဘိုးတော် အမည်ခံတဲ့ အောင်မင်းစိန်ကိုလည်း အမြင်ကတ်နေတာနဲ့ မသွားဘူးလို့ နေဦးမလို့’

‘ဟုတ်တာပေါ့၊ ဦးကို အိမ်ပေါ်က ဆင်းရအောင် နှိပ်စက်ထား တော့ ဦးကလည်း ကျွဲခြီးတိုနေတော့မပေါ့’ဟု ကိုအောင်မြင့်က ဝင် ထောက်လိုက်ရာ...

‘မဟုတ်ပါဘူး တူမောင်ရဲ့၊ ဦးတို့က တရားသမားပါ၊ ရတနာ သုံးပါးကလွဲလို့ ကိုးကွယ်ရာနတ္ထိပဲ၊ အမှန်တော့ တရားသမားအစစ်တွေ ဟာ ဒါမျိုးတွေနဲ့ မပတ်သက်တာ အကောင်းဆုံးပဲ မဟုတ်လား’

ဦးဘခင်က ဤသို့ပြောလိုက်သည့်အခါ ကိုအောင်မြင့်က စောဒက ဝင်လိုက်ပြန်ပါသည်။

သတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

‘ဦးသဘောထားလေး ကြားပါရစေဦး၊ ဗဟုသုတပေါ်ခင်ဗျ’

‘အင်း... ဇာတ်လမ်းကလေးဖြတ်ပြီး ရှင်းပြရသေးတာပေါ့၊ ဒါပေမဲ့ ဦးပြောတာ အမှန်တရားကြီးပဲလို့ မယူဆနဲ့နော်၊ ဦး နားလည်သလောက် ပြောပြတာပါ၊ မှားနေရင် ခွင့်လွှတ်ပါလို့၊ ဦးတို့ရဲ့ ဗုဒ္ဓရှင်တော်ဟာ ဘုရားအဖြစ်ကိုရအောင် ကျင့်ကြံအားထုတ်ပြီးတဲ့နောက် သူတွေကြုံခဲ့ရတဲ့ သဘောတရားတွေကို အခြေခံပြီး တရားဦး မေ့စကြာကို ဟောတဲ့အခါမှာ ဒွေမေဘိက္ခဝေနဲ့ အစပြုပြီး အစွန်းတရားနှစ်ပါးဖြစ်တဲ့ ကာမသုခလ္လိကာနုယောဂနဲ့ အတ္တကိလမထနုယောဂဆိုတဲ့ အယုတ်တရားနှစ်ပါး၊ ပယ်ရမယ့် တရားနှစ်ပါးကို ညွှန်ပြပြီး မဇ္ဈိမပဋိပဒါ ဆိုတဲ့ အစွန်းနှစ်ဖြာလွှတ်တဲ့ အလယ်အလတ်ကျင့်စဉ်ကတော့ မဂ္ဂင်ရှစ်ပါး၊ အကျယ်တော့ ထားပါတော့၊ ဒီကမှ သိရမယ့်တရား၊ ပယ်ရမယ့်တရား၊ ပွားများရမယ့်တရား၊ ဆိုက်ရောက်ရမယ့် တရားရယ်လို့ လေးဖြာကျင့်စဉ်လမ်း ပေးခဲ့ပါတယ်၊ ဒါကိုလည်း ဘုရားက ငါပြောတာချည်း ယုံမနေနဲ့၊ ဟုတ် မဟုတ် ကိုယ်တိုင်လုပ်ကြည့်ကြလို့ သြဝါဒ ပေးခဲ့ပြန်တယ်၊ ဒါ့ပြင် အဓိကကျတဲ့ ဖြစ်မှုပျက်မှုတရားနဲ့ အရာရာမှာ အကြောင်းတရားနဲ့ အကျိုးတရားကို အခြေခံမြင်တတ်ဖို့ ညွှန်ပြခဲ့တယ်’

‘တူမောင်တို့ ဒီခေတ်လူငယ်တွေရဲ့ ဆန္ဒကတော့ ကိုက်ချင်မှ ကိုက်မယ်လေ၊ ရှင်တော်ဗုဒ္ဓက အကြောင်းအကျိုးနဲ့ ကင်းလွတ်နေတာ မရှိဘူးတဲ့၊ ဘာဖြစ်ဖြစ် အကြောင်းတရားအခြေခံပြီးမှ အကျိုးတရား ဖြစ်တယ်လို့ ဆိုတယ်၊ ဥပမာ- အတိတ်ကကောင်းတဲ့အမှုကို ပြုလုပ်ခဲ့တဲ့ အကြောင်းကြောင့် ပစ္စုပ္ပန်မှာ ကောင်းသောအကျိုးကို ခံစားရတယ်၊ အကြောင်းမကောင်းရင် အကျိုးပေးမကောင်းဘူးပေါ့၊ ဥပမာ- ခု တူမောင်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တို့ အစိုးရမင်းမှုထမ်းဘဝမှာ ရိုးသားခြင်း၊ ကြိုးစားခြင်းဆိုတဲ့ အကြောင်းကို အခြေခံပြီး ရာထူးတိုးတက်ခြင်း၊ ဝင်ငွေပိုရခြင်းဆိုတဲ့ အကျိုးခံစားရတယ်။

‘အဲ... မရိုးသားဘူး၊ မကြိုးစားဘူးဆိုတဲ့ အကြောင်းမကောင်းရင် ထောင်ထဲရောက်မယ်၊ အလုပ်ပြုတ်မယ်ဆိုတဲ့ အကျိုးကိုရမှာ မလွဲဘူး၊ ဒီသဘောကလေးပါပဲ၊ ရှင်တော်ဗုဒ္ဓက အကြောင်းအကျိုးတရားနဲ့ မမြဲတဲ့သဘောဖြစ်တဲ့ ဖြစ်ပျက်မှုကို ပြခဲ့ပါလျက်နဲ့ ‘ဖြစ်စေသတည်း’၊ ‘မဖြစ်စေသတည်း’၊ ‘ရာထူးတိုးစေသတည်း’၊ ‘ချမ်းသာစေသတည်း’လို့ ဥုံ့လုပ်လိုက်တာနဲ့ ဖြစ်တယ်ဆိုတာတော့ ဗုဒ္ဓရဲ့အဘိဓမ္မာနဲ့ ဖြောင့်ဖြောင့်ကြီး ဆန့်ကျင်နေတာပေါ့။

‘သူ့သဘောသူဆောင်ပြီး ဖြစ်ပျက်နေပါလျက်နဲ့ ခန္ဓာရှိရင် ခန္ဓာ ဒုက္ခခံရမယ်ဆိုတာ သိနေပါလျက်နဲ့ မဟုတ်စေရဘူး၊ မခံစေရဘူး၊ မနာစေရဘူး၊ မသေစေရဘူးလို့ အော်နေကြတယ်၊ ဘုရားက ဒန်စွ၊ သူတို့က နိစ္စ၊ ဘုရားက အနတ္တ၊ သူတို့က အတ္တ၊ ဘုရားက ဒုက္ခ၊ သူတို့က သုခ လုပ်နေကြတယ်။ ဒီတော့ ဦးအမြင်ကို ပွင့်ပွင့်လင်းလင်းပြောရရင် ပုဂံခေတ် အရည်းကြီးဝါဒ တစ်ပတ်ပြန်လည်လာပြီလို့ ဆိုရမလားပဲ၊ အဲဒီအကြောင်းအချက်တွေကြောင့် ဦးကတော့ ဒီဝါဒတွေနဲ့ မပတ်သက်တာပါပဲ’

‘နေပါဦး ဦးရဲ့၊ သူတို့ ဒီဂိုဏ်းဂဏအလုပ်မှာလည်း ပုတီးစိပ်တာတို့၊ သမထထိုင်တာတို့ ရှိနေတာပဲ၊ ဒါက ကောင်းတဲ့အလုပ်၊ မြတ်တဲ့အကျင့်လို့ မဆိုနိုင်ဘူးလား ခင်ဗျာ’

‘တူမောင်ပြောတာတော့ မဆိုးပါဘူး၊ အပေါ်ယံကြည့်ရင်တော့

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ကောင်းတယ်လို့ဆိုရမယ်ပေါ့၊ ဒါပေမဲ့ ရာထူးတိုးအောင်၊ ပိုက်ဆံတွေ အများကြီးရအောင်၊ ကိုယ့်ပြိုင်ဖက်ပေါ်မှာ အနိုင်ရအောင်ဆိုတဲ့ မူမမှန်တဲ့ ရည်ရွယ်ချက်ပေါ် အခြေခံပြီး ပုတီးစိပ်တယ်ဆိုရင်တော့ မကောင်းဘူး ပေါ့လေ၊ ရိုးရိုးသားသား ကုသိုလ်ပါအောင်၊ စိတ်တည်ငြိမ်အောင်၊ သမာဓိ ဖြစ်အောင် စိပ်ရင်... အတိုင်းထက်အလွန် တံခွန်ထက်ကုက္ကားပေါ့’

ဦးလေးဘခင်နှင့် ကိုအောင်မြင့်တို့ ဆွေးနွေးပွဲလေးမှ ဘိုးတော် အောင်မင်းစိန်ဇာတ်လမ်း ပျောက်လုမတတ်ဖြစ်နေသဖြင့် ကြားဝင်ပြီး ဇာတ်လမ်းဆက်ဖို့ တိုက်တွန်းခဲ့ရ၏။ သူတို့လည်း ရယ်ရင်းမောရင်း ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန်ဇာတ်လမ်းဆီသို့ ပြန်လည်ဦးတည်လိုက်သည်။

‘အေး... ဒါနဲ့ ဆက်ရဦးမယ်၊ ဦးကလည်း ပထမတော့ မသွားဘဲ နေဦးမလို့ပဲ၊ ဒါပေမဲ့ ကိုသာဆိုင်ကိုလည်း အားနား၊ နောက်တစ်ကြောင်းက ဒီမောင်တွေ ဘာလုပ်ဦးမလဲလို့ သိချင်တာနဲ့ သွားခဲ့ရပြန်တယ်’

‘ည ၆ နာရီအချိန်လောက်မှာပဲ လူစုံကြတယ်၊ တစ်အိမ်လုံးကို ပြည့်ရော၊ တချို့လည်း လှေကားထက်မှာပဲ နေရာရကြတော့တယ်၊ အဲဒီ အချိန်ထိ ဇာတ်မင်းသားက မထွက်သေးဘူးလေ၊ တော်တော်လေးကြာ တော့မှ ပွဲတွေပြင်ထားတဲ့နောက်မှာ ကာထားတဲ့ လိုက်ကာကိုဖယ်ပြီး ထွက်လာခဲ့တာကိုး၊ ဘုရားစင်နဲ့ ပွဲပြင်ထားတဲ့ကြားမှာ လိုက်ကာခြား ထားတော့ သူက ဘုရားခန်းက ထွက်လာတဲ့သဘောပေါ့’

‘အဝတ်အစားကတော့ သူ ဝတ်နေကျ ယောဂီအနုရောင်တက် ထရွန်အင်္ကျီလုံချည်နဲ့ ဆင်စွယ်ပုတီးကြီးကိုလည်း လည်ပင်းမှာဆွဲလို့၊ ခေါင်းမှာတော့ ပွေးပွေးဖြူနေတဲ့ နိုင်လွန်အဖြူရောင်ခေါင်းပေါင်းကို မင်းသားပေါင်း ပေါင်းထားတယ်။ မီးချောင်းအပြင် အောက်လင်းဓာတ်မီး

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပိယုပ္ပာဒအကြောင်း

လေးလုံးက ထွက်လာတဲ့ အလင်းရောင်နဲ့ သူနဲ့ကတော့ ပန်စားနေတာပဲ။

ရွှေပွဲလာမိန်းမတွေကတော့ သူ့ကိုမြင်လိုက်တယ်ဆိုရင်ပဲ ပြုံးခနဲ ပြဲခနဲ ဖြစ်ကြပါလေရော။ တစ်ယောက်နဲ့တစ်ယောက် မျက်စပစ်ကြ၊ လက်တို့ကြ၊ မေးငေါ့ကြနဲ့ဖြစ်ကုန်ပြီး ပွစိပွစိနဲ့ပေါ့။ ပါးစပ်ကသာ အသံ ထွက်ပြောရရင် အောင်မလေးတဲ့နော်၊ ချောလိုက်လှလိုက်တဲ့ ကိုယ်တော် ကလေးလို့ ပြောကြမယ်ထင်ပါရဲ့။ သူကတော့ ပွဲရှေ့မှာခင်းထားတဲ့ ကော် ဇောပေါ်မှာထိုင်ရင်း ရွှေပွဲလာပရိတ်သတ်အားလုံးကို အပြုံးတစ်ချက်ရှေ့ပြီး နှုတ်ဆက်လိုက်တယ်။ ရွန်းရွန်းစားစားကြီး ပြုံးလိုက်တဲ့အပြုံးမျိုးနဲ့ပေါ့။

ခဏနေတော့မှ ကဲ... အားလုံး လက်အုပ်ချီပြီး ငါးငါးသီလ ဆိုကြလို့ အမိန့်ပေးပါရော၊ သူကတော့ သီလပေးမယ့်စတိုင်နဲ့ပေါ့။ အောင် မြင်ပြီး ဆွဲငင်ဓာတ်အပြည့်ပါတဲ့အသံနဲ့ ငါးပါးသီလပေးတော့တာကိုး။ ရဟန်းသံဃာတွေ သီလပေးသလိုတော့ ဋ္ဌာန်ကရိုဏ်းကျကျ ခပ်ထောင့် ထောင့်သီလပေးမျိုးတော့ မဟုတ်ဘူး။ သီချင်းမဆိုရုံအင်္ဂါမျိုးနဲ့ တိုင်ပေး တာကို အားလုံးက လိုက်ဆိုရတယ်။ ဆိုတဲ့လူတွေကလည်း ဆိုကောင်း ထင်ပါရဲ့။

အသံညီညီညာညာနဲ့ပဲ လိုက်ဆိုကြတယ်။ သူကလည်း ပေါင် ကို လက်ကလေးနဲ့ပုတ်ပုတ်ပြီးတော့ အသံတိုင်ပေးတာ၊ ဘာနဲ့တူသလဲ ဆိုတော့ ဘုန်းကြီးရူးနဲ့လှေလူး တွေနေသလိုပါပဲ။ ဘုန်းကြီးက စိတ်မမှန် တော့ လှေကို ငြိမ်ငြိမ်မစီးဘဲ ဟိုဘက်ပြောင်းလိုက်၊ ဒီဘက်ပြောင်းလိုက် ဒီတော့ လှေကလည်း ဟိုဘက်လူးလိုက်၊ ဒီဘက်လူးလိုက်နဲ့ မြစ်လယ်မှာ ကြည့်လို့ကောင်းနေတော့သလို သီလပေးတဲ့ အောင်မင်းစိန်နဲ့ သီလယူတဲ့ လူတွေ အတိုင်အဖောက်ညီနေကြတာပေါ့လေ။

ယတ္တရင် (ရွှေပြည်သာ)

“ပြီးတော့မှ မိန့်ခွန်းတစ်ရပ် ခြွေတော့တာပဲ။ မိန့်ခွန်းကတော့ သူ ကိုးရက်အဓိဋ္ဌာန်ဝင်ပြီး ဓာတ်နန်းစိုက်ခွင့်ရ၊ မရ အထက်လူဝိဇ္ဇာတွေဆီ ခွင့်တောင်းတဲ့အခါမှာ ဓာတ်နန်းစိုက်ခွင့်ရတဲ့အတွက် ဓာတ်နန်းပွင့်လိုက် ပြီဖြစ်ကြောင်း၊ ဒီဓာတ်စခန်းမှာ သတ္တဝါတွေကယ်တင်ဖို့၊ ဆေးဝါးကုသ ဖို့ အမိန့်ချထားတယ်” စုန်းတိုက်၊ နတ်တိုက်၊ ဥစ္စာစောင့်အဖွဲ့၊ အမှောင့် ပယောဂအမျိုးမျိုးကို ကာကွယ်ဖို့ ဆေးထိုးပေးမယ်။ နက်ဖြန်ကစပြီး ဓာတ်စခန်းကိုလာနိုင်ကြောင်း ကြေညာလိုက်ပါတယ်။

“အဲဒီလိုလည်း ပြောပြီးရော လည်ပင်းက ပုတီးကိုဖြုတ်၊ ညာဘက် ယက်မှာပတ်၊ မတ်တတ်ရပ်လိုက်ပြီး ပွဲရှေ့မှာထွန်းထားတဲ့ ဖယောင်းတိုင် တွေကို လက်ဝါးပြင်နဲ့ အပေါက်ကနေပြီး ဟိုရွှေဒီရွှေလုပ်လိုက်တဲ့အခါ ဖယောင်းတိုင်တွေက မီးပွားတွေ တဖျပ်ဖျပ်ဖြစ်လာတယ်။ ရဲ့ရဲ့ ရဲ့ရဲ့ ဆိုတဲ့အသံတွေလည်း မြည်လာတယ်။ ကြည့်နေတဲ့ ပရိတ်သတ်ကြီးလည်း လည်ပင်းတရှည်ရှည်နဲ့ပေါ့။ နောက်ထပ် ဘာများထပ်ဖြစ်ဦးမလဲလို့ လည်ပင်းထောင်တဲ့သူကထောင်၊ မတ်တတ်ရပ်တဲ့သူကရပ်လို့၊ သူကတော့ လေးငါးခါလောက်လုပ်ပြီး လက်အုပ်ချီရင်း ပါးစပ်က တတွတ်တွတ် ရွတ်လိုက်၊ လက်ဝါးလေးနားမှာကပ်ပြီး နားထောင်လိုက်၊ ဟိုမော့ကြည့် လိုက်၊ ဒီမော့ကြည့်လိုက်နဲ့ပေါ့၊ ပရိသတ်ကလည်း သူခေါင်းလှည့်ရာဘက် ကို သူလှည့်သလိုလှည့်ရင်း သူမော့သလိုမော့ရင်း ဖြစ်နေကြတုန်း ထား ကြည့်ကလေးကို ပွဲရှေ့မှာလာထိုင်ဖို့ လက်ညှိုးနဲ့အချက်ပြပြီး ခေါ်လိုက် တယ်။ နောက် သူလက်ညှိုးကိုထောင်ပြီး ဟိုဘက်ယမ်းလိုက်၊ ဒီဘက် ယမ်းလိုက် လုပ်နေပြန်တယ်”

“လက်တစ်ဖက်ကတော့ ထားကြည့်ရဲ့ခေါင်းကို လက်ဝါးနဲ့အုပ်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ပြီး ကိုင်ထားရင်း မိုးပေါ်ကို နားစိုက်ထောင်လိုက်၊ မျက်လုံးနဲ့ စူးစိုက်ကြည့်လိုက်လုပ်ပြီး ထားကြည်လေးခေါင်းကို လက်နဲ့ တဖျတ်ဖျတ် ပုတ်နေတယ်။ ခဏကြာတော့ ထားကြည်ကို နောက်ဆုတ်ခိုင်းပြီး သူလည်း ပွဲရှေ့မှာ ပြန်ထိုင်လိုက်တယ်။

‘လူတွေရဲ့မျက်လုံးကတော့ သူနဲ့ထားကြည်အပေါ်မှာ အာရုံစိုက်နေကြတယ်။ သူ့ဆီက ဘာများပြောဦးမလဲလို့ လူတွေက အာရုံစိုက်နေကြပေမယ့် သူကတော့ စကားမစသေးဘူး၊ မျက်လုံးပိတ်လိုက်၊ ဖွင့်လိုက်လုပ်နေတုန်းပဲ၊ ခဏနေတော့ ထားကြည်ရဲ့ညာလက်ကို ဆန့်ခိုင်းပြီး သူ့ပုတီးကို ကိုင်ထားခိုင်းရာမှာ ထားကြည်ရဲ့လက်နဲ့ ကိုင်ထားတဲ့ပုတီးဟာ အငြိမ်မနေဘဲ တလှုပ်လှုပ်တယမ်းယမ်း ဖြစ်နေတယ်’

‘လူတွေကလည်း တအံ့တဩပေါ့၊ သူကလည်း ပါးစပ်က ထင်ထင်ရှားရှားပြပါ၊ အပ်ခွင့်အမိန့်ပေးပါနဲ့ အသံခပ်အစ်အစ်နဲ့ အော်ဟစ်အမိန့်ပေးနေတယ်၊ နောက်ပြီးတော့မှ သက်ဆိုင်ရာ စနေသမီးကို ဓာတ်နန်းရဲ့ဒေဝီအဖြစ် အပ်နှင်းလိုက်ကြောင်း ကြေညာပေးတယ်’

‘သူတို့ဥစ္စာတွေက လွယ်လှချည်လား ဦးလေးရဲ့၊ ပရိသတ်ကရောလက်ခံတာပဲလား’

‘ဘိုးတော်ဖြစ်စေ၊ မယ်တော်ဖြစ်စေဆိုတာ သူတို့ပါးစပ်ထဲမှာတင်ရှိတာ၊ ပရိသတ်က ဘာပြောရတာမှတ်လို့’

ဤသို့ ကျွန်တော့်အမေးနှင့် ဦးဘခင်အဖြေအပြီးတွင် ကိုအောင်မြင့်က ဝင်ထောက်လိုက်ပြန်သည်။

‘ဒီလို ပရိသတ်ကို လှည့်စားပြီးမှ မျက်လှည့်ပြပြီးမှ အယုံသွင်းတာမျိုး မပြောနဲ့၊ ဈာန်ထုတဲ့ဘိုးတော် (အရက်သောက်တဲ့ဘိုးတော်)၊

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

ရှိုးထိုင်တဲ့ဘိုးတော် (တစ်ချပ်မှောက်ကစားတဲ့ဘိုးတော်)၊ ဖိုးစွဲနေတဲ့ ဘိုးတော်တွေနောက်ကိုတောင် လိုက်နေကြသေးတာပဲဥစ္စာ။ ဒါတွင်လား ဆိုတော့ ပြည်ပြေးဘိုးတော်ဆိုတာတောင် ရှိသေးသတဲ့။ သတင်းစာထဲ မတွေ့လိုက်ဘူးလား၊ ဘောင်းဘီဖင်ကျပ်နဲ့ ပြည်ပြေးဘိုးတော်ပုံလေ'

'အေး... အေး... ငါ့တူပြောမှပဲ ရှင်းတယ်၊ အတုံးလိုက်အတစ် လိုက်၊ ဟုတ်လည်းဟုတ်ပါ့ဗျာ၊ ပြည်ပြေးဘိုးတော်တဲ့' ဟု ပြောရင်း ဦးလေးဦးဘခင်မှာ တဝါးဝါးတဟားဟား ဖြစ်နေပါသည်။ အမှန်တော့ ကိုအောင်မြင့် ပြောလည်း ပြောစရာပင်။ ဘိုးတော်အမည်ခံများထဲတွင် အင်္ဂလိပ်နာမည်များနှင့် ဘိုးတော်များလည်း ရှိ၏။ ဘိုးတော်ဂျွန်တဲ့၊ ဘိုးတော်ဂျက်တဲ့၊ ပကောရှင်းဆိုတဲ့ ဘာလူမျိုးမှန်းမသိတဲ့ ဘိုးတော်တွေ လည်း ရှိတယ်။

ဘိုးတော်မာမက်ရဖီးအမည်ခံတဲ့ မူစလင်ဘိုးတော်ကလည်း တစ်မျိုး ပင်။ ဘိုးတော်အပ္ပရောင်း၊ ဘိုးတော်ဆာမိ၊ ဘိုးတော်လေ့ရှင်ဖူး၊ ဘိုးတော် အရှုပ်တို့ မပေါ်သေးသည်ကိုပင် တော်သေးသည်ဟု အောက်မေ့ရမလိုဖြစ် နေသည်။ ချောခေါ်တို့၊ မြောက်ခေါ်တို့လည်း ရှိသေး။ မည်သို့ပင်ဖြစ်စေ နာမည်ဆန်းကလေး၊ လုပ်ပုံလုပ်နည်းဆန်းကလေးနှင့် ဘိုးတော်တွေပေါ် လျှင် လူတွေက ကောက်ကောက်ပါအောင် လိုက်တတ်ကြသည်သာ။

'ကဲ... ဦးလေး ဆက်ပါဦး'

'အဲဒီလို မယ်တော်ဖြစ်စေသတည်းလို့ ကြေညာပြီးတာနဲ့ ထားကြည် လက်ဝါးပေါ်ကို ပွဲရှေ့မှာထွန်းထားတဲ့ ဖယောင်းတိုင်ကို တင်ပေးလိုက် တယ်ဆိုရင်ပဲ ထားကြည်လေးရဲ့လက်ဝါးဟာ တဆတ်ဆတ်တုန်လာပြီး ဟိုယိမ်းဒီယမ်း ဖြစ်လာတော့တာပဲ၊ ပါးစပ်ကလည်း ဘာစကားမှန်းမသိ

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

တဲ့စကားတွေ တတွတ်တွတ် ရွတ်ဖတ်နေတယ်။ နောက်ပြီး လက်ဝါးပေါ် တင်ထားတဲ့ ဖယောင်းတိုင်မီးခွက်နဲ့ လူတွေရဲ့ခေါင်းပေါ်ကို လိုက်ဝဲပေး တယ်။

‘အဲဒါကို အောင်မင်းစိန်က ဓာတ်ကူးနေပြီ၊ ငြိမ်ငြိမ်နေကြပါ။ ဗျက်စိမိုတ်ပြီး အာရုံဖြူကြည့်ရင် ဘိုးတော်တွေကိုဖူးရမယ်၊ မထိုက်သူ တော့ မဖူးရဘူး။ သေသေချာချာ စူးစူးစိုက်စိုက် အာရုံဖြူပါ။ ပိတ်ဖြူစင် ကြယ်နဲ့ ဘိုးဘိုးအောင်ပါပဲ။ သင်္ကန်းဝတ်နဲ့ပုဂ္ဂိုလ်ဟာ ရှင်မထီးပါပဲနဲ့ ပြောပြပေးနေတယ်။’ လူတွေကလည်း လက်အုပ်လေးတွေချီလို့ပေါ့။ ထားကြည်ကိုကြည့်ပြီး ရှိခိုးနေကြတယ်။ လူအုပ်ထဲမှာပါတဲ့ အသက်ကြီး ကြီးတွေကလည်း လက်အုပ်ချီလို့ပဲ။

‘နေပါဦး ဦးရဲ့၊ သူပြောတဲ့အတိုင်း ဝိဇ္ဇာတွေမြင်ရသတဲ့လား။’

‘ကြံကြီးစည်ရာ ဘယ်မြင်ရမလဲ၊ သူက ရှေ့က လမ်းကြောင်းပေး နေတော့ လူတွေကလည်း အတင်းမြင်လိုက်ကြရ ထင်ပါရဲ့၊ ဒီနေရာမှာ ဦးအတွေ့အကြုံလေးတစ်ခု ပြောပြရဦးမယ်။ သည်အဖြစ်အပျက်နဲ့ ခပ် ဆင်ဆင်တူလို့ပါ။ ဦးတို့ ဟင်္သာတဘုရားပွဲတစ်ခုမှာ ခါးနာ၊ ဒူးနာ၊ အကိုက်အခဲတွေကုတဲ့ လမ်းဘေးဆရာတစ်ဖွဲ့ ရောက်လာတယ်။ ထုံးစံ အတိုင်းပဲပေါ့လေ၊ လူရုပ်ပိတ်ကားကြီးနဲ့ အသံချဲ့စက်နဲ့ ဝဋ်နာကံနာဖြစ် နေတဲ့ အကိုက်အခဲတွေကိုတောင် တစ်ထိုင်နဲ့ ယူပစ်သလိုပျောက်အောင် ကုသပေးနေတဲ့အကြောင်း အာဝဇ္ဇန်းရွှင်ရွှင်နဲ့ မနားတမ်း အော်ဟစ်နေတာ ပဲ။ လယ်သမားကြီးတွေကလည်း ဝင်ထိုင်တာပေါ့၊ ခါးနာတဲ့လူကို ဆေး လိမ်းပေးလိုက်၊ ဒူးနာတဲ့လူကို ဆေးလိမ်းပေးလိုက်၊ အသံချဲ့စက်ကလည်း တတွတ်တွတ် မေးနေတယ်။ ပြောနော် ပြောနော်၊ အခု မကိုက်တော့ဘူး။’

ပေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

မဟုတ်လား၊ အဲဒီတော့ အောက်ကလူကခေါင်းညိတ် ပျောက်ပြီပြောရပေါ့။

‘ဒီမှာတင် ဆေးဆရာတွေက ဘယ်ရွာကဦးကြီး ဘယ်နှနစ်ခံစား
နေရတဲ့ရောဂါ ငါးမိနစ်အတွင်း ပျောက်သွားပါပြီခင်ဗျာလို့ ကြေညာတော့
တာပဲ။ ကိုက်တဲ့ ခဲတဲ့နေရာဆိုတာ ဆေးပူလိမ်းလိုက်ရင် ခဏတော့
သက်သာသယောင်ရှိတာပေါ့။ ဒီအချိန်မှာ ပျောက်ပြီလားမေးတော့ ပျောက်
ပြီဖြေရတာမျိုးလိုပဲ။ သူတို့လည်း အတင်းမြင်ခိုင်းနေတော့ မြင်ကြရတော့
တာ ဖြစ်မှာပေါ့လေ’

‘လူတွေက ယုံပဲယုံနိုင်လွန်းပါတယ်။ သူတို့မျက်စိရှေ့က ထား
ကြည့်အကြောင်း သူတို့သိနေတာပဲဟာ’

‘ထားကြည့်ကို သူက သိမ်းသွင်းပြီး ဖာတ်တိုက်ထားတာဖြစ်
မှာပေါ့။ ဦးတော့ ဒီလိုပဲ တွက်တယ်။ ဒါမှမဟုတ်ရင် ခေါင်းစွဲနတ်တို့၊
ဘာတို့နဲ့ကိုင်ထားမှာပေါ့။ မနက်မိုးလည်းလင်းရော အိမ်တိုင်းက ပစ္စည်း
တွေ ပို့လိုက်ကြတာ ဘာပြောကောင်းမလဲ။ ဦးသာဆိုင် ဧည့်ခန်းတစ်ခု
လုံးပြည့်လှမတတ်ပဲ’

‘လူတွေက ကန်တော့ကြတယ်ပေါ့။ အဲဒါကို သူက ကြိမ်းလား၊
မောင်းလားလုပ်သေးတယ်ဗျ။ ဘိုးတော်ဆိုတာ လူတွေပေးမှ စားရတာ
မဟုတ်ဘူး။ ဘိုးတော်ကို လူတွေက ပေးစရာမလိုဘူး။ လူတွေကိုသာ
ဘိုးတော်တွေက မစရမယ် ဘာမယ်နဲ့ပေါ့’

‘ဒီလိုဆိုရင် အောင်မင်းစိန်က မဆိုးဘူးလို့ဆိုရမှာပေါ့နော်’

‘ဘယ်ဟုတ်လိမ့်မလဲ ငါ့တူရ၊ ဒါကအစ သူ့အပေါ်ကို အထင်ကြီး
သွားအောင် လုပ်လိုက်တာ။ ထိုးမယ့်ဆင် နောက်တစ်လှမ်းဆုတ်လို့ဆိုတဲ့
သဘောမျိုးဖြစ်မှာပေါ့။ ပရိယာယ်ပေါ့ တူမောင်ရ၊ နှစ်ရက်လောက်လည်း

ယုံမှတ်လို့ ပုံအင်မိသူများအကြောင်း

နေရာ ရွာနီးချုပ်စကလူတွေ လာလိုက်ကြတာ ဘာပြောကောင်းမလဲ၊
ဝင်လာမစဲ တာသဲသဲပေါ့၊ အောင်မင်းစိန်သတင်းကလည်း ပျံ့သွားတာကိုး။

‘ကိုယ်လုံးဆေးထိုးရင် အုန်း၊ ငှက်ပျောပွဲတစ်ပွဲနဲ့ ငွေကိုးမတ်၊
ကိုက်ဝင်အဖြစ်ဆေးထိုးရင် ပွဲသုံးပွဲ ပိတ်ဖြူကိုးတောင်၊ ငွေ ကိုးကျပ်၊
ပယောဂကုရင် ငွေငါးကျပ်တစ်မတ်နဲ့ ဖယောင်းတိုင်ဆယ်ထုပ်၊ တောက
လူတွေ ခါးကြားလိမ်ထားတဲ့ ငွေကလေးတွေ လျှောခနဲ၊ လျှောခနဲထွက်
လာရော၊ အောင်မင်းစိန်လည်း လက်ညောင်းရော၊ ဒါပေမဲ့ ညကိုးနာရီ
ကျော်ရင် ဘယ်သူမှ မလာရတဲ့လေ’

‘ဦးသာဆိုင်လည်း အလိုအလျောက် ဘိုးတော်သာဆိုင်ဖြစ်သွားရော၊
သူတို့ဟာ တယ်လွယ်တာကိုး၊ ဘိုးတော်ဖြစ်စေဆို ဘိုးတော်ပဲ၊ မယ်တော်
ဖြစ်စေဆို မယ်တော်ပဲ၊ ဥုံဖွတစ်ချက်ဆိုရင် ဘိုးတော်တစ်ယောက်၊ နောက်
ဥုံဖွတစ်ချက်ဆိုရင် မယ်တော်ပဲ’

‘ဒါပေါ့ ဦးရဲ့၊ အဏုမြူခေတ်ဆိုတော့ ခပ်မြန်မြန် ဖြစ်နေကြ
တာပေါ့’

‘နောက်ပိုင်းတော့ ဦးလည်း ဦးကိစ္စနဲ့ အထက်တက်သွားနေတော့
အောင်မင်းစိန်နဲ့ ခြောက်လလောက် အဆက်ပြတ်သွားတယ်၊ နောက်
တစ်ခေါက် ပြန်ရောက်တော့ အံ့ဩစရာကောင်းတဲ့ အတွေ့အမြင်တွေ
တွေ့တော့တာပဲ၊ ထားကြည်ကလေးက ကိုယ်ဝန်ရှိနေပြီ၊ အလတ်မလေး
အေးခင်ကလည်း ညကိုးနာရီကျော်ရင် ဘယ်သူမှမတက်ရဘူးဆိုတဲ့ အောင်
မင်းစိန်ရဲ့ ဓာတ်ခန်းပေါ် ရောက်နေပြီ၊ ရွာထဲမှာ လေ့လာကြည့်တော့
ဒီလို ဖြစ်နေတာတွေဟာ ဘာမှမထူးခြားသလိုပါပဲ၊ မေးမြန်းကြည့်တော့
မှ ကြားလိုက်ရတဲ့ သတင်းက ဦးနားကို ဦးမယုံကြည်နိုင်အောင် ဖြစ်

မေတ္တာရှင် (ရွှေပြည်သာ)

သွားတော့တာပဲ’

‘ဘိုးတော် ပြန်ပွားတာတဲ့၊ ကျုပ်လေ ဦးသာဆိုင်ကို ဆွဲဆွဲပြီး ရိုက်ပစ်ချင်လိုက်တာ၊ ကိုယ့်စိတ်ကို မနည်းချုပ်ထားရတယ်၊ ရွာထဲက လူတွေကလည်း ကိုးကွယ်တုန်းပဲ၊ ဦးသာဆိုင်ကလည်း ပြုံးပြုံးပဲ၊ နောက် ဆုံးတော့ ပါရမီဖြည့်ဖို့ ဒေဝီတစ်ပါးမလုံလောက်လို့ ဒေဝီနှစ်ပါးဆက် တော့မယ့် အခြေပေါ့၊ ဆက်လည်း ဆက်နေပြီဆိုပါတော့လေ၊ ဒါတောင် သူ့ဆီကို ဆေးကုတဲ့လူတွေ လာနေတုန်းပဲဗျို့’

‘သူက ပယောဂတင် ကုသလား၊ ၉၆-ပါး ဝေဒနာကိုလည်း ကုတာပဲလား’

‘ဟာ... အစုံကုတာပေါ့၊ ဘာရောဂါလာလာ သူမကုနိုင်တာ ရှိကို မရှိဘူး၊ ခေတ်သစ် ဖီဝကပေါ့’

‘အဲဒီလိုကုတော့ ပျောက်ကော ပျောက်သတဲ့လား’

‘စိတ်ပေါ့ တူမောင်ရယ်၊ ဘုရားလည်း စိတ်ကို အဓိကထားပြီး ဟောခဲ့တာပဲ မဟုတ်လား၊ ကိုယ့်စိတ်က အင်မတန် ယုံကြည်နေတဲ့ ကိစ္စတစ်ခုမှာ အဲဒီယုံကြည်ခံရတဲ့လူ လုပ်သမျှကို အကောင်းကြီးထင် နေတော့တာပေါ့၊ အလိုလိုနေရင်း ပျောက်တယ်လို့ထင်နေတာပေါ့၊ တကယ်တော့ ဘယ်ပျောက်ပါ့မလဲ၊ ဒီလိုသာ ပျောက်တမ်းဆိုရင် ဆေးရုံ တွေ၊ ဘာတွေ၊ ဆရာဝန်တွေ ဘယ်လိုတော့မလဲ၊ ဘိပီအိုင်စက်ရုံကြီး တွေတောင် ပိတ်ထားရတော့မပေါ့၊ ဘိုးတော်တွေက ဆရာဝန်တွေထက် များနေတာပဲ ဥစ္စာ’

‘ဟုတ်ကဲ့ ဦးအဆိုက မဆိုးပါဘူး ဦးရဲ့၊ ဒါနဲ့ နောက်ဆုံးဇာတ် လမ်းကလေး ဆက်ပါဦးခင်ဗျာ’

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်ပီသူများအကြောင်း

‘နောက်ဆုံး ဇာတ်လမ်းကတော့ အောင်မင်းစိန်ကို ဘယ်လို ဆုံးမ ရမလဲလို့ စဉ်းစားရတာပဲ။ ဘာလို့လဲဆိုတော့ ထားကြည်အဖြစ်မျိုး တစ်ရွာ လုံး ကူးစက်မှာ စိုးရိမ်ရပြီလေ။ ဒီရွာမှာ ဦးအမျိုးတွေလည်း ရှိနေတာ ကိုး၊ ကိုသာဆိုင် ကိုယ်တိုင်ကလည်း ဘိုးတော်ဖြစ်နေပြီဆိုတော့ သူ့ကို နားချလို့မရမှာ သေချာတယ်။ ရွာကလူတွေလည်း မထုံထက်သေးလုပ် နေပြန်တော့ ကိုယ့်ဟာကိုယ်ပဲ လုပ်လိုက်ရတယ်’

‘ဦးရဲ့တူတစ်ယောက်က မိုက်ကန်းကန်းနဲ့ အရက်လည်းသောက် တတ်တယ်။ သူ့ကို သူ့အကြိုက်အရက်ဖိုးပေးမယ်လို့ ဆွယ်ပြီး အစီအစဉ် ကို ပြောပြတော့လည်း သူက ဒါမျိုးဆို ဝါသနာပါတာနဲ့ အလုပ်ဖြစ်သွား တာပဲ။ ဦးတို့ရဲ့ အစီအစဉ်ကိုတော့ ဦးသာဆိုင်ကိုပဲ ချဉ်းကပ်ပြီး သူ့အလို ကျ သူ့အကြိုက်ဖြစ်အောင် ပြောပြပြီး အကူအညီတောင်းရတယ်။ ဦးရဲ့ တူကိုလည်း ဟင်္သာတကနေ ရွာကို ခေါ်ခဲ့တယ်။ အစီအစဉ်လုပ်မှာက ညဆိုတော့ သူကလည်း နည်းနည်းပါးပါးလုပ်ထားတယ်။ အလွန်အကျွံ မဖြစ်အောင်တော့ ထိန်းပေးရတာပေါ့!’

‘ဦးတူရဲ့ သတင်းကြားတော့ ရွာကလူတွေကလည်း ပွဲတစ်ပွဲ ကြည့်ရပြီဆိုပြီး လာကြည့်ကြတယ်။ ဦးတူကတော့ သင်ထားတဲ့အတိုင်း ငိုလိုက်၊ ရယ်လိုက်၊ ကြိမ်းလိုက်၊ မောင်းလိုက်၊ အော်လိုက်၊ ဟစ်လိုက် လုပ်ရင်း အောင်မင်းစိန်ရှေ့ ရောက်လာတော့ ဦးကလည်း ဒီသူငယ် ပယောဂကို ကုပေးဖို့အပ်ရတာ၊ ငွေငါးကျပ်တစ်မတ်နဲ့ ဖယောင်းတိုင် နှစ်ထုပ်ကိုလည်း ဆရာလက်ထဲ ရှိရှိသေသေနဲ့ ပေးလိုက်တယ်။ အောင် မင်းစိန်က လူနာကို သူ့ရှေ့ခေါ်စမ်းသပ်ပြီး ခပ်ပြုံးပြုံးနဲ့ အသေးအမွှား ပါ၊ တစ်ထိုင်တည်းပျောက်ပါတယ်လို့ ခပ်ဝင့်ဝင့်၊ ခပ်ကြွားကြွားလေး

ယတ္တရံ (ရွှေပြည်သာ)

ဆိုလိုက်ပြီး အလုပ်စကြရောဆိုပါတော့...

အလုပ်စကြပြီး ဦးရဲ့တူလက်ကို ကိုင်ပြီး။

ကဲ... ငါ့ရှေ့မှောက်ရောက်ရှိနေတဲ့ ဝေဒနာရှင်ကို အမှောင့်ပယောဂပူးကပ်အောင် လုပ်ထားတဲ့ ပယောဂရှင် ရောက်စေ၊ ဝင်စေ၊ ဘိုးတော်အောင်မင်းစိန် ဝင်စမ်း၊ ရောက်စမ်း၊ ကြာတယ်၊ ကြာတယ်၊ သူက အဲဒီလို အော်နေပေမယ့် ကျုပ်တူက ငြိမ်နေတာကြောင့် ပွဲရှေ့မှာထားတဲ့ ကြိမ်လုံးကိုယူပြီး ကြမ်းပြင်ကို တဖြန်းဖြန်းနဲ့ ရိုက်လိုက်ပါတယ်။ ဒီမှာ ကျုပ်တူက ရှေ့ထိုးနောက်ငင် လှုပ်ရှားလိုက်တာနဲ့ ကဲ... ရောက်ရင် ချုပ်စေ၊ ချုပ်စရာချုပ်၊ တုပ်စရာတုပ်၊ ငါ့အမိန့်၊ ငါ့အမိန့်မပေးဘဲ မထွက်ရ၊ ဒီအချိန်ကစပြီး ငါ့အမိန့်နာခံစေလို့ ပြောပြောဆိုဆို ရေမန်းတွေနဲ့ ဟိုတောက် ဒီတောက်လုပ်ပေးလိုက်ပါတယ်'

ကဲ... ပြောစမ်း၊ နင်ဘယ်သူလဲ၊ ရိုးတီးယားတား မလုပ်နဲ့နော်၊ ဝေဒနာရှင်နှုတ်ကို ဘယ်သူမှ မချုပ်စေနဲ့ ဖွင့်စေ၊ ကဲ... ဖွင့်စေ၊ ပြောစရာရှိတာပြော၊ ဘာကြောင့် လုပ်ထားသလဲပြော၊ ဦးတူက ဘာမှ မပြောဘဲ မလှုပ်မယှက် ထိုင်ကြည့်နေတယ်လေ၊ သူက အမိန့်အမျိုးမျိုးပေးလေ၊ ဦးတူက သူ့ကို စိုက်ကြည့်လေ၊ သူက ဒေါ်ပွလေပေါ့၊ ဒီတော့ သူက ငါ့ကို အာခံတယ်ပေါ့လေ၊ ကဲ... စုန်းမစုတ် သိရောပေါ့လို့ ကြိမ်းပြီး ဧရာဝတီ ဘာလုပ်နေတာလဲ၊ နင်းလိုက်စမ်း၊ နံရိုးတွေ မြောင်းမြောင်း မြည်အောင် နင်းလိုက်စမ်း၊ ကျိုးကုန်ပစေ၊ ကျိုးအောင်နင်း။

အဲဒီလို အမိန့်ပေးလိုက်ရော ဦးတူက ထတဲ့ပြီး အောင်မင်းစိန်ရဲ့ သျှောင်ကိုဆွဲ၊ နားရင်းပါးရင်း အုပ်၊ ခြေထောက်နဲ့ လှိမ့်ကန်လိုက်တာ၊ အောင်မင်းစိန်ဟာ မျောက်က ကနေသလား အောက်မေ့ရတယ်၊ ပါးစပ်

ယုံမှတ်လို့ ပုံအပ်မိသူများအကြောင်း

ကလည်း လုပ်ကြပါဦး၊ ဆွဲကြပါဦးနဲ့ အော်တော့တာပဲ၊ ဦးကလည်း ဝင်ဆွဲ၊ ဘေးကလူတွေကလည်း ဝင်ဆွဲတော့မှ ဦးတူက အတီးရပ်သွားတယ်၊ နောက်မှ ဦးသင်ထားတဲ့အတိုင်း ‘မလောက်လေး မလောက်စားဟင်း... ဆရာအတုအယောင်က ငါ့ကိုများ စမ်းလို့ ဘယ်ရမလဲ မှတ်ထား၊ နောက်တစ်ခါ အသေပဲ၊ မပြူးတဲ့ဟေ့လို့ အော်ပြီး စုန်းမထွက်ဟန် လုပ်လိုက်တယ်၊ ဒီတော့မှ သူ့ကို တဲအိမ်ကို ပြန်ခေါ်ခဲ့ရတာပေါ့၊ နောက်တစ်နေ့လည်း မိုးလည်းလင်းရော အောင်မင်းစိန်လည်း ရွာက ပျောက်သွားတော့တာပဲ’

‘ဒါပေါ့၊ ဦးလေး လုပ်လိုက်တာက တော်တော် အကြံပိုင်တာကိုး’
 စာရင်းချုပ်လိုက်တဲ့အခါ ဦးသာဆိုင်ကလည်း အင်းတို့၊ ဆေးတို့ မရပေမယ့် မြေးတစ်ယောက်နဲ့ အောင်မင်းစိန်ကျန်ရစ်ခဲ့တဲ့ ဘိုးတော် ဝတ်စုံတစ်စုံပဲ ရလိုက်တယ်၊ ဦးလည်း ဒီအလိမ်ကောင်ရဲ့ အထုပ်ကို ဖြေလိုက်ရတာကို ပီတိဖြစ်ကျန်ခဲ့တာပေါ့လေ’

ဤတွင် ပထမတွဲ ပြီး၏။
 နောက်ထပ် အတွေ့အကြုံရသမျှ လိမ်လည်မှုများကို ဒုတိယတွဲ အဖြစ် ဆက်လက် တင်ပြရန် ကြိုးစားပါဦးမည်။
 စာရှုသူအားလုံး အလိမ်အညာဘေးမှ ကင်းဝေးကြပါစေသော်။
 ချမ်းသာကိုယ်စိတ် မြဲပါစေ။

မေတ္တာရှင်(ရွှေပြည်သာ)
 ဆရာတော် ဦးစေန
 မန္တလေးကျောင်းတိုက်
 (၆)ရပ်ကွက်၊ ရွှေပြည်သာမြို့၊ ရန်ကုန်။

(Sinhala text)

Main body of text, appearing to be a list or a series of entries in Sinhala script.

Second section of text, continuing the list or entries.

Third section of text, possibly a summary or a specific entry.